डिटेक्टिव करण #3

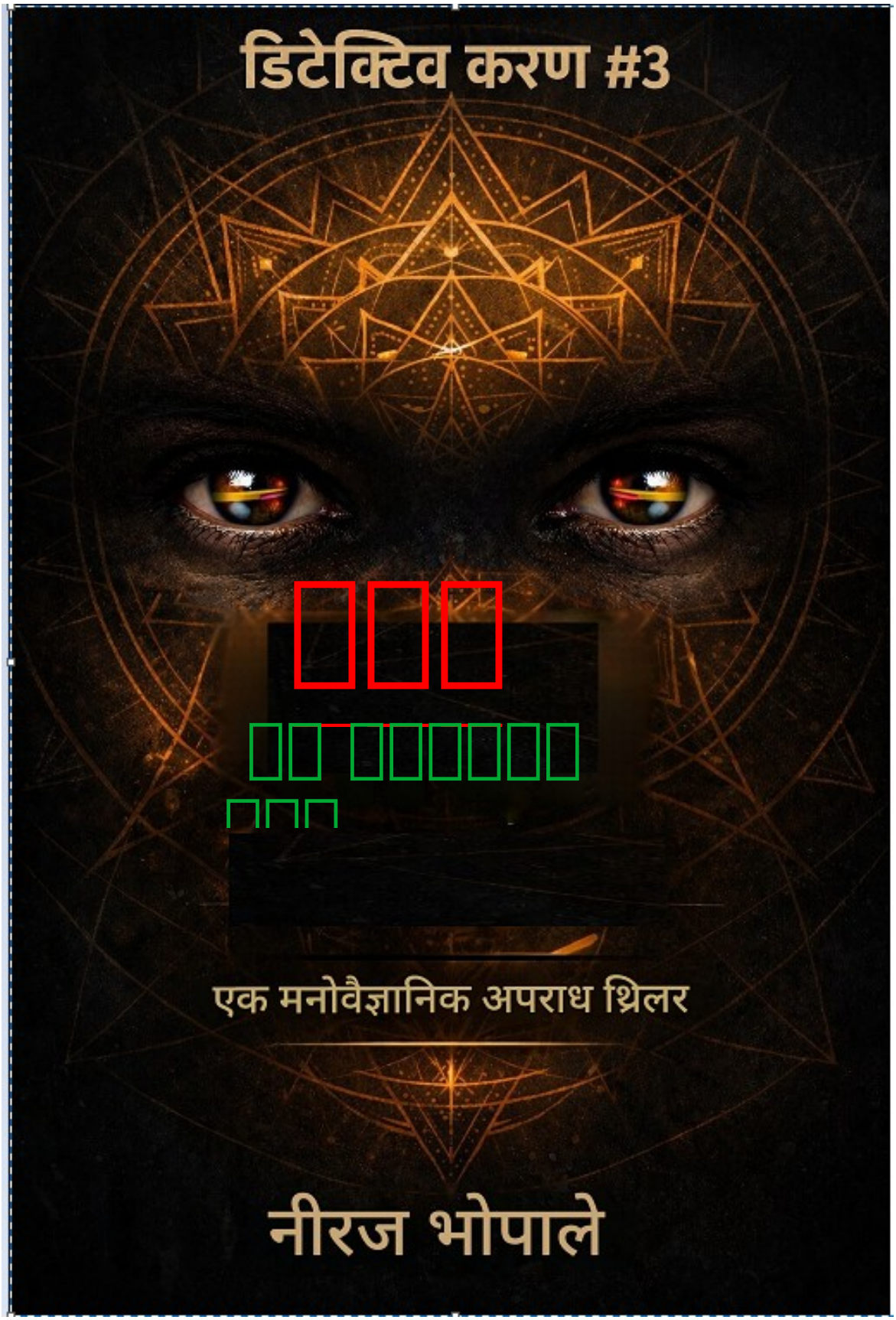

एक मनोवैज्ञानिक अपराध थ्रिलर

नीरज भोपाले

डिटेक्टिव करण #3

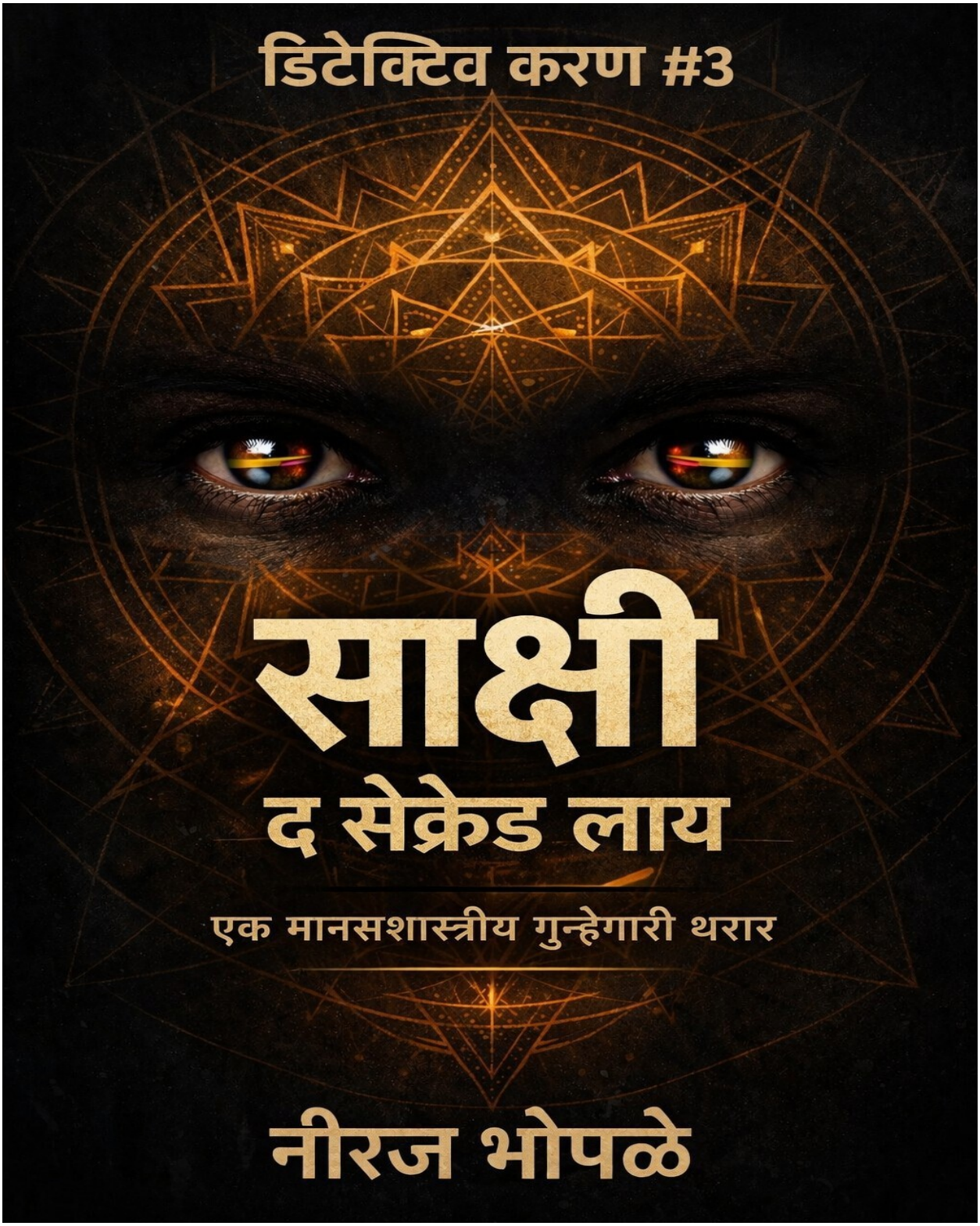

साक्षी

द सेक्रेड लाय

एक मानसशास्त्रीय गुन्हेगारी थरार

नीरज भोपळे

□□□□□ □□□ #3

□□□□□□

□□ □□□□□□ □□□

□□ □□□□□□□□□□□□□ □□□□□ □□□□□□

□□□□

□□□□ □□□□□□

कॉपीराइट © नीरज भोपाले
सर्वाधिकार सुरक्षित। इस प्रकाशन का कोई भी भाग लेखक की पूर्व लिखित अनुमति के बिना, फोटोकॉपी, रिकॉर्डिंग या किसी भी इलेक्ट्रॉनिक या यांत्रिक माध्यम सहित किसी भी रूप में या किसी भी माध्यम से पुनरुत्पादित, वितरित या प्रसारित नहीं किया जा सकता है, सिवाय आलोचनात्मक समीक्षाओं और कॉपीराइट कानून द्वारा अनुमत कुछ अन्य गैर-वाणिज्यिक उपयोगों के।
अनुमति के लिए neerajbhople@gmail.com पर लिखें।
भारत में पहली बार 2026 में प्रकाशित। नीरज भोपाले को लागू कानून के तहत इस पुस्तक के लेखक के रूप में पहचाने जाने का नैतिक अधिकार है।
इस कार्य से संबंधित कोई भी विवाद पुणे, महाराष्ट्र, भारत की अदालतों के अनन्य क्षेत्राधिकार के अधीन होगा।

अस्वीकारण
यह एक काल्पनिक रचना है। इस कहानी में वर्णित सभी पात्र काल्पनिक हैं और किसी भी जीवित या मृत व्यक्ति से उनकी समानता संयोगवश और अनजाने में है। प्रकाश सेवा फाउंडेशन और इसमें वर्णित सभी संगठन भी काल्पनिक हैं, जिनका किसी वास्तविक संगठन से कोई संबंध नहीं है।
भौगोलिक दृष्टि से, कुछ स्थान वास्तविक हैं, जिन्हें कथा की सीमा के भीतर यथासंभव सटीक रूप से प्रस्तुत किया गया है। पात्रों या काल्पनिक आधारों से संबंधित विशिष्ट पते और संपत्तियों का संबंध वास्तविक भौगोलिक क्षेत्रों से है।
यह उपन्यास महाराष्ट्र की भक्ति और धार्मिक परंपराओं से जुड़ा है। ये जीवंत परंपराएं हैं जिनका गहरा इतिहास और अपने-अपने समुदाय हैं। लेखक इस विषय को सच्चे सम्मान के साथ प्रस्तुत करते हैं और उनका उद्देश्य किसी भी पाठक, समुदाय या परंपरा की धार्मिक भावनाओं को ठेस पहुंचाना नहीं है। जहां कहानी में अनुष्ठानिक प्रथाओं का अधूरा या गलत वर्णन है, वे त्रुटियां पूरी तरह से उन काल्पनिक पात्रों की हैं जिन्होंने उन्हें गढ़ा है - न कि उन परंपराओं की जिनका वे चित्रण करते हैं।
पवित्र विषयों से संबंधित कथा साहित्य में एक विशेष जिम्मेदारी होती है। लेखक ने उस जिम्मेदारी का सम्मान करने का पूर्ण प्रयास किया है।

□□□□

□□□□□□□□□□

□□□□

□□□□□□□□□□□

□□□□□□□ 1 - □□□ □□□□

□□□□□□□ 2 - □□□□□□□□□ □□□

□□□□□□□ 3 - □□□□□□□□□ □□ □□□□

□□□□□□□ 4 - □□□ □□ □□□□ □□ □□□

□□□□□□□ 5 - □□□□ □□□□□□ □□□ □□□□

□□□□□□□ 6 - □□ □□□□□ □□

□□□□□□□ 7 - □□□□ □□ □□□□

□□□□□□□ 8 - □□□□ □□ □□□□□□

□□□□□□□ 9 - □□□□□□ □□□□ □□□ □□□□□□

□□□□□□□ 10 - □□□□□□□ □□□□

□□□□□□□ □□ - □□□□□□□

□□□□□□□ 12 - □□□□□

□□□□□□□ □□ - □□□□□□□

□□□□□□□ 14 - □□□ □□□□

□□□□□□□ 15 - □□□□□□

□□□□□□□ 16 - □□□□□□

□□□□ □□□□□□□□□

□□□□ □□□□□□ □□ □□□□ □□□□□□□□

  □□□□□□ □□□□□□□□

  □□□□□

  □□□□□□□ □□ □□□□□□□□□□□□

प्रस्तावना
अक्टूबर में एक मंगलवार की शाम, जांच शुरू होने से तीन सप्ताह पहले, सविता वाघ रात के खाने के बाद चालीस मिनट तक हारमोनियम बजाती हैं।
उसका फ्लैट नासिक के गंगापुर रोड पर एक इमारत की दूसरी मंजिल पर है - दो कमरे, एक रसोईघर, एक छोटी सी जालीदार छत जिस पर एक रंगीन टिन के गमले में मनी प्लांट लगा है, जिसकी वह ऐसे देखभाल करती है मानो वह उसी पर निर्भर हो। हारमोनियम मुख्य कमरे की दीवार के सहारे, किताबों की अलमारी और खिड़की के बीच की जगह में रखा है। यह चालीस साल पुराना वाद्य यंत्र है, उसकी माँ का, जो उसकी माँ की शादी के एक साल बाद सोलापुर से लाया गया था और सविता को उसकी माँ के निधन के वर्ष दिया गया था। अब यह ग्यारह साल पुराना है, यानी हारमोनियम ग्यारह साल से इसी फ्लैट में है और इसकी धुनें एक ऐसे वाद्य यंत्र की विशिष्ट कोमलता लिए हुए हैं जिसे अक्सर और अच्छे से बजाया गया हो।
वह भजन गाती है। प्रदर्शन के तौर पर नहीं - वह प्रशिक्षित गायिका नहीं है और उसने कभी खुद को गायिका नहीं बताया है - बल्कि उस अंदाज़ में जैसे किसी के लिए वादन एक चिंतन का रूप है, हाथों से तारों को छूकर वह काम करना जो मन को चाहिए लेकिन अकेले नहीं कर सकता। वह शाम को, स्कूल का काम और खाना खत्म होने के बाद, जब फ्लैट में शांति होती है, तब अपने लिए वादन करती है।
वह एक अच्छी शिक्षिका हैं। उनके छात्र बिना पूछे ही यह बात कह देते हैं, यह एक सटीक माप है। वह अपने घर से दो किलोमीटर दूर एक माध्यमिक विद्यालय में मराठी भाषा और साहित्य पढ़ाती हैं। वह वहां सोलह वर्षों से पढ़ा रही हैं। वह छात्रों की परेशानी को उनके स्वयं जानने से पहले ही जान लेती हैं, और वह बिना नाम लिए

ही समस्याओं का समाधान कर देती हैं, यह एक ऐसी खूबी है जिसे विकसित होने में वर्षों लग जाते हैं।
आज रात वह तुकाराम का एक अभंग गाती है - जिसे वह बचपन से जानती है, जिसके बोल इतने गहरे तक उसके भीतर समा गए हैं कि उन्हें ध्यान देने की आवश्यकता नहीं है, जिससे मन को वह करने की स्वतंत्रता मिलती है जहाँ उसे जाना चाहिए। वह अपने द्वारा आयोजित फाउंडेशन रिट्रीट के बारे में सोचती है, जो अब तीन सप्ताह से चल रहा है, और उस महिला के बारे में सोचती है जिससे उसने बाद में बात की - पुणे की एक पारंपरिक चिकित्सा विशेषज्ञ, कार्यशाला के दौरान उसने जो कठिन प्रश्न पूछे, और उसकी स्पष्टवादिता।
उसने उस महिला को निवेश की पुष्टि कर दी थी। उसने कहा था: हाँ, जैसा कहते हैं वैसा ही है। जब उसने यह कहा था तब उसे इस बात पर पूरा विश्वास था। शायद अब भी उसे इस पर पूरा विश्वास है। उसके भीतर का एक छोटा सा हिस्सा – वही हिस्सा जो किसी छात्र के मुसीबत में होने का पता उसके खुद जानने से पहले ही लगा लेता है – अब फाउंडेशन के संदेशों को इस नजरिए से देख रहा है जैसे कोई यह सोचने लगा हो कि वह किन बातों में गलत साबित होना चाहता है।
वह खेलना बंद कर देती है।
वह सलाखों पर हाथ रखकर बैठी है, चावल खत्म हो चुके हैं, फ्लैट एकदम शांत है और वह सोच रही है कि अगर वह गलत हुई तो वह क्या करेगी।
वह किसी नतीजे पर नहीं पहुंचती। कल उसे और भी काम करने हैं और उसके विचार अभी इतने प्रबल नहीं हैं कि उन पर अमल किया जा सके। वह हारमोनियम का ढक्कन बंद करती है, बगल में रखी अलमारी पर रखे कपड़े से उसे पोंछती है, लैंप बंद करती है और सोने चली जाती है।

तीन सप्ताह में कोई सीताराम मंदिर के प्रांगण में आएगा और उस विचार का कोई महत्व नहीं रह जाएगा।
यह हारमोनियम आठ महीने तक फ्लैट में, किताबों की अलमारी और खिड़की के बीच की दीवार के सहारे रखा रहेगा, जब तक कि सोलापुर से कोई रिश्तेदार इसे लेने नहीं आ जाता।
जिस दिन इसे ले जाया जाएगा, उसी दिन इसे एक बार फिर से बजाया जाएगा, जब रिश्तेदार की किशोर बेटी इसे ढूंढ लेगी और पूछेगी कि क्या वह इसे बजा सकती है।
वह एक सुर बजाती - एक अकेला, लंबा सुर - और कमरा चालीस साल पुराने वाद्य यंत्र की ध्वनि से भर जाता, जो अपनी कोमलता में अपना इतिहास समेटे हुए था, और रिश्तेदार दरवाजे पर खड़ा रहता और एक पल के लिए कुछ नहीं कहता।
तब वह कहेगी: हमें चलना चाहिए।
और वे चले जाएंगे।

अध्याय 1 - नमक रेखा
आधी रात को फोन की घंटी बजी। पहले एक सेकंड की खामोशी सुनकर ही मैं समझ गया कि किस तरह की कॉल है।
ऐसा इसलिए नहीं है कि करण ने कुछ कहा। उसने कुछ नहीं कहा। बात बस उस पहले पल की है, जब उसे जानकारी मिलती है और फिर वह उसके बारे में सोचने लगता है। करण के मामले में, यह उसके चेहरे पर साफ दिखता है। ठीक वैसे ही जैसे कनेक्शन खराब होने पर उसका चेहरा दिखता है - ऐसा लगता है जैसे वह वहां मौजूद ही नहीं है। मैंने दो किताबों में इस खामोशी का अनुभव किया है, और इसका मतलब हमेशा एक ही होता है।
उसने पूछा, "कहाँ?" फिर उसने कहा, "हाँ।" उसकी आवाज़ में समझ और कठोर स्वीकृति के बीच का भाव था। उसने फ़ोन काट दिया।
तीस सेकंड बाद, उसके कमरे की बत्ती जल गई।

***

मुझे आपको उस पहले अपराध स्थल के बारे में कुछ बताना है जिसे मैंने उसके साथ देखा था।
उस समय मैं करण के 'रिकॉर्ड कीपर' या 'दस्तावेज़ीकरण सहायक' के रूप में काम कर रहा था - यह भूमिका मुझे संयोगवश मिली, क्योंकि मैं उनके साथ रहता था और एक मामले में उनके साथ रहने का मौका मिला था। तब तक मैंने काफ़ी सस्पेंस उपन्यास पढ़ लिए थे। उन सभी किताबों में एक बात स्पष्ट थी: पहला अपराध स्थल हमेशा दिल को झकझोर देने वाला होता है, सोचने पर मजबूर करता है, या दोनों। दर्शक या तो उल्टी कर देता है या काम के नाम पर सब कुछ सामान्य मान लेता है।
मेरे साथ वास्तव में क्या हुआ, मैंने उन जगहों को गिना - मैं बेहोश हो गया, मैं गिर पड़ा, फिर जब मुझे होश आया।

***

मैं ठीक-ठीक नहीं कह सकता कि मैंने यह कब शुरू किया। भवानी पेठ स्थित मिल में पहुँचने के पहले दो मिनट के भीतर ही। मुझे घेराबंदी तोड़कर अंदर जाने दिया गया क्योंकि वहाँ मौजूद सिपाही करण को जानता था। उसने मुझे ऐसे देखा मानो वह हिसाब लगा रहा हो कि 'रिकॉर्ड रखने वाले' को वहाँ रहने की अनुमति है या नहीं, लेकिन फिर उसने यह हिसाब ज़ोर से न लगाने का फैसला किया। मैं मिल में शायद 90 सेकंड तक रहा, मुझे वहाँ की गंध आई - तेल की गंध, जलती हुई बत्तियों की गंध, गर्म धातु की गंध, और वह पुरानी औद्योगिक गंध जो दशकों से किसी काम की न रही इमारत में जमा हो जाती है - और मैं चल रहा था, तभी अचानक मेरे पैर रुक गए। उन्होंने मुझसे सलाह लिए बिना ही ऐसा किया। मुझे पता भी नहीं चला और मुझे लगा जैसे मेरा काम रोक दिया गया हो।
मैं एक तरफ मुड़ा और दीवारों से टिकी पटरियों को गिना। सात। नालीदार लोहे की बनी भंडारण इकाइयाँ। चार। सबसे ऊपर वाली पंक्ति की खिड़कियाँ, सही सलामत। आठ में से तीन।
फिर मैं पीछे मुड़ी। मैंने अपने बैग से नोटबुक निकाली। मुझे एक पेन मिला। मैंने पन्ने के ऊपर तारीख और समय लिखा, वही पहली चीज़ जो करण ने मुझे एक साल पहले एक अलग मामले में लिखने के लिए कहा था, और जो अब एक तयशुदा तरीका बन गया था।
लिखने से मदद मिली। तब मुझे पता नहीं था कि इससे मदद क्यों मिली। अब मुझे बेहतर पता है।
पुणे में स्थित यह मिल एक परित्यक्त औद्योगिक संपत्ति थी, जो एक शहर को विचित्र रूप से गढ़ती और बनाए रखती है – 1970 के दशक का कपड़ा उद्योग, जब अर्थव्यवस्था में बदलाव आया, मिल बंद हो गई, और पंद्रह वर्षों तक एक रियल एस्टेट पोर्टफोलियो में पड़ी रही,

सात तेल के दीपक एक पूर्ण वृत्त में व्यवस्थित थे, प्रत्येक दीपक धीमी और स्थिर लौ से जल रहा था। लौ एकसमान थी – न लगभग एकसमान, न ही लगभग एकसमान, बल्कि एकसमान, मानो किसी ने उन्हें सटीक रूप से मापा हो। वे लगभग तीन मीटर के दायरे में गर्म सुनहरी रोशनी बिखेर रहे थे, और चक्की के चारों ओर फैले अंधेरे में, यही एकमात्र प्रकाश था, जिससे वृत्त के अंदर का भाग दिखाई दे रहा था जबकि बाहर का सब कुछ धीरे-धीरे छाया में डूब रहा था। दीपक मिट्टी के थे – महाराष्ट्र भर में हिंदू पूजा में उपयोग किए जाने वाले अंगूठे के आकार के छोटे तेल के दीपक – उन्हें सीधे कंक्रीट के फर्श पर रखा गया था, प्रत्येक को एक छोटे, साफ किए हुए धूल भरे स्थान पर रखा गया था जो देखने में ऐसा लग रहा था मानो उन्हें जानबूझकर सावधानी से रखा गया हो। दीपकों के बीच का फर्श समतल किया गया था।
कंक्रीट पर चाक से एक वृत्त खींचा गया था, जिसे बनाने में काफी मेहनत और सटीकता लगी होगी। रेखा की चौड़ाई लगभग 3 सेंटीमीटर थी, जो दीपों की व्यवस्था के भीतरी घेरे पर, प्रत्येक दीप से लगभग 30 सेंटीमीटर अंदर की ओर खींची गई थी। इस वृत्त के भीतर, सफेद चाक से आठ दिशासूचक चिह्न बनाए गए थे, जो मुख्य और मध्य दिशाओं को दर्शाते थे। ये चिह्न एक ऐसी परंपरा से संबंधित थे जिसका नाम मैं उस रात नहीं बता सका, लेकिन बाद में मुझे इसके बारे में अच्छी तरह से पता चला - पश्चिमी महाराष्ट्र की क्षेत्रीय शनि उपासना परंपरा में एक पवित्र स्थान के चारों ओर आठ दिशाओं की विशिष्ट ऊर्जाओं का आह्वान करने की एक विधि। इन्हें बड़ी सावधानी और ज्ञान के साथ बनाया गया था।
चाक के घेरे के बाहरी किनारे पर, काले नमक की एक रेखा - या जो काले नमक जैसी दिखती थी - 3 सेंटीमीटर चौड़ी, समतल और संयमित,

ऐसी बिछाई गई थी मानो किसी ने मापक यंत्र से माप लिया हो, भले ही वह मन ही मन माप रहा हो। नमक की रेखा के चारों ओर काले पंख थे। 30, शायद 40, समान दूरी पर कंक्रीट पर चपटे करके चिपकाए गए थे, प्रत्येक पंख घेरे के केंद्र की ओर अंदर की ओर इशारा कर रहा था, जैसे घड़ी के डायल पर अंक।
और इन सबके केंद्र में - रोशनी, चाक के घेरे, दिशासूचक चिह्न, नमक की रेखाएं, पंख - एक आदमी था।
वह घुटनों के बल बैठा था।
न तो वे गिरे थे, न ही धराशायी हुए - घुटनों के बल, सक्रिय प्रार्थना की मुद्रा में, उनके घुटने कंक्रीट पर टिके थे, पीठ सीधी थी, हाथों की कलाइयाँ सफेद सूती रस्सियों से बंधी थीं, जिन्हें इस तरह लपेटा गया था कि हथेलियाँ आपस में सटी हुई थीं और उंगलियाँ ऊपर की ओर फैली हुई थीं। प्रार्थना की मुद्रा। रस्सियाँ कसकर बंधी थीं, लेकिन क्रूरता से नहीं। उनका चेहरा उत्तर दिशा की ओर था, जो उस पूजा के लिए उपयुक्त दिशा थी जिसके लिए यह किया जा रहा था। उनके सिर पर काले तिल की एक छोटी सी टहनी थी, जो शनि की पूजा में सम्मान और सुरक्षा दोनों के प्रतीक के रूप में अर्पित की गई थी। उनकी सफेद कमीज की आस्तीनें दोनों तरफ कोहनी तक सावधानीपूर्वक मोड़ी हुई थीं। उनकी धूसर पतलून इस्त्री की हुई थी। उनके भूरे चमड़े के जूते साफ थे। 10 मीटर दूर से देखने पर, वे ऐसे व्यक्ति प्रतीत होते थे जो अपनी भक्ति के बीच अचानक रुक गए हों।
उसका चेहरा राख से काला पड़ गया था।
न पोंछा गया, न जल्दबाजी में ढका गया - बल्कि बड़े करीने से लगाया गया। राख को पूरे चेहरे पर एक विशेष तरीके से, बड़ी सावधानी से लगाया गया था: माथे और आंखों के आसपास के क्षेत्र

[illegible]

[illegible]

[illegible]:

> *[illegible]*

***

[illegible]

उंगलियों को अपने पास रखी टॉर्च - एक छोटी, केंद्रित किरण - पर रखा और घर्षण से होने वाले परिणाम को देखा।
उन्होंने कहा, "आयोडीन युक्त।"
मेरे लिए इसका कोई मतलब नहीं था। मैंने बस इसे लिख लिया था।
वह उठा और घटनास्थल के बाहरी घेरे का चक्कर उसी सावधानी और निडरता से लगाने लगा, जिस गति से वह उन चीजों का निरीक्षण करता है जिन्हें समझने के बजाय पढ़ना जरूरी होता है—एक ऐसी गति जो जानती है कि घटनास्थल एक पाठ है और जिसने सबसे जरूरी लगने वाले अंशों पर जाने के बजाय शुरुआत से पढ़ने का फैसला किया है। वह पूरब की ओर लगे दीपक के पास रुका। वह बैठ गया और मशाल को बत्ती के पास ले आया, इतना पास कि मेरा कुछ कहने का मन हुआ, लेकिन अपराध स्थल पर करण का सावधानी से रिश्ता आम सावधानी से अलग होता है। “सभी बत्तियाँ एक ही लंबाई की हैं,” उन्होंने कहा। मुझसे नहीं, बल्कि खुद से, जैसे वे आंतरिक रिकॉर्ड के लिए कुछ लिखते समय करते थे। “पहले से कटी हुई। मिलीमीटर तक।” वे सीधे खड़े हो गए और अपनी टॉर्च को लैंपों की कतार पर घुमाते हुए, जहाँ खड़े थे वहीं से हर बत्ती की जाँच करने लगे। “पेशेवर तरीके से तैयार की गई हैं। किसी ने कहीं बैठकर धागे के 7 टुकड़े एक ही लंबाई में काटे हैं।” वे रुके। “आज रात पहले। इन्हें पहले से ही काटकर यहाँ लाया गया है।”
वह पूर्वी लैंप के पास फिर से बैठ गया और टॉर्च को ज़मीन के स्तर पर लाकर, सतह को कम कोण से देखने के लिए उसकी रोशनी को झुका दिया। तिरछी रोशनी ने सीधी रोशनी में छिपी हुई एक आकृति को उजागर किया: लैंप के आधार पर कंक्रीट की धूल में एक धुंधला सा मेहराब—एक अधूरा गोलाकार निशान, जो कंक्रीट की सतह पर कंपास की नोक से मजबूती से खींचे गए निशानों जैसा था।

"एक दिशा सूचक चिह्न," उसने कहा।
मैं उसके पास गया और उसके बगल में बैठ गया। एक बार जब मुझे पता चल गया कि क्या देखना है, तो निशान एकदम स्पष्ट था - एक सटीक चाप, शायद 3 सेंटीमीटर त्रिज्या का, जो ठीक उसी बिंदु पर केंद्रित था जहाँ लैंप का आधार था। किसी ने एक मापी हुई जगह पर कंपास रखा था, चाप को चिह्नित करने के लिए उस पर रेखा खींची थी, और लैंप को ठीक उसी चिह्नित बिंदु पर रख दिया था।
मैंने कहा, "हर लैंप को इस तरह रखा जाता है। कंपास का इस्तेमाल करके।"
"हर लैंप और हर निशान," करण ने कहा। वह खड़ा हुआ और टॉर्च को वृत्त के अंदर चाक के निशानों पर घुमाते हुए, किरण को एक ही निचले कोण पर रखता रहा। हर निशान के नीचे, एक ही धुंधला सा चाप बना हुआ था। 8. हर निशान एक ज्यामितीय रूप से सटीक स्थान पर था, जिसे पहले कंपास से चिह्नित किया गया और फिर खींचा गया। "कानूनी रूप से सटीक नहीं। ज्यामितीय रूप से सटीक। उसे स्थानों की सटीकता इस तरह चाहिए थी कि उसका अनुमान इसकी गारंटी नहीं दे सकता था, इसलिए उसने उन्हें मापा।"
वह चक्कर लगाता रहा। वह उत्तरी रोशनी के पास फिर रुका और लौ के आधार पर बैठ गया, उसके करीब झुककर।
“पहले तेल में भिगोए हुए,” उन्होंने कहा। “भंडारण से पहले सुखाए गए। कम से कम अड़तालीस घंटे।” उन्होंने कतार में नीचे की ओर देखा और दीपों के जलने के स्तर की तुलना की। “सातों के सातों। ईंधन की मात्रा एक समान, बाती की ऊँचाई एक समान, जलने की दर एक समान।” वे एक पल के लिए चुप रहे। “किसी ने कहीं, आज रात से दो दिन पहले, धागे के सात टुकड़े एक ही लंबाई में काटे, उन्हें तेल में भिगोया और सूखने दिया। फिर उन्हें यहाँ लाया गया, तैयार किया

□□□, □□□□□□□□□□ □□□□ □□□□" □□ □□□□□ "□□□□ □□ □□ □□□□□□ □□□□ □□ □□□ □□□□□ □□ □□ □□□ □□ □□ □□ □□□□□ □□ □□□□ □□ □□□□□ □□ □□□ □□ □□□ □□□□ □□□□□ □□□□ □□□□□ □□ □□□ □□□□□□□□ □□ □□□ □□□□ □□□□"
□□□□□ □□□□:

> *□□□□□ □□ □□□□□□ □□ □□ □□ □□ □□□ □□□□ □□□□ □□ □□ □□□ □□□□ □□ □□□ □□□, □□□□ □□□ □□□□□ □□□ □□□□□□□□ □□□□□ □□□□ □□□□□□□□ □□ □□□ □□ □□□□ □□□ □□□□□□□ □□ □□□□□□□□ □□ □□□□□□□ □□□□□□□ □□□□□ □□□*

□□ □□ □□ □□□□□ □□□□□ □□□ □□ □□ □□ □□ □□□□□ □□ □□□□□ □□□□□□□□ □□□□□ □□ □□□□ □□□□□ □□□ - □□ □□□ □□□□

□□□□ □□□ □□□□ □□□ □□ □□□□□ □□ □□ □□□□□□□□ □□□□ □□ □□ □□ □□□□ □□□□□ □□ □□□□□□ □□ - □□□ □□ □□ □□□ □□□□ □□□□ □□□ □□□□□□□□□ □□□ □□□□ □□ □□ □□□ □□□□ □□ □□□□ □□ □□ □□□□ □□□□ □□□□□ □□ □□□□□ □□ □□□ □□□

"□□," □□□□ □□□□

□□□ □□□□ □□□ □□□ □□ □□□ □□ □□□□□ □□ □□□□□ □□ □□□□□□□ □□□□ □□□□□□□ □□□□ □□ □□ - □□□ □□□□, □□□ □□□, □□□ □□□□□□□□□□□□□□ □□□□□ □□□ □□□□□□

□□□□□ □□□□ □□□ □□?

□□□□□□□□ □□□, "□□ □□□□□□□ □□□□□ □□□ □□□□ □□□□ □□□□□ □□□□ 180 □□□□□□ □□□□"

□□□□□ □□□□□□ □□□□□ □□□□□□□ □□□□ □□□ □□ □□ □□□□ □□□□□ □□, □□□ □□ □□□ □□□□ □□□□ □□□ □□□□ "□□□□ □□□□□ □□□ □□□□ □□?"

□□ □□ □□ □□ □□□ □□□ □□□□ □□□ □□□□ □□□□ □□□ □□ □□□ □□□ □□□, □□ □□□□ □□ □□□ □□□□□□ □□ □□□□□□ □□□□□ □□□ □□□□ □□□□ □□ □□□□ □□

□□□, □□□□□ □□□□□ □□□□ □□□□ – □□□□, □□□□□ □□□□□ □□ □□ □□□□□ □□□ □□□□□ □□□□ □□□

□□□□□ □□□□:

> *□□□□□ □□ □□□□□ □□□□□, 180 □□□□□□ □□□□□□ □□□□ □□□ □□ □□□□ □□□□□ □□□ □□□□ □□□□□ □□ □□ □□□ □□□□ □□, □□ □□□ □□□ □□□ □□ □□□□ □□□□ □□□*

□□ □□□□□□□ □□□□ □□ □□□ □□ □□□□ □□□ □□ □□□ □□□□ □□ □□□ □□□□ □□□□□□□ □□□□ □□□ □□ □□□ □□□□□ □□□□ □□□ □□□□ □□ □□□□□ □□□ □□□ □□ □□□□-□□□□ □□□□□□□

□□□□□□□□ □□□, "□□□□□□□□"

□□□□□ □□□ □□ □□□□□ □□ □□□ □□□□ □□ □□□ □□□ □□□

"□□□□□□□□□□," □□□□□□□□ □□□□ "□□□□□ □□ □□□□□" □□□□□□□□ □□□□□□ □□□□□ □□ □□□ □□□□ □□□□□□□ "□□ □□□□ □□ □□ □□□□□ □□ □□, □□ □□ □□□ □□ □□, □□ □□□ □□ □□ □□ □□□□ □□ □□□ □□□□□□□□□ □□□ □□□ □□□□ □□□ - □□□ □□□□□ □□□□□□□ □□ □□□□ □□□□□ □□□□□□ □□ □□□□ □□□, □□□, □□□ □□ □□ □□□□□ □□□□□ □□ □□□□□□□ □□□□□□□□□□□□ □□ □□□□ □□□□ □□□□ □□ □□□□□□□□□ □□□ □□□ □□□□ □□□□-□□□□ □□□□□□□□□□□ □□□□ □□□ □□ □□□ □□ □□□□□ □□ □□□ □□□□ □□□□□, □□□□□ □□□□□ □□ □□□□□ □□ □□□□□ □□□ □□ □□□□ □□□□" □□□□□□□□ □□□ □□ □□□ □□□ □□□ □□□□□ "□□ □□□ □□ □□□□□□□ □□□ □□□□ □□ □□, □□□□□□ □□ □□□□□□ □□□ □□□□ □□□ □□□ □□□□ □□ □□, □□ □□□□□□□□□ □□ □□□□□ □□ □□□□ □□ □□□ □□□□ □□ □□□□ □□□□□□□□ □□ □□□ □□□□ □□□□□ □□ □□□□ □□□ □□ □□□□□□□ □□□ □□□□□ □□□, □□ □□□□ □□□□ □□ □□□□ □□□□□□□ □□ □□□ □□ □□□□□ □□ □□ □□□□□□□ □□□□ □□□ □□ □□□□□ □□□□□□□□ □□□ □□□□□ □□□ □□□ □□□□□□□" □□□□ □□□ □□□□ □□□□ □□ □□□□ □□□□ □□ □□□□ □□□ □□□□□ □□ □□ □□□□ □□ □□□□

[illegible]:

*[illegible], [illegible] [illegible] [illegible]

[illegible]
[illegible], "[illegible]"
"[illegible]?"
[illegible] [illegible] [illegible] [

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]:

[illegible]

[illegible]

***

[illegible]

थीं कि चक्की के पास किसी की हलचल पर किसी का ध्यान नहीं जाता। वह दो थैले लेकर आया। एक थैले में दीपक थे - शहर के मंदिरों के पास स्थित कई दुकानों से खरीदे गए 7 मिट्टी के दीपक, सभी एक जैसे, और तेल। दूसरे थैले में सामग्री थी: चपटे बर्तनों में तैयार, मापी हुई, सूखी बत्तियाँ; सीलबंद पैकेट में नमक; कागज में लिपटे पंखों के बंडल; चाक, एक कम्पास और एक रूलर।
प्रवेश उत्तरी दरवाजे से हुआ था - जिस पर ताला लगा हुआ प्रतीत हो रहा था - हालांकि बाहर निकलते समय दरवाजा खुला छोड़ दिया गया था।
पहले दूसरा थैला नीचे रखा गया और उसमें से कंपास और चाक निकाले गए।
अब हिंसा नहीं, बल्कि धैर्य की आवश्यकता थी। उस व्यक्ति ने पिछली मुलाकात में ज़मीन पर एक केंद्रीय बिंदु चिह्नित किया था, और उसी बिंदु से कंपास ने चाक से एक आंतरिक वृत्त खींचा। इसके लिए अंधेरे में कंक्रीट पर घुटने टेकने की आवश्यकता थी - शायद एक छोटी टॉर्च जलाकर या बगल में रखे लैंप की रोशनी में - और पूरे समय कंपास की सुई को ज़मीन पर स्थिर रखना था, जो न तो सीधी थी और न ही समतल। जब हमने चाक की रेखा की जाँच की, तो वह चौड़ाई और वक्रता में एक समान थी। वह हिली नहीं। यह किसी ऐसे व्यक्ति द्वारा खींची गई थी जिसे नियमित अभ्यास था, या जिसे ज़मीन पर वृत्त खींचने का विशेष धैर्य था, और यह उसके लिए पहली बार नहीं था।
फिर, उसी कंपास को बड़ी त्रिज्या पर सेट करके, उसने वृत्त के बाहरी किनारे पर 8 बिंदु खींचे - ये मुख्य और केंद्रीय दिशाएँ थीं, जिन्हें अनुमान से नहीं बल्कि एक उपकरण की सहायता से मापा गया था। प्रत्येक चिह्नित बिंदु पर उसने एक दिशा चिह्न बनाया।

ये चिह्न अपने मूल रूप में तो सटीक थे, लेकिन इनके आंतरिक अनुपात गलत थे, जो केवल एक तस्वीर देखकर ज्ञात नहीं हो सकते थे - ये मूल अनुपात केवल उस परंपरा में काम करने वाले साधकों को ही ज्ञात थे, किसी भी सामान्य शोध से प्राप्त स्रोत में इनका कोई रिकॉर्ड नहीं था। चिह्न बनाने वाले को आकृति तो ज्ञात थी, लेकिन अनुपात नहीं।
फिर नमक की एक पंक्ति, जिसे किसी औजार से बिछाया जाता है - शायद एक पतली गत्ते की पट्टी जिसे टेम्पलेट के रूप में इस्तेमाल किया जाता है, ताकि 3 सेंटीमीटर की एक समान चौड़ाई बन सके। बाहरी चाक के घेरे का पूरा वृत्त। बहुत सावधानी से, पहले से बिछाई गई परत को हिलाए बिना।
फिर नमक की रेखा के चारों ओर एक निश्चित दूरी पर चपटे किए गए पंख। बाद की गिनती के अनुसार अड़तीस।
फिर कम्पास से चिह्नित स्थानों पर 7 दीपक रखे गए, जिनमें से प्रत्येक में पहले से कटी हुई, पहले से भिगोई हुई बाती लगी हुई थी, और लाए गए तेल के फ्लास्क से समान स्तर तक भरी हुई थी।
तभी - जब पूरी संरचना तैयार हो गई, ज्यामिति सटीक हो गई, दृश्य पूरी तरह से तैयार हो गया - तब मृत व्यक्ति को लाया गया।
चक्की पहुँचने से पहले ही वे बेहोश हो गए थे। बाद में फोरेंसिक जांच से यह बात साबित हुई: एक खास तरह की बेहोशी की दवा, जिसे चिकित्सा या दवा विज्ञान का ज्ञान रखने वाले व्यक्ति ने इतनी मात्रा में दी थी कि मौत हुए बिना बेहोशी आ जाए। वे कहीं और बेहोश हुए थे - उनके जूतों पर लगी धूल से पता चलता है कि वे पेठ की गलियों में बेहोश हुए थे, उनके दफ्तर और इस इमारत के बीच कहीं
- और इमारत पूरी होने पर उन्हें यहाँ लाया गया। उन्हें ध्यान से

प्रार्थना की मुद्रा में लिटाया गया। रस्सियों को ध्यान से लपेटकर बांधा गया। उनके चेहरों पर ध्यान से राख लगाई गई।
फिर, उसकी छाती में चाकू घोंप दिया गया। बहुत ही बेरहमी से। फिर एक-एक करके दीप जलाए गए, इस क्रम में कि अगले कुछ घंटों में एक समान ऊंचाई की एक समान लपटें उत्पन्न हों।
और जिसने इसे लगाया था वह चला गया, और उसके बिना ही दृश्य चलता रहा, अंधेरे में लौ जलती रही और खाली चक्की गर्म सुनहरी रोशनी के घेरे में नहाती रही जब तक कि रात 11:45 बजे चौकीदार ने उसे नहीं ढूंढ लिया।
पहले दीपक से लेकर आखिरी दीपक तक, पूरी प्रक्रिया एक ही व्यक्ति या एक से अधिक कुशल व्यक्तियों का काम थी। विधि। धैर्य। सटीकता। एक तरह की औपचारिकता और औपचारिकता के बीच का कुछ। मुझे ये सब पहली रात पता नहीं था। अगले हफ्ते फॉरेंसिक सबूतों से और अपार्टमेंट में अलग-अलग समय पर करण और मेरे बीच हुई लंबी बातचीत से मुझे ये सब पता चला। लेकिन मैं इसे यहाँ इसलिए लिख रहा हूँ क्योंकि इसी संदर्भ में इन गलत जानकारियों को समझना ज़रूरी है - आयोडीन युक्त नमक, कृत्रिम पंख, पहले से कटी हुई बत्तियाँ, 180 डिग्री उल्टा लगा हुआ साइनबोर्ड। ये किसी जल्दबाज़ी में, डरे हुए या लापरवाह आदमी की गलतियाँ नहीं थीं। ये उस आदमी की गलतियाँ थीं जिसने असाधारण सावधानी से काम किया था, फिर भी ये हो गईं। यानी, ये किसी भी मायने में गलतियाँ नहीं थीं।

***

सब-इंस्पेक्टर धोले दोपहर 12:40 बजे पहुंचे। वे दो सैनिकों और एक ऐसे व्यक्ति के शव को लेकर आए थे जिसे नींद से जगाया गया था। उन्होंने कहा: "करो।"

करण ने कहा: "ढोले साहब।"
"कमिश्नर ने मुझे सीधे मेरे निजी नंबर पर फोन किया," धोले ने कहा। कुछ स्थापित करने के लिए।
"हां," करण ने कहा। "उन्होंने पहले मुझे फोन किया।" वह थोड़ी देर रुका। "मुझे फोन आया, फिर आपको।"
उसने खुशी-खुशी और सही-सही कहा। ढोले थोड़ा उलझन में पड़ गया। फिर उसने जल्दी से आसपास का दृश्य देखा और महसूस किया कि यह उसकी वर्तमान समझ से परे है।
वे काफी देर तक लैंप की रोशनी के किनारे खड़े रहे। ढोले, जिसने अपराध के कई दृश्य देख लिए थे, ने तुरंत अगली प्रक्रिया शुरू नहीं की। वह बस देखता रहा। सात बत्तियाँ। चाक से बनी आकृतियाँ। बीच में खड़ा आदमी।
"मैं क्या देख रहा हूँ?" उसने कहा।
"यह एक बनावटी अनुष्ठान का दृश्य है," करण ने कहा। "लगभग निश्चित रूप से यह असली नहीं है। नमक आयोडीन युक्त है - जो किसी भी पारंपरिक शनि चक्र के लिए गलत है। पंख कृत्रिम हैं - पॉलिएस्टर के, कारीगरी की गुणवत्ता वाले, इस तरह से हूबहू हैं जैसे प्राकृतिक पंख हो ही नहीं सकते। बत्तियाँ मिलीमीटर की सटीकता से पहले से कटी हुई और पहले से भिगोई हुई हैं। हर दीपक और प्रतीक को कंपास की मदद से रखा गया है। शव को लाया जाता है - उसके जूतों पर सड़क की धूल है, ज़मीन पर कुछ भी नहीं है। और उत्तर से तीसरा दिशा चिन्ह सही दिशा से 180 डिग्री घुमाया गया है। फिर चाकू से वार किया जाता है।"
ढोले ने इसे सुबह की ब्रीफिंग के लिए आवश्यक प्रारूप में अनुवादित किया। "और यह?"

"अभी तक पहचान नहीं हो पाई है। शव पर कोई दस्तावेज नहीं मिले हैं। रात के चौकीदार ने उसे पहले भी इस इलाके में देखा था। उसे लगता है कि वह पेठ का ही रहने वाला हो सकता है।"
जब ढोले और करण बातें कर रहे थे, मैं चौकीदार के पास गया। वह प्रवेश द्वार के पास एक प्लास्टिक की कुर्सी पर बैठा था - लगभग साठ वर्ष का, जिसकी बाहें ढीली थीं। ऐसा लग रहा था जैसे उसने अपना अधिकांश जीवन शारीरिक श्रम करते हुए बिताया हो और हाल ही में बैठने की नौकरी पर आया हो, इसलिए अभी तक उसे इसकी आदत नहीं पड़ी थी। उसके हाथ उसकी गोद में मुड़े हुए थे - वह सचेत प्रयास से अपना संतुलन बनाए हुए था।
मैं उसकी कुर्सी के बगल में बैठ गया।
"अंकल," मैंने कहा। "मेरा नाम समर है। मैं जांच दल के साथ हूं।" यह बात पूरी तरह सच नहीं थी, पूरी तरह झूठ भी नहीं थी। "क्या आप मुझे बता सकते हैं कि आपने आज रात क्या देखा?"
उन्होंने बताया। रात 11:30 बजे वे बाहर गए। उन्होंने उत्तरी दरवाजे के नीचे एक छोटी, गर्म, टिमटिमाती रोशनी देखी। वे तुरंत समझ गए कि यह बिजली की रोशनी नहीं थी क्योंकि मिल में बिजली का कनेक्शन नहीं था। उन्होंने दरवाजा खुला पाया, अंदर गए और शव देखा। उन्होंने अपने फोन से पुलिस को फोन किया और बाहर बैठकर इंतजार करने लगे, और अंदर नहीं गए।
मैंने कहा, "अंदर बैठा आदमी। क्या आपने उसे पहले कभी देखा है?" “हां, कुछ बार,” उन्होंने कहा। “आखिरी बार शायद दो-तीन महीने पहले की बात है। वो इमारत को बाहर से देखने आए थे। वो परिसर के पास टहल रहे थे। उन्होंने एक नोटबुक में कुछ लिखा। मुझे लगा कि वो नगर निगम से हैं।” वो थोड़ी देर रुके। “उन्होंने वही सफेद कमीज़ पहनी हुई थी। मुझे याद है क्योंकि उस दिन हम साथ में बाहर

[illegible] [illegible], [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]”

[illegible] [illegible] [illegible]

[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

"[illegible] [illegible] [illegible] [illegible]?"

[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] "[illegible] [illegible]," [illegible] [illegible] "[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] - [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

नंदकुमार शिंदे, 54 वर्ष के। पेठ स्थित प्रॉपर्टी डेवलपमेंट कंपनी शिंदे इंफ्राटेक के निदेशक। वे पिछले दो वर्षों से इस मिल में आते रहे थे - यह संपत्ति एक ऐसे समूह की थी जिसमें उनकी कंपनी भागीदार थी। चौकीदार ने उन्हें कुछ बार देखा था। सबसे हालिया मुलाकात, दो-तीन महीने पहले, लाल साड़ी पहने एक महिला से हुई थी।
वह पिछले तीन सालों से सप्ताहांत में अपनी भतीजी की क्रिकेट टीम को कोचिंग दे रहे थे। वह ऑफिस के कार्यक्रमों में अपनी मां की खास रेसिपी से बना चना रसम लेकर आते थे, जिसे चने, इमली और गुड़ के विशेष मिश्रण से तैयार किया जाता था और उनके सहकर्मी इसे बड़े चाव से खाते थे। उनके छोटे किराएदार उनकी बहुत प्रशंसा करते थे। रात 11 बजे उनकी पत्नी ने उनके लापता होने की सूचना दी।
उनके व्यावसायिक कैलेंडर की संपर्क सूची में, प्रकाश सेवा फाउंडेशन नामक संस्था द्वारा आयोजित एक कार्यक्रम के लिए बार-बार प्रविष्टि थी, जिसमें समन्वय संपर्क के रूप में पी. निम्बालकर का नाम दर्ज था। यह नाम कैलेंडर में नामों की तरह ही पड़ा था: महत्वहीन, किसी ऐसे संदर्भ की प्रतीक्षा में जो अभी तक आया ही नहीं था।
ये सारी जानकारी हमें अगले कुछ दिनों में मिले लोगों से मिली। उस रात मैंने बस नाम लिख लिया। और यह भी कि चौकीदार को आखिरी बार जीवित देखे जाने के समय उसके पास एक नोटबुक थी।
नोटबुक शव पर नहीं थी। क्या किसी ने उसे चुरा लिया था?

***

पेठ के दक्षिणी प्रवेश द्वार के बाहर चाय की दुकान - सुबह के दो बजे। दुकानदार ने सही अनुमान लगाया था कि इलाके के रात्रि

चौकीदार और देर रात तक काम करने वाले दफ्तर कर्मचारी सुबह दो बजे उसकी चाय की पर्याप्त मांग पैदा करेंगे। चाय बहुत कड़क और मीठी थी - सुबह दो बजे की चाय की वह श्रेणी जो दोपहर की चाय से अलग होती है। इसे कांच के कप में परोसा गया था - जो इतना गर्म था कि उसे पकड़ना मुश्किल था और ठंडा होने से पहले ही जल्दी खत्म हो गया।
करण ने अपना गिलास पकड़े हुए अपने पैरों के पास जमीन की ओर देखा।
मैं अपनी जगह पर डटा रहा और इंतजार करता रहा। करण की चुप्पी व्यर्थ नहीं होती। उसे तोड़ने का कोई फायदा नहीं। आखिरकार, इंतजार करने से वही मिलता है जिसका हम इंतजार कर रहे होते हैं। उन्होंने कहा, "आयोडीन युक्त नमक।"
"हो."
"शनि की वास्तविक रस्म में काले नमक का इस्तेमाल होता है। यह आयोडीन युक्त नहीं होता। आयोडीन युक्त नमक सुपरमार्केट में मिलता है। जो लोग नमक के बारे में ज्यादा नहीं सोचते, वे यही नमक खरीदते हैं।"
मैंने कहा, "किसी ने रसोई से नमक इस्तेमाल किया है।"
उन्होंने कहा, "किसी ने रसोई का नमक खरीदा, उसे रंगा और उससे अनुष्ठान के लिए एक घेरा बनाया। या तो उन्हें अंतर नहीं पता था..." वे थोड़ी देर रुके।
"या फिर उसे पता था कि जांचकर्ताओं को फर्क पता चल जाएगा," मैंने कहा।
उसने मेरी तरफ देखा। उसके चेहरे पर कुछ भाव थे - आश्चर्य तो नहीं। ऐसा लग रहा था मानो उसने अपने ही विचार को किसी और के मुंह से सुना हो और पुष्टि कर ली हो कि वह विचार सच है।

उन्होंने कहा, "तुम्हारे काम में सुधार हो रहा है।"
उन्होंने सीधे-सीधे कहा, जैसे वो दिल से बातें कहते हैं। ऐसा पहली बार हुआ था।
मैंने इसे अपने मन में संजोए रखा। मैंने अपनी चाय का प्याला भी पकड़े रखा। यह अक्टूबर की रात में पुणे की मानसून के बाद की ठंडक थी, वह ठंडक जो मानसून के बाद आती है लेकिन शरीर के मानसून के खत्म होने को स्वीकार करने से पहले ही महसूस होती है, इसलिए हर शाम थोड़ी अजीब सी लगती है।
मैंने कहा, "बत्तियाँ। पहले से कटी हुई। तेल - अभी पता नहीं कौन सा। कृत्रिम पंख। कंपास के निशान। चेहरे पर राख।" मैं रुका। "दूर से सब कुछ ठीक लगता है। लेकिन एक तरह से सब कुछ गलत है।" करण ने कहा, "इस तरह की गलती को पहचानने के लिए ज्ञान की आवश्यकता होती है। आपको वास्तविक साधना का ज्ञान होना चाहिए ताकि आप जान सकें कि यह कोई वास्तविक अनुष्ठान नहीं है।" उन्होंने चाय की चुस्की ली। "किसी ने एक ऐसा दृश्य रचा है जो अनुष्ठान जैसा दिखता है। और इसमें कुछ ऐसी विशिष्ट त्रुटियाँ हैं जिन्हें एक कुशल शोधकर्ता पहचान लेगा।" वे रुके। "ये त्रुटियाँ, त्रुटियाँ नहीं हैं। ये संदेश हैं।"
"किसे संदेश?"
उसने चक्की के प्रवेश द्वार की ओर देखा। लैंपों की ओर। टूटी खिड़कियों से वे गर्म, गतिशील रोशनी की तरह चमकते हुए प्रतीत हो रहे थे - वही रोशनी जो चौकीदार ने आधी रात से पहले बाहर से देखी थी, वही रोशनी जो शिंदे की मृत्यु के बाद से, अंधेरे में, संयमित अवस्था में जल रही थी।
"हमारे लिए," उन्होंने कहा। "जो भी इसे ध्यान से देखेगा, उसके लिए।" एक लंबी साँस। "यह आम जनता के लिए नहीं बनाया गया था। यह

ऐसे व्यक्ति के लिए बनाया गया था जिसके पास सही जानकारी हो और जो इसकी जाँच-पड़ताल करे।" एक और विराम। "हम ही इसके लक्षित दर्शक हैं।"
मैंने इसे लिख लिया और पहली बार मुझे यह अहसास हुआ कि जांच रात के अनुमान से कहीं अधिक जटिल थी।
हमने चुपचाप अपनी बची हुई चाय पी ली। हमारे चारों ओर, पेठ अपने रात के दो बजे के कामकाज में लगा हुआ था—सड़क पर कभी-कभार कोई रिक्शा, कहीं कोई कुत्ता, शहर की वो आवाज़ें जब ज़्यादातर लोग सो रहे होते हैं और सिर्फ़ ज़रूरी काम चल रहे होते हैं। इनमें से किसी का भी उस घटना से कोई लेना-देना नहीं था जो हमने अभी-अभी देखी थी।
एक तरह से यह बहुत अजीब है: अंदर घट रही असाधारण घटनाओं के प्रति आम दुनिया की पूर्ण उदासीनता। एक आदमी को चक्की के अंदर लाया गया और उसे घेरे के केंद्र में घुटनों के बल बैठा दिया गया, जबकि उसके चारों ओर सात लपटें जल रही थीं, और अब उसे एम्बुलेंस में अस्पताल के मुर्दाघर ले जाया जा रहा था, और पेठ अपने दिन के दो काम कर रही थी, और चाय बहुत मीठी थी, और कल इस चाय की दुकान के मालिक को इसके बारे में पता चलेगा और वह अपने सुबह के ग्राहकों को बताएगा और यह आम दुनिया के लिए एक खबर बन जाएगी। कुछ दिनों तक चर्चा का विषय। कुछ राय देने का विषय।
मैंने अपनी चाय खत्म की और उन सभी चीजों के बारे में सोचने लगा जो मुझे अभी तक नहीं पता थीं।

***

सुबह तीन बजे के कुछ देर बाद, करण ने अपार्टमेंट में चाय बनाई। हमेशा की तरह, वह कोने पर स्थित एक खास दुकान से चाय खरीदता है, जहाँ सिर्फ चाय के शौकीन ही चाय खरीदते हैं। उसने बिना पूछे ही

[illegible]

[illegible]

[illegible]:

- [illegible]?

[illegible]

[illegible]

*[illegible]? [illegible]? [illegible] [illegible] [illegible]

वाले सवालों और तैयार होने पर दिए जाने वाले सवालों में क्या फर्क है। यह सवाल कुछ अलग तरह का था।

***

अगली सुबह चाय पीते हुए उन्होंने कहा कि मैंने पिछली शाम का टोस्ट जला दिया था। यह सच था, मैं कुछ काम बहुत ही नियमित तरीके से करता हूँ। मैंने कहा कि मेरे पास ब्रेड नहीं है। उन्होंने कहा कि फ्रिज में ब्रेड है। मैंने कहा कि मुझे पता है और उम्मीद है कि उन्हें पता न हो।
"मेरी चाची," उसने कहा।
मैंने इंतजार किया।
“मेरी चाची,” उसने कहा। “मेरे पिता की बहन। जब मैं पंद्रह साल का था, तब उनका निधन हो गया।” उसने अपनी चाय के कप को घूरते हुए कहा, “वह बीमार थीं – एक ऐसी बीमारी जिसका इलाज संभव था, लेकिन इसका पता बहुत देर से चला क्योंकि एक वैद्य छह महीने से उनका इलाज कर रहा था, जिसे वह पारंपरिक उपचार कहता था। जब तक उन्हें अस्पताल ले जाया गया, तब तक बहुत देर हो चुकी थी।” वह रुका। “उसने उनके चेहरे पर राख लगाई थी। उसने कहा था कि यह उपचार की रस्म का हिस्सा था। उनका चेहरा काला पड़ गया था और उसी हालत में उनकी मृत्यु हो गई।” वह रुका। “वह केवल इकत्तीस साल की थीं।”
उसने बहुत धीमी आवाज़ में कहा। वही आवाज़ जो वह मोमबत्ती और नमक के लिए इस्तेमाल करता है। वही आवाज़ जो वह हर चीज़ के लिए इस्तेमाल करता है - एकदम सपाट।
"वह इकत्तीस साल की थी," उसने फिर कहा। "लगभग मेरी ही उम्र की।" कमरा एकदम शांत था। बाहर, सड़क पर सुबह की चहल-पहल थी। किसी का स्कूटर चल रहा था। सब्जीवाला सबको बता रहा था कि वह आज क्या-

क्या बेच रहा है। शहर अपने सुबह के कामों में लगा हुआ था। हम इस मेज पर बैठकर जो बातें कर रहे थे, उससे बिल्कुल बेखबर।
मैंने कहा, "कल रात। तुमने अपने बंधे हुए हाथों से नज़र कब हटाई?"
"हां," उसने कहा।
मैंने कहा, "मैं जा रहा हूँ। मैं थोड़ी देर पैदल चलूँगा।"
उसने मेज के उस पार से मेरी ओर देखा, उसके चेहरे पर एक ऐसा भाव था जिसे मैं पूरी तरह समझ नहीं पाई - उसमें कृतज्ञता का भाव तो नहीं था, क्योंकि करण आसानी से कृतज्ञता नहीं दिखाता, लेकिन कुछ ऐसा ही था। जैसे उसे सही पहचान मिली हो। फिर उसने चाय की ओर देखा। "आयोडीन युक्त नमक," उसने काम पर लौटते हुए कहा। "कृत्रिम पंख। पहले से कटी हुई बत्तियाँ। कम्पास की स्थिति। उल्टा चिन्ह।" उसने अपना कप नीचे रख दिया। "इन सभी चीजों का कोई न कोई आपूर्तिकर्ता तो होगा ही। हम आज ही आपूर्तिकर्ता ढूंढ लेंगे।" अगले कुछ दिनों में हमने आपूर्तिकर्ता का पता चरण दर चरण लगाया। दीपक में तिल का तेल: परिष्कृत, कच्चा नहीं - नासिक वितरक, वाणिज्यिक थोक खाता। वास्तविक साधना के लिए उपयुक्त तेल कच्चा होता है, परिष्कृत तेल में वे रासायनिक अंश नहीं होते जो एक विशेष प्रक्रिया से निकाले गए कच्चे तेल में रह जाते हैं। प्रिया की प्रयोगशाला ने इन अंशों की पहचान की। पंख: सिंथेटिक पॉलिएस्टर, सूरत में निर्मित, नासिक वितरण - बाद में हमने पाया कि तेल भी उसी वितरक से लिया गया था। बत्तियाँ: उसी स्रोत से वाणिज्यिक बैच, भंडारण से पहले तेल में भिगोई हुई और कम से कम अड़तालीस घंटे तक सुखाई गई।
सब कुछ उत्तर-पूर्व की ओर इशारा कर रहा है। नासिक।

सोमवार को प्रिया की टीम द्वारा मिल की बारीकी से जांच करने के बाद, पूर्वी दीवार के पास एक जंग लगे दरवाजे के ब्रैकेट के पीछे थिएटर की रसीद मिली। यह रसीद यूं ही नहीं छूटी थी। इसे बड़ी सावधानी से, मोड़कर रखा गया था। मुंबई की एक थिएटर सप्लाई कंपनी की छपी हुई रसीद। इसमें लैंप का तेल, सूती बत्तियां और पचास यूनिट के बैच में काले पंख लिखे थे। रसीद पर तारीख: तीन महीने पहले की।
तीन महीने। किसी ने शिंदे की मिल में हत्या होने से तीन महीने पहले एक थिएटर सप्लाई कंपनी से यह विशेष सामग्री खरीदी थी। और फिर रसीद को मिल में ले आया और जहाँ भी उसे मिली, उसे छिपा दिया। मैंने करण से कहा, "तीन महीने।"
"हो."
"किसी ने यह सामग्री तीन महीने पहले खरीदी थी। शिंदे की हत्या से तीन महीने पहले।"
उन्होंने कहा, "शिंदे की हत्या से तीन महीने पहले, इस सामग्री का इस्तेमाल निश्चित रूप से योजना का हिस्सा था।"
मैंने कहा, "कोई कम से कम तीन महीने से इसकी योजना बना रहा है!" “कम से कम,” उसने कहा। “रसीद ही योजना का सबसे स्पष्ट सबूत है। असली योजना तो पहले ही शुरू हो गई होगी।” उसने अपने फोन पर रसीद की तस्वीर देखी। “और उन्होंने रसीद को ऐसी जगह रखा जहाँ वे उसे आसानी से ढूंढ सकें।”
मैंने कहा, "वह हमें बताना चाहता था कि वह इसकी योजना कितने समय से बना रहा था।"
उन्होंने कहा, "वह हमें यह बताना चाहता था कि यह डिज़ाइन सोच-समझकर और योजनाबद्ध तरीके से बनाया गया था। यह रसीद सोची-समझी योजना का प्रमाण है। इसे हमारे लिए ही रखा गया था।" उन्होंने

[illegible] [illegible] "[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible], [illegible] [illegible], [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

बाद में मुझे समझ आया कि यही नक्शे का पहला बिंदु था। तब मुझे यह नहीं पता था कि कोई नक्शा भी बनेगा। तब मुझे यह भी नहीं पता था कि आने वाले हफ्तों में महाराष्ट्र के शहरों में एक-एक करके नक्शे बनाए जाएंगे।
जो जानकारी उपलब्ध थी: थिएटर खुला था।
हम मंच पर थे।

अध्याय 2 - विशेषज्ञ हाथ
किसी अपराध के बाद अगली सुबह एक अलग ही गंध आती है। पिछली जांचों से मैंने इसे पहचानना सीख लिया है।
यह अंत नहीं है। अंत का मतलब है कि महत्वपूर्ण काम खत्म हो गया है और अब हमें सिर्फ बचे-खुचे अवशेषों से निपटना है। लेकिन आज सुबह असली काम की शुरुआत है। अपराध स्थल तो बस एक भूमिका है। यह आपके मन में सिर्फ एक सवाल छोड़ जाता है। और बाकी की जिंदगी उस सवाल का जवाब ढूंढने का संघर्ष बन जाती है, इससे पहले कि आप उसे सही तरीके से पूछना भी सीखें।
मैंने दोबारा टोस्ट किया।
इसमें कुछ खास नहीं था। मैं जब भी टोस्ट बनाती हूँ, उसे कुरकुरा ही बनाती हूँ। यह मेरी एक पक्की आदत है जो मैंने अपनी ज़िंदगी में किसी और काम में नहीं अपनाई। ब्रेड पिछली शाम से फ्रिज में रखी थी, जैसा कि करण ने मुझे बताया था। मैंने उसे फ्रिज से निकाला और तुरंत टोस्ट बनाना शुरू कर दिया, यह एक तकनीकी कारण था। लेकिन असली वजह यह थी कि मैं करण के उन शुरुआती नोट्स को पढ़ रही थी। उसने उन्हें सुबह तीन से चार बजे के बीच लिखा था और कॉफी टेबल पर ऐसी जगह रखा था जहाँ मुझे उन्हें ढूंढना ही था।
वे नोट्स: छह पन्ने, सबसे छोटे फ़ॉन्ट में। ऐसा फ़ॉन्ट जो जानकारी को परखता हो, मानो कागज़ कम और विचार ज़्यादा हों। पहले चार पन्ने तथ्यात्मक थे - घटनास्थल का विवरण, माप, फ़ोरेंसिक टीम के आने का समय और उन्होंने क्या किया, विष विज्ञान के नमूने। पाँचवाँ पन्ना उस दिन की जाँच के लिए प्रश्नों की सूची थी। छठे पन्ने पर केवल एक टिप्पणी थी, जिसे दो बार काटा गया था:
- यह दृश्य किसी अनुष्ठानिक अपराध जैसा प्रतीत होता है। लेकिन वास्तव में यह एक अनुष्ठानिक नाटक है, जिसमें अपराध छिपा हुआ

है। यह अंतर महत्वपूर्ण है, क्योंकि यह इस बात पर निर्भर करता है कि हम क्या खोज रहे हैं।
मैंने इसे दो बार पढ़ा। मैंने चाय डाली - पहले उनकी, फिर मेरी, यह परंपरा हमेशा से चली आ रही थी - मैं बैठ गई और उस बात को समझने की कोशिश की। सुबह होते-होते वह बात मेरे मन में इस तरह बस गई जैसे कोई चीज अपनी जगह ढूंढकर वहीं स्थिर हो जाती है। ऐसा नहीं था कि मुझे आश्चर्य हुआ। बल्कि ऐसा लगा जैसे चक्की में जो बात मैं आधी-अधूरी समझ पाई थी, उसे अब शब्द मिल गए हों।
टोस्ट एक तरफ से काला हो गया था। मैंने उसे सिंक पर रगड़ा, जलते कोयलों को गिरते देखा और फिर भी उसे खा लिया। क्योंकि मेरे पास कोई चारा नहीं था। अगर मैं नया टोस्ट बनाती, तो वो भी वैसा ही होता, और मुझे अभी भी छह पन्ने पढ़ने थे।

***

पुणे में बाहर सुबह की शुरुआत हो रही थी।
जांच-पड़ताल के मामले में मुझे हमेशा एक बात थोड़ी अजीब लगती है
- शहर को इस बात की कोई परवाह ही नहीं होती कि अंदर क्या चल रहा है। भवानी पेठ में कहीं कोई महिला अपने पड़ोसियों को बता रही होगी कि उसका पति घर नहीं आया है और पुलिस ने उसे अस्पताल बुलाया है, और पुणे में कहीं भाजीवा जोर-जोर से चिल्ला रहा होगा, सुबह की चाय परोसी जा रही होगी, और पहले ऑटो-रिक्शा चालक अपने शनिवार के चक्कर शुरू कर रहे होंगे। उनके मीटर की टिक-टिक चल रही होगी, एक मशीनी, उदासीन आवाज़, पीछे बैठे यात्री की कोई परवाह किए बिना या आगे बैठे यात्री की परवाह किए बिना।
खिड़की के बाहर शहर की हलचल के बीच, मैंने किताब के छठे पृष्ठ का शेष भाग पढ़ा। उस साहसिक टिप्पणी के नीचे, बहुत छोटे अक्षरों में तीन और पंक्तियाँ थीं, मानो बाद में लिखी गई हों:

अगर नाटक में हुई गलतियाँ जानबूझकर की गई हैं—यानी, वे गलतियाँ नहीं बल्कि संदेश हैं—तो हम सिर्फ शिंदे के हत्यारे को ही नहीं खोज रहे हैं। हम ऐसे व्यक्ति को खोज रहे हैं जो जांच को कुछ खास बातें बताना चाहता है, लेकिन बाहर से यह दिखाना चाहता है कि उसे कुछ नहीं पता। संदेश देने वाली गलती, संदेश छुपाने वाली गलती से कहीं ज्यादा खतरनाक होती है, क्योंकि इससे साफ पता चलता है कि आप उस व्यक्ति के बारे में क्या सोचना चाहते हैं।
मैंने इसे अपनी नोटबुक में अपने हाथों से लिखा है, क्योंकि कुछ विचार केवल पढ़ने के लिए नहीं होते, वे जीवन में उतारने के लिए होते हैं।

***

शनिवार की सुबह नौ बजे क्राइम ब्रांच की एक ब्रीफिंग हुई।
मैं इससे पहले ऐसी दो बैठकों में शामिल हो चुका था - प्रत्येक जांच के लिए एक-एक - और मैं उनकी कार्यप्रणाली को समझता था। यहाँ मुख्य उद्देश्य 'भागीदारी' करना नहीं था, क्योंकि यह उचित नहीं होता। न ही 'पर्यवेक्षक' होना था, क्योंकि यह अधूरा होता। मुख्य उद्देश्य उस व्यक्ति पर था जो किसी विशेष कारण से वहाँ मौजूद था और उस कारण के प्रति समर्पित था, चाहे वहाँ मौजूद अन्य लोग इसे समझें या न समझें।
कमरा क्राइम ब्रांच बिल्डिंग की दूसरी मंज़िल पर था - मैं वहाँ इतने समय से था कि बदलाव देख सकूँ। किसी ने बाईं दीवार पर लगी स्ट्रिप लाइटें बदल दी थीं, जो पिछली जाँच के बाद से टिमटिमा रही थीं। प्रोजेक्टर अभी भी अपनी जगह पर था, और उसकी समस्या वही थी - स्क्रीन पर छवि चार डिग्री झुकी हुई थी, मानो सब कुछ गिरने वाला हो। मैंने इसे तीसरी बार ठीक करने के बारे में सोचा, लेकिन फिर नहीं किया।

कमिश्नर पाटिल बैठक का संचालन ऐसे कर रहे थे जैसे कोई कंजूस व्यक्ति पैसे खर्च करता हो। मेज पर ग्यारह लोग बैठे थे, और अगर मुझे भी गिनें तो मैं बारहवां था।
करण के बाईं ओर ढोले बैठे थे, और उनके पीछे सब-इंस्पेक्टर तांबे, जो ऐसे बैठे थे मानो उन्हें बैठने के लिए कहा गया हो और वे ठीक उसी का पालन कर रहे हों। उनके आगे फॉरेंसिक विभाग की प्रिया देसाई लैपटॉप खोले बैठी थीं, पहली स्लाइड तैयार थी - वे सबसे पहले पहुंची थीं, उनके सामान की व्यवस्था से यह स्पष्ट था। मेज पर पानी का गिलास और पहचान पत्र रखा था। उनके बाईं ओर गोखले चुपचाप जानकारी को समझ रहे थे और केवल तभी बोलते थे जब मौन किसी भी चीज़ से अधिक महत्वपूर्ण होता था।
चार अन्य अधिकारी, जिनसे मैं पहले कभी नहीं मिला था। और मैं, जिन्हें पाटिल ने करण के 'दस्तावेज़ सहायक' के रूप में मिलवाया।
यही शब्द उनके लिए उपयुक्त था, भले ही वह पूरी तरह सटीक न हो।
'दस्तावेज़' शब्द सुनते ही धोले के चेहरे पर प्रशंसा के साथ-साथ संदेह का भाव भी आ गया।
श्री पाटिल ने मृतक के बारे में जानकारी देकर अपनी बात शुरू की। नंदकुमार शिंदे, 54 वर्ष के, शिंदे इंफ्राटेक के निदेशक थे। यह वही भवन निर्माण कंपनी थी जिसके स्वामित्व में मिल की संपत्ति थी। वे पिछले दो वर्षों से मिल का दौरा कर रहे थे ताकि विकास के लिए उपयुक्त जगह का पता लगा सकें। उन्हें आखिरी बार शाम 7 बजे भवानी पेठ स्थित अपने कार्यालय से निकलते हुए देखा गया था। उनका निजी फोन घटनास्थल पर उनकी जैकेट की जेब में बंद हालत में मिला। कंपनी का फोन गायब था।
"कंपनी का फोन," करण ने कहा।

"□ □□□□□□□□□ □□, □ □□□□□ □□□, □ □□ □□ □□," □□□□□ □□ □□□□ "□□□□ □□□□□ □□ □□□□□ □□ □□ □□□□□ □□□□□ □□□ □□□□ □□□ □□□□ □□□"

□□□□□ □□ □□□ □□□□ □□ □□□□ □□□□□□□, □□□□□□, □□□□□□ - □□ □□□ □□□ □□ □□□ □□□ □□□□ □□□ □□□□□ □□ □□ □□ □□□□□□ □□□□ □□ □□□□□ □□ □□□□ □□□□□

□□□□□ □□ □□□□□□ □□ □□□ □□□ □□□□ □□ □□□□□ □□ □□□ □□ □□□ □□□□ □□□□ □□□ □□□ □□□□ □□□□□ □□ □□ □□□□ □□ □□□□ □□□□ □□ □□□ □□ □□□ □□□□ □□ □□□ □□□□ □□□ □□ □□□ □□ □□ □□□

□□□□□ □□ □□□□□□□□ □□□□□ □□ □□ □□□ □□□□□ "□□□□□□□□"

***

□□□□□□ □□ □□□□□□ □□□□□□□□ □□□ □□ □□□□□ □□□□ □□□□ □□ □□□□□□□ □□ □□□□□ □□□□□ □□□□□ □□ □□□□□□□□ □□□□□ □□ □□□□□□□□□ □□□□□□ □□ □□ □□□□□ □□□ □□□ □□□ □□□, □□□□□ □□ □□□ □□□□ □□: □□□□□□ □□□ □□□□□□ □□□□ □□ □□ □□□ □□□□ □□ □□□, □□ □□□ □□□□□ □□□□□ □□□□ □□ □□□□ □□ □□□□□ □□□ □□□□□□

□□□□□□□□ □□□□□□□ □□ □□□□□□ □□□

“□□□□ □□ □□□,” □□□□ □□□□ “□□□ □□ □□□, □□□□□□□□ □□□□□□□□□□ □□□□□ □□□ □□ □□□□ □□ □□□□□ □□□□□□ □□□” □□□□ □□□□□□□ □□ □□ □□□□□ □□□□□—□□ □□□□□ □□□□□□, □□□□ □□□□□□□□; □□□□□ □□□□, □□□□□ □□□□□□□ “□□□□ □□ □□ □□□□□□□□ □□□ □□ □□□□□ □□ □□□□□□□ □□ □□□□□□□ □□□□ □□□ □□, □□□□□ □□□□ □□□□ □□ □□□□□□ □□ □□□ □□ □□□ □□ □□□ □□□□ □□ □□□□ □□□□ □□□□ □□ □□ □□□□ □□□□ □□ □□□□□□ □□ □□□ □□□ □□ □□□ □□□□□□ □□□□ □□□□ □□ □□□□ □□□□□□□□□□□□ □□ □□□□□ □□ □□□□□□ □□, □□ □□□□□ □□□□□□□□□□ □□ □□□□□□□□ □□□□□□□□ □□ □□□□ □□□□□□ □□ □□□” □□□□ □□□ □□ □□□□ □□□□□ “□□□ □□□□□□□□ □□ □□ □□□□□ □□□□□□□□ □□, □□□□□ □□□□ □□□□ □□ □□□□□□ □□ □□□ □□ □□□□□

होता है। प्रदर्शित तेल परिष्कृत है। थोक विक्रेताओं से आसानी से उपलब्ध है।”
“ये बत्तियाँ,” उसने आगे कहा। “सात बत्तियाँ। लंबाई में आधा मिलीमीटर का भी अंतर नहीं। ये प्राकृतिक नहीं है। बाज़ार में मिलने वाली बत्तियों में तीन से पाँच मिलीमीटर का अंतर होता है। इन्हें एक ही सूती रस्सी से काटा गया था। फिर तेल लगाकर कम से कम चालीस घंटे तक सुखाया गया।” उसने नापने की मेज दिखाई। “किसी ने इन्हें हत्या से दो दिन पहले बनाया था। घटनास्थल पर नहीं - कहीं और, बड़ी सावधानी से, औजारों का इस्तेमाल करके।” उसने नमक, पंख और चूने का विश्लेषण दिखाया।
फिर उसने राख की ओर रुख किया।
“मृतक के चेहरे पर राख,” उसने कहा। “कोयले के मिश्रण में बाज़ार में बिकने वाली अगरबत्ती की राख मिलाई जाती है - यह पहले से तैयार होती है, वहाँ रखी नहीं जाती। लगाने का तरीका -” उसने एक क्लोज-अप तस्वीर दिखाई, और मैंने देखा कि मेज पर बैठे कुछ लोगों ने इसे देखा और तुरंत नज़रें फेर लीं, चेहरे को एक सतह के रूप में देखे जाने पर यह एक स्वाभाविक प्रतिक्रिया होती है - “यह एक विशेष अनुष्ठान के अनुरूप है। माथे और आँखों के आसपास ज़्यादा राख, जबड़े पर कम। इसे जानबूझकर लगाया जाता है। किसी को पता था कि यह कैसा दिखना चाहिए।”
वह रुक गई और लैपटॉप की ओर देखने लगी।
"चूने के वृत्त में दिशासूचक चिह्न - आठ चिह्न, जिन्हें कंपास की सहायता से बहुत सटीक स्थानों पर रखा गया है। ये चिह्न पश्चिमी महाराष्ट्र की शनि पूजा परंपरा से हैं। लेकिन..." उन्होंने अगली स्लाइड दिखाई, जिसमें एक ही चिह्न के दो रूप दिखाए गए थे। "प्रत्येक चिह्न के आंतरिक अनुपात गलत हैं। केंद्रीय भाग का

अनुपात तीन-दो होना चाहिए, लेकिन यहाँ यह हर जगह दो-एक है। यह गलती उस व्यक्ति की है जिसने इसे किसी तस्वीर या प्रतिकृति से बनाया है, न कि वास्तविक ज्ञान से। प्रतिकृति में आकृति थी। कोई माप नहीं लिया गया था।"
"आठ आठ?" करण ने पूछा।
"आठ में से आठ बार," प्रिया ने कहा। "हर जगह एक ही गलती। तो यह लापरवाही नहीं थी - यह उनकी जानकारी का नतीजा था।"
मैं जितना लिख सकता था उतना लिख रहा था, लेकिन फिर भी कुछ कमी रह गई थी। प्रिया की ब्रीफिंग की खासियत यह है कि यह 'समझ' की नहीं बल्कि 'निश्चितता' की गति से आगे बढ़ती है, और समझने में समय लगता है।
उन्होंने कहा, "एक अपवाद है।"
उसने एक नई स्लाइड लगाई। उत्तर दिशा से तीसरा संकेत, बड़ा करके दिखाया गया।
"यह चिन्ह बाकी सात चिन्हों से एक मामले में अलग है। इसका आंतरिक अनुपात भी दो-एक का है। लेकिन पूरा चिन्ह ही उल्टा है - एक सौ अस्सी डिग्री घुमाया हुआ है।" उसने मेज की ओर देखा। "बाकी सात चिन्हों में केवल अनुपात की त्रुटि है। इसमें अनुपात की त्रुटि के साथ-साथ घुमाव की त्रुटि भी है।" वह थोड़ी देर रुकी। "अनुपात की त्रुटियाँ उस व्यक्ति की होती हैं जिसने माप को देखा तो है लेकिन समझा नहीं है। लेकिन चिन्ह को घुमाना इतनी बड़ी गलती नहीं है। जमीन पर चिन्ह बनाने के बाद उसे एक सौ अस्सी डिग्री घुमाना इतनी बड़ी गलती नहीं है कि किसी का ध्यान न जाए।" कमरा एकदम शांत हो गया।
करण स्लाइड को ऐसे देख रहा था मानो जो उसने समझा था वह अब वास्तविकता बन गया हो।

***

उसने मृत्यु के कारण की ओर रुख किया और कमरे का माहौल बदल गया। "चाकू का घाव," प्रिया ने कहा। उसने अपने लैपटॉप पर तस्वीर दिखाई। "एक ही जगह से चाकू लगा है, हंसली की हड्डी के ठीक नीचे - कॉलरबोन के ठीक नीचे, यहाँ -" उसने अपनी ओर इशारा किया, मानो उसके लिए शरीर सूचनाओं का भंडार हो "- दिल की ओर लगभग पंद्रह डिग्री पर।"
उसने प्रवेश द्वार की ज्यामिति का एक आरेख दिखाया।
“चाकू को धक्का नहीं दिया गया था,” उसने कहा। “मैं इस अंतर को स्पष्ट करना चाहती हूँ। धक्का देने में गति होती है – बांह का फैलाव, शरीर का वजन, या हाथ की गति जिससे चाकू अंदर जाता है। इस घाव में ऐसा नहीं है। चाकू को धक्का देकर अंदर डाला गया था। नियंत्रित दबाव और हाथ का हल्का सा घुमाव, जिससे चाकू की नोक दिल की ओर आई, बिल्कुल सीधी नहीं।” उसने स्क्रीन से नज़रें ऊपर उठाईं। “जिस व्यक्ति ने कभी कोई कठोर चीज़ नहीं काटी है, वह चाकू को इस तरह नहीं पकड़ता। ज़्यादातर लोग जिन्होंने कभी काटा है, वे भी इसे इस तरह नहीं पकड़ते। यह एक खास तकनीक है।” "मेडिकल ट्रेनिंग?" करण ने पूछा।
"चिकित्सा प्रशिक्षण," प्रिया ने कहा, "या कुछ ऐसा ही - सर्जरी या शरीर रचना विज्ञान का प्रशिक्षण। एक कसाई शायद ऐसा कर सकता है, लेकिन बीच में चाकू चलाना कसाई की विशेषता नहीं है। वहाँ ज़ोर तेज़ी से अलग करने पर होता है। यहाँ ज़ोर नियंत्रण पर होता है।" वह थोड़ी देर रुकी। "यह सर्जनों के काटने का तरीका है। या कोई ऐसा व्यक्ति जिसने उसी तरह से काटना सीखा हो।"
मेज पर बैठे सभी लोगों ने इसे आत्मसात कर लिया।

[illegible], "[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]"

"[illegible]," [illegible] [illegible] [illegible] "[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [

[illegible], [illegible], [illegible] [illegible]: [illegible] [illegible] [illegible] - [illegible] [illegible]

[illegible] [illegible] [illegible], [illegible] [illegible] [illegible]

से रखा गया है कि आसानी से मिल जाए। गिराया नहीं गया - रखा गया है।
फिर मैंने वाक्य को दोबारा देखा और सोचा: तीसरा प्रतीक, एक सौ अस्सी डिग्री उल्टा। हाशिये में टिप्पणी: उद्देश्य की विपरीत धुरी। दृश्य की संरचना और टिप्पणी आपस में गुंथी हुई हैं। गलत चीजों को चिह्नित किया गया है। किसी ने दृश्य को पढ़ने की कुंजी दृश्य के बगल में रख दी है।
मैंने उस वाक्य को दो बार रेखांकित किया।

***

प्रिया ने संतुष्टि के साथ अपना लैपटॉप बंद कर दिया। मेज पर बैठे अधिकारी उस विशेष मौन में डूब गए जो ऐसे सबूतों के सामने आने के बाद आता है जो आपके विचारों का स्वरूप बदल देते हैं। ढोले ने कहा: "वह चाकू। हम किस डॉक्टर की तलाश कर रहे हैं?" "मैंने डॉक्टर नहीं कहा," प्रिया ने कहा। "मैंने सर्जिकल नर्व या कुछ ऐसा ही कहा था। पशु चिकित्सा, शरीर रचना विज्ञान अनुसंधान, जानवरों के अवशेषों को संरक्षित करना - ऐसे कई क्षेत्र हैं जहाँ इस तरह की सटीकता पाई जा सकती है। सर्जरी सबसे संभावित विकल्प है।" वह थोड़ी देर रुकी। "लेकिन मैं अपनी खोज को केवल चिकित्सा सूची तक सीमित नहीं रखूंगी।"
पाटिल ने करण की ओर मुड़कर कहा, "एक पर्चे का टुकड़ा। अकादमिक स्रोत।"
“मैं स्रोत का पता लगाने की कोशिश कर रहा हूँ,” करण ने कहा। “इसका स्वरूप और संदर्भ देने का तरीका विश्वविद्यालय के नियमों के अनुसार है। हाशिये में लिखा वाक्य एक विशेष पाठ्यक्रम से संबंधित है। कुछ दिनों में हमें इसकी पहचान मिल जाएगी।” उन्होंने फोन पर पत्रों को देखा, फिर उसे मेज पर उल्टा रख दिया।

“मैं अनुरोध करता हूँ कि इस लेख और पत्रों को मीडिया को न दिया जाए। इनसे गलतफहमी पैदा हो सकती है।”
श्री पाटिल ने अपना सिर हिलाया।
ब्रीफिंग के बाद, जब लोग अपना सामान समेट रहे थे, मैं प्रोजेक्टर ब्रैकेट के पास गया। चार डिग्री का झुकाव बहुत ज़्यादा था। मैंने ब्रैकेट को तब तक एडजस्ट किया जब तक कि इमेज सीधी नहीं हो गई, फिर दोबारा चेक किया और वापस आ गया।
जब मैं अपना बैग पैक कर रही थी, तब प्रिया मेज के दूसरी तरफ से मुझे देख रही थी।
"आखिरकार किसी ने इसे ठीक कर दिया," उसने कहा। उसने अपना लैपटॉप उठाया। "यह जनवरी से ही खराब था।" वह चली गई।
मैं वहाँ कुछ पल के लिए खड़ा रहा। पता नहीं क्यों, लेकिन मुझे लगा कि यह ज़रूरी है। शायद इसलिए कि जिन चीज़ों पर हम काम कर रहे थे, वे जानबूझकर गलत थीं, और एक छोटी सी गलती को सुधारना - चाहे वह कितनी भी मामूली क्यों न हो - व्यवस्था बनाए रखने का एकमात्र तरीका था। शायद मैं बस अपने हाथों को लिखने के अलावा कुछ और काम देना चाहता था।

***

ब्रेक के दौरान मीडिया में हलचल मच गई।
गोखले मुझसे पानी के डिस्पेंसर के पास मिले, जहाँ मैं ब्रेक के दौरान जाया करता हूँ क्योंकि वहाँ एक खिड़की है और मुझे खिड़की के पास बैठकर सोचना अच्छा लगता है। वह मेरे पास किसी ऐसे उद्देश्य से आए जो उन्हें महत्वपूर्ण लग रहा था।
उन्होंने कहा, "एक टीवी सेगमेंट है जिसे आपको देखना चाहिए।" उन्होंने मुझे फोन दिखाया। सुबह की न्यूज़ पैनल - किसी बड़े अपराध के बाद अगली सुबह जितनी जल्दी हो सके, बुलाए गए लोग, जो

तीन घंटे पहले मिली खबरों पर अपनी राय देने के लिए पैसे लेते हैं। चार लोग: एक पत्रकार जो चिंतित दिख रहा था; एक पादरी जो अपने काम में लगा हुआ था; एक महिला जिसे मैं पहचान नहीं पाई; और स्क्रीन के कोने में लिखा था - डॉक्टर माया कोटियन - आध्यात्मिक माध्यम।
कोटियन ने धीमी, विचारशील आवाज़ में बात की - न तो पत्रकार की तरह, न ही विद्वान की तरह। उनकी भाषा ऐसी थी जैसे कोई व्यक्ति शब्दों का चुनाव इसलिए कर रहा हो क्योंकि वह कोई विशेष कार्य कर रहा हो। वह चेहरों को राख से काला करने की, उस विशेष अनुष्ठान की कालिमा की, आँखों के आसपास की बनावट की, और उन्हें ढकने के तरीके की बात कर रही थीं।
मैंने वह विवरण सुना और अचानक चौंक गया, क्योंकि मुझे एक ऐसे स्रोत से सटीक जानकारी मिल रही थी जिसके पास यह जानकारी नहीं होनी चाहिए थी।
राख के इस्तेमाल से जुड़ी जानकारी फॉरेंसिक रिपोर्ट में थी। यह मिल में मौजूद लोगों के नोट्स में भी थी। इसे सार्वजनिक नहीं किया गया - न कोई प्रेस ब्रीफिंग, न कोई लीक, कुछ भी नहीं। राख की विशिष्ट संरचना, माथे और आंखों के आसपास इसकी सघनता, और तंत्रिकाओं को ढकने वाली राख - सुबह की खबरें देखने वाले किसी भी व्यक्ति को यह सब पता नहीं होना चाहिए।
जब सेशन दोबारा शुरू हुआ, तो मैंने यह वीडियो करण को दिखाया। उन्होंने इसे दो बार देखा। उन्होंने कोटियन को राख की संरचना समझाते हुए देखा।
मैंने कहा, "राख के बारे में जानकारी सार्वजनिक नहीं है।" "नहीं," उसने कहा।
मैंने कहा, "किसी ने उसे बताया था।"

"[illegible]," [illegible] "[illegible]" [illegible] [illegible] [illegible] "[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]" [illegible] [illegible] "[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]"

[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible], [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible], [illegible] [illegible], [illegible] [illegible]:

— [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [

गैरकानूनी तो नहीं था, लेकिन इससे एक सवाल उठता है: संगठन उस 60 प्रतिशत राशि का क्या करता है जो उसके उद्देश्य पर खर्च नहीं होती?
खुदाई में पर्याप्त गहराई तक छानबीन नहीं की गई। केवल इमारत की ऊपरी मंजिलें ही दिखाई दे रही थीं।
एक और जानकारी: फाउंडेशन का पता। पुणे के कोरेगांव पार्क में स्थित वाणिज्यिक पंजीकृत कार्यालय सेवा - कई संगठनों के लिए पत्राचार संभालने वाला एक स्थान, स्थायी पता प्रदान करता है। उन संगठनों के लिए उपयोगी है जिन्हें कार्यालय की आवश्यकता नहीं है। कोरेगांव पार्क: शहर का सबसे समृद्ध और सबसे पुराना इलाका, जहाँ धन का लेन-देन गुप्त रूप से होता है और जान-पहचान के माध्यम से संबंध बनते हैं।
मैंने पता नोट कर लिया, कोरेगांव पार्क के बारे में जानकारी नोट कर ली, और यह सवाल भी नोट कर लिया कि तीसरे बोर्ड सदस्य के पीछे किसका नाम था, और फिर मैं चाय पीने चला गया।

***

सीसीटीवी फुटेज की जांच दोपहर बाद हॉल के नीचे एक छोटे से कमरे में मॉनिटर पर की गई, जिसे दो सैनिक सुबह से देख रहे थे। मिल के चारों ओर तीन कैमरे लगे थे। एक कैमरे की बैटरी खराब थी - कवर पर जंग साफ दिख रही थी, वह बहुत पुराना था और कई सालों से उसकी जांच नहीं हुई थी। दूसरे कैमरे में दक्षिणी लेन दिखाई दे रही थी: तीन ऑटो और एक निजी कार, लेकिन उनसे कोई जानकारी मेल नहीं खा रही थी। तीसरे कैमरे में उत्तरी प्रवेश द्वार, मुख्य द्वार का चालीस प्रतिशत हिस्सा और एक साइड लेन दिखाई दे रही थी।

□□□ 10:14: □□ □□□□□□ □□□ □□□□ □□□ □□□ □□□ □□□□ □□ □□□□ □□□□□ □□□□ □□ □□ □□□□□□ □□□□□ □□□ □□□ □□□□ □□□□□ □□□ □□ □□□□□ □□ □□□ □□: MH 12, □□□□ □□□□□ □□□□□□ □□□□ □□□
□□□ □□□□□□□ □□□□ 10:14 □□□ □□□□□ □□□□
□□□ □□ □□□□□□□ □□ □□□□□: □□-□□□ □□□□□ □□□□, □□ □□□□□ □□□ □□ □□□□□□□□ □□ □□□ □□, □□ □□ □□□□ □□□□□ □□□ □□□□□ □□□□ □□□ □□□□□□ □□ □□□□ □□□ □□□□ □□□□□□ □□□ □ □□□ □□□□ □□□□□□□ □□ □□□ □ □□□ □□□□□ □□□ □□□, □□□□ □□□ □□□, □□□ □□□□ □□□ □□ □□□ □□ □□□□□□□□□□ □□□□ □□ □□□□ □□□
□□□□□ □□□, "□□□□□□ □□□□□□□□ □□□□□□ □□□ □□ □□□□ □□ □□□ □□□ □□□"
“□□□□□□ □□ □□□□□□□□ □□□ □□ □□□□,” □□□□ □□□□□□ □□□ “□□ □□□□□□ □□□□ □□□□□□ □□ □□□□ □□□□ □□□□□ □□ – □□□□ □□□□□□ □□ □□□, □□□□ □□□□ □□ □□□□□□ □□□□ □□ □□□□□□ □□ □□□□ □□□ □□□□-□□□□ □□□□ □□□” □□ □□□□□□ □□ □□□□ □□□ □□□□□ □□ □□□ □□□ □□□ “□□□ □□ □□□ □□□□□□□ □□ □□□□□ □□□□□ □□□□□□□ □□ □□□□ □□ – □□ □□ □□ □□□□□ □□□□ □□□□ □□ □□ □□□□□ □□ □□□ □□ □□□□□□□□ □□ □□□ □□□ □□ □□ □□ □□□ □□ □□□□ □□, □□□□□□ □□ □□□□, □□ □□□ □□□ □□□”
□□□□□ □□□, "□□ □□ □□□ □□ □□□□□ □□□"
□□□ □□ □□□, "□□ □□□□ □□ □□□ □□□□ □□ □□□□ □ □□□□ □□□ □□□ □□□□ □□ □□□ □□ □□ □□□□□ □□□□ □□□□□ □□□□ □□ □□□□ - □□ □□ □□□□ □□□□□□"

> *— □□□ □□□□□□, □□□□ 12 □□□□□ □□□ □□ □□□□□□□□□□, 10:14 □□□ □□□□□ □□□□ □□□ □□ □□□ □□□□□□□ □□ □□ □□ □□ □□□ □□ □□□□□ □□□ □□ □□□□□ □□ □□□□ □□ □□□ □□□□ □□□□□ □□□ □□ □□□□□□ □□ □□□ □□ □□□□ □□□ □□ □□□□□□ □□ □□□ □□ □□□□ □□ □□□ □□ □□□*

*— [illegible] [illegible] [illegible]

वह कॉर्कबोर्ड को घूरता हुआ खड़ा था। एक पिन मिल के लिए - हत्या स्थल के लिए। एक पिन नासिक के लिए - आपूर्ति का स्रोत। उसने तीसरी पिन उठाई, लेकिन उसे लगाया नहीं। फिर उसने उसे वापस डिब्बे में रख दिया।
अभी नहीं। वह सबूतों के मान्य होने का इंतजार कर रहा था।
मैंने कहा, "पुस्तिकाओं के बीच का वाक्य। इरादे की उलटी धुरी।" "हाँ।"
मैंने कहा, "उल्टा चिन्ह उत्तर से तीसरा है। और नोट में लिखा है: इरादे की उलटी धुरी, प्रभाव बढ़ा हुआ।" मैं रुका। "नोट में चिन्ह का नाम लिखा है। आपको चिन्ह को पढ़ने का तरीका बताने के लिए घटनास्थल पर पुस्तिका रखी गई थी।"
“हाँ,” उन्होंने कहा। “उसके पास उस दृश्य में अपनी चाबी है। किसी ने चाबी ताले के पास रख दी है।” उन्होंने कॉर्कबोर्ड की ओर देखा। “यह उस आदमी का संकेत है जो ताला खुलवाना चाहता है। जो यह जानना चाहता है कि अंदर क्या है।” वे चाय पीने चले गए। “उल्टा चिन्ह एक हस्ताक्षर है। यह किसका है, यह हम नहीं जानते, जब तक कि हमें इरादे की उल्टी धुरी की परंपरा का ज्ञान न हो। और यह जानने के लिए हमें कोई व्याख्यान सुनना पड़ेगा।”
वह चाय पीने चला गया। मैं फाउंडेशन रिकॉर्ड्स वापस चला गया। बाहर, पुणे में शाम ढल रही थी - रोशनी बदल रही थी, वाहनों की आवाज़ बदल रही थी, खाने-पीने की दुकानों पर गैस जल रही थी। पंखा चल रहा था। फाउंडेशन की वेबसाइट लैपटॉप पर खुली थी, मौजूद तो थी लेकिन उस पर कोई टेक्स्ट नहीं था। मैं उस आदमी के बारे में सोच रहा था जिसने एक क्रिकेट टीम को कोचिंग दी थी, एक अच्छा मकान मालिक था, और जिसने तीन साल तक एक ऐसे संगठन में पैसा लगाया था जो पैसा तो लेता था लेकिन बदले में कुछ नहीं देता था। लोगों के

कई चेहरे होते हैं, और एक ही व्यक्ति में अच्छा और एक गुमनाम चेहरा दोनों हो सकते हैं।
मैंने यह लिखा। इसलिए नहीं कि यह जांच के लिए उपयोगी था। बल्कि इसलिए कि यह सच था, और नोटबुक सच्ची बातों को लिखने की जगह है, भले ही वे तुरंत उपयोगी न हों।

***

देर रात, नोट्स पूरे कर लिए, चाय के कप धो लिए, फाउंडेशन रिकॉर्ड्स ने मुझे उस रात जितना दे सकता था उतना दे दिया, मैं सोफे पर बैठ गया और अपना लैपटॉप खोला और वही किया जो मैं हमेशा करता हूं: पढ़ना।
यह कोई केंद्रित पठन नहीं था। यह ऐसा था जैसे ब्राउज़र खोलकर एल्गोरिदम द्वारा सुझाए गए लेख देखना। मैं उत्तरी महाराष्ट्र में चल रहे राजनीतिक विवाद के बारे में पढ़ रहा था, तभी सुझाए गए अनुभाग में चार महीने पुराना एक लेख सामने आ गया। शीर्षक: जब देवता प्रवास करते हैं: महाराष्ट्र की आध्यात्मिक अर्थव्यवस्था में कृत्रिम भक्ति।
लेखिका: अनन्या देशमुख, खोजी पत्रकार।
मैंने इस पर क्लिक किया क्योंकि शीर्षक प्रासंगिक था और क्योंकि मैंने यह सीखा था कि प्रासंगिकता कभी संयोग नहीं होती। लेख बहुत अच्छा था। उन्होंने पश्चिमी महाराष्ट्र के तीन आध्यात्मिक शिक्षा संस्थानों की वित्तीय संरचना का विश्लेषण किया और घोषित उद्देश्यों तथा आय के वास्तविक वितरण में अंतर को उजागर किया। उन्होंने वित्तीय प्रक्रियाओं का भी खुलासा किया – जैसे कि कार्यक्रम तक न पहुँचने वाली आय के लिए धर्मार्थ ट्रस्टों का उपयोग। उन्होंने तीन अज्ञात स्रोतों का हवाला

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]:

[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]?

*[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [

मैंने नोटबुक नीचे रख दी। मैंने लैंप बंद कर दिया। अंधेरा छा गया था, और उसमें मुझे पर्दे के पीछे से करण की आवाज़ सुनाई दे रही थी - कलम की आवाज़, पन्ने पलटने की आवाज़, एक ऐसे व्यक्ति की आवाज़ जो आनंद के लिए नहीं बल्कि जानकारी के लिए पढ़ता और लिखता है।
मैं उन कुशल हाथों के बारे में सोच रहा था जो सटीकता से कठोर वस्तुओं में चाकू घुसा सकते हैं। और उस आदमी के बारे में भी, जिसे यह आदत है और जो दो रात पहले कहीं बैठकर बत्तियों को एक समान लंबाई में काट रहा था।
ये दोनों चेहरे अभी तक एक ही व्यक्ति में समाहित नहीं हो पाए थे। हो जाएँगे। लेकिन आज रात नहीं।
आज रात बस एक और दिन का अंत था, और अंधेरे में दिख रही आकृति अभी भी सिर्फ एक आकृति ही थी।

अध्याय 3 - खोजकर्ता की छाया
पुणे में अक्टूबर के महीने में रविवार की सुबह एक अलग ही शांति छाई रहती है।
यह पूरी तरह से सन्नाटा नहीं है - पुणे कभी भी पूरी तरह से शांत नहीं होता। न रविवार को, न अक्टूबर में, न ही सुबह 7:00 बजे, जब शहर पूरे सप्ताह की भागदौड़ के बाद सबसे शांत होता है। यह एक हल्की सी आवाज़ है। यातायात सप्ताह के दिनों की तुलना में चालीस प्रतिशत कम है। सड़क किनारे विक्रेता देर से आते हैं। स्कूल के पास रिक्शा की भीड़ सड़कों से गायब हो गई है। वहां रविवार की रौनक कुछ अलग ही है - लोगों को कहीं जाना तो है, लेकिन उन पर पूरे सप्ताह का तनाव नहीं है। अगर हम अपनी खिड़की से नीचे सड़क पर लगे यूकेलिप्टस के पेड़ों को देखें, तो वे अपना असली अक्टूबर वाला रूप दिखाते हैं। अधिकांश पत्ते अभी भी पेड़ पर हैं, लेकिन कुछ का रंग बदल रहा है, कुछ जमीन पर गिरे हुए हैं। पेड़ मौसम के अनुसार ढल जाते हैं, उस धैर्य के साथ जिसकी बराबरी इंसान कभी नहीं कर सकते।
मैं रसोई के काउंटर पर खड़ा था। मेरे सामने प्रकाशन का पेपर था, मेरे हाथ में कलम थी और मेरे सामने चाय का कप रखा था। पिछले एक मिनट से चाय इतनी गर्म थी कि पी नहीं जा सकती थी, और अब कुछ पल के लिए उसका तापमान बिल्कुल सही हो गया था। यह समय केवल पैंतालीस सेकंड तक रहता है, जिसके बाद चाय ठंडी होने लगती है। मैं यह गणित इतनी सटीकता से इसलिए बता सकता हूँ क्योंकि मैंने अपने वयस्क जीवन का अधिकांश समय चाय बनाते हुए बिताया है, लेकिन उसे सही तापमान पर पीने में मैं हमेशा असफल रहा हूँ।
करण पूरी तरह तैयार था। वह सुबह 6:30 बजे से ही तैयार था। वह कॉर्क बोर्ड के सामने खड़ा था। उसके हाथ में एक तीसरी पिन थी -

वही पिन जो उसने पिछली रात हाथ में पकड़ी थी और फिर डिब्बे में रख दी थी। वह बोर्ड पर लगे दो निशानों को ऐसे देख रहा था जैसे कोई नक्शे को तब देखता है जब उसे पता होता है कि और भी जगहें हैं, जो अभी दिखाई नहीं दे रही हैं, लेकिन मौजूद हैं।
"कोटियन," उसने बोर्ड की ओर देखते हुए कहा। "वह एक जानी-मानी हस्ती हैं। उनके पास पता तो जरूर होगा।"
मैंने कहा, "मेरे पास है।"
वह घूम गया।
मैंने कहा, "कल रात, आपके सोने के बाद, मुझे वह मिली। उसका एक परामर्श कक्ष दक्कन जिमखाना में है और दूसरा लॉ कॉलेज रोड पर। उसका नाम आध्यात्मिक सेवाओं की सूची में दर्ज है। कार्यालय का समय सोमवार से शनिवार है, मुलाकात के लिए पूर्व अनुमति आवश्यक है।"
उन्होंने कहा, "यह रविवार नहीं होगा।"
मैंने कहा, "मैंने पहले ही फोन कर दिया था। उनकी सहायक ने सुबह 7:30 बजे फोन उठाया था। वह सुबह 10:00 बजे से उपलब्ध हैं।"
उसने मेरी तरफ देखा। उसके चेहरे पर वही भाव था जो कभी-कभी उसके चेहरे पर आ जाता था। यह आश्चर्य की बात नहीं थी। यह उस व्यक्ति का भाव था जिसने कोई काम शुरू किया था और जब वह लौटा तो उसे एहसास हुआ कि वह जितना छोड़कर गया था उससे कहीं आगे बढ़ चुका है। उसने पिन को वापस डिब्बे में रख दिया। अभी नहीं।
"अच्छा," उसने कहा।
हमारे कामकाजी रिश्ते में यह सबसे बड़ी प्रशंसा है। मैंने इसे जैसा था वैसा ही स्वीकार किया। मैंने अपनी चाय पी। चाय अब ठंडी हो रही थी, लेकिन मैंने इस पर ध्यान नहीं दिया।

***

उनकी उम्र लगभग पचपन वर्ष रही होगी। उन्होंने गहरे रंग की सूती साड़ी पहनी हुई थी, जिस पर कोई आभूषण नहीं था। यह ऐसी साड़ी थी जिसे किसी ने बड़ी सावधानी से चुना था। सादगी उनका स्वभाव नहीं था, यह उनका अपना निर्णय था। उनके बाल बंधे हुए थे, लेकिन बहुत सलीके से नहीं। उन्होंने कोई आभूषण नहीं पहना था। वह कमरे में आईं, लेकिन उन्होंने अपने आगमन की कोई भव्य तैयारी नहीं की थी। वह हमारे सामने वाली कुर्सी पर बैठ गईं। उनके हाथ गोद में आराम से रखे थे। उन्होंने पहले करण को देखा, फिर मुझे। उनकी आँखों में शांति थी, कोई हड़बड़ी नहीं। यह जाँच-परख की नज़र नहीं थी, बल्कि स्वीकृति की नज़र थी। यह उस व्यक्ति का भाव था जिसने जीवन भर अजनबियों के बीच व्यवहार करना सीखा था।
"श्रीमान करण," उसने कहा। "और आप... साथी पत्रकार।" उसने 'साथी पत्रकार' शब्द का प्रयोग न तो मज़ाक में किया और न ही तिरस्कार से। उसने इसे सचमुच दिलचस्प अंदाज़ में कहा। "मैंने आपकी पिछली दो जांचों की कवरेज देखी है। कोथरूद मामला। खड़की मामला।" वह थोड़ी रुकी और बोली, "आप दोनों उन क्षेत्रों में एक-दूसरे की समझ पर अपनी समझ से ज़्यादा भरोसा करते हैं जहां दूसरे की समझ बेहतर है। ऐसा आसानी से नहीं होता।"
करण ने कुछ नहीं कहा। उसने बस उनकी तरफ देखा, मानो उसने सुनने का फैसला कर लिया हो।
"मुझे खुशी है कि तुम आए," उसने कहा। "मुझे उम्मीद थी कि तुम आओगे।"
"क्या कोई उम्मीद थी?" करण ने पूछा।
"हां," उसने कहा। "शुक्रवार रात को जब मेहता ने मुझे फोन किया, तो मुझे उनके द्वारा दी गई जानकारी का भार महसूस हुआ। राख लगाने के विवरण। मैं उस भार से अवगत हूं। यह ऐसी जानकारी है जिसकी

जांच होनी है और यह उन जगहों पर जा सकती है जहां इसे नहीं जाना चाहिए। मैं उस टेलीविजन शो में इसलिए गई क्योंकि निर्माता ने मुझे बुलाया था, क्योंकि मैंने उनके साथ पहले काम किया था, और मैंने खुद से कहा कि इसे सार्वजनिक करने से कुछ फायदा होगा।" वह थोड़ी देर रुकी। "लेकिन मैं खुद से ईमानदार नहीं थी। मैं डर के मारे गई थी। और मुझे लगा कि सार्वजनिक नजरों में मैं ज्यादा सुरक्षित रहूंगी। लेकिन उपयोगी होने और सुरक्षित महसूस करने में बहुत बड़ा अंतर होता है।"
उन्होंने यह बात बहुत स्पष्ट रूप से कही। यह उस व्यक्ति का स्वभाव है जो किसी के पूछने से पहले ही सत्य को स्वीकार कर लेता है।
करण बहुत चुपचाप बैठा था।
"मेहता," उसने कहा।
“रमेश मेहता,” उसने कहा। “उसने शनिवार की सुबह-सुबह फोन किया था। वह मेरा करीबी नहीं है। हम कुछ कार्यक्रमों में मिले हैं। सामाजिक और पेशेवर कार्यक्रम, जहाँ मेरे क्षेत्र के लोग आते हैं। उसने कहा कि वह भवानी पेठ में एक समारोह से आ रहा था और उसे अपराध स्थल के बारे में कुछ जानकारी मिली थी। उसे लगा कि मुझे यह बात मेरे काम की वजह से पता होनी चाहिए।” उसने अपने हाथों की ओर देखा। “उसने मुझे जो विवरण दिए – राख लगाने का तरीका, उसका पैटर्न, माथे और आँखों के आसपास राख की सघनता – उसने इतनी सटीकता से दिए कि कोई उन्हें सुन नहीं सकता, पढ़ सकता है। अफवाह में इतनी सटीकता नहीं होती। अफवाह में विवरण खो जाते हैं। यह एक दस्तावेज़ की सटीकता थी।”
करण ने कहा, "उन्होंने जांच रिपोर्ट में कुछ पढ़ा होगा।"

"या शायद मैंने इसे किसी ऐसे व्यक्ति से सुना हो जिसने इसे पढ़ा हो," उसने कहा। "मैं ठीक-ठीक नहीं कह सकती कि क्या हुआ था। लेकिन विवरण सटीक थे और सही-सही दिए गए थे।"
"तुम्हें पता था कि वह सटीक था," करण ने कहा।
उसने उसे स्थिर निगाहों से देखा। "हाँ," उसने कहा। "मुझे तकनीक पता है। मुझे पता है कि अपराध स्थल पर राख का इस्तेमाल कैसे किया गया था। मुझे इसके बारे में इतनी जानकारी है कि मैं बता सकती हूँ कि विवरण विश्वसनीय हैं या नहीं।" वह थोड़ी देर रुकी। "क्या आप सच में यही जानना चाहते हैं? या मुझे तकनीक पता है? सिर्फ़ यह नहीं कि विवरण कहाँ से आए हैं।"
करण ने कुछ नहीं कहा। यही उसका 'हां' कहने का तरीका है। उन्होंने कहा, "मैं पैंतीस वर्षों से अभ्यास कर रही हूँ। यह कोई विशिष्ट परंपरा नहीं है। मेरी एक अलग वंश परंपरा है, जो कोंकण तट से आती है। अलग-अलग रूप, अलग-अलग शब्दावली। लेकिन फिर भी काफी हद तक मिलती-जुलती है। इतनी मिलती-जुलती कि मैं राख के उस प्रयोग को जानती हूँ जिसके बारे में आप बात कर रहे हैं। इतनी मिलती-जुलती कि जब मैंने वर्णन सुना, तो मैं ठीक-ठीक समझ गई कि क्या कहा जा रहा है और उसमें क्या कमी है।"
"इसमें कमी कहाँ रह गई?" करण ने पूछा।
उन्होंने खुद को संभाला। ज़रा भी संकोच नहीं हुआ। बस एक पल में उन्होंने तय किया कि क्या कहना है और कैसे कहना है। उन्होंने कहा, “इस साधना में राख लगाना केवल सजावट के लिए नहीं है। हर स्ट्रोक का एक विशिष्ट कोण और एक विशिष्ट अंतिम बिंदु होता है।
माथे पर राख गोलाकार नहीं, बल्कि त्रिज्या के आकार में लगती है।
हर स्ट्रोक तीसरी आंख के केंद्र बिंदु से बाहर की ओर जाता है।
अपराध स्थल पर जो नकल की गई थी, वह साधना का केवल बाहरी रूप था।

[illegible] [illegible] [illegible] [illegible], [illegible] [illegible] [illegible]

यह हमारे पिछले निष्कर्ष से अलग था। हमने कहा था कि कोई तस्वीरों के आधार पर काम कर रहा था। लेकिन कोटियन का कहना था कि कोई और आगे भी जा सकता था, लेकिन नहीं गया। यह अंतर महत्वपूर्ण था।

***

हमने कोटियन से पैंतालीस मिनट तक बात की। उन्होंने हमारे सभी सवालों के जवाब दिए। उन्होंने सवालों के अलावा ज्यादा कुछ नहीं कहा, सिवाय तब जब सटीकता के लिए यह जरूरी हो।
महत्वपूर्ण सवालों के खत्म होने के बाद, करण ने वह सवाल पूछा जिसका मुझे इंतजार था।
"संस्था," उन्होंने कहा. "प्रकाश सेवा प्रतिष्ठान।"
वे आश्चर्यचकित नहीं दिखे। वे ऐसे लग रहे थे जैसे किसी चीज की उम्मीद कर रहे हों और आखिरकार वह चीज उन्हें मिल गई हो।
"हां," उसने कहा।
"आप जानते हैं कि।"
उन्होंने कहा, "मैंने वहां काम किया। अठारह महीने। यह तीन साल पहले खत्म हुआ। मैंने उनके दो शिविरों में अनुष्ठान किए। कार्यक्रम की शुरुआत करने वाले प्रारंभिक अनुष्ठान, स्थान का पवित्रीकरण। मेरी परंपरा बहुत करीबी नहीं थी, लेकिन इतनी करीबी थी कि आयोजकों ने मुझे इसके लिए उपयुक्त समझा।"
वह रुकी और दीवार की ओर देखने लगी, जहाँ उत्तर कोंकण का एक तकनीकी आरेख बना हुआ था। “प्रतिष्ठान के कार्यक्रम बेतरतीब नहीं थे,” उसने कहा। “वे महाराष्ट्र के पाँच पारंपरिक भक्ति क्षेत्रों के इर्द-गिर्द आयोजित किए गए थे। प्रत्येक क्षेत्र के अपने प्रतीक, अपनी साधना परंपरा, अपना भौगोलिक केंद्र था। पश्चिम में ग्रामीण क्षेत्र, नासिक गलियारा, विदर्भ का आंतरिक

भाग, दक्षिण-पूर्व में मराठवाड़ा, दक्षिणी पठार।” उसने ये सब बिना उंगलियाँ गिने कहा। मानो उसे किसी बात का लंबे समय से ज्ञान हो। “प्रतिष्ठान प्रत्येक क्षेत्र में उस क्षेत्र की परंपराओं के अनुसार शिविर आयोजित करता था। ऊपरी तौर पर ऐसा लगता था कि परंपरा में जाए बिना ही कार्यक्रम आयोजित किए जा रहे हैं। लेकिन भौगोलिक संरचना बिल्कुल सही थी। जिसने भी प्रतिष्ठान के कार्यक्रमों की योजना बनाई थी, वह पाँचों क्षेत्रों की रूपरेखा से भलीभांति परिचित था।” उसने करण की ओर देखा। “इस तरह का ज्ञान आसानी से नहीं मिलता।”
उसने फिर से अपने हाथों की ओर देखा। "लेकिन फिर मैं रुक गया। क्योंकि मुझे शिविरों की बदलती स्थिति को लेकर बेचैनी महसूस होने लगी थी।"
"क्या हो रहा था?" करण ने पूछा।
“शुरुआत में सब कुछ वास्तविक था,” उन्होंने कहा। “सीखने के इच्छुक लोग, सिखाने के लिए कुछ रखने वाले शिक्षक, ईमानदारी से निर्मित एक स्थान। पहले छह महीनों तक मेरे शिविरों का यही उद्देश्य था।” वह थोड़ी देर रुकीं। “फिर कुछ बदल गया। प्रतिभागी एक अलग उद्देश्य से आने लगे। ज्ञान की तलाश में नहीं, बल्कि आश्वासन की तलाश में। साधना सीखने की इच्छा से नहीं, बल्कि यह उम्मीद करते हुए कि साधना उनकी समस्या का समाधान कर देगी। और इस तरह कार्यक्रमों की शुरुआत हुई।” उन्होंने करण की ओर देखा। “जब कोई कार्यक्रम लोगों को वह सिखाने लगता है जो वे सुनना चाहते हैं, बजाय इसके कि उन्हें क्या जानना चाहिए, तो वह शिक्षा नहीं रह जाती और कुछ और बन जाती है। कुछ ऐसा जो बाहर से शिक्षा जैसा दिखता है।” वह थोड़ी देर रुकीं, फिर बोलीं, “और शिविरों की वित्तीय संरचना बदल गई। प्रतिभागियों के लिए लागत

बढ़ गई। उन्हें आध्यात्मिक विकास के नाम पर निवेश के अवसरों में धकेला जाने लगा।” उन्होंने फिर अपने हाथों को देखा। “मैं निर्दोष नहीं हूँ। लेकिन मैंने पहले छह महीनों तक संगठन पर भरोसा किया। और जब मुझे बाद के महीनों में पता चला कि वे क्या कर रहे हैं, तब तक मैं वहाँ इतने लंबे समय से थी कि मुझे लगा जैसे मैंने खुद से समझौता कर लिया हो।” वह थोड़ी देर रुकी और बोली, "मैंने खुद को किनारे रख दिया। मुझे यह पहले ही कर लेना चाहिए था।"
"ये कैंप कौन चला रहा था?" करण ने पूछा।
"औपचारिक कार्यक्रम का समन्वय वसुधा कदम नाम की एक महिला कर रही थीं," कोटियन ने कहा। "वह फाउंडेशन के बोर्ड में हैं। वह एक सच्ची जिज्ञासु हैं। वह उन कार्यक्रमों से कहीं अधिक जानकार हैं जिनका संचालन वह कर रही थीं। मुझे नहीं पता कि उन्हें इस बात की पूरी जानकारी थी कि फाउंडेशन पैसे का उपयोग कैसे कर रहा था।" वह थोड़ी देर रुकीं और बोलीं, "या शायद उन्हें यह समझना सुविधाजनक नहीं लगा कि वे इसे समझें।"
"और सीढ़ियों के ऊपर?" करण ने पूछा।
उन्होंने उसकी ओर देखा। जो सन्नाटा छाया, उसे टाला नहीं जा सकता था। यह तय करना था कि क्या सावधानी से कहा जाए और क्या पूरी सच्चाई बताई जाए। “एक व्यक्ति था जो कभी शिविरों में नहीं था,” उसने कहा। “कार्यक्रम से संबंधित किसी भी साहित्य में उसका ज़िक्र नहीं था। लेकिन उसके फैसलों ने शिविरों को आकार दिया। मैं उससे कभी नहीं मिली। मैं उसका नाम नहीं जानती। मुझे बस इतना पता है कि कदम परिवार को उससे निर्देश मिलते थे। और वे निर्देश कार्यक्रम की दिशा और वित्तीय संरचना के बारे में पूरी तरह से तर्कसंगत अनुरोधों के रूप में आते थे। और कदम परिवार उनका पालन

करता था।” वह रुकी और बोली, “सीढ़ियों के ऊपर, लेकिन नज़रों की सीमा से नीचे। मैं बस इतना ही कह सकती हूँ।”
"यह हमारे पास जो था उससे कहीं अधिक है," करण ने कहा।
वह खड़ा हो गया। "धन्यवाद," उसने कहा। दो शब्द, लेकिन पूरे अर्थ से भरे हुए।
वह भी उठ खड़ी हुई। वह दरवाजे पर आकर रुक गई।
"मेहता के बारे में वो जानकारी," उसने कहा। "मैं उसे कार्यक्रम में इस्तेमाल नहीं करना चाहती थी। लेकिन मैं आपको ये भी बताना चाहती हूँ -" उसने करण की ओर सीधे देखते हुए कहा, "- मैंने शनिवार सुबह कार्यक्रम के बाद आपके लिए पुलिस को फोन किया था। मेरे पास आपका नंबर नहीं था। आपके फोन करने से पहले ही।"
करण ने उनकी तरफ देखा। "मुझे पता है," उसने कहा। "सैनिक ने मुझे बताया था।"
उसने यह बात मान ली। फिर उसने कहा, "जांच में हर संभव तरीके से सहयोग करूंगी।"
उन्होंने कहा, "हम संपर्क में रहेंगे।"
हम रविवार की सुबह नए रंगे हुए सीढ़ियों से उतरकर सड़क पर आ गए। मैं सीढ़ियों के नीचे रुक गया और नोटबुक को देखने लगा।
मैंने पैंतालीस मिनट में छह पन्ने लिख डाले थे। ऐसा इसलिए नहीं था कि कोट्यान बहुत ज्यादा बोलती थीं। वह एक जानकार व्यक्ति की तरह सोच-समझकर और कम शब्दों में बोलती थीं। उन्हें पता था कि जरूरत से ज्यादा बोलना और जरूरत से ज्यादा बोलना कितना सही है। उन्होंने छह पन्ने इसलिए लिखे क्योंकि उनकी कही हर बात किसी न किसी बात की ओर ले जाती थी। और अगली बात को समझने से पहले उस अगली बात को समझना जरूरी था। अच्छी गवाही इसी तरह काम करती है: यह अपने आप ही विश्लेषण का रूप ले लेती है।

रविवार की सुबह की रोशनी में उन छह पन्नों की जो छवि मेरे मन में थी, वह हमारे पहुंचने पर बनी छवि से बिल्कुल अलग थी। हम रिसाव के स्रोत का पता लगाने आए थे। स्रोत मिल गया था। और उसने वह सब कुछ बता दिया था जो वह जानता था। जो रिसाव से कहीं अधिक था। इसमें उद्धृत करने योग्य कोई समस्या नहीं थी। वह एक गवाह थी, जिससे पूछताछ होनी बाकी थी। एक ऐसी शख्सियत जिसने लंबे समय तक कुछ छिपाकर रखा था और अब उसे किसी को बताने का मौका पाकर राहत महसूस कर रही थी।
मैंने सीढ़ियों पर लगी तस्वीर के बारे में सोचा। उत्तरी कोंकण तट का वह तकनीकी चित्र, जिसे ज्यादातर लोग बिना पहचाने ही आगे बढ़ जाते हैं। पत्रिकाओं से रहित प्रतीक्षालय। संस्कृत ग्रंथों का वह संग्रह, जिसके लिए ज्ञान की आवश्यकता थी। कोटियन ने अपनी जगह इस तरह बनाई थी मानो वह अपने बारे में कुछ कहना चाहता हो। उन लोगों के लिए जो इसे पढ़ सकते थे, उन लोगों के लिए जो नहीं पढ़ सकते थे। जो लोग नहीं पढ़ सकते थे, उनके लिए यह एक सुखद, शांत व्यावसायिक वातावरण था। जो सच था और जानबूझकर किया गया था।
तात्या को लगभग हर किसी की आंशिक निगरानी में रहने की आदत थी। जैसे ही मैं उन सीढ़ियों से नीचे उतरा, मुझे एहसास हुआ कि थोड़े समय के लिए, भले ही वह किसी जांच के संदर्भ में हो, पूरी तरह से निगरानी में रहना उसके लिए एक तरह की राहत थी।

***

बाहर, लॉ कॉलेज रोड के पेड़ अक्टूबर की अपनी छटा बिखेर रहे थे। कोने पर एक चाय की दुकान थी। उसे अटूट विश्वास था कि यह दुकान कई वर्षों से यहीं है और यहीं रहेगी। हम बिना सोचे-समझे वहाँ चले गए।

[illegible], "[illegible]"

"[illegible]," [illegible] [illegible] [illegible]

[illegible], "[illegible] [illegible] [illegible] [

मैं इन विचारों को करण के बेहद सावधानीपूर्वक किए गए काम से जोड़ता हूँ। सिर्फ़ अगले कदम के बारे में ही नहीं, बल्कि अगले कदम के बाद क्या होगा, और क्या वह अगला कदम काम को आसान बनाएगा या मुश्किल। उनकी जाँच-पड़ताल सीधी रेखा में नहीं चलती, बल्कि घुमावदार होती है। हर दौर में वे थोड़े अलग कोण से उन्हीं बिंदुओं पर लौटते हैं। हर बार लौटने पर कुछ ऐसा नया पता चलता है जो पिछले दौर में नहीं मिला था।
मैंने कहा, "व्याख्यान की पांडुलिपि।"
"हां," उसने कहा।
“प्रिया की टीम अभी भी अकादमिक स्रोतों की पहचान करने पर काम कर रही है,” मैंने कहा। “मैं खुद भी उस लेख को देख रहा हूँ।” मैंने नोटबुक खोली, उस पृष्ठ पर जहाँ मैंने दृश्य पाठ की प्रतिलिपि बनाई थी। “उद्धरण शैली से संकेत मिलता है। फुटनोट की संरचना, लेखक-तिथि शैली, फटे हुए कोने में दिखाई देने वाला पत्रिका शीर्षक का विशिष्ट संक्षिप्त रूप—यह मानविकी विषय की शैली है। इतिहास, मानवशास्त्र या धार्मिक अध्ययन।” मैंने लेख को देखा। “और किनारे पर लिखा वाक्यांश भी। *उद्देश्य अक्ष को उलटकर प्रभाव बढ़ाना।* शब्दावली तकनीकी विद्वत्तापूर्ण है। लोकप्रिय लेखन नहीं, भक्तिपूर्ण लेखन नहीं। अकादमिक तकनीकी विद्वत्तापूर्ण। विश्वविद्यालयों में किया गया।” "महाराष्ट्र के किन विश्वविद्यालयों में इस क्षेत्र में कार्यरत शाखाएं हैं?" करण ने पूछा।
“ये तीन महत्वपूर्ण संस्थान हैं,” मैंने कहा। “पुणे में एसपीपीयू., औरंगाबाद में बीएएमयू., और भंडारकर ओरिएंटल रिसर्च इंस्टीट्यूट। तकनीकी रूप से यह विश्वविद्यालय नहीं है, लेकिन राज्य में यहीं सबसे मजबूत शोध कार्य होता है।” मैंने उसकी ओर

देखा। “हैंडआउट का प्रारूप संस्थागत था। शोध पत्र नहीं। व्याख्यान का हैंडआउट। किसी ने व्याख्यान दिया और उसके लिए हैंडआउट तैयार किए।” कुछ देर रुककर मैंने कहा, “हमें भंडारकर संस्थान जाना होगा।”
उन्होंने कहा, "मंगलवार को गोखले की टीम मेहता के बारे में कुछ प्रारंभिक जांच करेगी।"
मैंने सहमति जताते हुए कहा, "मंगलवार।"
हमने अपनी चाय खत्म कर ली। ड्राइवर ने बड़ी सहजता से हमारे गिलास उठाए, मानो वह कोई मंझा आदमी हो, जिसके लिए गिलास उठाना, धोना और व्यवस्थित करना पूरी तरह से शारीरिक क्रिया बन चुकी हो। उसे इस पर ध्यान देने की ज़रूरत ही नहीं पड़ती।

***

दोपहर का समय काम के लिए था।
रिकॉर्डिंग के काम का वर्णन करना कठिन है। यह नाटकीय नहीं है। यह छोटे-छोटे टुकड़ों में आगे बढ़ता है। जानकारी का प्रत्येक टुकड़ा विशेष नहीं होता। इसका महत्व केवल संचय में ही प्रकट होता है। ठीक वैसे ही जैसे पानी की अलग-अलग बूंदें बाढ़ नहीं बनातीं और न ही अपने बनने की घोषणा करती हैं।
उस रविवार दोपहर मैं फाउंडेशन के दानदाताओं और निवेशकों के रिकॉर्ड पर काम कर रहा था। हर पहलू की बारीकी से जाँच कर रहा था। सार्वजनिक रूप से उपलब्ध दस्तावेजों से शुरू करके, उन गुप्त संपर्कों की ओर बढ़ रहा था जिन्हें वित्तीय संस्थाएँ समय के साथ सार्वजनिक किए जाने वाले दस्तावेजों से छिपाना सीख जाती हैं। यह खोजी कार्य है, जिसमें अंतर्दृष्टि से कहीं अधिक धैर्य की आवश्यकता होती है। और धैर्य एक ऐसी चीज है जिसे मैंने कई जाँचों के दौरान विकसित किया है, न कि एक स्वाभाविक गुण के रूप

में, बल्कि एक पेशेवर अनुशासन के रूप में। मैं स्वभाव से धैर्यवान व्यक्ति नहीं हूँ। मैंने काम की मांग पर धैर्य रखना सीखा है।
संस्था के वार्षिक विवरण में प्रमुख दानदाताओं की सूची श्रेणी के अनुसार दी गई थी, न कि नाम के अनुसार। दान पंजीकरण नियमों के तहत इसकी अनुमति है। मैं कॉरपोरेट निवेश के दृष्टिकोण से काम कर रहा था। संबंधित कंपनियाँ। वे संस्थाएँ जिन्होंने दान के बदले निवेश किया था। जिनके नाम दानदाताओं के रिकॉर्ड के बजाय निवेश सूची में दिखाई देते थे। शिंदे इंफ्राटेक उनमें से एक थी। मेरे पास पिछले विवरणों से तीन और कंपनियाँ थीं। चौथी वार्षिक रिपोर्ट पर काम करते समय, मुझे एक ऐसा नाम मिला जो मैंने पहले कभी नहीं देखा था।
चंद्रशेखर गोडबोले, नागपुर। गोडबोले हेरिटेज प्रॉपर्टीज के निदेशक। फाउंडेशन की संबंधित व्यावसायिक इकाई में निरंतर निवेश। यह निवेश स्वयं धर्मार्थ ट्रस्ट में नहीं, बल्कि एक निजी लिमिटेड कंपनी में था, जिसका उपयोग ट्रस्ट अपने संपत्ति संबंधी शिविरों के प्रबंधन के लिए करता था। तीन वर्षों का निवेश। शिंदे इंफ्राटेक के निवेश से लगभग ढाई गुना अधिक। निवेश संबंधी दस्तावेजों में उनकी भूमिका को 'सामुदायिक संपर्क निवेशक' के रूप में वर्णित किया गया है। इस प्रकार के दस्तावेज़ों में मैंने पहले कभी इस श्रेणी को नहीं देखा था। और मेरे शोध के अनुसार, इसका अर्थ यह था कि यह व्यक्ति विदर्भ क्षेत्र, नागपुर और आसपास के इलाकों में पूंजी और सामुदायिक संबंधों तक पहुंच दोनों प्रदान कर रहा था।
सामुदायिक सहायता कार्यक्रम में निवेश करने वाले निवेशक। पैसा और संपर्क, दोनों एक साथ। एक ऐसे क्षेत्र में जहां फाउंडेशन एक

[illegible] [illegible] [illegible], [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

*— [illegible] [illegible], [illegible] [illegible], [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

मैं संस्था के रिकॉर्ड से दूर हो गया।
“प्लेट का कुछ हिस्सा MH 12 है,” उन्होंने कहा। “धोले की टीम ने क्षेत्रीय पंजीकरण डेटाबेस में इसकी जाँच की। पुणे जिले में MH 12 नंबर प्लेट वाले लाल स्कूटरों के 47 सक्रिय पंजीकरण हैं।” उन्होंने फ़ोल्डर खोला। “सीसीटीवी फुटेज से मॉडल का मिलान करने पर, फ्रेम का दिखाई देने वाला हिस्सा होंडा एक्टिवा स्कूटर का संकेत देता है। तीन से पाँच साल पुराना। 47 में से 31 स्कूटर इसी मॉडल से मेल खाते हैं।” उन्होंने सूची पर एक नज़र डाली। “31 स्कूटरों की व्यक्तिगत रूप से जाँच करना बिना और अधिक जानकारी जुटाए संभव नहीं है। गोखले एक सेकेंडरी फ़िल्टर चला रहे हैं। 31 स्कूटरों की जाँच कर रहे हैं। भवानी पेठ, शिंदे इंफ्राटेक, प्रतिष्ठान से उनके किसी भी संबंध की तलाश कर रहे हैं।” उन्होंने फ़ोल्डर बंद कर दिया। “मंगलवार तक हमारे पास एक प्रबंधनीय संख्या होगी।”
मैंने कहा, "रात के चौकीदार ने घुड़सवार को लंबा बताया था। एक महिला। दोनों बार।"
“रविवार सुबह कांस्टेबलों ने पेठ में गश्त की,” करण ने कहा। “तभी एक पड़ोसी आया। उसने शुक्रवार शाम करीब 8:30 बजे मिल के प्रवेश द्वार के पास एक महिला को लाल स्कूटर पर देखा था।” इस बार लाल साड़ी नहीं थी। गहरे रंग का जैकेट था। लेकिन हुलिया वही था। लंबी, लाल स्कूटर पर, पेठ की गलियों की ओर पूरब दिशा में जा रही थी।” उसने कॉर्क बोर्ड पर नज़र डाली। “वह शाम को पहले भी वहाँ थी। मृत्यु के अनुमानित समय से पहले।”
मैंने कहा, "वह दो महीने पहले उनके साथ थी। या फिर वह उन्हें देख रही थी।"

“या फिर वो उन्हें वहाँ लाई होगी,” करण ने कहा। “उनकी भूमिकाएँ अलग-अलग हैं। और परिणाम भी अलग-अलग हैं।” वह कॉर्क बोर्ड के पास गया और दो पिनों को देखा। उसने डिब्बे से एक तीसरी पिन निकाली और उसे बोर्ड पर लगाया। “कोरेगांव पार्क,” उसने कहा। “संस्था का पत्राचार पता।” उसने पिन को बोर्ड में दबा दिया। तीसरा बिंदु। शहर के उत्तरी भाग में। एक पुराना रिहायशी इलाका, जहाँ दशकों से पैसा चुपचाप पड़ा हुआ है।
तीन बिंदु। मिल, नासिक, कोरेगांव पार्क। अभी तक कोई स्पष्ट पैटर्न नहीं। लेकिन स्थिति धीरे-धीरे स्पष्ट होने लगी थी। जैसे सबूत धीरे-धीरे स्पष्ट होते हैं। किसी रहस्योद्घाटन से नहीं, बल्कि उन चीजों के धीरे-धीरे सामने आने से जो समझ में आने लगीं।

***

हमने शाम 7:00 बजे खाना खाया। फ्रिज में दो दिन पुरानी फोडनी वराना मिली, जो अभी भी खाने लायक थी। हमने उससे चावल बनाए। एक पूरे भोजन का सबसे आसान तरीका। जो मैं तब करती हूँ जब मेरा ध्यान कहीं और होता है। चावल अच्छे थे। दाल ताज़ी दाल से भी ज़्यादा स्वादिष्ट थी। पिछले दो दिनों में मसालों का स्वाद आपस में मिल गया था। कुछ चीज़ें बिना किसी दखल के अपने आप बेहतर हो जाती हैं।
करण बिना खाने की तरफ देखे खाना खा रहा था। वह उस दोपहर मेरे द्वारा लिखे गए कोटियन के साक्षात्कार के नोट्स पढ़ रहा था। धीरे-धीरे, ध्यान से।
"अंतराल," उसने बिना किसी भूमिका के कहा। उस बातचीत को जारी रखते हुए जो बाकी सब कुछ होते हुए भी पृष्ठभूमि में चल रही थी।
मैंने कहा, "सचेत दूरी।"

"शोध और समझ के बीच।" उन्होंने पन्ने नीचे रख दिए। "बिल्कुल सही। शोध करने वाले व्यक्ति को स्वाभाविक रूप से कुछ समझ भी मिल जाती है। बिना समझ के शोध करने का एकमात्र तरीका है शोध करना और जानबूझकर आगे न बढ़ना।" उन्होंने अपनी नब्ज़ देखी और कहा, "यह उस व्यक्ति का निर्णय है जो इसे एक उपकरण के रूप में इस्तेमाल करता है, न कि एक उपकरण के रूप में। उसे एक ऐसी संरचना बनाने के लिए पर्याप्त ज्ञान होना चाहिए था जो कुछ हद तक विश्वसनीय लगे। उसने इसे सही ढंग से करने के लिए पर्याप्त ज्ञान न होने का विकल्प चुना।"
मैंने कहा, "क्योंकि सही होना ही मुख्य बात नहीं थी।"
उन्होंने कहा, "यह परंपरा के रूप में पहचाने जाने के लिए पर्याप्त रूप से करीब होने का मामला था। और दूसरा, इस तरह से गलत होना कि एक जानकार व्यक्ति उसे पहचान सके।" वे थोड़ी देर रुके। "दृश्य को एक साथ दो दर्शकों के लिए बनाया गया था। आम जनता, जो एक रस्म के तौर पर की गई हत्या को देखेगी और यह नहीं जानेगी कि यह एक दिखावा था। और जांचकर्ता, जो परंपरा को जानता था, जो इस दिखावे को देखेगा और जान जाएगा कि यह जानबूझकर किया गया था।" उन्होंने मेरी ओर देखा। "टेलीविजन पैनल पर कोटियन इसे पहले दर्शकों के लिए कर रहे थे। हम दूसरे दर्शक हैं।"
मैंने कहा, "यह दृश्य एक ही समय में दो लोगों से बात कर रहा है।" उन्होंने कहा, "उसी तस्वीर के साथ। और यह हर किसी को कुछ अलग बता रही है।"
खाना खाते हुए मैं इसके बारे में सोच रहा था। दोहरी प्रविष्टि वाली किताबों में रचा गया एक दृश्य। एक सामान्य पठन के लिए, दूसरी किसी विशिष्ट, अपेक्षित अन्वेषक के लिए। एक थिएटर रसीद, हाशिये पर लिखे नोट्स वाला एक कागज़ का टुकड़ा। यह किसी और

दर्शक वर्ग के लिए था। हमारे लिए। लेकिन पहला दर्शक वर्ग भी मौजूद था, और उन्हें भी कुछ मिल रहा था। रस्मों से जुड़ी हिंसा का आभास। भक्तिपूर्ण भय का। उस विचित्र स्थान का जहाँ आस्था और मृत्यु मिलती हैं। सुबह का समाचार पैनल। क्वोटियन दूरदर्शन के दर्शकों पर राख लगाने का वर्णन कर रहा था, जो अपने साथ एक ऐसी तस्वीर लेकर जाएगा जो उन्हें एक खास तरह का भय महसूस कराएगी। मैंने कहा, "पहली सभा भी योजना का हिस्सा है।"
करण ने ऊपर देखा।
मैंने कहा, "जनता की प्रतिक्रिया। टेलीविजन पैनल। शहर भर में फैलती रस्मों के तहत की गई हत्या की छवि। यह आकस्मिक नहीं है। दृश्य को जानबूझकर इस तरह तैयार किया गया था कि पहले दर्शकों में वैसी ही प्रतिक्रिया उत्पन्न हो। और जांच को भी इसी के भेद को उजागर करने के लिए तैयार किया गया है। दोनों प्रतिक्रियाएं जानबूझकर की गई हैं।" मैं थोड़ा रुका। "लोग दिखाई देने वाली रस्मों पर प्रतिक्रिया देते हैं। हम अंतर्निहित तंत्र पर प्रतिक्रिया देते हैं। दोनों प्रतिक्रियाएं नियंत्रित हैं।" उसने उस भाई की ओर देखा, जिसका कोई नाम नहीं था। जो तब आता है जब मैं कुछ ऐसा कहता हूँ जो वह सोच रहा होता है। और बाहर से सुनकर उसकी कद-काठी का पता चलता है। "हाँ," उसने कहा।
मैंने कहा, "क्यों? इस दृश्य को रचने वाला व्यक्ति एक ही समय में दोनों प्रतिक्रियाएँ क्यों चाहेगा?"
वह काफी देर तक चुप रहा।
उन्होंने कहा, "मुझे अभी पता नहीं है। लेकिन 'क्यों' का जवाब महत्वपूर्ण होगा।" उन्होंने कॉर्क बोर्ड की ओर देखते हुए कहा, "मुझे मंगलवार को खुद भंडारकर संस्थान जाना है।"
मैंने कहा, "मैं आ रहा हूँ।"

"जी हां," उन्होंने कहा। यह कोई निमंत्रण नहीं था। एक परिचय था। मेरी उपस्थिति पहले से ही अपेक्षित थी।

***

रात के खाने के बाद, प्लेटें साफ करने और बचे हुए खाने को तीसरी और शायद सबसे अच्छी बार बनाने के लिए फ्रिज में वापस रखने के बाद, मैं बुनियादी रिकॉर्ड लेकर कॉफी टेबल पर बैठ गया। मेरे चारों ओर व्यवस्थित ढंग से फैले हुए थे वो तरीका जिसे मैंने धीरे-धीरे विकसित किया था। पुष्ट तथ्य एक ढेर में। संभावित संबंध दूसरे में। अनुमान और अपुष्ट तथ्य तीसरे ढेर में। इसे थोड़ा अलग रखा गया था ताकि इसकी स्थिति याद रहे।
अटकलों का ढेर बाकी सभी ढेरों की तुलना में काफी बड़ा था। मैंने इसे व्यवस्थित ढंग से खंगाला। फाउंडेशन के बोर्ड के सदस्यों के नाम। सेवानिवृत्त सरकारी कर्मचारी वसुधा कदम, तीसरी अदृश्य शख्सियत। निवेश के रिकॉर्ड। शिंदे इंफ्राटेक, गोडबोले हेरिटेज प्रॉपर्टीज, दो और जिनके बारे में अभी पूरी तरह से जानकारी नहीं मिल पाई है। कोटियन का विवरण। कदम परिवार से ऊपर का आदमी। कभी दिखाई नहीं दिया। जिसके सुझाव उचित अनुरोधों की तरह आए और जिसने परोक्ष रूप से शिविरों को आकार दिया।
उस दोपहर एक और बात सामने आई। अठारह महीने पहले की संस्था की कार्यक्रम रिपोर्टों में छिपी हुई। एक शिविर के कार्यक्रम नोट्स में एक वक्ता का विवरण। कोई नाम नहीं। वक्ता का विवरण। कार्यक्रम सामग्री में अक्सर लोगों के नाम के बजाय उनकी भूमिका के अनुसार सूची बनाई जाती है। ताकि कार्यक्रम में निरंतरता बनी रहे, चाहे किसी भी अवसर पर वह भूमिका कौन निभा रहा हो।

[illegible]

[illegible]

[illegible]

केंद्रित पत्रकारिता। वे दो राष्ट्रीय पत्रिकाओं के लिए लिखते थे। उनका एक ब्लॉग भी था जिसके पाठक संख्या इतनी थी कि उसे गंभीरता से लिया जा सके, लेकिन इतनी नहीं कि वह प्रसिद्ध हो जाए। उन्होंने प्रतिष्ठान के कार्यक्रमों में पत्रकार के रूप में भाग लिया था। या कम से कम पंजीकरण कराते समय उन्होंने इसे पत्रकार के रूप में बताया था। पिछले दो वर्षों में तीन कार्यक्रम।
और वह शुक्रवार रात भवानी पेठ में थे। उनके अपने सोशल मीडिया पोस्ट के अनुसार, रात 9:45 बजे का एक पोस्ट था, जिसमें पेठ में स्थित लाल जोगेश्वरी मंदिर का दृश्य था। आसपास के धार्मिक अनुष्ठान के बारे में भी कुछ लिखा था। शिंदे की मृत्यु के अनुमानित समय से चालीस मिनट पहले का एक पोस्ट था। मिल से छह सौ मीटर की दूरी पर।
वह मिल में नहीं था। इस बात का कोई सबूत नहीं था कि वह घेराबंदी के अंदर था। लेकिन वह शुक्रवार रात को पेठ में था। उसने इसकी सार्वजनिक घोषणा की थी। और फिर राख लगाने के बारे में जानकारी देने के लिए कोटियन को फोन किया था।
मैंने करण से कहा, "उसे ये जानकारी कहाँ से मिली?"
“सीधे घटनास्थल से नहीं,” करण ने कहा। “वह घेराबंदी के अंदर नहीं था। जांच दल ने पुष्टि की कि कोई अनाधिकृत प्रवेश नहीं हुआ था।” वह अपने फोन पर गोखली की प्रारंभिक रिपोर्ट देख रहा था। “घटनास्थल का दस्तावेजीकरण होने के बाद किसी ने उससे संपर्क किया। जांच दल के अंदर से।” उसने फोन नीचे रख दिया। “या वह मिल के आसपास कहीं था। जहां उसकी मुलाकात अंदर किसी से हुई।” मैंने कहा, "टेम्पल पोस्ट। वह पहले से ही उस इलाके में था। उसके किसी परिचित ने उससे संपर्क किया था।"

"या फिर वह इलाके में किसी को जानता था जिसने संपर्क किया," करण ने कहा। "जब तक हमें मेहता के फोन रिकॉर्ड नहीं मिल जाते, तब तक हमें पता नहीं चलेगा कि संपर्क कहां से हुआ था।" वह थोड़ी देर रुका। "गोखले इस मामले को आगे बढ़ा रहे हैं। मंगलवार को।"
फिर से मंगलवार। भंडारकर संस्थान, स्कूटर का सेकेंडरी फिल्टर, मेहता के फोन रिकॉर्ड। जांच ऐसे मोड़ पर थी जहां अगले अड़तालीस घंटों में या तो नए खुलासे होंगे या फिर हमारे संदेह की पुष्टि होगी। और दोनों ही परिणाम जांच में एक और प्रगति ही थे।
मैंने मेहता को पुष्ट तथ्यों की सूची में शामिल किया और संपर्क स्थापित किए। लेख - पत्रकार, आध्यात्मिक अर्थव्यवस्था पर रिपोर्टिंग, प्रतिष्ठान के कार्यक्रमों में प्रेस की उपस्थिति, शुक्रवार रात भवानी पेठ, कोटियन लीक का स्रोत।
अब तीन व्यक्ति विभिन्न पहलुओं के चौराहे पर हैं। कोटियन, परंपरा, प्रतिष्ठान और लीक हुई जानकारियों के चौराहे पर। मेहता, प्रतिष्ठान, पत्रकारिता और खोजी सूचनाओं के चौराहे पर।
एक गुमनाम विद्वान, परंपरा, प्रतिष्ठान के शिविर कार्यक्रम और हत्या स्थल पर मिले एक पर्चे के चौराहे पर।
और वसुधा कदम. कार्यक्रम आयोजक.
मैंने नोटबुक के एक नए पन्ने पर एक मोटा-मोटा चित्र बनाया।
कॉर्क बोर्ड का इस्तेमाल नहीं किया। अभी नहीं। जब तक बात पक्की न हो जाए। नोटबुक में तो अस्थायी बातें लिखी जाती हैं। कॉर्क बोर्ड पर पक्की बातें लिखी जाती हैं।
जब मैं उससे थोड़ा पीछे हटा तो वह आकृति एक जाले जैसी दिखाई दी।
देखने पर वह किनारों से अंदर की ओर, अभी तक न खींचे गए केंद्र की ओर बढ़ती हुई दिखाई दी।

केंद्री: एक खाली सीट। सीढ़ियों पर एक आदमी। जिसके फैसलों ने शिविरों को तब आकार दिया जब वे किसी की नजरों में नहीं थे।
जिसका नाम मुझे मिले किसी भी दस्तावेज़ पर नहीं था।
मैंने काफी देर तक उस खाली जगह को घूर कर देखा।
फिर खाली जगह में उसने एक प्रश्नचिह्न बना दिया। अनिश्चितता को दर्शाने के लिए। चारों ओर से नामों और संपर्कों से घिरा हुआ। जो हर दिशा से उसकी ओर इशारा कर रहे थे।

***

जब मैंने करण को चित्र दिखाया, तो वह कॉर्क बोर्ड के पास था। वह काफी देर तक एकाग्र मन से चुपचाप उसे देखता रहा। उसने खाली केंद्र को प्रश्नचिह्न की तरह देखा।
उन्होंने मुझसे आरेख लिया और उसे एक कॉर्क बोर्ड पर तीन भौगोलिक बिंदुओं – मिल, नासिक, कोरेगांव पार्क – के नीचे चौथे तत्व के रूप में लगा दिया। बोर्ड केवल आरंभिक बिंदुओं का संग्रह नहीं, बल्कि एक अभिलेख बन रहा था। अभिलेख आरंभिक बिंदुओं से कहीं अधिक उपयोगी होते हैं। वे केवल उपस्थिति दर्शाने के बजाय अर्थ का संचय करते हैं।
उन्होंने कहा, "मंगलवार।"
मैंने सहमति जताते हुए कहा, "मंगलवार।"
उन्होंने चाय बनाई। पूछने की ज़रूरत ही नहीं पड़ी। पास की दुकान से चाय। दो लोगों के लिए बिल्कुल सही मात्रा। उन्होंने मेरी चाय पार्टीशन के पास काउंटर पर रख दी, जहाँ से मैं बिना इशारा किए उसे ले सकूँ। मैंने चाय ली और पी ली। बाहर खिड़की के पास रात के 10 बज रहे थे।
मैंने नोटबुक का आखिरी नया पन्ना खोला और लिखा:
— तीसरे दिन का समापन:

*[illegible]: [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible], [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

[illegible]

- [illegible]:

[illegible]

[illegible]

[illegible], [illegible], [illegible], [illegible], [illegible] [illegible]:

— [illegible]

[illegible]

[illegible], [illegible], [illegible], [illegible]

[illegible]

मंगलवार को हम भंडारकर संस्थान जाएंगे और अंधेरे में दिखने वाली आकृति को एक और नया आयाम मिलेगा।

[redacted] 4 - [redacted]

[redacted] 1917 [redacted]

इस संदर्भ में, उस व्यक्ति के मुंह से, जिसका जांच से कोई लेना- देना नहीं था, उस नाम को सुनना, उस बात की पुष्टि करता था जो पहले केवल संभव ही थी।
दूसरा नाम: प्रोफेसर जोशी, जो अब सेवानिवृत्त हो चुके हैं, जिनका प्रासंगिक कार्य हमारी जांच से दो दशक पहले का है। तीसरा नाम: एक शोध छात्र, जिसका शोध उस परंपरा से अप्रत्यक्ष रूप से जुड़ा हुआ था जिसकी हम जांच कर रहे थे।
"राव," करण ने कहा।
“राव,” लाइब्रेरियन ने पुष्टि की। “पिछले पंद्रह वर्षों में इस विशेष क्षेत्र में सबसे सक्रिय शोधकर्ता। दक्कन की अनुष्ठानिक परंपराओं में दिशात्मक पूजा के प्रतीकवाद पर उनका 2019 का शोध प्रबंध मानक संदर्भ ग्रंथ है।” वह रुका। “उन्होंने 2019 और 2020 में गैर-शैक्षणिक प्रतिभागियों के लिए एक सार्वजनिक व्याख्यान श्रृंखला भी आयोजित की थी। छह व्याख्यान। उन व्याख्यानों की पुस्तिकाएँ संस्थान के कार्यालय में हैं, क्योंकि उन्होंने ही उन्हें दिया था।” उन्होंने करण को उस ध्यान से देखा जैसे कोई यह हिसाब लगा रहा हो कि क्राइम ब्रांच का एक आदमी अकादमिक पुस्तिकाओं के बारे में क्यों पूछ रहा है और उन्हें यह हिसाब लगाना दिलचस्प लगा। “क्या आप उन्हें देखना चाहेंगे?”
"जी हां, कृपया," करण ने कहा।

***

भंडारकर संस्थान का वाचनालय लंबा और शांत है। लंबी खिड़कियों से अक्टूबर की सुबह की रोशनी एक ऐसे कोण से अंदर आती है जो उस इमारत के लिए उपयुक्त है जिसे उन लोगों ने बनाया था जो समझते थे कि किसी विद्वान के काम पर पड़ने वाली रोशनी जानबूझकर होनी

चाहिए, न कि आकस्मिक। मेजें चौड़ी और कम चमक वाली हैं। उनकी लकड़ी में वह विशेष चिकनाई पॉलिश से नहीं, बल्कि दशकों के उपयोग, आधार के घर्षण और नोटबुक और चिंतनशील लोगों के भार से आई है। कमरे में पुराने कागज़ और लकड़ी की पॉलिश की हल्की सी महक थी, साथ ही दरवाज़े के पास शेल्फ पर रखी एक किताब में दबाए गए सूखे फूलों की हल्की सी मीठी-मीठी खुशबू भी थी, जिसे किताब वापस रखने से पहले पूरी तरह से हटाया नहीं गया था।
लाइब्रेरियन एक फ़ोल्डर लेकर आई। उसके अंदर: 2019-2020 की सार्वजनिक व्याख्यान श्रृंखला के प्रत्येक व्याख्यान के लिए छह सेट हैंडआउट्स थे। प्रत्येक की फोटोकॉपी की गई थी और उन्हें उस संस्था की कुशल देखरेख में संरक्षित किया गया था जो व्याख्याता के हैंडआउट्स को मध्ययुगीन पांडुलिपि के समान ही सम्मानपूर्वक सहेज कर रखती है। यह एक प्रशंसनीय और कभी-कभी अतिरंजित संरक्षण दर्शन है।
ये हैंडआउट गेरामोंड फॉन्ट में, ग्यारह नंबर के फॉन्ट में, अकादमिक लेआउट में प्रिंट किए गए थे।
मैं विशाल वाचनालय में मेज पर बैठा और नोटबुक में पहले वितरण पत्र के बगल में भवानी पेठे की चक्की का टुकड़ा पकड़े रहा। संदर्भ देने का तरीका एक जैसा था। फुटनोट की संरचना, लेखक-तिथि का स्टाइल, जर्नल के शीर्षकों के संक्षिप्त रूप। सब कुछ हूबहू मेल खाता था। पैराग्राफों के बीच की जगह, हाशिये की चौड़ाई, अनुभाग शीर्षकों की व्यवस्था का सटीक तरीका। सब कुछ एक जैसा था। लेकिन ऐसा नहीं था। यह एक ही टेम्पलेट था, एक ही छपाई, एक ही व्यक्ति द्वारा एक ही समय में एक ही तरीके से एक ही पेपर का निर्माण।

करण मेज के दूसरी तरफ बैठा रहा और बिना कुछ बोले मुझे काम करते देखता रहा। उसे पता है कि कब काम करना है और कब चुप रहना है। मुझे यह चौथे हैंडआउट में मिला। श्रृंखला का चौथा व्याख्यान: उलटफेर और उसके परिणाम: अनुष्ठानिक पूजा किस प्रकार विफलता की भविष्यवाणी करती है।
तीसरे पृष्ठ के निचले हाशिये पर। फोटोकॉपी में लिखावट धुंधली थी, लेकिन पठनीय थी। मूल प्रविष्टि बहुत छोटे, एकदम स्पष्ट अक्षरों में थी, जिनमें कोई अलंकरण नहीं था।
इरादे की उलटी धुरी — विस्तारित परिणाम।
वही वाक्य। उसी लिखावट में। उसी कागज पर, मानो किसी कारखाने में मिला कोई टुकड़ा हो, जो उसी डिलीवरी नोट के किसी दूसरे पन्ने से फाड़ा गया हो।
मैंने वितरण पत्रक को मेज पर रखा और करण की ओर देखा।
वह पहले से ही मेरी तरफ देख रहा था।
मैंने कहा, "उन्होंने इसे 2019 में तीस या चालीस श्रोताओं को दिया था। वहाँ मौजूद हर किसी ने सोचा होगा कि यह एक हैंडआउट है।
जो भी उस व्याख्यान को सुनने गया होगा, उसके पास इस पेपर की एक प्रति होगी।" मैं रुका। "या थी।"
"हां," करण ने कहा।
मैंने कहा, "मिल में जो टुकड़ा था, वह पृष्ठ के निचले हिस्से से फटा हुआ था। यह प्रति पूरी है। नोट नीचे के हाशिये में है। किसी ने डिलीवरी नोट का वह हिस्सा फाड़ दिया जिसमें नोट था और उसे यहाँ चिपका दिया।" मैं थोड़ी देर रुका। "बाकी उन्होंने रख लिया।"
"या फिर उसने बाकी सब फेंक दिया होगा," करण ने कहा। "लेकिन उसने यह हिस्सा संभाल कर रखा है।" उसने मेरे हाथ में मौजूद पर्चे को

देखा। "यह नोट राव का है। उनका अपना पर्चा, उनकी अपनी कॉपी पर लिखा हुआ। वही कॉपी जिस पर उन्होंने व्याख्यान दिया था, और बोलते समय निशान भी लगाए थे।" वह रुका। "उनकी निशान लगी हुई कॉपी।"
मैंने कहा, "उनकी चिह्नित प्रति अपराध स्थल पर थी।"
“इसका एक हिस्सा,” उन्होंने कहा। “बरकरार रखा गया।” उन्होंने इसे उसी अंदाज़ में कहा जैसे वे किसी दूरी को पाटने वाली बातें कहते हैं। सपाट स्वर में, बिना किसी उतार-चढ़ाव के, एक निश्चित मुकाम पर पहुँचने के लहजे में। “हमें यह पता लगाना होगा कि 2019 के व्याख्यान समारोह में कितने लोग उपस्थित थे।”
जब हमने लाइब्रेरियन से पूछा, तो उनके पास रिकॉर्ड थे। पंजीकरण अनिवार्य नहीं था, लेकिन अधिकांश उपस्थित लोगों ने पंजीकरण कराया था। छह व्याख्यानों में तैंतीस नाम थे, उपस्थिति अठारह से छब्बीस के बीच रही। चौथा व्याख्यान। उलटफेर का व्याख्यान। इसमें बाईस लोग उपस्थित थे।
बाईस लोग जिन्हें वितरण पत्र की एक प्रति मिली थी। बाईस लोग जो राव के साथ एक कमरे में बैठे और उन्होंने समझाया कि इरादे की उलटी धुरी क्या है और यह साधक के बारे में क्या कहती है।
इसके अतिरिक्त, राव की व्यक्तिगत प्रति की एक प्रति भी शामिल है, जो उन्हें प्राप्त हुई थी।
मैंने कहा, "चिह्नित प्रति वितरित नहीं की गई थी। उपस्थित लोगों को मुद्रित संस्करण प्राप्त हुआ था। राव की निजी प्रति, जिसमें उनके हाशिये पर लिखे गए नोट्स थे, उनके पास रही होगी।"
"जब तक कि उन्होंने इसे किसी को न दे दिया हो," करण ने कहा। "या किसी ने इसे ले लिया हो।" उसने लाइब्रेरियन द्वारा दी गई उपस्थिति सूची देखी। "या किसी ऐसे व्यक्ति ने, जिसकी उनकी

सामग्री तक पहुंच थी। कोई छात्र, कोई सहकर्मी, कार्यालय में आने-जाने वाला कोई भी व्यक्ति। उन्होंने इसे किसी समय ले लिया होगा।"
उपस्थिति सूची मेरी नोटबुक में थी। बाद में मैं इसकी तुलना संस्था के दानदाताओं और निवेशकों के रिकॉर्ड से, हमारे द्वारा एकत्रित किए गए नामों से करूँगा, ताकि समानता का पता लगा सकूँ। इस तरह के काम के लिए पढ़ने का कमरा और उधार लिया हुआ पेन नहीं, बल्कि एक मेज और कई घंटे चाहिए होते हैं, लेकिन यह करना आवश्यक था, और मैंने इसे लिख लिया।
हमने सभी व्याख्यानों और शोध पत्रों की प्रतियां बना लीं।
करण उठ खड़ा हुआ।
उन्होंने पुस्तकालयाध्यक्ष से कहा, "मुझे उन सभी लोगों की सूची चाहिए जिन्होंने पिछले पांच वर्षों में राव के विशिष्ट विषय क्षेत्र में शोध के लिए संस्थान के कार्यालय का उपयोग किया है।" लाइब्रेरियन के चेहरे पर संस्थागत गोपनीयता और कानून व्यवस्था बनाए रखने के लिए संस्थागत सहयोग पर विचार करने का भाव था। और जैसा कि ऐसे मामलों में अधिकांश संस्थागत गार्ड निर्णय लेते हैं, जब अनुरोध उचित हो और अधिकार स्पष्ट हो, तो सहयोग ही सही उत्तर होता है। उन्होंने कहा, "इसमें थोड़ा समय लगेगा। दोपहर तक यह तैयार हो सकता है।"
"धन्यवाद," करण ने कहा।
उन्होंने मुझे एक ऐसी जानकारी भी दी जो मैं पूछना भूल गया था। जब हम रीडिंग रूम की मेज से अपना सामान समेट रहे थे, तब उन्होंने कहा: "प्रोफेसर राव पिछले महीने यहां आए थे।"
हम दोनों ने उसकी ओर देखा।

लाइब्रेरियन ने कहा, "वे इस विशेष व्याख्यान वितरण पत्रक की समीक्षा करने आए थे। सामग्री दान करने के पंद्रह महीने बाद। वे लगभग दो घंटे तक इस कमरे में बैठकर प्रतियां पढ़ते रहे। उन्होंने पुनर्मुद्रण के लिए कोई अनुरोध नहीं किया। मेरी नज़र में उन्होंने कोई टिप्पणी भी नहीं की।" थोड़ा रुककर उन्होंने आगे कहा, "उन्होंने चौथे वितरण पत्रक को देखा। उसके पीछे दिए गए व्याख्यान को। उन्होंने काफी देर तक देखा।"
वह एक ऐसे व्यक्ति के लहजे में बात कर रहा था जो चीजों को याद रखता है और सहेज कर रखता है, और जिसे कभी पता नहीं होता कि वे कब महत्वपूर्ण हो जाएंगी। उसने राव के वितरण पत्रक के पीछे वाले भाग पर लंबे समय तक ध्यान देने को देखा था और उसे बिना किसी संदर्भ के एक अवलोकन के रूप में याद रखा था। अब वह हमें यह बता रहा था, क्योंकि अब संदर्भ मिल गया था।
"पिछले महीने," करण ने कहा।
लाइब्रेरियन ने कहा, "सितंबर की शुरुआत में। मुझे याद है, क्योंकि उस हफ्ते एक स्कूली बच्चों का समूह आया और चला गया था और रीडिंग रूम सामान्य से अधिक शोरगुल वाला था। प्रोफेसर राव यहां दो घंटे तक बैठे रहे और शोरगुल से बिल्कुल भी विचलित नहीं हुए।"
पिछले महीने। हत्या से छह सप्ताह पहले। राव भंडारकर संस्थान आए थे और वितरण पत्र कार्यालय में दो घंटे बिताए थे, विशेष रूप से चौथे वितरण पत्र के साथ। वही वितरण पत्र, जिसके निचले हाशिये में वह नोट लिखा था, जो छह सप्ताह बाद अपराध स्थल पर मिलने वाला था।
क्या वह अपनी सामग्री की समीक्षा कर रहा था? या वह यह सुनिश्चित कर रहा था कि यह वही है जो उसे याद था? क्या वह तीसरे पृष्ठ के

[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]? [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible], [illegible] [illegible], [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

“मुझे लगा था कि कोई काबिल जांचकर्ता इसे ढूंढ लेगा,” उन्होंने कहा। “लेकिन कोई जांचकर्ता है ही नहीं। कोई ऐसा व्यक्ति जो इस परंपरा को अच्छी तरह जानता हो और समझ सके कि यह वितरण पत्र धार्मिक नहीं बल्कि अकादमिक है, और जो भी यहां आएगा।” उन्होंने दरवाजे की ओर देखा। “चक्की में वह जगह इसी इमारत की ओर इशारा कर रही थी। यह वितरण पत्र संयोग से छोड़े गए किसी अपराध का सबूत नहीं है। यह एक संकेत है।” वे रुके। “तो जांचकर्ता से यहां आने की उम्मीद थी। व्याख्यान ढूंढने के लिए। कार्यालय की सूची ढूंढने के लिए।”
मैंने कहा, "मुझे उसका नाम पता करना होगा।"
करण ने कहा, "उसका नाम उसके अपने काम से पता चलना चाहिए। गवाहों से नहीं, निगरानी से नहीं, फोरेंसिक मिलान से नहीं। बल्कि उसके काम से। उसने जो शिक्षा का मार्ग अपनाया है, उसी के माध्यम से।" उसने मेरी ओर देखा। "यह उस व्यक्ति का व्यवहार नहीं है जो पहचाने जाने से डरता है। यह उस व्यक्ति का व्यवहार है जो एक खास तरीके से, एक खास प्रक्रिया के माध्यम से पहचान पाना चाहता है।" मैंने इस बात को कुछ देर तक अपने मन में रखा।
मैंने कहा, "वह अपनी ही जांच की कहानी को नियंत्रित कर रहा है।" करण ने कहा, "वह इसे नियंत्रित करने की कोशिश कर रहा है। वह इसमें सफल होता है या नहीं, यह एक अलग बात है।" वह दरवाजे से मुड़ गया। "दोपहर तक गोखले का फोन आएगा। फिर प्रिया से बात होगी।"

***

गोखले ने सुबह 11:40 बजे फोन किया।
हम तिलक रोड पर एक दक्षिण भारतीय होटल में थे, जहाँ करण काम के दौरान दोपहर का भोजन करता है। घर ही हमारे लिए चिंतन का स्थान बन जाता है। यह चिंतन केवल भौतिक रूप से घर तक सीमित नहीं होता,

बल्कि मानसिक रूप से भी सीमित होता है। कुछ चिंतन ऐसे होते हैं जिन्हें किसी ऐसी जगह पर करना पड़ता है जो उस जगह से अलग हो जहाँ हम पिछले तीन दिनों से अन्य बातों पर विचार कर रहे होते हैं। यहाँ की फ़िल्टर कॉफ़ी इतनी कुशलता से बनाई जाती है कि रसोई में इसे केवल एक पेय नहीं, बल्कि एक नैतिक कर्तव्य माना जाता है। और इडली इतनी ठंडी थी कि ऐसा लगता था मानो उन्हें परोसने से लगभग नब्बे सेकंड पहले ही बनाया गया हो।
गोखले ने कहा: "मेहता के शुक्रवार रात और शनिवार सुबह के फोन रिकॉर्ड।"
उन्होंने उन्हें उसी क्रम में पढ़ा जैसा कि कहानी में स्पष्ट रूप से बताया गया है। मेहता का फोन रात करीब 8 बजे से भवानी पेठ इलाके में था। मंदिर के रिकॉर्ड के अनुसार रात 9:45 बजे भी फोन वहीं था। रात 11:45 बजे एक मिनट और ग्यारह सेकंड का कॉल आया। और उसी नंबर से दोपहर 1:51 बजे एक और कॉल आया। यह नंबर दिलीप साठे के नाम पर पंजीकृत था। धोले की टीम का एक जवान, जो शुरुआत से ही मिल स्थल पर मौजूद था, ने कई भौतिक साक्ष्य दर्ज किए थे और शनिवार सुबह प्रारंभिक ब्रीफिंग में भी उपस्थित था।
एक मिनट और ग्यारह सेकंड। मेहता ने रात 11:45 बजे साठे को फोन किया था, इससे पहले कि साठे घेराबंदी में प्रवेश करते। साठे का फोन सुबह 1:51 बजे आया। मिल स्थल के पंजीकृत होने और साठे को स्थल के रिकॉर्ड पढ़ने का अधिकार मिलने के सात मिनट बाद। इसके बाद मेहता ने अगली सुबह तड़के कोटियन को फोन किया।
इस क्रम को पूरी तरह से समझने में लगभग तीन मिनट का समय लगा। "साथे," करण ने कहा। कोई सवाल नहीं।
मैंने कहा, "वह धोले की टीम का सिपाही है। गोखले ने उसके नाम और पंजीकरण विवरण के साथ पुष्टि संदेश भेजा था।" मैंने अपना फोन

देखा। "वह शुरू से ही मिल में था। उसने भौतिक साक्ष्य दर्ज किए। वह शनिवार को सूचना बैठक में भी उपस्थित था।"
करण ने कहा, "वह मेहता को शुक्रवार रात से जानता था।" वह बड़ी संयम से इडली खा रहा था, जिससे खाने का आनंद लेने के बजाय वह सोच में डूबा हुआ था। "साठे के परिसर में प्रवेश करने से पहले ही पहला फोन किया गया था। उनका पहले से संबंध था। मेहता ने साठे को फोन करके कुछ चौंकाने वाली जानकारी निकालने की कोशिश की। संयोग से, साठे घटनास्थल पर ही था। वे उस जगह के बारे में बात कर रहे थे जहाँ साठे जाने वाला था। शायद उसे पता नहीं था कि वहाँ क्या योजना बनाई गई है। साठे अंदर गया और कुछ नोट्स लिए। साठे ने जो कुछ भी पाया, उसकी जानकारी मेहता को दी।" वह रुका। "साठे ने मेहता को उस जगह के अंदर राख की परत के बारे में जानकारी दी। मेहता ने यह जानकारी कोटियन को दे दी।"
"साठे को पता था, वो क्या कर रहा था?" मैंने कहा।
करण ने मेरी तरफ देखा। उसने कहा, "उसे पता था कि वह एक पत्रकार को खोजी संबंधी जानकारी दे रहा है। लेकिन क्या उसे इस लीक के पीछे का असली मकसद पता था? क्या यह किसी सुनियोजित सूचना अभियान का हिस्सा था या अचानक किया गया खुलासा? यह एक अलग सवाल है।" मैंने कहा, "उसने इसका इस्तेमाल जरूर किया होगा।"
"शायद," करण ने कहा। "या शायद यह कोई विश्वसनीय सूत्र हो, जिसका मेहता से इस मामले में नियुक्ति के संयोग के अलावा कोई संबंध न हो। दोनों ही मामलों में, नतीजा एक ही है। आधिकारिक तौर पर जारी होने से पहले ही साइट रिकॉर्ड में मौजूद जानकारी एक पत्रकार और फिर टीवी दर्शकों तक पहुंच गई।" उन्होंने अपनी कॉफी की चुस्की ली। "गोखले को साठे से सावधान रहना चाहिए। आरोपों से नहीं,

[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible], [illegible] [illegible] [illegible], [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]?"

[illegible] [illegible], "[illegible] [illegible], [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]"

[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible], "[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]"

> *— [illegible] [illegible], [illegible], [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

अनुरोध के माध्यम से प्राप्त परिषद-पंजीकरण आवेदन है। यह आठ महीने पुराना है और फर्ग्यूसन कॉलेज की अकादमिक परिषद के लिए अरविंद राव के नाम से जमा किया गया था।"
"और?" करण ने कहा।
“यह तुलना एक प्रारंभिक मिलान है,” उन्होंने कहा। “अदालती कार्यवाही के लिए अभी तैयार नहीं है। पंजीकरण आवेदन में दिया गया पैटर्न सीमित है। कुल चौदह अक्षर हैं, जिनमें से चार अंक हैं, जिससे निदान का महत्व सीमित हो जाता है। लेकिन दोनों नमूनों की विशेषताएं एक जैसी हैं। अक्षरों का आकार। कोई अलंकरण नहीं, प्रत्येक अक्षर न्यूनतम संभव आकार में लिखा गया है। ये मेल खाते हैं। स्थान बचाने के लिए अक्षरों का एक समान संकुचन भी मेल खाता है। छोटे अक्षर 'अ' का विशिष्ट समापन। कुछ लोगों की लिखावट में एक संशोधित समापन होता है, जो मूल रूप से एक चिह्न होता है, और दोनों नमूनों में समापन एक जैसा है।” वह थोड़ी देर रुकीं। “पक्का कहने से पहले मुझे एक और पैटर्न की आवश्यकता है। लेकिन मैं यह कहने को तैयार हूं कि खंड में दी गई प्रविष्टि और पंजीकरण आवेदन एक ही व्यक्ति द्वारा लिखे गए थे। हालांकि, मुझे अपने निष्कर्ष का पूरी तरह से समर्थन करने के लिए और अधिक सामग्री की आवश्यकता है।”
"अदालत के लिए तैयार होने में क्या-क्या करना पड़ता है?" करण ने पूछा।
"मुझे कम से कम पचास पत्रों का तुलनात्मक नमूना चाहिए, जो विषय द्वारा सत्यापित तरीके से तैयार किए गए कागज़ों से लिए गए हों," उन्होंने कहा। "पंजीकरण फॉर्म में चौदह पत्र हैं। मुझे उनके अकादमिक प्रस्तुतियों से, प्रकाशित पांडुलिपियों से कुछ चाहिए। उनकी अपनी लिखावट में कुछ भी, जो मैं उचित माध्यमों से

प्राप्त कर सकूँ और जिससे मुझे काम करने के लिए पर्याप्त सामग्री मिल सके।" वह थोड़ी देर रुकीं। "आज भंडारकर संस्थान की आपकी यात्रा। आपको कौन सी पांडुलिपि सामग्री मिली?"
मैंने कहा, "हैंडबिल पर लिखे नोट्स। चौथे व्याख्यान के हैंडबिल की कार्यालय प्रति में वही हाशिये पर लिखे नोट्स हैं जो मिल के टुकड़े में हैं। हम निश्चित रूप से कह सकते हैं कि यह वही कागज है। वही कागज, वही छपाई, और वह टुकड़ा चौथे हैंडबिल के तीसरे पृष्ठ से है।"
"इससे यह साबित होता है कि यह अंश राव की व्याख्यान-वितरण सामग्री की निजी प्रति से लिया गया है," प्रिया ने कहा। "केवल इससे यह सिद्ध नहीं होता कि उन्होंने ही ये नोट्स लिखे थे। सैद्धांतिक रूप से कोई उनके अपने पेपर में, उनकी अपनी शैली में नोट्स बना सकता था। मुझे पता है कि यह असंभव है। मैं आपको बता रही हूँ कि दूसरे पक्ष से यह तर्क कैसा दिखेगा।" वह थोड़ी देर रुकी। "मुझे एक ऐसा पेपर चाहिए जो उन्होंने अपने हाथों से लिखा हो और ऐसे संदर्भ में हो जहाँ यह कहना असंभव हो कि किसी ने उनकी नकल करके इसे बनाया हो। एक पत्र, एक निजी चेक, किसी प्रकाशक को भेजी गई पांडुलिपि। कुछ ऐसा ही।"
"हम इसे ढूंढ लेंगे," करण ने कहा।
"मिल गया," प्रिया ने कहा, "इसे सीधे मेरे पास ले आओ। इसे प्रूफ-ऑफ-कॉन्सेप्ट प्रक्रिया के माध्यम से मत भेजो। मैं इसे खुद करना चाहती हूँ।"
उन्होंने स्पष्टवादिता से कहा कि यह उस व्यक्ति का निर्णय था जिसने तय किया था कि इस विशेष मामले पर संस्थागत नहीं बल्कि व्यक्तिगत ध्यान दिया जाना चाहिए। यह एक अलग तरह की

प्रतिबद्धता है और ऐसी प्रतिबद्धता प्रिया आसानी से नहीं देतीं।
"समझ गया," करण ने कहा।
उसने फोन रख दिया और कमरे के दूसरी ओर लगे कॉर्कबोर्ड की ओर देखा। उसने एक पल के लिए अपना हाथ जेब में डाला और उसे घूरता रहा। उसके चेहरे पर एक ऐसे व्यक्ति का भाव था जो किसी ऐसी समस्या के बारे में सोच रहा हो जिसका समाधान मौजूदा सबूतों के आधार पर संभव नहीं है और जिसे टाला भी नहीं जा सकता।
मैंने बोर्ड पर नज़र डाली। तीन भौगोलिक पिन। मिल, नासिक, कोरेगांव पार्क। खाली केंद्र और प्रश्नचिह्न वाला चित्र। और अब, मेरी नोटबुक में, वह नाम, जिसे आज दो अलग-अलग तरीकों से दो बार निर्धारित किया गया: अरविंद कुमार राव।
मैंने कहा, "इसमें एक पिन लगा देनी चाहिए।"
"हमें इसे नाम देना होगा," करण ने कहा। "अभी नहीं।" वह बोर्ड से मुँह फेरकर बोला, "सिर्फ़ शुरुआती मिलान काफ़ी नहीं है। सामान्य वितरण सूची में नाम दर्ज होना काफ़ी नहीं है। हमारे पास एक मज़बूत संभावित दिशा है। लेकिन एक संभावित दिशा का पुख्ता तथ्य बन जाना अभी काफ़ी नहीं है।" वह डेस्क पर बैठ गया। "हम एक संभावित दिशा में आगे बढ़ते हैं और चूक जाते हैं। एक छोटी सी चूक भी, चाहे वह मामूली सी ही क्यों न हो, पूरी बात पर सवालिया निशान लगा देती है।"
मैंने कहा, "आप गलत नहीं हैं।"
“नहीं,” उन्होंने कहा। “नहीं। लेकिन गलत न होना और यह साबित कर पाना कि आप गलत नहीं हैं, दो अलग-अलग बातें हैं, और अदालत में अपने वकीलों के साथ जाते समय दूसरी बात ही मायने रखती है।” वे रुके। “हस्तलिखित दस्तावेज़ ढूंढिए। कोई ऐसी चीज़ जो उसने खुद

लिखी हो, और जो निर्विवाद परिस्थितियों में बनाई गई हो। तब हम उसका नाम पता लगा लेंगे।”

***

मुझे यह आज दोपहर को मिला।
कागजी संग्रह में नहीं। एक पत्र में।
भंडारकर संस्थान के लाइब्रेरियन ने दोपहर 3:00 बजे हमारे अनुरोध पर प्रवेश सूची लेकर फोन किया। सूची की जाँच करते समय, मैंने पूछा कि क्या संस्थान के पास राव और संस्थान के बीच कोई पत्राचार है? पिछले पंद्रह वर्षों में शैक्षणिक संबंधों के दौरान हुए प्रशासनिक पत्र, प्रस्ताव, सामग्री के उपयोग की अनुमति, प्रवेश के लिए आवेदन, दान में प्राप्त पुस्तकों की औपचारिक रसीदें। लाइब्रेरियन ने कहा कि वे इसकी जाँच करेंगे। शाम 4:30 बजे उन्होंने दोबारा फोन किया। फाइल में 2008 से लेकर पिछले साल तक के ग्यारह पत्र थे। वे लागू कानूनी प्रावधानों के तहत संबंधित अनुभागों को पढ़ सकते थे। उन्होंने ऐसा किया और पढ़ते ही मैंने उन्हें डाउनलोड कर लिया। सबसे हालिया पत्र सात महीने पहले का था, जो संस्थान के निदेशक को संबोधित था, जिसमें एक नए शोध परियोजना के लिए चर्मपत्र पांडुलिपियों के एक विशेष संग्रह तक पहुंच का अनुरोध किया गया था। यह हस्तलिखित था। राव के अपने हाथ से लिखे तीन पैराग्राफ का यह पत्र औपचारिक अनुरोध से अधिक शिष्टाचार का प्रतीक था। एक शिक्षाविद उस संस्थान को इस तरह का पत्र लिखता है जिसके साथ उसका लंबे समय से जुड़ाव रहा हो। टाइप किया हुआ नहीं, बल्कि उनके अपने हाथ से लिखा हुआ, क्योंकि जुड़ाव इस शिष्टाचार को उचित ठहराता था।
मैंने प्रिया को फोन किया।

“सात महीने पहले,” मैंने कहा। “भंडारकर संस्थान के निदेशक को हस्तलिखित तीन पैराग्राफ का एक पत्र मिला था। उसमें एक नए शोध परियोजना के लिए तिरपाल पर लिपटी पांडुलिपियों के संग्रह तक पहुँच का अनुरोध किया गया था।” मैंने लाइब्रेरियन द्वारा दिए गए अंश को पढ़ा। “उन्होंने अपनी नियोजित पद्धति, जिन विशिष्ट परंपराओं पर वे शोध कर रहे हैं, उनका वर्णन किया है। उन्होंने इस वाक्यांश का प्रयोग किया है।” मैंने अपने डाउनलोड किए गए नोट को देखा। “तांत्रिक पूजा में दिशा परिवर्तन के प्रतीकात्मक अर्थ और अनुष्ठानिक सत्यापन पर प्रभाव।”
प्रिया कुछ पल चुप रही।
"दिशा में उलटफेर," उसने कहा।
मैंने कहा, "चक्की के लट्ठे जैसी ही परिभाषा। वही ढांचा।"
"यह तुलना का पैटर्न नहीं है," प्रिया ने कहा। "तुलना का पैटर्न लिखावट है। खुद पत्र। लेकिन आपने जो अभी पढ़ा, उससे यह पुष्टि होती है कि मिल के रिकॉर्ड में मौजूद फ्रेम और वह फ्रेम जिस पर राव सात महीने पहले सक्रिय रूप से शोध कर रहे थे, एक ही हैं।" वह थोड़ी देर रुकी। "मुझे पत्र लाओ। असली पत्र, उसकी कॉपी नहीं। अगर संस्था उचित प्रावधानों के तहत जांच के लिए मूल प्रति उपलब्ध कराने वाली है, तो मूल प्रति लाओ।"
जब मैंने दोबारा फोन किया तो लाइब्रेरियन ने बताया कि संस्था के निदेशक के हस्ताक्षर के बिना मूल दस्तावेज़ को आपराधिक जांच के लिए जारी नहीं किया जा सकता, और निदेशक के हस्ताक्षर सुबह तक मिल जाएंगे। उन्होंने पुष्टि की कि पत्र मौजूद है, रिकॉर्ड में दर्ज है, और उचित कानूनी प्रावधानों के तहत बुधवार सुबह 9:00 बजे तक उपलब्ध हो जाएगा।

मैंने यह सब लिखा और अपने लिखे हुए को देखा, और महसूस किया कि चार दिनों से आकार ले रही आकृति अब एक ठोस और अधिक स्पष्ट रूप में सामने आ रही है। अभी पूरी तस्वीर नहीं बनी है, लेकिन सिर्फ़ रूपरेखा भी नहीं है।

***

शाम 6:00 बजे घर। खिड़कियों से अक्टूबर की हल्की रोशनी आ रही थी, मौसम की सुनहरी चमक जो अभी गर्म और ठंडे के बीच तय नहीं हुई थी। करण अपनी मेज पर राव के प्रकाशित शोध पत्रों का ढेर लिए बैठा था, जिन्हें मैंने संस्थान की लाइब्रेरी में छपवाया था। छह शोध पत्र, एक थीसिस, और उनकी वित्तीय संरचना पर एक हालिया जर्नल लेख, जिस पर फाउंडेशन का नाम अंकित है। वह उस कलम से पढ़ रहा था जिसका इस्तेमाल वह गहन अध्ययन के लिए करता है। सामान्य नोट्स के लिए इस्तेमाल होने वाली कलम से अलग। एक विशेष यांत्रिक पेंसिल, जिसकी नोक बहुत बारीक होती है, जिससे हाशिये पर नोट्स इतने छोटे लिखे जाते हैं जैसे उसकी नोटबुक में लिखे होते हैं। वह पढ़ भी रहा था और साथ ही साथ जो पढ़ रहा था उस पर कुछ काम भी कर रहा था। कोई सारांश नहीं। बस काम।
मैं भंडारकर संस्थान के कार्यालय की प्रवेश सूची के साथ कॉफी टेबल पर बैठा था।
पिछले पांच वर्षों में राव के विषय क्षेत्र में शोध के लिए इकत्तीस लोगों ने कार्यालय का उपयोग किया था। मैंने इसकी तुलना फाउंडेशन के दानदाताओं और निवेशकों के रिकॉर्ड, कोटियन द्वारा हमें दिए गए शिविर में उपस्थिति के रिकॉर्ड और 2019 श्रृंखला के व्याख्यानों में उपस्थिति की सूची से की। ग्यारह नाम एक से अधिक सूचियों में पाए गए। इन ग्यारह में से छह नाम किसी न किसी रूप में फाउंडेशन के रिकॉर्ड में दर्ज थे।

तीनों सूचियों में एक ही नाम दिखाई दिया: कार्यालय प्रवेश, फाउंडेशन रिकॉर्ड और व्याख्यान में उपस्थिति: रमेश मेहता। मेहता ने पिछले दो वर्षों में दो बार भंडारकर संस्थान के कार्यालय का इस्तेमाल किया था। उन्होंने राव के 2019 के दो व्याख्यानों में भाग लिया था। वे आध्यात्मिक अर्थव्यवस्था पर ध्यान केंद्रित करने वाले पत्रकार थे। संवाददाता के रूप में उनकी संस्थान तक पहुंच थी। वे शुक्रवार रात भवानी पेठ में मौजूद थे और उन्होंने राख मलने की घटना का विवरण कोटियन को दिया था।
मेहता का इस मामले से अप्रत्यक्ष संबंध नहीं था। वे एक ही समय में कई क्षेत्रों में सक्रिय रूप से शामिल थे। कार्यालय, व्याख्यान, संस्था, और जानकारी का रिसाव। सवाल यह था कि क्या यह सक्रियता उनके पेशेवर क्षेत्र का परिणाम थी – आध्यात्मिक अर्थव्यवस्था को कवर करने वाले एक पत्रकार का राव, संस्था और कार्यालय से स्वाभाविक रूप से सामना होना स्वाभाविक था – या फिर कोई संरचनात्मक संबंध था।
मैंने रविवार के आरेख का एक संशोधित संस्करण बनाया, इस बार मेहता को एक अज्ञात बिंदु के बजाय एक नामित बिंदु के रूप में प्रस्तुत किया। वह ग्रिड में राव, फाउंडेशन और जांच से समान दूरी पर स्थित एक बिंदु पर बैठे थे।
जहां वास्तविक घटना को कवर करने वाला पत्रकार बैठेगा।
या फिर ठीक उसी जगह का निर्धारण करना जहां राव, फाउंडेशन और जांच के बीच सूचनाओं के आदान-प्रदान को प्रबंधित करने के लिए कोई व्यक्ति बैठेगा।
दोनों ही संभावनाएं थीं। दोनों ही मामलों में जांच से अलग-अलग प्रतिक्रियाओं की आवश्यकता थी।

मैंने करण को चित्र दिखाया। उसने मेहता के तर्क को कुछ देर तक गौर से देखा।
"क्या गोखले ने साठे से बात की?" उसने कहा।
मैंने कहा, "दोपहर में। साठे ने फोन ठीक किया। मेहता ने बताया कि वह कभी-कभार जानकारी देने वाला सूत्र है। उसने पहले भी, असंबंधित मामलों में, ऐसी जानकारी दी थी जो छोटी-मोटी खबरों में छपती, समाचारों में नहीं, बल्कि फीचर लेखों में। उसने कहा कि उसे जानकारी लीक करने जैसा महसूस नहीं होता। उसे लगता है कि यह एक अनौपचारिक रिश्ता है जो पत्रकार इलाके के पास के पुलिस संपर्कों के साथ बनाए रखते हैं।"
करण ने कहा, "साठे को यह एहसास नहीं था कि इस बार वह जो दे रहा था वह अलग था।"
मैंने कहा, "वह यही कहता है। ऐसा लगता है जैसे गोखले अपनी समझ के स्तर के बारे में ईमानदार है, भले ही वह हर बात के बारे में ईमानदार न हो।"
करण ने कहा, "मेहता ने एक अनौपचारिक संबंध का इस्तेमाल करते हुए एक खास समय पर एक खास जानकारी हासिल की। और साठे को उस जानकारी के सामने खड़ा कर दिया, यह जानते हुए कि साठे के उस स्थान पर होने की कितनी संभावना है।" वह थोड़ा रुका और बोला, "मेहता को जांच की कार्यप्रणाली के बारे में इतनी जानकारी थी कि वह साठे को कब फोन करना है और उसने क्या देखा होगा, यह जान सके।"
मैंने चित्र में मेहता के बिंदु को देखा।
मैंने कहा, "उसे पता था कि यह ऐसी जगह होगी जहाँ साठे जैसे किसी व्यक्ति को पंजीकरण कराने के लिए भेजा जाएगा। इसलिए साठे को फोन करने से पहले ही उसे उस जगह के बारे में जानकारी थी। या तो उसे योजना की जानकारी थी, या वह योजना बनाने में शामिल था।"

"या फिर किसी ने उसे बताया होगा, कोई ऐसा व्यक्ति जो जानता था कि राव क्या योजना बना रहा है," करण ने कहा।
कमरा शांत था। बाहर, शाम का यातायात अपने चरम पर पहुंच चुका था और धीरे-धीरे कम होने लगा था।
मैंने कहा, "यह या तो राव का उपकरण है, या किसी और का उपकरण है, जिसका उपयोग राव की गतिविधियों के बारे में जानकारी की दिशा को प्रबंधित करने के लिए किया जाता है।"
“हां,” करण ने कहा। “और जब तक हमें पता नहीं चलता कि वो कहां है, हमें उससे संपर्क करने के बजाय उस पर नज़र रखनी चाहिए।” वो थोड़ी देर रुका। “अगर हम मेहता के करीब पहुंच गए और पता चला कि उसका राव से कोई संबंध है, तो राव को पता चल जाएगा कि जांच उसके अनुमान से कहीं ज़्यादा करीब है। अगर हम मेहता के करीब पहुंच गए और पता चला कि उसका किसी ऐसे व्यक्ति से संबंध है जो राव के इर्द-गिर्द साजिश रच रहा है, तो हम उस आदमी को चेतावनी दे देंगे।” उसने अपनी पेंसिल उठाई। “हम मेहता पर नज़र रखेंगे।”

***

शाम 7:00 बजे मैंने रात का खाना बनाया। फिर से चावल, सब्जियां और सिर्फ सब्जियां। कोई खास सब्जी नहीं। बस कामचलाऊ। ऐसी सब्जी जो तब बनाई जाती है जब रसोइए का ध्यान कहीं और हो और खाना बनाना सिर्फ सुविधा हो, कोई सोच-समझकर किया गया काम नहीं।
हमने खाना खाया। करण भंडारकर संस्थान से लाए गए व्याख्यानों की प्रतियां पढ़ रहे थे, उसी लगन से जैसे वे उन चीजों को पढ़ते थे जो उनके विचारों को आकार दे रही थीं, और जब उन्होंने उन्हें नीचे रखा और खाना खाया, तो उनके चेहरे पर एक ऐसे व्यक्ति की विशिष्ट शांति थी जो किसी बहस में उलझा हुआ हो और अभी पूरी तरह से उससे बाहर न निकला हो।

अंत में उन्होंने कहा, "थीसिस। 2019। अध्याय सात।"
मैंने अभी तक सातवां अध्याय नहीं पढ़ा था। उसने छपी हुई प्रति मेज के उस पार थमा दी।
मैंने पढ़ा है:
परंपरा के भीतर रहकर साधना करने वाला साधक, परंपरा को बाहर से आकार देने वाले साधक से नैतिक रूप से बिल्कुल भिन्न होता है। पहला साधक परंपरा की सीमाओं और उसके उपासकों के प्रति उत्तरदायी होता है। जबकि दूसरा साधक केवल उस उद्देश्य के प्रति उत्तरदायी होता है जिसके लिए परंपरा का स्वरूप बनाया गया था। यही अंतर है। परंपरा में जीना और उसका उपयोग करना। यह केवल अकादमिक नहीं है। यही अनुष्ठान और नाटक के बीच का अंतर है। और नाटक, अपने सौंदर्यपरक कार्य के अतिरिक्त, हमेशा उस चीज़ से परे किसी अन्य उद्देश्य की सेवा में होता है जिसे वह चित्रित करता है।
मैंने पन्ना नीचे रख दिया।
मैंने कहा, "उन्होंने इसे 2019 में लिखा था।"
"भवानी पेठ हत्याकांड से बहुत पहले," करण ने कहा। "जिसमें किसी ने परंपरा का इस्तेमाल किया। जानबूझकर की गई गलती से, परंपरा किसी और चीज़ की सेवा में काम आई।" उसने पृष्ठ की ओर देखा। "वे अकादमिक रूप से, ठीक-ठीक बता रहे थे कि हत्याकांड स्थल कैसा होने वाला था। उसके अस्तित्व में आने से पहले ही।"
मैंने कहा, "वे ढांचा तैयार कर रहे थे। पहले अकादमिक कार्य हुआ। फिर उसे लागू किया गया।"
"थीसिस सिद्धांत है," करण ने कहा। "मिल प्रक्रिया है।" वह थोड़ी देर रुका। "और लेक्चर हैंडआउट एक सेतु है। सैद्धांतिक ढांचा उस कागज के हाशिये पर दर्ज है जिस पर प्रक्रिया लिखी है।" वह एक पल

के लिए चुप रहा। "हत्यारा चाहता था कि हम प्रक्रिया का मूल्यांकन करने से पहले सिद्धांत पढ़ें। प्रक्रिया पर दिया गया हैंडआउट थीसिस की ओर इशारा कर रहा था। थीसिस हमें यहाँ, कार्यालय में, थीसिस की ओर इशारा कर रही थी। हमारे लिए एक पठन सूची तैयार की गई थी।"
मैंने पढ़ना जारी रखा। अध्याय आगे बढ़ता गया:
नाटक देखने वाला समुदाय यह मानता है कि वह कुछ ऐसा देख रहा है जिसमें वास्तविकता के गुण हैं। वह वास्तविकता के प्रति भावनात्मक और सामाजिक रूप से प्रतिक्रिया करता है। नाटक समाप्त होने और पर्दा गिरने पर भी, समुदाय की वह प्रतिक्रिया बनी रहती है - भय, भक्ति, निर्भरता। चाहे इससे कैसा भी अनुभव उत्पन्न हो। नाटक का यही सबसे शक्तिशाली और सबसे खतरनाक गुण है। यह दर्शकों में ऐसी प्रतिक्रियाएँ उत्पन्न करता है जो उन्हें वास्तविकता के प्रति प्रतिक्रिया करने जैसा महसूस कराती हैं। ये प्रतिक्रियाएँ वास्तविक होती हैं। लेकिन वे जो वास्तविकता देखते हैं वह वास्तविक नहीं होती।
मैंने पन्ना वापस नीचे रख दिया।
दोनों पैराग्राफ मिलकर उस चीज़ का वर्णन करते हैं जो हम देख रहे थे, जो या तो असाधारण शैक्षिक दूरदर्शिता थी, या फिर कुछ और ही। एक समुदाय। फाउंडेशन के शिविर में भाग लेने वाले, दानदाता, शिंदे जैसे लोग, जिन्होंने इसमें निवेश किया, और जिन्हें लगा कि यह संस्था अपने वादे पूरे कर रही है। एक ऐसे अनुभव का जो वास्तविक आध्यात्मिक सहभागिता जैसा प्रतीत होता था, सच्ची भक्ति के साथ प्रतिक्रिया देना, वास्तविक धन और सच्ची आस्था देना, उस चीज़ के बदले में जो संरचनात्मक रूप से एक प्रदर्शन मात्र थी।

[illegible]

[illegible], "[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible], "[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible], "[illegible]

[illegible]

[illegible], "[illegible]

[illegible]

***

[illegible]

भंडारकर संस्थान की यात्रा से ही यह आकार ले रहा था। शुरुआती लिखावट के मिलान से। शोध प्रबंध के अंश से। एक प्रश्न के रूप में उभर रहा था, एक ऐसा प्रश्न जो मैंने पूछा नहीं था, क्योंकि मैं साक्ष्य और विचार का अनुसरण कर रहा था और प्रश्न इन दोनों के पीछे धैर्यपूर्वक प्रतीक्षा कर रहा था। ठीक उसी तरह, जैसे प्रश्न प्रतीक्षा करते हैं, जब आपको उत्तर का पहले से ही संदेह होता है और आप उसे निश्चित रूप से सुनने के लिए तैयार होते हैं, तब भी आप अनिश्चित होते हैं।
मैंने अपने हाथ पोंछे और मुख्य कमरे के दरवाजे पर आ गया।
मैंने कहा, "हो सकता है वो हो। या कम से कम एक संभावना तो है।" मैं रुका। "हम उसे गिरफ्तार क्यों नहीं कर लेते?"
करण ने डेस्क से मुंह मोड़ा। उसने पूरी एकाग्रता से मेरी ओर देखा। यह किसी ऐसे व्यक्ति की तरह आंशिक एकाग्रता नहीं थी जो एक साथ दो काम संभाल रहा हो। बल्कि यह उस व्यक्ति की तरह पूर्ण एकाग्रता थी जो किसी प्रश्न की प्रतीक्षा कर रहा हो और उत्तर देने के लिए तत्पर हो।
“हस्तलेख का मिलान प्रारंभिक है,” उन्होंने कहा। “अदालत के लिए तैयार नहीं है। दान में मिली कार्यालय प्रति पर एक नोट है। बचाव पक्ष यह तर्क देगा कि व्याख्यान कक्ष तक पहुँच रखने वाले किसी व्यक्ति ने व्याख्यान के बाद प्रति पर निशान लगाया होगा। फाउंडेशन का संबंध परिस्थितिजन्य है। उन्होंने फाउंडेशन की वित्तीय संरचना के बारे में एक लेख प्रकाशित किया था, जो किसी निवेशक की हत्या में फाउंडेशन की संलिप्तता का सबूत नहीं है। अकादमिक दस्तावेज़ केवल ढांचा स्थापित करते हैं, कृत्य नहीं।” वे रुके। “घटनास्थल पर मिले भौतिक साक्ष्य। थिएटर की रसीदें, तेल, पंख। यह नासिक में एक आपूर्ति श्रृंखला से जुड़ा है।

आपूर्ति श्रृंखला अभी तक राव से व्यक्तिगत रूप से नहीं जुड़ी है। यह एक वितरक के खाते से जुड़ी है। खाता एक ऐसी कंपनी के नाम पर है जिसे हमने अभी तक उनसे नहीं जोड़ा है।” उन्होंने कॉर्कबोर्ड पर एक नज़र डाली। "अगर हम उन्हें अभी गिरफ्तार करते हैं, तो उनके वकील अर्जी दाखिल करते ही जमानत दिलवा देंगे। शुरुआती लिखावट का मिलान जमानत पर रोक लगाने के लिए काफी नहीं है। परिस्थितिजन्य सबूत भी जमानत पर रोक लगाने के लिए काफी नहीं हैं। ये सबूत अड़तालीस घंटे में सामने आ जाएंगे। और एक बार जब ये सबूत सामने आ जाएंगे, तो अभी भी जुटाए जा रहे हर सबूत, नासिक सप्लाई चेन का ब्यौरा, भंडारकर संगठन के पत्र में दूसरी लिखावट का पैटर्न, हाजिरी सूची से जुड़े सबूत - इन सभी को जुटाना मुश्किल होगा, क्योंकि उनके वकील हमारी हर गतिविधि पर नजर रखेंगे।"
वह रुक गया। कमरा एकदम शांत था।
"और यह सब इस धारणा पर आधारित है कि ये वही अपराधी हैं। हो सकता है कि कोई और व्यक्ति उनके ढांचे, उनके व्याख्यानों, उनके लेखों का उपयोग कर रहा हो। इस संभावना से इनकार नहीं किया जा सकता," उन्होंने आगे कहा।
"तो हमें इंतजार करना चाहिए," मैंने कहा।
“हम तैयारी कर रहे हैं,” उन्होंने कहा। “इसमें फर्क है। इंतज़ार करने का मतलब है कि जांच रुकी हुई है। अनुमान लगाने का मतलब है कि जांच किसी ठोस सबूत की ओर बढ़ रही है।” वे थोड़ी देर रुके। “हमें नासिक सप्लाई चेन खाते को किसी नाम या संगठन से जोड़ना होगा और पता लगाना होगा कि इसे कौन नियंत्रित करता है। प्रिया को लिखावट का एक और पैटर्न स्थापित करना होगा। हमें कम से कम एक गवाह चाहिए जिसने शुक्रवार रात को राव को भवानी पेठ पर देखा हो।

[illegible]

[illegible]

***

[illegible]

[illegible]

[illegible]

*[illegible] [illegible] [illegible] [

*[illegible] [illegible] [illegible] [

मैंने अभी तक करण को नहीं बताया था। मैं उसे सुबह चाय के समय, टोस्ट बनाने से पहले बताने वाली थी।
कुछ जानकारी सुबह तक इंतजार करती है। और कुछ सुबहें जानकारी मिलने से पहले ही शुरू हो जानी चाहिए। बस, आपकी पसंद की चाय बिना पूछे परोसी जाए, इतना ही।

[redacted] 5 - [redacted]

[redacted]

[redacted]

[

“अगर वो है, तो उसे पहले से ही पता है कि हम आ रहे हैं,” उसने कहा। “उसे चक्की के समय से ही पता है। उसने ही रास्ता बताया था।” उसने अपनी चाय की एक घूंट ली। “गुरुवार को वहाँ होना खुद को खतरे में डालना नहीं है। यह एक निमंत्रण स्वीकार करना है। और अगर वो हत्यारा नहीं है, तो हत्यारा भी वहाँ होगा। हमारा इंतज़ार कर रहा होगा।”
उन्होंने इसे बहुत ही सरल शब्दों में, बिना किसी तामझाम के कहा - ठीक उसी तरह जैसे करण कोई थोड़ी डरावनी बात कहता है - यह शांति किसी चीज को कम आंकने से नहीं, बल्कि गणना करने और यह जानने से आती है कि गणना को संभाला जा सकता है।
मैंने कहा, "मैं टोस्ट बना देता हूँ। अगर इससे मदद मिलती है तो ठीक है।"
उन्होंने मेरी तरफ देखा। उनकी नज़र में झुंझलाहट और मज़ाक का मिला-जुला भाव था। "एक टोस्ट बनाओ," उन्होंने कहा। "मैं और चाय बनाता हूँ।"
मैं फिर भी वहां पहुंच गया, लेकिन तब तक हममें से किसी को भी टोस्ट याद नहीं रहा था।

***

प्रिया का फोन सुबह 9:15 बजे आया।
भंडारकर संस्थान का पत्र - सात महीने पहले राव द्वारा संस्थान के निदेशक को लिखा गया एक हस्तलिखित अनुरोध - संबंधित कानूनी प्रावधानों के तहत जांच के लिए जारी किया गया था और प्रिया इसे व्यक्तिगत रूप से लेकर आई थी, जैसा कि उसने कहा था।
उसने काम के बारे में पूछने में जरा भी देर नहीं की।
“कुल मिलाकर 51 उपयोगी अक्षर,” उन्होंने कहा। “तीन पैराग्राफ में। इतना काफी है।” एक छोटा और जानबूझकर विराम, उस व्यक्ति का

विराम जिसने काम पूरा कर लिया है और निष्कर्ष से पहले उसे प्रस्तुत कर रहा है। “चक्की पर लिखा नोट राव की लिखावट में है। जिस व्यक्ति ने भंडारकर संस्थान को पत्र लिखा था, उसी ने चक्की के हैंडआउट पर भी नोट लिखा है। अक्षरों की संरचना, संकुचित अनुपात, विशिष्ट अंतिम स्ट्रोक, ‘अ’ के अंत का तरीका – दोनों नमूनों में सब कुछ एक जैसा है और पंजीकरण फॉर्म पर शुरुआती मिलान से भी मेल खाता है।” एक और विराम। “मेरे पास तुलनात्मक प्लेटों के साथ लिखित रिपोर्ट दोपहर 2:00 बजे तक होगी। यह अदालत में प्रस्तुत करने के लिए तैयार है।”
"धन्यवाद, प्रिया," करण ने कहा।
“इस जानकारी का वितरण,” उसने कहा और अगले विषय पर आगे बढ़ गई। “कमिश्नर पाटिल और गोखले को। धोले को नहीं, जब तक पाटिल यह तय नहीं कर लेते कि इस स्तर पर किसे अधिकार है।” थोड़ी देर रुककर उसने कहा, “ऐसा नहीं है कि मुझे धोले की खास चिंता है। साठे धोले की टीम में थे, और यह जानकारी तब तक नहीं दी जाएगी जब तक यह स्पष्ट नहीं हो जाता कि साठे क्या करने वाले हैं।”
वह सही थी और उसने यह बात खुद ही समझ ली थी और खुद ही इसकी सिफारिश की थी। करण ने एक ऐसी आवाज़ निकाली जिसका मतलब था ध्यान दिया, पुष्टि की, सहमत हुआ - एक छोटी और विशिष्ट आवाज़ जिसे प्रिया ने स्वीकार करना सीख लिया था।
करण ने कहा, "दोपहर 2:00 बजे कोर्ट के लिए तैयार हूं।"
"दोपहर 2:00 बजे," उसने पुष्टि की।
उसने फोन काट दिया। करण ने फोन नीचे रखा और जैकेट की जेब में हाथ डालकर कमरे के दूसरी ओर लगे कॉर्कबोर्ड की ओर देखा। उसने लगभग तीस सेकंड तक उसे देखा। फिर वह कॉर्कबोर्ड के पास गया, डिब्बे से एक पिन निकाली और उसे बोर्ड पर उस जगह पर लगा दिया जिसे उसने,

[illegible]

[illegible]

[illegible]

प्रतिबद्धता के बदले नियमित रूप से थोक कीमतों पर खरीदारी करते हैं। यह खाता 'प्रगति सप्लाइज' नामक कंपनी के नाम पर था। प्रगति सप्लाइज: नासिक जिले के स्कूलों और कोचिंग संस्थानों को शैक्षिक सामग्री की आपूर्ति करने के उद्देश्य से पंजीकृत और नियमों का पालन करने वाली कंपनी। तीन साल पुरानी कंपनी। औसत दर्जे का लेकिन कुशल व्यावसायिक प्रदर्शन। नासिक स्थित वितरक से प्राप्त थोक खाते का उपयोग तीन महीने पहले जारी की गई रसीद से पहले दो बार खरीदारी के लिए किया गया था - एक बार कार्यालय सामग्री के रूप में दिखने वाली वस्तुओं के लिए और एक बार शैक्षिक कार्यशालाओं के लिए शिल्प सामग्री के रूप में दिखने वाली वस्तुओं के लिए।
पिछली से दूसरी खरीदारी, आठ महीने पहले: हस्तकला का सामान। काले पॉलिएस्टर के सौ पंख। पाँच किलो काले तिल। दो सौ मीटर सूती बाती। दस लीटर शुद्ध तिल का तेल।
आठ महीने पहले। तीन महीने पहले खरीदी गई सामग्री का उपयोग चक्की के दृश्य के लिए किया गया था। आठ महीने पहले, उसी प्रकार की सामग्री की एक बड़ी मात्रा खरीदी गई थी। प्रारंभिक खरीदारी। परीक्षण, या स्टॉक, या दोनों।
जब मैंने गोखले द्वारा भेजा गया बिल सारांश करण को दिखाया, तो उसने कहा, "प्रगति सप्लाइज।" वह अपने फोन पर बिल पढ़ रहा था और मैं उसी दस्तावेज़ को अपने लैपटॉप पर पढ़ रहा था। "पता लगाओ कि इसे कौन चलाता है। निदेशक, अधिकृत हस्ताक्षरकर्ता, बैंक खाताधारक।"
मैं पहले से ही खोज रहा था। कंपनी रजिस्ट्रार के पोर्टल पर कंपनी के पंजीकरण दस्तावेज उपलब्ध थे - किसी भी पंजीकृत कंपनी द्वारा जमा किए जाने वाले बुनियादी दस्तावेज जो सार्वजनिक

रिकॉर्ड होते हैं। निदेशक: एक ऐसा नाम जो मैंने पहले कभी नहीं देखा था, नासिक निवासी जिसका नाम सार्वजनिक डेटाबेस में किसी अन्य कंपनी से नहीं जुड़ा था। शायद वह सिर्फ नाममात्र का व्यक्ति था। कंपनी का वास्तविक संचालक नहीं।
लेकिन नासिक के थोक खाते पर अधिकृत हस्ताक्षरकर्ता - वह व्यक्ति जिसके हस्ताक्षर खाता आवेदन पर थे और जो खरीदारी को अधिकृत कर सकता था - अलग था। खाता आवेदन पर हस्ताक्षर बहुत छोटे, बेहद स्पष्ट अक्षरों में थे।
मैंने इसे स्क्रीन पर देखा। गोखले की टीम ने वितरक की फाइलों से जो छवि प्राप्त की थी, उसका रिज़ॉल्यूशन उच्च नहीं था। लेकिन कम गुणवत्ता वाली छवि में भी, अक्षरों के डिज़ाइन में स्पष्ट सादगी थी। प्रत्येक अक्षर को न्यूनतम रूप में डिज़ाइन किया गया था। कोई सजावट नहीं।
मैंने कहा, "करण।"
वह लैपटॉप के पास आया। उसने बिना कुछ बोले काफी देर तक स्क्रीन को घूरता रहा।
"प्रिया," उसने आखिरकार कहा। मेरे साथ नहीं - यह इस बात का संकेत था कि तस्वीर को आगे कहाँ भेजा जाना चाहिए।
मैंने कहा, "मैं इसे अभी भेज देता हूँ। जब तक उसे असली दस्तावेज़ नहीं मिल जाते, तब तक वह तस्वीर देखकर पुष्टि कर सकती है।" उन्होंने कहा, "अगर वह ऐसा नहीं करती है, तो हम उचित माध्यमों से वितरक से भौतिक दस्तावेज प्राप्त करेंगे।"
"इसमें गुरुवार तक का समय लगेगा।" वह रुका। "हम इसे लेक्चर से पहले किसी तरह प्राप्त कर लेंगे।"
मैंने संदर्भ स्पष्ट करते हुए एक नोट के साथ फोटो प्रिया के कार्यालय के पते पर भेज दी। उन्होंने ग्यारह मिनट के भीतर जवाब

दिया: फोटो की गुणवत्ता औसत है, लेकिन 'a' का बंद होना स्पष्ट और एक जैसा दिख रहा है। लिखावट अस्थायी रूप से वही है। रिकॉर्ड के लिए भौतिक दस्तावेज की आवश्यकता है - अनुरोध तैयार किया जा रहा है - लेकिन मेरा कार्यकारी आकलन है कि हाँ।
हां, अस्थायी रूप से। राव ने स्वयं एक फर्जी कंपनी के थोक खाते पर हस्ताक्षर किए थे, जिसका उपयोग उन्होंने हत्या से तीन महीने पहले मंचन में इस्तेमाल होने वाली सामग्री खरीदने के लिए किया था। उसी फर्जी कंपनी का उपयोग आठ महीने पहले सामग्री के परीक्षण के लिए किया गया था।
ग्यारह महीने की परिचालन तत्परता। न्यूनतम।
मैंने इसे पृष्ठ के निचले भाग में बढ़ते हुए नोटबुक सारांश में जोड़ दिया। तैयारी की समयरेखा स्पष्ट होने लगी थी: सबसे पहले अकादमिक ढांचा, 2019। फिर तीन महीने पहले फाउंडेशन निबंध। उसके बाद चौदह महीने पहले नासिक थोक खाता खोला गया। आठ महीने पहले सामग्री का परीक्षण किया गया। तीन महीने पहले नाट्य प्रस्तुति रसीद खरीदी गई। छह सप्ताह पहले भंडारकर संस्थान में हैंडआउट की समीक्षा की गई।
खाता खोलने सहित कम से कम दो साल की समयसीमा। यदि अकादमिक ढांचा व्यावहारिक सोच की शुरुआत माना जाए, तो शायद इससे भी पहले का समय लग सकता है।
यह कोई भावनात्मक आवेग में किया गया अपराध या सुनियोजित दुर्घटना नहीं थी। यह एक परियोजना थी। एक ऐसी परियोजना जिसमें विकास चरण, परीक्षण चरण और क्रियान्वयन चरण शामिल थे, जिसके लिए एक प्रशासनिक ढांचा तैयार किया गया था, जिसके चारों ओर एक सैद्धांतिक संरचना का निर्माण किया गया था और जिसके पीछे छोड़े गए साक्ष्यों में एक संचार रणनीति निहित थी।

[illegible]

— *[illegible]*

***

[illegible] 11:30 [illegible]

मैंने इसे दो बार पढ़ा, जैसा कि मैं हर चीज़ को दो बार पढ़ता हूँ, और दूसरी बार पढ़ने पर मुझे आखिरकार कुछ समझ आया - फोरेंसिक अनुरोध की स्थिति संबंधी अपडेट। प्रिया की प्रयोगशाला ने शुद्ध तिल के तेल के पूरक विश्लेषण के लिए नासिक की एक विशेषज्ञ प्रयोगशाला को अनुरोध भेजा था, जिसके पास एक विशिष्ट रासायनिक मार्कर प्रोफाइल परीक्षण के लिए उपयुक्त उपकरण थे। यह अनुरोध मंगलवार को सुबह 10:47 बजे एक मानकीकृत अंतरविभागीय प्रणाली के माध्यम से भेजा गया था।
नासिक स्थित विशेषज्ञ प्रयोगशाला ने उसी दिन दोपहर 2:15 बजे रसीद स्वीकार कर ली।
सबमिशन और प्राप्ति के बीच तीन घंटे और अट्ठाईस मिनट का समय लगा। यह सिस्टम के लिए सामान्य सीमा के भीतर था।
लेकिन विशिष्ट अनुरोध – रासायनिक मार्कर परीक्षण का, और इसलिए यह तथ्य कि भवानी पेठ घटनास्थल पर मिला तेल शुद्ध था और कोल्ड-प्रेस्ड नहीं था, जो साक्ष्य में एक महत्वपूर्ण अंतर था – मंगलवार सुबह से ही अंतरविभागीय प्रणाली में था। छत्तीस घंटे से। एक ऐसी प्रणाली में जिसमें सत्रह लोग पहुँच रहे थे, और नासिक प्रयोगशाला के कर्मचारी जो रसीदों को संसाधित कर रहे थे, दोनों संस्थानों के आईटी स्तर के अनुसार प्रशासनिक पहुँच थी। यह एक अवलोकन था। राख के प्रयोग से संबंधित विवरण दृश्य दस्तावेज़ीकरण से साठे और मेहता के माध्यम से कोटियन को भेजा गया था। तेल से संबंधित विवरण छत्तीस घंटे से अंतरविभागीय प्रणाली में मौजूद था और दृश्य दस्तावेज़ीकरण की तुलना में जनता के लिए अधिक आसानी से उपलब्ध था।
यदि कोई भी जांच के तकनीकी निष्कर्षों का अनुसरण करे – भले ही उसे आंशिक जानकारी ही क्यों न मिली हो – तो उसे तेल से संबंधित

[illegible]
[illegible]
[illegible]
“[illegible],” [illegible] “[illegible]” [illegible] “[illegible]” [illegible]
“[illegible]
[illegible]
"[illegible]
“[illegible],” [illegible]
[illegible]:

> *— [illegible] 2:00 [illegible]: [illegible] 10:47 [illegible]*

[illegible]

***

[illegible]

यह वही हैंडआउट नहीं है। अलग विषयवस्तु, अलग पृष्ठ, श्रृंखला के एक अलग व्याख्यान से - दूसरे व्याख्यान से, जो सामुदायिक संरचना और विश्वास प्रणालियों के बारे में था। पृष्ठ का एक कोना, शायद पृष्ठ का एक चौथाई भाग, दिखाई देने वाले भाग पर कोई हाशिये पर टिप्पणी नहीं है।
लेकिन वही श्रृंखला। वही व्याख्याता। कागज़ बिल्कुल चक्की में तैयार कागज़ की तरह।
उनकी अतिरिक्त व्याख्यान सामग्री इसी पते पर रखी जाती थी। हालांकि, सारी सामग्री नहीं - कार्यालय की सफाई के दौरान अधिकांश सामग्री हटा दी गई थी। लेकिन सफाई इतनी अधूरी थी कि यह टुकड़ा यहीं रह गया। राव की शैक्षणिक सामग्री और प्रगति सप्लाइज के कार्यालय के पते के बीच एक भौतिक संबंध स्थापित हुआ।
मैंने गोखले की रिपोर्ट पढ़ते हुए करण से कहा, "वह इस कार्यालय का इस्तेमाल करते थे। वे प्रगति खाते का प्रबंधन करते थे। और वे अपने व्याख्यानों की सामग्री की प्रतियां भी यहीं रखते थे।" "वही व्याख्यान सामग्री जो अपराध स्थल पर मिली थी," करण ने कहा। "सीरीज़ एक ही थी, पेज अलग था, लेक्चर अलग था। लेकिन कागज़ का प्रकार एक ही था - प्रिंटिंग सेट एक ही था, लेआउट भी एक ही था।" वह रुका। "वे उस दफ्तर में, उस डेस्क पर, कॉफी मग लिए बैठे और इन कागज़ों पर काम किया।"
करण कुछ पल चुप रहा।
उन्होंने कहा, "अगर वे एक ही थे, तो उन्होंने अकादमिक कार्य को व्यावहारिक कार्य से अलग नहीं किया। यह एक ही काम था, एक ही जगह पर, एक ही डेस्क पर।" वे थोड़ी देर रुके। "सिद्धांत और व्यवहार

[illegible]

[illegible]

***

[illegible]

करण ने पुष्टि पत्र पढ़ा और कहा, "गुरुवार रात काम खत्म होने के बाद, गोखले औपचारिक दस्तावेज तैयार करेंगे। शुक्रवार सुबह हम पाटिल के पास जाएंगे।"
उन्होंने यह बात उस शांति के साथ कही, जिस शांति के साथ कोई व्यक्ति किसी निर्णय की ओर बढ़ते हुए संतुष्ट होता है - जिससे हमें पता चलता है कि उन्हें अपनी संरचना पर पूरा भरोसा है।
"और फिर?" मैंने कहा।
“फिर पाटिल अगला कदम तय करेंगे,” उन्होंने कहा। “राव की औपचारिक निगरानी। प्रगति के निदेशकों से सावधानीपूर्वक पूछताछ। आधिकारिक माध्यमों से फाउंडेशन के वित्तीय रिकॉर्ड की मांग।” वे एक पल के लिए रुके। “और नासिक का मुद्दा – फाउंडेशन का नासिक कार्यक्रम, वहां के उसके संबंध, राव के लेख में कदम के बारे में जो संकेत दिए गए थे।” उन्होंने कॉर्क बोर्ड की ओर देखा। “पाटिल जो भी फैसला लें, यह काम जारी रहेगा। नासिक का मुद्दा सिर्फ राव से संबंधित नहीं है।”
मैंने कॉर्क बोर्ड को देखा। चार पिन और आरेख। बीच में बना खाली प्रश्न चिह्न अभी भी वहीं था।
मैंने कहा, "सीढ़ियों के ऊपर वाला आदमी।"
“जी हां,” उन्होंने कहा। “सीढ़ियों के ऊपर बैठा आदमी राव नहीं है। राव अकादमिक पक्ष में थे, शिविर प्रबंधक नहीं। वे फाउंडेशन के करीब थे, लेकिन अंदरूनी मामलों में शामिल नहीं थे - वे इसके बारे में लिखते थे, इसके कार्यक्रमों में भाषण देते थे, लेकिन उनका रिश्ता कार्यात्मक से ज़्यादा आलोचनात्मक था।” वे रुके। “सीढ़ियों के ऊपर बैठा आदमी फाउंडेशन का कार्यात्मक नियंत्रण रखने वाला व्यक्ति है। जिसका नाम किसी भी दस्तावेज़ में नहीं है और जिसने एक वास्तविक शिविर कार्यक्रम से वित्तीय सुधार की

ओर बदलाव का प्रबंधन किया। वही व्यक्ति जिसका ज़िक्र राव ने तीन महीने पहले फाउंडेशन का नाम लेते हुए लेख में किया था।” उन्होंने मेरी ओर देखा। “हम उस आदमी को ढूंढ निकालेंगे। लेकिन आज नहीं।”
आज नहीं। आज व्याख्यान था।

***

लेक्चर से ठीक पहले के आधे घंटे के बारे में कुछ कहना जरूरी है, क्योंकि यह कई मायनों में महत्वपूर्ण था, जिसका मुझे बाद में ही पूरी तरह से एहसास हुआ।
शाम 5:30 बजे गोखले ने करण के फोन पर एक छोटा सा संदेश भेजा। संदेश में लिखा था: *नासिक के पुलिस अधीक्षक - देशमुख - नासिक के थोक व्यापार जिले के अपने साप्ताहिक गश्त के दौरान एक विवरण दर्ज करते हैं।* उनके कांस्टेबल ने नियमित गश्त के दौरान CIDCO पते वाली इमारत देखी और तीसरी मंजिल पर स्थित कार्यालय में हाल ही में ताला बदला हुआ पाया। देशमुख ने इसे नासिक प्रणाली के माध्यम से प्रिया की प्रयोगशाला से प्राप्त एक फोरेंसिक अनुरोध से संबंधित होने की संभावना के रूप में नोट किया। रिपोर्ट दर्ज करने के बजाय, उन्होंने सीधे गोखले को फोन किया।
फिर: *देशमुख सतर्क हैं। वे ऐसा करते हैं - अगर उन्हें दस्तावेज़ तैयार होने से पहले संपर्क स्थापित करना होता है, तो वे फाइल भेजने के बजाय फोन करते हैं। अगर नासिक का मामला आगे बढ़ता है, तो आपको उनसे बात करनी चाहिए।*
बानेर की ओर मोटरसाइकिल चलाते हुए मैंने यह संदेश पढ़ा। मैंने मन में एक बात नोट कर ली: *देशमुख, एसपी नासिक। फाइल नहीं, बल्कि गोखले को फोन। मैंने फोरेंसिक अनुरोध के आधार पर खुद सीआईडीसीओ

भवन का पंजीकरण कराया। ऐसा अधिकारी जो जानकारी देने से पहले सोचता है - अनुरोध पढ़ता है, पता नोट करता है, पते को अपनी निगरानी संबंधी जानकारी से जोड़ता है, फाइल नहीं, बल्कि फोन। ऐसी सावधानी जो सामान्य सावधानी से अलग है।*
मुझे संदेश में एक ऐसी बात नज़र आई जिसके बारे में मुझे पहले पता नहीं था कि वह कितनी उपयोगी साबित होगी: गोखले ने बताया कि देशमुख ने बुधवार दोपहर 3:30 बजे नासिक सिस्टम में फॉरेंसिक अनुरोध देखा था। यह अनुरोध मंगलवार सुबह 10:47 बजे से ही सिस्टम में मौजूद था। इसका मतलब है कि तेल की कीमतों में अंतर से संबंधित जानकारी नासिक सिस्टम में देशमुख के सैनिक द्वारा CIDCO के पते से संबंध खोजने से अट्ठाईस घंटे से भी अधिक समय पहले से मौजूद थी।
नासिक प्रयोगशाला के कर्मचारियों और नासिक के अंतरविभागीय प्राप्तकर्ताओं के लिए सुलभ एक प्रणाली में अट्ठाईस घंटे। मैंने बुधवार दोपहर को संभावित दूसरे रिसाव के रूप में तेल का विवरण दर्ज किया था। अब मैं यह दर्ज कर रहा था कि देशमुख ने बुधवार को 3:30 बजे नासिक प्रणाली देखी थी - मेरे रिकॉर्डिंग के एक घंटे बाद, गोखले को भेजे जाने के एक घंटे बाद।
शायद यह एक संयोग था। समय लगभग समान था, लेकिन असंभव नहीं था। देशमुख एक मेहनती एसपी थे जो सप्ताह में एक बार पूरे जिले का दौरा करते थे, उनके कांस्टेबल ने ताला बदलने पर ध्यान दिया था, और इसे फोरेंसिक जांच से जोड़ना पुलिस का असली काम था।
मैंने इसे रिकॉर्ड किया, मन में दर्ज किया और अनुमानों के ढेर में रख दिया, जहाँ इसे तब तक रहना था जब तक मुझे इसमें जोड़ने के लिए कोई ठोस जानकारी न मिल जाए। अनुमानों का ढेर इसीलिए तो होता है।

***

बनेर हॉल में लगभग 250 लोग बैठ सकते हैं। मुझे यह इसलिए पता है क्योंकि मैंने सीटें गिनी थीं जब करण प्रवेश द्वार और उससे सटी चारदीवारी के बीच बनी चाय की दुकान से चाय लेकर आया था। दुकान वाले ने सार्वजनिक व्याख्यानों के लिए जल्दी आने वाले और प्रतीक्षा करते समय कुछ खाने-पीने की चाह रखने वाले लोगों के लिए बने इस व्यावसायिक अवसर को सही ढंग से पहचान लिया था। इस बार गिनती अपने आप हो गई। मैं गिनती करता हूँ। इससे मुझे दिशा मिलती है।
चाय कड़क और थोड़ी कड़वी थी, अक्टूबर की ठंड के कारण विक्रेता को उसमें थोड़ा और अदरक मिलाना पड़ा, जबकि हम प्रवेश द्वार पर कप लिए खड़ी छोटी भीड़ में शामिल थे।
पुणे के बौद्धिक समुदाय में गुरुवार की शाम को मुझे जिस तरह की भीड़ की उम्मीद थी, वैसी ही भीड़ थी: विश्वविद्यालय के छात्र, पढ़ने-लिखने की आदत वाले पेशेवर लोग, और वे विभिन्न वर्ग के लोग जो सार्वजनिक व्याख्यानों में शामिल होने को एक बहाना मानते हैं। कम से कम एक दर्जन पत्रकारिता के छात्र अपने फोन में पंजीकरण कराने के लिए तैयार थे। तीन-चार लोग ऐसे भी थे जिन्हें मैंने उसी सप्ताह भंडारकर संस्थान के वाचनालय में देखा था।
और - पहले से ही पहली पंक्ति में बैठे - रमेश मेहता, अपनी नोटबुक और लिखे हुए नोट्स के साथ, व्याख्यान शुरू होने से पहले कुछ लिख रहे थे। कमरे के बारे में, या श्रोताओं के बारे में, या जो वह सुनने की उम्मीद कर रहे थे। एक पत्रकार की तरह, जिसने कहानी से पहले ही अपना शोध प्रबंध तैयार कर लिया हो और सामने आने वाली हर बात को लिख रहा हो, ताकि उसे सुधारा या ठीक किया जा सके।

मैंने करण के हाथ को छुआ और बहुत ही हल्के इशारे से मेहता की ओर इशारा किया, जो तीन पंक्तियों पीछे से मुश्किल से दिखाई दे रहा था। करण ने देखा और दो सेकंड के भीतर वापस देखा - मानो उसने अपने मन में बात रखी हो, लेकिन दिखाई न दी हो।
हम पीछे से चौथी पंक्ति में, बाईं ओर बैठे थे।
रात 8:08 बजे राव बगल वाले दरवाजे से अंदर आया।
वहाँ कोई मुख्य प्रवेश द्वार नहीं था - मंच के बाईं ओर का दरवाज़ा प्रस्तुति क्षेत्र को पीछे के गलियारे से जोड़ता था। वह एक हाथ में कागज़ लिए और ऐसे हाव-भाव के साथ अंदर आया जैसे उसने कभी अपने आगमन को कोई प्रबंधनीय घटना न समझा हो। उसने कागज़ को पोडियम पर फैला दिया। उसने मंच की प्रकाश व्यवस्था को संक्षिप्त और व्यावहारिक ढंग से देखा, मानो उसे यह जानना ही हो कि प्रकाश हॉल को रोशन करेगा या नहीं।
फिर उन्होंने हॉल की ओर देखा।
यह खोज थी - मूल्यांकन नहीं, खोज, एक ऐसे व्यक्ति की पहचान से जिसने अपने पेशेवर जीवन के अधिकांश समय में एक ऐसे स्थान पर वापसी की है जहाँ उसका एक विशेष स्वरूप रहा है। और उस खोज के क्रम में, उसने बाईं ओर चौथी पंक्ति की ओर देखा।
उन्होंने करण को ढूंढ लिया।
दो पल। उसकी निगाहें नीचे झुकीं और उसने दो पल रुककर कमरे का फिर से जायज़ा लिया। ये वो दो पल नहीं थे जब कोई अचानक किसी चेहरे को देखता है - बल्कि ये वो दो पल थे जब कोई किसी अपेक्षित उपस्थिति की पुष्टि करता है। सटीक, सोच-समझकर और लगभग पल भर में
- जैसे आप किसी सूची में एक काम पूरा करके अगले काम पर चले जाते हैं।
उन्हें पता था कि हम यहाँ होंगे।

उन्होंने हमारी यहाँ उपस्थिति सुनिश्चित की थी - योजना के किसी स्तर पर, उस परियोजना के किसी स्तर पर जिसके विभिन्न चरणों का मैं हफ्तों से अध्ययन कर रहा था। व्याख्यान उस क्रम का हिस्सा था। वे जानते थे कि जाँच भी उसी क्रम में आगे बढ़ेगी। उन्होंने दिशा तय कर दी थी और उन्हें विश्वास था कि जाँच गुरुवार तक अपने निष्कर्ष पर पहुँच जाएगी। या यह सिर्फ मेरी कल्पना थी? उन्होंने कागजात देखे। फिर वे बातें करने लगे।

***

व्याख्यान का शीर्षक था *दिखावा और अंधविश्वास: भय कैसे उत्पन्न होता है* और उन्होंने शीर्षक के अनुरूप ही प्रस्तुति दी, मानो वे शीर्षकों में सटीकता को अपना पेशेवर दायित्व मानते हों।
इसकी शुरुआत इतिहास से हुई - अज्ञानता और अंधविश्वास की आधिकारिक कहानी से नहीं, जिसे आधुनिकता और शिक्षा से दूर किया जा सके, बल्कि संरचनात्मक इतिहास से: किसने, किस उद्देश्य से और समाज के किस चरण में कौन से भय पैदा किए। उन्होंने लोगों के नाम लिए। उन्होंने संस्थाओं के नाम लिए। उन्होंने विशिष्ट तंत्रों का नाम लिया - विशिष्ट ऐतिहासिक मोड़ों पर सामाजिक नियंत्रण के साधन के रूप में अनुष्ठानिक रूपों का उपयोग, जिस तरह से विशिष्ट परंपराओं को वास्तविक आध्यात्मिक अनुभव से नहीं, बल्कि आध्यात्मिक अनुभव के उत्पादन को नियंत्रित करने वालों की आवश्यकताओं से आकार दिया गया था।
वे इतने सटीक थे कि अकादमिक जगत के सार्वजनिक व्याख्याता शायद ही कभी इतने सटीक होते हैं। अधिकांश बुद्धिजीवी विश्वविद्यालय से स्नातक न हुए श्रोताओं को ध्यान में रखते हुए अपने कथनों को नरम कर देते हैं। राव ने अपने कथनों को नरम नहीं किया। बल्कि

[illegible]

[illegible]

[illegible] 8:43 [illegible], [illegible] [illegible] [illegible]

[illegible] [illegible] [illegible], [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

[illegible] [illegible] [illegible] [illegible], [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]:

*[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible], [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

मैंने इसे दो अंडरलाइन के साथ लिखा है, जो मैं सबसे गंभीर चीजों के लिए ही इस्तेमाल करता हूँ।
रात 9:09 बजे - और मैं सटीक समय नोट करना चाहता हूँ क्योंकि यह महत्वपूर्ण था: *"इच्छा की विपरीत दिशा अनुष्ठान में कोई गलती नहीं है। यह एक पहचान है। यह उस बिंदु को चिह्नित करता है जहाँ साधक ने पूजा को उसके घोषित उद्देश्य के विरुद्ध मोड़ दिया है।"*
वही वाक्यांश। वितरण पत्र के एक अंश से, भंडारकर संस्थान में नोटबुक के हाशिये से, 2019 श्रृंखला के चौथे व्याख्यान से - अब इसी हॉल में, इसी व्याख्यान में, उसी हॉल में जहाँ जाँच पहुँची थी।
मैंने करण की ओर देखा। वह अपनी नोटबुक के कोने में अपनी छोटी- छोटी लिखावट में कुछ लिख रहा था। मैंने झुककर पढ़ा: *वह अपने बारे में लिख रहा है।*
पांच शब्द। पांच दिनों में हमने जो कुछ भी खोजा, उसका सार पांच शब्दों में समाहित है।

***

व्याख्यान के बाद बारह प्रश्न पूछे गए, जिनमें से प्रत्येक का उत्तर उस व्यक्ति के अनुशासित धैर्य के साथ दिया गया, जिसने दशकों तक सार्वजनिक मंचों पर प्रश्नों के उत्तर दिए हैं और जिसने यह सीख लिया है कि किसी भी प्रश्न का सबसे सम्मानजनक उत्तर वही देना है जो पूछा गया है, बिना किसी अनावश्यक बात या दिखावे के।
प्रश्न-उत्तर सत्र के अंत में, आगे की पंक्ति में बैठी एक युवती — शायद बाईस वर्ष की, जिसके चेहरे के भाव से लग रहा था कि वह इस प्रश्न के बारे में पूरे समय सोच रही थी और इसे पूछने का निश्चय

कर चुकी थी—ने कहा: "प्रोफेसर राव। आपने कानूनी तकनीक को समझने वाले व्यक्ति की नैतिक स्थिति को एक आस्तिक से भिन्न बताया। लेकिन आपने यह नहीं कहा कि उस व्यक्ति के निर्णय उचित ठहराए जा सकते हैं या नहीं। क्या वे उचित ठहराए जा सकते हैं?"
कमरे में मौजूद हर कोई समझ गया था कि क्या पूछा जा रहा है। सवाल हत्या के बारे में था। या कम से कम, उस सिद्धांत के बारे में जिसमें हत्या निहित है। वह उनसे पूछ रही थी कि क्या उनके व्याख्यान में दी गई परिभाषा के अनुसार, वह व्यक्ति जो स्थान बनाता है - जो परंपरा के रूप को एक उपकरण के रूप में उपयोग करता है - नैतिक रूप से न्यायसंगत हो सकता है।
राव ने उसकी ओर देखा।
"नहीं," उन्होंने कहा। सिर्फ एक शब्द। कोई शर्त नहीं, जटिलता का कोई आग्रह नहीं, सूक्ष्मता का कोई निमंत्रण नहीं।
"तो फिर आपने यह क्यों कहा कि प्रश्न का उत्तर संतोषजनक नहीं, बल्कि ईमानदार था?" उसने ज़ोर देकर पूछा। उसने पूरी तैयारी कर ली थी। उसने उसके पिछले लेख पढ़ लिए थे।
“क्योंकि सच तो यही है कि ‘नहीं’,” उन्होंने कहा। “और सच तो यही है कि ‘नहीं’ कहने से कोई व्यक्ति फैसले लेने से नहीं रुकता। इसका मतलब सिर्फ इतना है कि वो फैसले सोच-समझकर लिए गए हैं।” वो थोड़ी देर रुके। एक पल के लिए, उनका ध्यान कहीं और था—या कहें कि हॉल से कहीं ज़्यादा सटीक जगह पर।
फिर उन्होंने सत्र समाप्त किया और बगल के दरवाजे से बाहर निकल गए, और तालियाँ पूरी तरह से बजने से पहले ही करण उठ खड़ा हुआ।

***

बाहर। रात के 9:35 बजे बानेर रोड पर, दक्कन क्षेत्र की तुलना में यातायात कम है, हवा में पुणे की शाम की एक विशेष ताजगी है जो दिन

भर शुष्क रही और अब ठंडक के साथ इस बात का आभास दे रही है कि मौसम अपने रात्रिकालीन रूप की ओर अग्रसर है।
मैंने कहा, "उन्होंने पहले ही जवाब दे दिया है।"
"हां," करण ने कहा।
"यह सवाल आखिरकार अदालत में पूछा जाएगा। और उन्होंने आज रात सार्वजनिक रूप से, रिकॉर्ड पर इसका जवाब दिया। नहीं। फैसला बरकरार नहीं रखा गया है।" मैं रुका। "वे अपने कार्यों के कानूनी रिकॉर्ड तक पहुंचने से पहले ही अपनी नैतिक प्रतिष्ठा का रिकॉर्ड बना रहे हैं।"
करण ने कहा, "वे चाहते हैं कि नैतिक तर्क कानूनी मामले से अलग रहे। वे जानते हैं कि कानूनी मामला उनके किए को साबित कर देगा। वे कानूनी मामले के बाद अपनी मान्यताओं को राजनीतिक रूप से व्यक्त करना असंभव होने से पहले ही स्थापित करने की कोशिश कर रहे हैं।" उन्होंने आगे कहा, "वे बरी होना नहीं चाहते। वे अपनी बात समझाना चाहते हैं।"
मोटरसाइकिल की ओर चलते हुए मैंने इस बारे में सोचा।
एक खास तरह के लोग होते हैं - और मैंने ऐसे लोगों को किताबों में तो देखा था, लेकिन किसी जांच में उनसे मिलने की उम्मीद कभी नहीं की थी - जो यह तय कर लेते हैं कि उनके रुख का नैतिक महत्व उसके कानूनी परिणामों से कहीं अधिक है, और वे उसी के अनुसार कार्य करते हैं। वे तर्कों को उतनी ही सावधानी से गढ़ते हैं जितनी सावधानी से वे कार्य करते हैं। वे सबूतों को जूरी पर छोड़ देते हैं। वे श्रोताओं के सामने खड़े होकर कहते हैं कि नहीं, यह निर्णय न्यायसंगत नहीं है, और यह बात वे दिल से कहते हैं, और इस बात पर ध्यान नहीं देते कि दिल से कहने से वे निर्णय के परिणामों से मुक्त नहीं हो जाते।

मैंने कहा, "उन्हें पकड़े जाने की उम्मीद है।"
"वे पकड़े जाने से पहले अपना काम खत्म करने की उम्मीद कर रहे हैं," करण ने कहा। "इसमें फर्क है।" वह मोटरसाइकिल के पास रुक गया। "सवाल यह नहीं है कि वे पकड़े जाएंगे या नहीं। वे तो पहले से ही अपनी गिरफ्तारी के जाल में फंस चुके हैं। सवाल यह है कि क्या हम उन्हें वह करने से पहले पकड़ सकते हैं जो हमने तय किया है।" उसने बाइक के दूसरी तरफ से मेरी ओर देखा। "और क्या हम अपना काम करने से पहले और मौतें होंगी? और सबसे महत्वपूर्ण बात, क्या हम असली अपराधी को पकड़ पा रहे हैं?"
हम साइकिलों पर सवार हो गए। अक्टूबर की रात अब पूरी तरह ठंडी हो चुकी थी, दिन की गर्मी पूरी तरह गायब हो गई थी, और शहर की ओर जाने वाली बानेर सड़क पर एक ऐसे आवासीय उपनगर की खामोशी छाई हुई थी, जहाँ शाम ढल चुकी थी और लोग सोने के लिए तैयार हो रहे थे।
करण के फोन की घंटी रात 10:02 बजे बजी।
उसने जवाब दिया। उसने सुना। उसके चेहरे पर वही भाव आया जो तब आता है जब जानकारी आ रही होती है और साथ ही साथ संसाधित हो रही होती है - वह खालीपन जो विचारों की अनुपस्थिति नहीं बल्कि उसके ठीक विपरीत होता है।
उन्होंने कहा: "कब?" उन्होंने कहा: "समझ गया।" उन्होंने कहा: "हम चार घंटे में पहुँच जाएँगे।"
उसने फोन काट दिया।
मैंने इंतजार किया।
उन्होंने कहा, "नासिक।"

***

देशमुख नाम दो चरणों में सामने आया।

[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible], [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]: [illegible] [illegible], [illegible] [illegible], [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible], CIDCO [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible], [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

ओर अक्टूबर का अंधेरा और आगे उजाला, और मैंने उस व्यक्ति के बारे में सोचा जिसने अपनी गिरफ्तारी और एक ऐसे प्रश्न का रास्ता दिखाया जिसका कोई संतोषजनक उत्तर नहीं था, और जो व्याख्यान कक्ष में दर्शकों के सवालों का जवाब दे रहा था जबकि उत्तर-पूर्व में चार घंटे की दूरी पर नासिक में एक और हत्या का मामला सामने आ रहा था।
वे जानते थे। वे उस हॉल में मौजूद अनजान दर्शकों के सवालों के जवाब दे रहे थे, और वे जानते थे, इसलिए उन्होंने चौथी पंक्ति की ओर मुड़कर देखा और सुनिश्चित किया कि अपेक्षित दर्शक मौजूद हैं, और आगे बढ़ गए। दो वृत्त। दो तस्वीरें। दूसरी तस्वीर राजमार्ग पर आगे हमारा इंतजार कर रही थी।
नोटबुक उसकी जेब में थी। 'व्हाट डू यू नो' श्रृंखला की दूसरी प्रविष्टि लिखने के लिए उसे ड्राइव खत्म होने तक इंतजार करना होगा।

***

हम एक बार रात 11:45 बजे नासिक राजमार्ग पर एक ढाबे पर रुके - जो ट्रक चालकों और राजमार्ग यात्रियों के लिए बना था, रात भर खुला रहता था, और वहाँ का खाना उन लोगों के लिए था जो घंटों से गाड़ी चला रहे हैं और आगे भी घंटों गाड़ी चलाते रहेंगे, और कुछ ऐसा चाहते हैं जो शरीर की वास्तविक जरूरतों को पूरा करे, न कि लालसा को। गरमा गरम वरण, गाढ़ी पोल्ही, कड़क चाय। करण जिस तरह की चाय सोच-समझकर पीता है, वह किसी कोने की दुकान की चाय नहीं होती। आधी रात को राजमार्ग पर मिलने वाली चाय, जो बड़ी मात्रा में बनाई जाती है और जरूरत के हिसाब से पी जाती है।
हमने बिना ज्यादा कुछ बोले खाना खाया। जांच में कुछ ऐसे चरण होते हैं जहां बात करना जल्दबाजी होती है - जब उपयोगी चर्चा के

लिए जानकारी उपलब्ध नहीं होती, और जो जानकारी उपलब्ध होती है उस पर पहले ही चर्चा हो चुकी होती है, और अब बस कुछ घंटों का सफर और एक अंधेरी सड़क ही बाकी रह जाती है।
बाहर, राजमार्ग दोनों दिशाओं में फैला हुआ था, ट्रक अपनी-अपनी राह पर जा रहे थे, अक्टूबर का अंधेरा इस बात से बेपरवाह था कि उनमें से क्या गुजर रहा है। कुछ आगे, देशमुख एक अपराध स्थल पर था, जो भी आवश्यक था उसे संभाल रहा था, और उन दो आदमियों का इंतजार कर रहा था जो अंततः वहाँ पहुँचेंगे।
"देशमुख," करण ने वराना पर कहा।
मैंने कहा, "अगर फाइल नहीं तो फोन कॉल ही सही। गोखले ने बताया कि वे ऐसा ही करते हैं।"
“उन्होंने फॉरेंसिक जांच रिपोर्ट से CIDCO का पता ढूंढा,” करण ने कहा। “उन्होंने खुद ही, अपनी पहल पर, गोखले को बिना रिपोर्ट दर्ज कराए फोन किया। और फिर, आज रात, उनके शहर ने हंगामा खड़ा कर दिया, उन्होंने फिर से गोखले को फोन किया।” उन्होंने चाय की चुस्की ली। “वे इस जांच को लेकर बहुत सतर्क हैं।”
"या फिर वे अपनी प्रतिष्ठा को लेकर सतर्क रहते हैं," मैंने कहा। क्योंकि दोनों बातें एक ही समय में सच हो सकती हैं।
"हां," करण ने कहा। "दोनों।" उसने अपना कप नीचे रख दिया। "जब हम उनके साथ एक ही कमरे में होंगे, तब हमें पता चल जाएगा।"
हम फिर से बाइक पर बैठ गए। ढाबे की रोशनी मंद पड़ गई। राजमार्ग फिर से सामने आ गया - अंधेरा, उजाला, समय और सड़क।
मैंने उन वृत्तों के बारे में सोचा। दो अब बन चुके थे, एक पहली बार देखा जाना था। और जिसने भी उन्हें बनाया था, अक्टूबर के अंधेरे में दो शहरों के बीच कहीं, वह कुछ ऐसा पूरा कर रहा था जो

[illegible]

[illegible], [illegible] [illegible] [illegible] [illegible], [illegible] [illegible] [illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible], [illegible]:

— [illegible]

[illegible]

अध्याय 6 - वह तैयार थी
हम सुबह 2:17 बजे नासिक पहुंचे।
उस समय, शहर मानो अपने आप में ही सिमट गया था। न तो वीरान, न ही खाली, बल्कि अपने ही आंतरिक जीवन में लीन। दिन की भागदौड़ में छिपी शांति अब साफ दिखाई दे रही थी। गोदावरी नदी के किनारे घाटों के दीयों से जगमगा रहे थे। अक्टूबर के महीने में जलस्तर थोड़ा कम होता है, और दीयों का चकाचौंध भरा प्रतिबिंब उस काले पानी पर साफ दिख रहा था। पानी की गति ऐसी थी मानो उसे कोई जल्दी न हो; वह अपने ही धैर्य से बह रहा था। पुराने शहर की गलियाँ संकरी थीं और हमारी मोटरसाइकिल उनमें धीरे-धीरे चल रही थी। एक देशमुख सिपाही हमसे आगे एक अलग मोटरसाइकिल पर रास्ता दिखा रहा था। दोनों ओर की पुरानी इमारतों की परछाइयाँ लगभग आपस में टकरा रही थीं।
मंदिर परिसर पंचवटी क्षेत्र में स्थित था। नासिक का प्राचीन केंद्र। यह घनी आबादी वाला इलाका रामकुंड, घाटों और प्राचीन मंदिरों के समूह के आसपास बसा हुआ था। यहाँ घर और मंदिर इतने सटे हुए थे कि यह बताना मुश्किल था कि कहाँ से शुरू और कहाँ खत्म होते हैं। ये सड़कें लोगों और जानवरों के लिए बनी थीं, वाहनों के लिए नहीं। सदियों से यहाँ के पत्थरों में अगरबत्ती की खुशबू इस कदर समाई हुई थी कि अब वह पत्थर का ही एक हिस्सा बन चुकी थी। देशमुख चेकपॉइंट पर हमारा इंतजार कर रहा था।
उनकी उम्र लगभग चालीस वर्ष थी। कद मध्यम था। वे एक सुगठित व्यक्ति थे जो दिखावे में ऊर्जा बर्बाद नहीं करते थे, फिर भी उनकी उपस्थिति प्रभावशाली थी। जब करण घेराबंदी से बाहर आया, तो देशमुख का व्यवहार न तो पुणे के एक वरिष्ठ अधिकारी के प्रति कनिष्ठ अधिकारी की विनम्रता जैसा था, न ही अपने क्षेत्र में आए

किसी व्यक्ति के प्रति वरिष्ठ अधिकारी के दबंग रवैये जैसा। उनका व्यवहार एक ऐसे व्यक्ति का था जिसने हमारे आने से पहले ही तय कर लिया था कि यह बैठक कैसी होगी। उन्होंने तय कर लिया था कि यह बैठक सहयोग की होगी, और वे इस पर अडिग थे।
"करण," उसने कहा। उसने मेरी तरफ देखा। "और दस्तावेज़ सहायक भी।" मैंने कहा, "गर्मी का मौसम।"
“मुझे पता है,” उसने कहा। “मैंने खड़की में हुए अपराध की रिपोर्ट पढ़ी है।” उसने वाक्य को बिना किसी स्पष्टीकरण के वैसे ही बोला। यह उस व्यक्ति की भाषा थी जो किसी गहन अध्ययन किए गए विषय पर बोल रहा हो, जहाँ किसी स्पष्टीकरण की आवश्यकता नहीं होती। वह मुड़ा और घटनास्थल के प्रवेश द्वार की ओर चलने लगा, और हम उसके पीछे-पीछे चले।
चलते हुए उन्होंने कहा, "सविता वाघ। उम्र उनसठ वर्ष। वह नासिक में उस शिविर केंद्र का संचालन कर रही थीं, जिसका उपयोग प्रकाश सेवा संस्था आवासीय कार्यक्रमों के लिए करती है। वह पिछले तीन वर्षों से इसे चला रही थीं। वह संस्था की आधिकारिक कर्मचारी नहीं थीं, बल्कि उन्हें स्थान और सुविधाएं उपलब्ध कराने का ठेका दिया गया था। यह स्थान एक पारिवारिक ट्रस्ट का है, जिसका प्रबंधन वह करती हैं।"
करण ने कहा, "वह इस संगठन से जुड़ी हुई है।"
“उसका संगठन से संबंध है,” देशमुख ने पुष्टि की। “मेरी टीम ने पहले दो घंटों के भीतर ही इस संबंध का पता लगा लिया था। इसीलिए मैंने सामान्य अंतर-जिला अधिसूचना भेजने के बजाय सीधे गोखले को फोन किया।” वह चलते रहे। “मैं पिछले आठ महीनों से नासिक में संगठन की गतिविधियों पर नज़र रख रहा हूँ। आधिकारिक जांच के तौर पर नहीं, बल्कि अनौपचारिक सूचना के आधार पर। जैसा कि आप तब करते

हैं जब आपके क्षेत्र में कुछ गड़बड़ लगती है, लेकिन अभी तक कोई ठोस सबूत नहीं मिला होता।”
"आठ महीने," करण ने कहा।
“फरवरी से,” देशमुख ने कहा। “एक शिविर में भाग लेने वाले व्यक्ति ने शिकायत दर्ज कराई थी। आरोप था कि प्रतिभागियों को आध्यात्मिक ढांचे में झूठी बातें बताकर वित्तीय निवेश करने के लिए गुमराह किया जा रहा था। शिकायत को आधिकारिक रूप देने से पहले ही वापस ले लिया गया था। लेकिन मैंने संगठन का नाम दर्ज करा लिया था और तब से इसके बारे में जानकारी दर्ज कर रहा था।” वह मंदिर परिसर के बाहरी द्वार पर रुक गए। वहां एक पत्थर का द्वार था, जिस पर एक दीपक लगा था, जिसकी नारंगी रोशनी नीचे की ओर पड़ रही थी। “मंगलवार को, जब प्रिया की प्रयोगशाला से अंतरविभागीय प्रणाली के माध्यम से नासिक के एक पते के साथ अनुरोध आया, तो मैंने उस पते का अपने रिकॉर्ड से मिलान किया।” वह फिर रुके। “पता मेल खा गया। उसी इमारत का उपयोग संगठन के शिविर परिवहन ठेकेदारों में से एक के गोदाम के रूप में किया जा रहा था। अलग मंजिल, अलग संगठन, लेकिन इमारत एक ही थी। मैंने इस साझा क्षेत्र को आठ महीने पहले पंजीकृत कराया था, लेकिन अभी तक कोई ठोस कार्रवाई नहीं हुई थी।”
"आपने हमें कुछ देने के लिए तैयार होने तक फोन करने का इंतजार किया," करण ने कहा।
देशमुख ने कहा, "जब मुझे पता चला कि तुम क्या देख रहे हो, तभी मैंने फोन किया।" यही फर्क था, और उन्होंने इसे ठीक कर दिया। "चिंता के कारण फोन करने और किसी काम की बात बताने के लिए फोन करने में फर्क होता है।" उन्होंने करण की तरफ देखा। "मैं कोशिश करता हूं कि तभी फोन करूं जब मेरे पास कोई काम की बात हो।"

[illegible] [illegible] [illegible] [

इसे तभी देखा जब पतंगे ने मेरा ध्यान खींचा, यह इस तरह से गलत थी कि मैं खुद को पहचान नहीं पाती।
वह खूबसूरत थी। यह कोई नैदानिक अवलोकन नहीं था। यह सुबह 2:30 बजे आंगन में खड़े होकर एक महिला को देखने का अनुभव था। ऐसा लग रहा था मानो वह यहाँ आने के लिए तैयार हो। लेकिन यह प्रस्तुति पूरी तरह सफल नहीं रही; ऐसा महसूस हुआ मानो वह यहाँ आने के लिए तैयार न हो।
उस दृश्य में एक विशेष भाव था। उसके बंधे हुए हाथों की स्थिति से एक अजीब सी खामोशी छाई हुई थी। रस्सियों की व्यवस्था में प्रार्थना जैसी अनुभूति थी। इससे यह आभास होता था कि वह जीवित रहते हुए संयम और सोच-समझकर चलती रही होगी। कोई ऐसा व्यक्ति जो जानबूझकर काम करता था, न कि आदतवश। मैंने इसे उसी तरह महसूस किया जैसे मैं लोगों के दिखाई देने वाले अवशेषों को देखता हूँ। अगले कुछ घंटों में मुझे पता चल जाएगा कि मेरा यह अवलोकन सही था या नहीं।

***

सुबह ढाई बजकर पैंतालीस मिनट पर हमें वह पतंगा मिला।
वह नासिक के फोरेंसिक विभाग में एक वरिष्ठ विश्लेषक थे। पचास वर्ष की आयु के एक व्यक्ति। एक कुशल पेशेवर। उन्होंने इतने सारे अपराध स्थलों का दौरा किया था कि वे आम लोगों की तरह प्रभावित नहीं होते थे। इसके विपरीत, अपराध स्थलों के साथ उनका एक ऐसा संबंध विकसित हो गया था जो मूल रूप से विद्वतापूर्ण था। वे घटनास्थल को उसी तरह देखते थे जैसे कोई प्रोफेसर किसी प्राथमिक स्रोत दस्तावेज़ को देखता है। उस व्यक्ति के ध्यान से जिसकी मुख्य रुचि इस बात में थी कि वस्तु क्या कहती है, न कि वह क्या है।

वह रात 11:30 बजे से वहीं था, जब देशमुख की टीम पहली बार अंदर आई थी। हमारे पहुंचने से पहले वह तीन घंटे से काम कर रहा था, और जब उसने अपने नोट्स करण को दिए, तो वे काफी मोटे थे।
उन्होंने कहा, "मेरे पास सात अवलोकन हैं। मैं उन्हें स्थानिक क्रम में नहीं, बल्कि साक्ष्य के महत्व के क्रम में बताऊंगा।" वह करण से बात कर रहा था, लेकिन बोलते समय वह आसपास के दृश्य को भी देख रहा था। उसका अंदाज़ ऐसा था मानो वह किसी पाठ का वर्णन कर रहा हो जिसे वह पढ़ रहा हो, न कि स्मृति से।
“सबसे पहले,” उन्होंने कहा। “पशु रक्त। यह व्यवस्था काली साधना के एक रूप का अनुकरण करती है, जिसमें रक्त अर्पण मुख्य तत्व है, गौण नहीं। रक्त अर्पण ही वह आधार है जिसके चारों ओर साधना टिकी है। अर्पण थाली पर, मूर्ति पर, साधक के शरीर पर इसकी उपस्थिति मात्र सजावटी नहीं है। यह साधना का मूल उद्देश्य है।” उन्होंने पीतल के किनारे की ओर देखा। “इस दृश्य में कहीं भी पशु रक्त नहीं है। अर्पण थाली में राख के मिश्रण में जो लाल पदार्थ है, वह कृत्रिम है। राख में व्यावसायिक लाल रंग मिलाया गया है। मैंने इसकी जाँच की है।” वे रुके। “इस परंपरा से व्यावहारिक रूप से जुड़े किसी भी व्यक्ति को पता होगा कि कृत्रिम रंग रक्त अर्पण का विकल्प नहीं है। यह बिल्कुल भी विकल्प नहीं है। यह मुख्य तत्व की अनुपस्थिति है, जिसे मुख्य तत्व के रंग में छिपाया गया है। साधक तीस सेकंड में ही पहचान सकता है।”
मैं लिख रहा रहा था।
"दूसरा। मूर्ति के आधार के चारों ओर चमेली के फूलों की व्यवस्था।" वह मेज के पास बैठ गया और इशारा करते हुए बोला, "बयालीस फूल। इस प्रकार की ध्यान विधि के लिए सही संख्या अलग-अलग होती है। परंपरा के अनुसार फूल आठ के गुणक में होने चाहिए।

आठ आठ दिशाओं की ऊर्जाओं से जुड़ा है। यह चालीस के बराबर है। यह अड़तालीस के बराबर है। बयालीस आठ का गुणक नहीं है।" वह खड़ा हो गया। "किसी ने वृत्त को ध्यान से गिना ताकि वह पूर्ण और समतल दिखे। लेकिन उन्हें यह नहीं पता था कि गिनती करना इस अनुष्ठान का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है।" वह रुका। "साथ ही, परंपरा में बताए गए आठ समूहों के बजाय, फूलों को एक निरंतर वृत्त में व्यवस्थित किया गया है। आठ समूह, प्रत्येक में पाँच या छह फूल। समूहों के बीच एक दृश्य दूरी होनी चाहिए जो आठ दिशाओं के अनुरूप हो। एक निरंतर वृत्त वह है जैसा किसी ऐसे व्यक्ति को दिखाई देता है जिसने अनुष्ठानिक पुष्प व्यवस्था का चित्र देखा हो। यह इस परंपरा में कोई विशिष्ट व्यवस्था नहीं है।"
करण हाथ में कलम लिए लेआउट को देख रहा था, लिख नहीं रहा था। वह सुन रहा था।
"तीसरा। कुमखु। मूर्ति के आधार से चार वृत्ताकार रेखाएँ। दिशात्मक स्थितियाँ, चित्र या रीति-रिवाज के विवरण से स्पष्ट रूप से दर्शायी गई हैं। रेखाएँ अपने सामान्य रूप में सही हैं। अनुपात सही नहीं हैं।" पटांगे ने अपने बैग से एक छोटा सा मुद्रित कार्ड निकाला। एक शास्त्रीय विश्लेषक की तरह, उन्होंने इसे सावधानीपूर्वक इसी उद्देश्य से रखा था। "इस परंपरा के प्रामाणिक दिशात्मक चिह्नों में भीतरी रेखा की लंबाई और बाहरी रेखा की लंबाई का अनुपात पाँच से तीन होता है। दृश्य में रेखाएँ बराबर लंबाई की हैं। किसी ने उन्हें एक सीधी रेखा से नापा और बराबर खींचा।" उन्होंने कार्ड और फिर दृश्य को देखा। "बराबर लंबाई एक त्रुटि है। प्रामाणिक अभ्यास में, असमान लंबाई जानबूझकर बनाई जाती है। भीतरी रेखाएँ बाहरी रेखाओं से छोटी होती हैं क्योंकि दिशात्मक ऊर्जा केंद्र से शुरू होकर

बाहर की ओर फैलती है। जिसने भी ये रेखाएँ खींचीं, उसने आकृति की नकल की, लेकिन आकृति के आंतरिक तर्क को समझे बिना।"
प्रवेश द्वार के पास का एक पेड़ सुबह की हल्की हवा में थोड़ा हिल रहा था। घेराबंदी के बाहर की सड़कें अभी भी पूरी तरह शांत थीं। शहर अभी भी अपने भीतरी इलाकों में था। आंगन के अंदर, दीवार की खांचों में दो असली घाट के दीपक जल रहे थे। उनके नीचे की व्यवस्था को अनसुना करते हुए।
"चौथा। साड़ी।" वह वाघ के पास आया और बिना उसे छुए उसके बगल में बैठ गया। "लाल सूती, सही रंग, सही वज़न। बुनाई पेशेवर है। मध्यम धागों वाला कपड़ा महाराष्ट्र की किसी भी कपड़े की दुकान में मिल जाता है। यह व्यवस्था जिस परंपरा की नकल करती है, उपासिका के वस्त्रों के बारे में बताते हुए कहती है कि यह हथकरघा सूती है, एक विशेष ढीले धागों वाली बुनाई में। यह अभी भी उपलब्ध है, लेकिन इसे ढूंढना पड़ता है। यह महंगी नहीं है। यह ऐसा वस्त्र नहीं है जिसे इस प्रथा के बारे में पढ़कर, सीखकर कोई व्यक्ति अपने आप चुन ले।" वह खड़ा हो गया। "सही कपड़ा और गलत कपड़ा किसी भी दूरी से एक जैसे दिखते हैं। गलती केवल जांच करने पर ही पता चलती है। इस प्रथा का पालन करने वाला व्यक्ति जानता है कि बुनाई कैसी होनी चाहिए। जिसने शोध किया है और यह काम किया है, वह जांच करने का सुझाव नहीं देगा।"
"पांचवां। तैयारी का अनुष्ठान।" वे आंगन के उस किनारे की ओर चले गए जहाँ ज़मीन भीतरी दीवार से मिलती है। "काली साधना के हर रूप में, और मैं बीस वर्षों से इन विषयों पर सलाह दे रहा हूँ, मुख्य अभ्यास शुरू होने से पहले स्थान के लिए एक तैयारी का अनुष्ठान होता है। स्थान की पहचान की जाती है, उसे संबोधित किया जाता है और उसे स्वीकार्य बनाया जाता है। यह एक विशेष प्रकार की

सामग्री से किया जाता है। दहलीज पर चावल के आटे के निशान, चारों कोनों पर जल का अर्पण, आरंभिक आह्वान। इससे भौतिक निशान बनते हैं। दहलीज पर चावल के आटे के निशान नहीं हैं। कोनों पर जल के निशान नहीं हैं। स्थान तैयार नहीं किया गया है।" उन्होंने आंगन की दीवारों की ओर देखा। "एक सच्चा साधक इसके बिना शुरुआत नहीं कर सकता। यह कोई वैकल्पिक तत्व नहीं है। यह वह चीज़ है जो अभ्यास के लिए पात्र बनाती है। इसकी अनुपस्थिति का अर्थ यह नहीं है कि किसी ने इसे छोड़ दिया, बल्कि यह कि उन्हें पता नहीं था कि यह आवश्यक है।"
यह पाँच अवलोकनों पर आधारित था। पाँचवाँ अवलोकन सबसे महत्वपूर्ण था। क्योंकि यह इस बारे में नहीं था कि क्या गलत किया गया, बल्कि इस बारे में था कि क्या नहीं किया गया। पिछले चार अवलोकन निष्पादन त्रुटियाँ थीं। गलत अनुपात, गलत सामग्री, गलत गिनती। पाँचवाँ अवलोकन चूक की त्रुटि थी। साधक की सबसे बुनियादी ज़िम्मेदारी, जो पूरी नहीं हुई।
"छठा। दिशा।" उन्होंने अपने बैग से एक दिशा बताने वाला यंत्र निकाला। एक पुराना सिल्वा-प्रकार का फील्ड यंत्र। उस तरह का यंत्र जो मोबाइल फोन के आने से पहले इस्तेमाल होता था। वे आंगन के बीच में खड़े हो गए और यंत्र को सीधा रखा। "मूर्ति और शव की स्थिति। दोनों पूर्व दिशा की ओर मुख किए हुए हैं। पूर्व दिशा एक विशेष साधना के लिए सही दिशा है। यह सुबह की काली साधना है, जो आधी रात से सूर्योदय तक की जाती है।" उन्होंने यंत्र को पढ़ा। "सही दिशा, वास्तविक पूर्व दिशा से अलग है। मूर्ति और शव लगभग पूर्व-उत्तर-पूर्व की ओर मुख किए हुए हैं।" उन्होंने यंत्र वापस रख दिया। "यह एक लगातार त्रुटि है। मूर्ति की स्थिति और शव की अवस्था दोनों ही समान रूप से गलत हैं। इसका मतलब है कि दोनों का

[illegible]

> *[illegible]*

[illegible]

> *[illegible]*

[illegible]

"[illegible],"

[illegible]

[illegible]

"[illegible]"

[illegible]

“[illegible]” [illegible] “[illegible]

दस्तावेज़ में देखा था जिसे प्रिया के कार्यालय ने पिछले सप्ताह वितरित किया था। चिकित्सा या शल्य चिकित्सा अनुभव से संबंधित कौशल। एक ऐसा घाव जिसे दबाकर और निर्देशित किया गया हो और जिसमें बल की अपेक्षा सटीकता को प्राथमिकता दी गई हो।”
"यही तो हुनर है," करण ने कहा। वह पूछ नहीं रहा था, बल्कि सुनिश्चित कर रहा था।
“एक ही पैटर्न,” पटांगे ने कहा। और उनकी शर्त सावधानी भरी थी। “मैंने इस दृश्य में घाव के पैटर्न और भवानी पेठ के घाव की सीधे तुलना नहीं की है। अगर मेरे पास उस दृश्य के माप होते, तो मैं सीधी तुलना कर सकता था। लेकिन प्रिया के सारांश और यहाँ जो मैंने देखा है, उससे लगता है कि पैटर्न एक ही है। दोनों घाव किसी ऐसे व्यक्ति ने बनाए हैं जिसने किसी हथियार से काफी समय तक सटीक तरीके से काटा हो।” वे सीधे खड़े हुए। “अंतर है।”
मैंने लिखना बंद कर दिया।
"प्रिया के सारांश के अनुसार, भवानी पेठ में घाव में बीच में कलाई में हल्का सा मोड़ था, जिससे हथियार की नोक दिल की ओर थी। यहाँ ऐसा कोई संकेत नहीं है।" उन्होंने घाव वाली जगह को देखा। "इस दृश्य में प्रवेश सीधा है। दबाकर और निर्देशित करके, लेकिन सीधा। अंत में कोई मोड़ नहीं। प्रवेश का कोण सीधे रास्ते से भी वही परिणाम देता है।" वे रुके। "वही कौशल। शायद किसी और ने किया हो।"
आंगन में बहुत शांति थी।
करण ने कुछ पल के लिए घाव को घूरा, फिर नज़रें हटा लीं। यह भवानी पेठ मिली से नज़रें हटाने जैसा नहीं था, न ही यह दादी के चेहरे को देखकर अनैच्छिक रूप से नज़रें हटाने जैसा था। यह उस व्यक्ति

[illegible]
"[illegible],"
"[illegible]," [illegible] "[illegible]

> *[illegible]*

[illegible]:
***
[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

“[illegible]” [illegible] “[illegible], [illegible] [illegible]-[illegible] [illegible]” [illegible]

“[illegible]? [illegible], [illegible] [illegible]”

> *— [illegible]*

[illegible], "[illegible]?"

“पिछले दो महीनों में वो यहाँ ज़्यादा आने लगी है,” उसने कहा। “अपने रोज़ाना के समय पर नहीं। अलग-अलग समय पर। सुबह देर से, एक बार दोपहर में, जो उसकी आदत नहीं थी।” वो रुका। “वो वहाँ ज़्यादा देर बैठती थी। वो पहले से ज़्यादा शांत रहती थी, जो अपने आप में एक बड़ी बात है, क्योंकि वो हमेशा शांत ही रहती थी।” उसने पत्थर के गेट की तरफ देखा। “मैंने एक बार उससे पूछा कि क्या कुछ गड़बड़ है। उसने कहा: मैं किसी ऐसी चीज़ को समझने की कोशिश कर रही हूँ जिसका मैं हिस्सा हूँ। बस इतना ही।” उसने अपने पानी के कटोरे की तरफ देखा। “मैंने दोबारा नहीं पूछा।”
'मैं यह समझने की कोशिश कर रहा हूं कि मैं किस चीज का हिस्सा हूं।'
मैंने इसे इसी तरह लिखा। एक नोटबुक में, फ्रेम लगाकर। एक ऐसी महिला के शब्द जो मंदिर में पूजा करने नहीं, बल्कि चिंतन करने आई थी, उन महीनों के दौरान जब मंदिर के प्रांगण में उसकी मृत्यु की कहानी घटित हो रही थी। एक ऐसी महिला जो कुछ समझने की कोशिश कर रही थी। जो संस्था शिविरों में हो रहे बदलावों को देखने लगी थी, शायद वही बदलाव जो कोटियान ने देखा था। और वह यहाँ अपने ज्ञान के भार को चुपचाप महसूस करने आई थी।
उसकी समझ अधूरी थी। या... और यह विचार धीरे से आया और वहीं ठहर गया। वह समझ चुकी थी, और उसने इसके बारे में कुछ करने का फैसला कर लिया था, और उस फैसले ने उसे उन लोगों के सामने ला खड़ा किया था जिन्हें उसे चुप रखना चाहिए था।

***

देशमुख चौकीदार के यहां से लौटते समय द्वार पर मुझसे मिला।
जब उन्हें कुछ खास कहना होता था, तो उनमें एक शांत और स्पष्टवादिता होती थी। यह किसी ऐसे व्यक्ति का अंदाज़ नहीं था

जिसने अभी-अभी कोई जानकारी हासिल की हो, बल्कि एक ऐसे व्यक्ति का अंदाज़ था जिसने उस जानकारी को काफी समय से अपने भीतर संजो रखा था और अब उसे कहने का सही समय समझ लिया था।
“संगठन का नासिक संपर्क अधिकारी,” उन्होंने कहा। “वाघ ने आयोजन स्थल का प्रबंधन किया था। लेकिन संगठन के नासिक कार्यक्रम में खरीद का एक हिस्सा भी शामिल था। शिविर के लिए सामग्री, प्रतिभागियों का परिवहन, और अन्य व्यवस्थाएँ जो वाघ के आयोजन स्थल समझौते में शामिल नहीं थीं।” उन्होंने गेट की ओर देखा। “वह खरीद एक ऐसे व्यक्ति से की गई थी जिसकी पहचान मैं कुछ समय से करने की कोशिश कर रहा हूँ। मेरे पास एक वापस ली गई शिकायत से उसका विवरण और आंशिक नाम है। वह विवरण उस व्यक्ति से मेल खाता है जिसका नाम मेरे रिकॉर्ड में दो स्थानों पर दर्ज है। एक बार तीन साल पहले संगठन के नासिक शिविर में, और एक बार CIDCO भवन में जहाँ संगठन के परिवहन ठेकेदार ने सामग्री रखी थी।” वे रुके। “अधूरा नाम तांबे है।”
मैंने उसे लिख दिया।
मैंने कहा, "तांबा।"
"एक मध्यमवर्गीय व्यक्ति, ऐसा व्यक्ति जिसका नाम डिलीवरी रसीद के अलावा किसी दस्तावेज़ में नहीं होता, लेकिन वह काम को अंजाम देता है।" उसने मेरी ओर देखा। "वह अब नासिक में नहीं है। मेरे संपर्कों में से किसी ने आखिरी बार उसकी मौजूदगी तब देखी थी जब उसने संगठन से शिकायत वापस ले ली थी।"
मैंने कहा, "उसने अपनी सीट बदल ली।"
देशमुख ने कहा, "वह खुद ही आगे बढ़ गया। अभियान अभी भी जारी है। बाघ का ठिकाना अभी भी संगठन के संपर्क में है। शिविर अभी भी कदम

के समन्वय में चल रहे हैं।" वह थोड़ा रुके और फिर बोले, "तांबा कम दिखाई देने लगा।"
कम दिखाई देता है। यही बात इस संचार के कई स्तरों पर घटित हो रही है। मंच के ऊपर बैठा व्यक्ति, लेन-देन का प्रबंधन करने वाला व्यक्ति, और खरीददार जिसका नाम डिलीवरी रसीद पर अंकित है। हर महत्वपूर्ण चीज़ वहीं घटित हो रही है, दिखाई दे रही है, बस एक स्तर नीचे।
मैंने करण को तांबे के बारे में तब बताया जब वह सीन के दूसरे राउंड से बाहर आया।
उसने नाम और विवरण सुना और मेरी ओर ऐसे चेहरे से देखा जैसे उसने किसी खड़ी संरचना में एक टुकड़ा जोड़ा हो और वह बिल्कुल सही जगह पर हो।
"तांबा," उसने कहा।
"अधूरा नाम। अंतिम नाम। देशमुख का कहना है कि उन्होंने नासिक शिविर के लिए खरीदारी का प्रबंधन किया था। डिलीवरी रसीद के ऊपर संगठन के किसी भी दस्तावेज़ में उनका नाम नहीं है।" मैं रुका। "शिकायत वापस लिए जाने के समय के आसपास ही उन्होंने नासिक छोड़ दिया था।"
“यह अभी भी काम कर रहा है,” करण ने कहा। “शिविर का सामान अपने आप नहीं आ रहा है। कोई न कोई अभी भी खरीददारी संभाल रहा है।” उसने हमारे पीछे के दृश्य की ओर देखा। “हम तांबे को ढूंढ लेंगे, शायद हमें संगठन की रसद व्यवस्था और सीढ़ियों पर बैठे व्यक्ति के बीच कोई संबंध मिल जाए।” उसने देशमुख की ओर देखा, जो हमारे पास आ गया था। “क्या नासिक में आपका संपर्क हमें तांबे के बारे में और जानकारी दे सकता है?”

[illegible], "[illegible] [illegible] [illegible] [

[illegible]

*— — — —

के जागने से पहले राग भैरवी में हारमोनियम बजाती थीं और दिन अपने चरम पर पहुंचता था। और आज सुबह, कुछ महीने पहले, वह इस आंगन में आई थीं और सामान्य से अधिक देर तक बैठी रहीं, और चौकीदार से कहा कि वह यह समझने की कोशिश कर रही हैं कि वह किस चीज का हिस्सा हैं।
वह कोशिश कर रही थी। मैंने नोटबुक के हाशिये पर, औपचारिक सारांश के बाहर, यह लिखा: वह इसे समझने की कोशिश कर रही थी। उसे मान्यता प्राप्त करने का अधिकार है।

***

जब मैं सीढ़ियों से उठा तो करण और देशमुख द्वार पर खड़े थे। सुबह की रोशनी पूरी तरह से अंदर आ चुकी थी। इसने आंगन को बदल दिया था। रात की सघन रोशनी और छाया की जगह अब सुबह की धूप में पत्थर की बनी उस साधारण सी जगह की खूबसूरती ने ले ली थी। सुबह की रोशनी में यह व्यवस्था अलग ही लग रही थी। अब यह वैसी नहीं दिख रही थी जैसी इसे दिखने के लिए बनाया गया था, बल्कि वैसी ही दिख रही थी जैसी यह वास्तव में थी: एक ऐसी वस्तु जिसे किसी ऐसे व्यक्ति ने एक साधारण सी जगह पर रख दिया था जिसने उस साधारण सी चीज का अध्ययन तो किया था लेकिन उसे पहचान नहीं पाया था। "सीआईडीसीओ बिल्डिंग," करण ने देशमुख से कहा। "क्या आप हमें जाने से पहले अंदर जाने देंगे?"
“आज ही,” देशमुख ने कहा। “मेरे पास बिल्डिंग मैनेजर का संपर्क नंबर है। तीसरी मंज़िल का दफ्तर अभी भी वैसा ही होना चाहिए जैसा गोखले की टीम को मिला था। दस्तावेज़ तो प्रिया के पास हैं, लेकिन कमरा अभी औपचारिक रूप से खाली नहीं कराया गया है।” वह थोड़ी देर रुके। “इमारत में कुछ और भी है। मुझे कल ही बता देना चाहिए था, लेकिन मुझे रात भर अपनी टीम से पुष्टि करनी पड़ी।”

उन्होंने अपना फोन निकाला और एक तस्वीर दिखाई। उनके सिपाही ने पिछली रात खींची थी, तस्वीर की गुणवत्ता अच्छी नहीं थी, लेकिन काम चल गया। “तीसरी मंज़िल के दफ्तर का ताला हाल ही में बदला गया है। मेरे सिपाही ने फर्क देखा। पुराना ताला अभी वाले टाइप का था। यह ज़्यादा मज़बूत टाइप का है।” वह थोड़ी देर रुके। “यह बदलाव पिछले दो हफ़्तों में हुआ है।”
"वह वापस आ गया है," करण ने कहा।
देशमुख ने कहा, "कोई वापस आया था। उसने किसी को दफ्तर में घुसते और ताले बदलते देखा।" उन्होंने फोन नीचे रख दिया। "इसका मतलब है कि कोई उस पते पर नज़र रख रहा है।"
"लेकिन कमरा खाली नहीं हुआ था," मैंने कहा।
देशमुख ने पुष्टि करते हुए कहा, "कमरा खाली नहीं किया गया था। इसका मतलब यह हो सकता है कि उन्हें पता नहीं था कि नीचे वाले दराज में कागज का एक टुकड़ा पड़ा हुआ है। या फिर उन्हें पता था कि वह वहां है और उन्होंने सोचा कि अगर वे उसे बाहर निकालेंगे तो उन्हें पता चल जाएगा।"
मैंने इस बारे में सोचा। एक ऐसे व्यक्ति के बारे में जिसने दो साल तक एक सधे हुए योजनाकार की तरह अनुशासन से योजना बनाई थी और जो नासिक के पते पर लौटने पर, अपने दौरे के सबूत पाकर, कमरा खाली करने के बजाय ताले बदलने का फैसला किया। एक ऐसे व्यक्ति के कार्य जो पुनर्मूल्यांकन कर रहा है। घबराहट नहीं, पुनर्मूल्यांकन। यह निर्णय लेना कि व्याख्यान के नोट्स को दराज में छोड़ना उन्हें हटाने से ज्यादा सुरक्षित है। यह निर्णय लेना कि बदले हुए ताले अंदर आए जांचकर्ता को कोई उपयोगी जानकारी नहीं देते।

[illegible]... [illegible] [illegible] [illegible]

व्यवस्थित रिकॉर्ड जो जानता है कि इस कमरे में जो कुछ भी है वह कानूनी दृष्टि से सबूत नहीं है।
मैंने कहा, "वह यहीं बैठा था।"
“वह यहाँ बैठे थे,” करण ने कहा। “वे मेज के बीच में अपने कागज़ रखे हुए थे और दाईं ओर अपनी कॉफ़ी रखी हुई थी। उन्होंने कैलेंडर पर अपने सार्वजनिक व्याख्यान का समय अंकित किया हुआ था। उन्हें यह जानना ज़रूरी था कि अगला सार्वजनिक व्याख्यान कब है, जिससे पता चलता था कि सार्वजनिक व्याख्यान योजना का हिस्सा था और उसे कार्य-निर्भर समय-सीमा के अनुसार रिकॉर्ड किया जा रहा था।” उन्होंने गोला लगी तारीख को देखा। “उन्होंने दक्कन जिमखाना व्याख्यान पर गोला लगाया हुआ है।” वे थोड़ी देर रुके। “वह व्याख्यान पहला था जिसमें मैंने भाग लिया था।”
मैंने कहा, "हमारे वहाँ पहुँचने से पहले ही उसने उसका चक्कर लगा लिया था।"
करण ने कहा, "उन्होंने वह गोला इसलिए बनाया क्योंकि हमें वहीं पहुंचना था। उन्होंने पहले ही हिसाब लगा लिया था। या यूं कहें कि तय कर लिया था कि दक्कन जिमखाना में व्याख्यान के समय तक जांच उनके दिए निर्देशों से इतनी पीछे चल चुकी होगी कि हम उस हॉल में होंगे।" उन्होंने गोले की ओर देखा। "वह अपनी प्रगति दर्ज कर रहे थे।"
मैं कुछ क्षणों के लिए स्थिर खड़ा रहा।
वह इस कमरे में कॉफी पीते हुए बैठे थे और अपने द्वारा बिछाए गए सुरागों के आधार पर आगे की जांच का ब्यौरा दर्ज कर रहे थे। कैलेंडर पर वे उस जगह को चिह्नित कर रहे थे जहां उन्हें उम्मीद थी कि श्रोता पहुंचेंगे। वे यहां बैठे थे और हम उनकी बताई दिशा

[illegible]

[illegible], "[illegible]"

"[illegible]," [illegible] [illegible]? [illegible] [illegible]? [illegible]" [illegible] [illegible] [illegible]

यातायात, गलियों में विक्रेता, उस शहर की आवाज़ें जो रात भर बिना यह जाने कि रात में क्या हुआ था, चलता रहा। एक छोटी गली के अंत में गोदावरी नदी दिखाई दे रही थी। नदी पर सुबह की रोशनी एक विशेष कोण से पड़ रही थी जिससे वह क्षण भर के लिए मटमैले सुनहरे रंग के बजाय चांदी जैसी चमक रही थी।
देशमुख मोटरसाइकिल के पास रुक गया। उसे अभी कुछ और कहना था और वह इसके लिए सही तरीका चुन रहा था।
"टाइगर," उसने कहा। "पिछले दो महीनों में, आज रात से पहले।" वह रुका। "वह एक बार मेरे कार्यालय आई थी। औपचारिक रूप से नहीं। वह आई और मुझसे अनौपचारिक रूप से बात करना चाहती थी।" उसने सड़क की ओर देखा। "उसने कहा कि वह एक संगठन से जुड़ी हुई है और उसके कुछ वित्तीय लेन-देन को लेकर चिंतित है। उसने कहा कि वह अभी औपचारिक बयान देने के लिए तैयार नहीं है। वह जानना चाहती थी कि अगर वह बयान देती है तो प्रक्रिया क्या होगी।"
करण एकदम शांत हो गया।
देशमुख ने कहा, “मैंने उसे सारी जानकारी दी थी। मैंने उसे प्रक्रिया, सह-गवाह को मिलने वाली सुरक्षा और संभावित समयसीमा के बारे में बताया था। मैंने उससे कहा था कि जब वह तैयार हो जाए तो मुझे फोन कर सकती है।” वह थोड़ा रुका। “उसने फोन नहीं किया।” फिर थोड़ी देर रुका। “मैं उससे संपर्क करता। मैंने बातचीत रिकॉर्ड कर ली थी और मैंने यह भी रिकॉर्ड कर लिया था कि उसने फोन नहीं किया है, इसलिए मैंने सोचा कि वह अभी भी फैसला ले रही है।” उसने करण की ओर देखा। “अगर मैंने उससे संपर्क किया होता…” उसने यह बात इतनी सपाटता से कही, मानो वह रात साढ़े ग्यारह बजे से खुद को यही बात दोहरा रहा हो और यह सिलसिला अभी खत्म नहीं हुआ हो।

"तुम्हें जानने का कोई कारण नहीं था," करण ने कहा।
देशमुख ने कहा, "मैं उसे फोन कर सकता था। मैंने उसके तैयार होने तक इंतजार करना बेहतर समझा।" उन्होंने सड़क की ओर देखा। "वह तैयार थी। उसे फोन करने का समय ही नहीं मिला।"
हमारे चारों ओर सुबह का नजारा खुल रहा था। सड़कें। चांदी जैसी चमकती नदी। शहर, अपने सामान्य कामकाज में व्यस्त।
मैंने इस हिस्से के लिए नोटबुक में कुछ नहीं लिखा। कुछ बातें उस पल के लिए प्रासंगिक होती हैं जब वे घटित होती हैं और उन्हें कागज पर उतारने का कोई मतलब नहीं होता। देशमुख का अपने द्वारा लिए गए और न लिए गए निर्णयों का हिसाब-किताब उनमें से एक था। यह गली में ही था और वहीं रहने वाला था।
"हम पता लगाएंगे कि यह किसने किया," करण ने कहा।
देशमुख ने उसे स्थिर निगाहों से देखा। "मुझे पता है," उसने कहा। "यह मेरी चिंता का विषय नहीं है।"
वह अपनी चिंता बताए बिना गली में वापस चला गया। उसे बताने की ज़रूरत भी नहीं थी। हर कोई एक ही बात को लेकर चिंतित था: अब से लेकर खोज शुरू होने तक का समय, और उस दौरान क्या होगा।

***

हम सुबह नौ बजकर बीस मिनट पर नासिक से निकले। सुबह के समय परिदृश्य रात के अंधेरे से बिल्कुल अलग लग रहा था। परिदृश्य चित्रकार ऐसा ही करते हैं, वे अपने-अपने अलग-अलग रूपों को एक ही समय में प्रस्तुत करते हैं और समय के अनुसार उनका स्वरूप बदलते रहते हैं।
जब करण साइकिल चला रहा था, मैं अपनी नोटबुक के पीछे लिख रहा था। नोटबुक करण की पीठ से सटी हुई थी। कलम ने गति की लय पकड़ ली, ठीक

[illegible] [illegible] [illegible] [

पीछे लिखा था: मंडला। मैंने उसे यहाँ नहीं लिखा। मैं जो देख रही थी, उसे लिखने के लिए तैयार नहीं थी।

***

पुणे जाने वाली सड़क हमारे नीचे दक्षिण की ओर जा रही थी और चार घंटे में शहर हमारे सामने होगा, गोखले तैयार होंगे, पाटिल के लिए औपचारिक कागजात तैयार होंगे और जांच का अगला चरण तय हो चुका होगा और बस शुरू होने का इंतजार होगा। यह सब सच था और यही होना तय था।
और इस राह पर कहीं, जो कुछ होना ही था उसे करते-करते, कुछ क्षणों के लिए मेरे मन में उस महिला की छवि उभर आई जो सुबह मंदिर के प्रांगण में अकेली बैठी थी। चिंतन करने के लिए, पूजा करने के लिए नहीं। शिविर में आए मेहमानों के जागने से पहले हारमोनियम पर भैरवी बजा रही थी। और धीरे-धीरे, उन हफ्तों के दौरान, उसे समझ आने लगा कि वह किस चीज का हिस्सा है।
वह कोशिश कर रही थी।
सड़क दक्षिण की ओर जा रही थी। नासिक पीछे छूट रहा था। पुणे आगे था।

[redacted] 7 - [redacted]

[redacted] [redacted] [redacted] 2 [redacted] [redacted] [redacted] [redacted]

[redacted] [redacted]-[redacted] [redacted] [redacted] [

श्रृंखला के दस्तावेज़, भंडारकर संस्थान में व्याख्यान श्रृंखला का परिचय पत्र, और फाउंडेशन के संबंध।” मैंने चाय डाली। “वे शनिवार सुबह बैठक तय करने के लिए आपके फोन का इंतजार कर रहे हैं।”
"शनिवार," करण ने कहा। वह कॉर्कबोर्ड को देख रहा था, जो किसी मौजूदा ढांचे में कुछ महत्वपूर्ण जोड़ने के बाद यह जांचने का मुख्य केंद्र होता है कि क्या वह नए भार को सहन कर सकता है। "और दूसरे स्थान के कारण बैठक का समय बदल गया है।"
मैंने कहा, "इससे बैठक का विषय बदल जाता है। पहला दृश्य पृष्ठभूमि और संदिग्ध व्यक्ति को परिभाषित करता है। दूसरा दृश्य एक पैटर्न स्थापित करता है।" मैं थोड़ा रुका। "और शायद एक और प्रतिभागी को भी।"
करण ने बोर्ड से नज़रें हटाईं। उसने पूरी एकाग्रता से मेरी ओर देखा - उसके चेहरे पर एक ऐसे व्यक्ति का भाव था जिसके मन में कोई अनकहा विचार चल रहा था और अब वह यह तय कर रहा था कि इसे कहने का यह सही समय है या नहीं।
मैंने कहा, "पतंगों का सातवाँ बिंदु। कांटे के घाव में अंतर।" "हां," उसने कहा।
हमने चाय पी। मैं कॉफी टेबल पर बैठी थी - शायद हमें इसे चाय की मेज कहना चाहिए, क्योंकि हम घर पर कभी कॉफी नहीं पीते - और वह खड़ा था। हम दोनों उस चिंतनशील स्थान में थे जो फ्लैट तब प्रदान करता है जब पूछताछ से ऐसी जानकारी प्राप्त होती है जिसे वर्तमान मानसिक संरचना में समाहित करना मुश्किल होता है और जिसे पुनर्निर्मित करने की आवश्यकता होती है। वापसी की चार घंटे की यात्रा के दौरान मैं यही कर रही थी - पुनर्निर्माण। एक संशोधित संरचना की खोज कर रही थी जिसमें दोनों दृश्य, दोनों

घावों के निशान, राव से संबंध और दूसरे हाथ की संभावना शामिल हो।
मैंने कहा, "अगर दो अपराधी एक ही तरीके का इस्तेमाल कर रहे हैं, तो उनमें से एक शायद राव है और दूसरा वह व्यक्ति है जिसे राव के तरीके की जानकारी थी। यह कोई अकादमिक तरीका नहीं है - यह तो उनके प्रकाशित कार्यों में सार्वजनिक रूप से मौजूद है - यह एक व्यावहारिक तरीका है। दिशा बताने वाले यंत्र की बनावट, पहले से कटी हुई बत्तियाँ, प्रगति के ज़रिए नासिक की आपूर्ति श्रृंखला।" मैंने अपनी नोटबुक देखी। "वह व्यक्ति जो इस व्यावहारिक परियोजना में शामिल था या जिसने इसके किसी स्रोत से व्यावहारिक विवरण सीखे थे।"
"या फिर राव ने जिसे ढांचा और विधि दी," करण ने कहा, "और उसने इसे अपने निजी उद्देश्यों के लिए स्वतंत्र रूप से इस्तेमाल किया।" यह वही रूप था जिसकी तलाश में मैं सड़क पर भटक रहा था लेकिन अभी तक सीधे उस तक नहीं पहुंच पाया था।
मैंने कहा, "राव ने यह तरीका किसी और को दिया था। और उस व्यक्ति ने इसका इस्तेमाल एक ऐसे हत्या के लिए किया जो राव की योजना का हिस्सा नहीं था।"
"यह पैटर्न घावों में अंतर को स्पष्ट करता है," करण ने कहा। "दो लोग, एक ही प्रशिक्षण वर्ग के। एक के पास भवानी पेठ की पूरी सटीकता है - कलाई घुमाना, पूरी तरह नियंत्रित प्रवेश। दूसरे के पास नासिक पैटर्न है - उसी वर्ग का, लेकिन अंतिम घुमाव नहीं।" वह रुका। "दोनों राव के हाथ हैं, या दोनों अलग-अलग हाथ हैं। सवाल यह है कि क्या घावों के पैटर्न में अंतर एक ही व्यक्ति में दो अलग-अलग रातों में हुए बदलाव की श्रेणी में आता है, या यह एक ही प्रशिक्षण वर्ग के दो अलग-अलग व्यक्तियों को दर्शाता है।"

[illegible], "[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]"

“[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible],” [illegible] [illegible] “[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

[illegible]: [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] – [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] – [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

[illegible]
[illegible], "[illegible]
[illegible]
[illegible]

*[illegible] [illegible] [illegible] [

नहीं होता, दूरियाँ उस तरह से दिखाई देती हैं जो पुणे की भौगोलिक स्थिति में संभव नहीं है।
करण इस सड़क को तीन साल पहले के एक मामले से जानता था। मैं इससे पहले कभी इस पर नहीं गया था। रास्ते में हमने मराठवाड़ा के भीतरी इलाकों का अनूठा नज़ारा देखा – जलाशयों वाला इलाका, चीनी मिलों के खेत जो ढलान बदलते ही सूखी फसलों में बदल जाते थे, और शहर जो एक-दूसरे से इतनी दूरी पर बसे थे कि उनके बीच की दूरी को हमेशा कम करने की कोशिश की जाती थी, न कि पूरी तरह से मिटाने की। पुणे से अच्छे मौसम में साढ़े चार घंटे लगते हैं। हमने यह दूरी चार घंटे बीस मिनट में तय कर ली, जो कि तभी संभव है जब करण रात के 11 बजे हाईवे पर गाड़ी चला रहा हो और दूसरे छोर पर कोई काम हमारा इंतज़ार कर रहा हो।
पुलिस अधीक्षक खेड़कर घटनास्थल पर हमसे मिले। वे अपने अधिकार क्षेत्र में हुए एक बड़े अपराध और अपराध शाखा के उन कर्मियों की उपस्थिति, जिन्हें उन्होंने व्यक्तिगत रूप से आमंत्रित नहीं किया था, दोनों ही दबावों को कुशलतापूर्वक, उचित ढंग से और स्पष्ट रूप से संभाल रहे थे। उन्हें पाटिल ने सीधे बुलाया था, जो दूसरे घटनास्थल पर स्थापित प्रोटोकॉल था, और उन्होंने पूर्ण और पेशेवर सहयोग दिया। लेकिन उनके ध्यान का एक पहलू वह था जिसमें वे उस हिसाब-किताब को लगा रहे थे जो पुणे से लोग उनके जिले में किसी मामले के लिए आने पर हर पुलिस अधीक्षक लगाता है - अपने अधिकार क्षेत्र की सीमा का आकलन करना और यह देखना कि क्या वह सीमा स्वीकार्य होगी।
करण ने अधिकार क्षेत्र संबंधी गणनाओं को उसी तरह संभाला जैसे खेदकर ने संभाला था: उन्हें पूरी तरह से नजरअंदाज करते हुए और खेदकर को एक ऐसे सहकर्मी के रूप में मानते हुए जिसका स्थानीय

ज्ञान आवश्यक था, जो कोई कूटनीतिक चाल नहीं थी बल्कि सरासर सच्चाई थी।
"मृत व्यक्ति," करण ने खेदकर से कहा और वहां से चला गया। "दत्ताराम जोशी," खेड़कर ने कहा। "सैंतीस साल के। उनका कपड़ों के आयात का कारोबार था - पहले था। उनका मुख्यालय उस्मानाबाद में था, पुणे और औरंगाबाद में उनके ग्राहक थे। वे स्थानीय व्यापारी संघ के सदस्य थे। विवाहित थे, पुणे के कॉलेज में उनके दो बच्चे पढ़ते थे।" वे थोड़ा रुके। "यहाँ उनकी छवि एक शांत व्यवसायी की थी। दिखावा न करने वाले। एक ऐसे व्यवसायी जो बिना शोर मचाए पैसा कमाते थे।"
"फाउंडेशन के संबंध?" करण ने कहा।
खेदकर की गति में कोई बदलाव नहीं आया, लेकिन उनके मन में अचानक एक विचार आया। "आपको यह पूछने का ख्याल कैसे आया?"
करण ने कहा, "पिछले दो पीड़ित, दोनों ही फाउंडेशन निवेशक थे। एक पुणे में, एक नासिक में। पैटर्न से संकेत मिलता है कि तीसरा भी हो सकता है।"
खेदकर ने इसे स्वीकार किया। उन्होंने कहा, “उन्होंने फाउंडेशन से जुड़ी एक व्यावसायिक इकाई में निवेश किया था। मुझे यह इसलिए पता है क्योंकि मेरी टीम ने आज शाम उनके व्यावसायिक रिकॉर्ड निकाले हैं। यह कोई बड़ा निवेश नहीं था – एक मध्यम राशि, जो दो साल से लगातार की जा रही थी।” वे थोड़ी देर रुके और फिर बोले, “उन्होंने हाल ही में निवेश वापस लेने की कोशिश की थी। उनके व्यावसायिक रिकॉर्ड के अनुसार, उन्होंने पिछले तीन महीनों में संगठन के संपर्क व्यक्ति से अपने निवेश वापस लेने के बारे में पत्राचार किया था।”
करण ने कहा, "वे चुपचाप निकलने की कोशिश कर रहे थे।"

खेदकर ने पुष्टि करते हुए कहा, "वे चुपचाप निकलने की कोशिश कर रहे थे। और जाहिर तौर पर किसी ने यह तय किया कि उन्हें ऐसा करने की अनुमति नहीं दी जानी चाहिए।"
यह आखिरी वाक्य भावनात्मक निष्कर्ष के रूप में नहीं, बल्कि व्यावहारिक निष्कर्ष के रूप में बोला गया था। खेदकर एक सजग विचारक थे जिन्होंने तीन घंटे के स्थानीय साक्ष्यों से सही निष्कर्ष निकाला था और उसे बिना किसी आडंबर के प्रस्तुत कर रहे थे। मैंने उनके हावभाव पर ध्यान दिया – एक ऐसे व्यक्ति की दक्षता जिसने प्रारंभिक विश्लेषण सही ढंग से किया था और जो अपने ज्ञान और अज्ञान के बारे में बचाव करने वाला नहीं था। मैंने कहा, "संगठन के संपर्क व्यक्ति का नाम क्या है?" "क्या आपके पास उनका नाम है?"
उन्होंने मुझे एक नाम दिया। मैंने उसे लिख लिया।
वह नाम राव का नहीं था। वह फाउंडेशन के पंजीकृत निदेशक नहीं थे।
यह एक ऐसा नाम था जो मैंने पहले कभी नहीं देखा था - पुणे में पंजीकृत, कोरगांव पार्क में व्यावसायिक पता।
मैंने उसका चित्र बनाया।

***

यह दृश्य शहर के पूर्वी छोर पर स्थित पुराने पीपल के पेड़ों के एक झुरमुट में था, जो आखिरी रिहायशी सड़क और पहले कृषि क्षेत्र के बीच की ज़मीन की एक पट्टी पर बसा था – वह नाजुक इलाका जो हर भारतीय शहर अपनी शहरी सीमाओं और उस ग्रामीण क्षेत्र के बीच बनाए रखता है जिसे उसने अभी तक आत्मसात नहीं किया है। पेड़ पुराने थे, ऐसे पेड़ जिनकी हवाई जड़ें आधार पर मीनार जैसी संरचनाएं बना लेती हैं, तने चौड़े और गहरे खांचेदार। दिन के समय, ऐसे झुरमुटों में लोग आते हैं – पीपल के पेड़ों की पूजा की

जाती है, उन्हें मालाएं चढ़ाई जाती हैं, भक्त उनकी परिक्रमा करते हैं। अक्टूबर की एक रात में, वे इतने पुराने पेड़ों की तरह लग रहे थे मानो उनमें एक व्यक्तित्व समा गया हो, जैसे पुरानी चीजों में होता है जब वे इतने लंबे समय तक मौजूद रहती हैं कि उनकी उपस्थिति एक ज़िद बन जाती है।
महाराष्ट्र की वेताल परंपरा का इस भौगोलिक क्षेत्र से गहरा संबंध है – आबादी और निर्वासन की सीमा पर स्थित पीपल और नीम के घने जंगल, वह संक्रमणकालीन क्षेत्र जहाँ माना जाता है कि सांसारिक दुनिया और आत्माओं की दुनिया एक-दूसरे में समाहित हैं। श्मशान। चौक। हर चीज़ की सीमा। जिसने भी इस स्थल का शोध किया था, उसने भूगोल को सही ढंग से समझा था – सही प्रकार का स्थान, सही सीमा वाला स्थान पाया था। जिससे लेआउट में त्रुटियाँ कम नहीं, बल्कि और अधिक स्पष्ट हो गईं, क्योंकि सही भूगोल शोध की गहराई को दर्शाता था और त्रुटियाँ यह दिखाती थीं कि वह गहराई कहाँ समाप्त होती है।
दत्ताराम जोशी को सबसे बड़े पीपल के पेड़ के नीचे बिठाया गया था
- वह पेड़ जिसका तना सबसे चौड़ा था, जड़ें सबसे विकसित थीं और जंगल में सबसे मजबूती से खड़ा था। उन्हें पेड़ के नीचे इस तरह बिठाया गया था जिसे दूर से ही समझा जा सकता था कि यह उनकी स्वेच्छा थी - किसी ऐसे व्यक्ति की बैठने की मुद्रा जो पेड़ के पास आकर प्रार्थना या निवेदन कर रहा हो। उनकी पीठ पेड़ की ओर थी, पैर फैले हुए थे। उनके हाथ बंधे नहीं थे, बल्कि स्वतंत्र थे - ये दोनों बातें पिछली घटनाओं से अलग थीं, और मैंने तुरंत इस बात पर ध्यान दिया। बाद में मुझे पता चला कि पुलिस ने ही उन्हें फांसी की स्थिति से नीचे उतारा था और उन्हें इस तरह बिठाया था।

उन्होंने सफेद वस्त्र पहने थे। एक सादा सफेद कुर्ता और एक सफेद धोती - अंत्येष्टि के वस्त्र, हिंदू अंत्येष्टि परंपरा में मृत व्यक्ति के वस्त्र, वह वस्त्र जिससे वेताल कथा में उस शव का संबंध बताया गया है जिससे आत्मा का उदय होता है। सफेद वस्त्र साफ था - खून के धब्बे नहीं थे, कोई दाग नहीं था - और इसे बड़े सलीके से पहना गया था, कुर्ता छाती पर इस्त्री करके सपाट किया हुआ था, धोती पारंपरिक ढंग से लपेटी हुई थी, जिसके किनारे कमर में बंधी हुई थीं।
उनके ऊपर स्थित पेड़ से – ज़मीन से लगभग तीन मीटर ऊपर, जहाँ एक बड़ी शाखा क्षैतिज रूप से फैली हुई थी और फिर नीचे की ओर मुड़ी हुई थी – एक लोहे का हुक छाल में ठोका गया था। हुक बड़ा था, भारी औद्योगिक कार्यों में इस्तेमाल होने वाला हुक, जिसका सिरा घुमावदार था और आधार सपाट था, जिसे चार पेंचों से लकड़ी में जकड़ा गया था। हुक से एक रस्सी नीचे लटकी हुई थी और जोशी की छाती और कंधों के चारों ओर लिपटी हुई थी। उनकी भुजाएँ बंधी नहीं थीं, बल्कि पेड़ के तने से ढीली-ढाली लटकी हुई थीं, मानो हवा में लटकी हुई हों – वेताल मुद्रा, वह शरीर जो सजीव और मृत जगत के बीच लटका रहता है, न तो ज़मीन से जुड़ा होता है और न ही ज़मीन से, फिर भी दोनों से जुड़ा होता है।
रस्सी को सफेद सूती कपड़े के एक लंबे टुकड़े के नीचे कसकर लपेटा गया था - लगभग तीस सेंटीमीटर चौड़ी पट्टी, रस्सी और जोशी के धड़ के चारों ओर अनुष्ठानिक ढंग से लपेटी गई थी। लपेटने के अंतिम भाग में एक गांठ बांधी गई थी जिसे मैं तीन मीटर दूर से भी देख सकता था, और उसे और भी अधिक सावधानी से बांधा गया था।
एक पेड़ की जड़ों के बीच नंगी ज़मीन पर: एक मिट्टी का कटोरा जिसमें गहरा लाल पदार्थ है। कटोरे के किनारे पर तीन

अगरबत्तियाँ जलकर राख हो चुकी हैं, जिनकी राख पूर्व दिशा से आने वाली हवा की दिशा में फैली हुई है। कटोरे के चारों ओर चूने के निशान हैं - भवानी पेठ की जटिल दिशा-निर्देश प्रणाली नहीं, बल्कि एक साधारण गोलाकार पैटर्न, कटोरे से बाहर की ओर फैली रेखाएँ जो उत्तर-दक्षिण-पूर्व-पश्चिम दिशा में लगभग सटीक नहीं हैं।
और जोशी की छाती में, उनके सफेद कुर्ते के आर-पार: एक लोहे का औजार। खंजर नहीं - बल्कि चिता का चौड़ा, चपटा सिरा वाला नुकीला औजार, एक विशेष लोहे का औजार जिसका उपयोग कुछ क्षेत्रीय अंत्येष्टि परंपराओं में शरीर को चिता पर सही स्थिति में रखने के लिए किया जाता है।
यह कील मौत के बाद लगाई गई थी। इसे साफ-सुथरे और सुनियोजित तरीके से कपड़े के आर-पार धकेलकर, नियंत्रित बल से सीने में घुसाया गया था, न कि हिंसा से। यह मौत का कारण नहीं थी। यह तो बस उस व्यवस्था का एक निशान था।
जोशी की मौत का असली कारण उसकी गर्दन के पिछले हिस्से पर, कॉलर के नीचे, एक सफेद कपड़े से ढका हुआ मिलेगा, जब तक कि करण उसके बगल में बैठकर उसे नहीं देख लेता।

***

उप-ऑक्सिपिटल प्रवेश बिंदू.
करण को यह दोपहर 12:08 बजे मिला। वह घटनास्थल का जायजा ले रहा था, जिसे मैंने उसकी पहली कोशिश के रूप में पहचान लिया था - किसी विशिष्ट चीज़ की तलाश नहीं, बल्कि यह देखना कि किसी विशिष्ट खोज से पहले क्या मौजूद है। वह पेड़ के पीछे, तने के पीछे बैठ गया, जहाँ जड़ों की सुरंगों ने आंशिक आवरण बना रखा था, और उसकी टॉर्च जोशी के कॉलर के नीचे प्रवेश बिंदु की तलाश कर रही थी।

"□□□□," □□□□ □□□□

□□□ □□□□□□ □□ □□□□ □□□ □□□ □□ □□□□□ □□□□□□ □□□ □□□□ □□ □□ - □□□ □□ □□□□□ □□□ □□ □□□□, □□□□□□□□ □□ □□□□□ □□□□□□ □□ □□ □□□□ □□□□ □□□ □□□ □□□ □□, □□□ □□□□ □□□□ □□, □□□□□ □□ □□□□□ □□□ □□□ □□□□□ □□□□□□□□□ □□□□ □□□ □□□□□ □□□ □□ □□□□□ □□ □□□□□ □□ □□□□ □□ □□□ □□ - □□□ □□□□□□, □□□ □□□□, □□□ □□□□□□□□ □□□□□

□□ □□□ □□ □□□ □□□□ □□ □□□□□ □□□□ □□ □□□□□□□ □□ □□□□ □□□□ □□: □□ □□□□□ □□□□□, □□□□□□□□ □□□ □□ □□□□□□ □□□□□ □□ □□□ □□□□□□□□ □□ □□□□ □□□ □□ □□□□ □□ □□□□□□ □□□□□, □□□□□ □□ □□□□□ □□ □□□, □□□□□ □□□□□ □□ □□□□□ □□□ □□□□□ □□ □□□ □□□

"□□," □□□□ □□□□

“□□ □□ □□□□□?” □□□□□ □□□□

“□□ □□□ □□□□ □□□□□□ □□□□ □□,” □□□□□□□□ □□□□ “□□ □□ □□□□□□□ □□□□□ □□□ □□□□□ □□ □□ □□□ □□□ □□□, □□□□□ □□□, □□□ □□ □□□ □□□ □□ □□□□□ □□□□□ □□□ □□□□ □□□□” □□□□□□□□ □□□□□ □□ □□□ □□□□ □□□ □□ □□□□ “□□□□ □□□□□□ □□□ □□□□ □□□ □□ □□ □□□ □□ □□□□□ □□□□□ □□□□□□ □□□□□ □□□□□□□ □□□□ □□□” □□ □□□□ □□□□ □□□□ “□□ □□ □□□□□□□ □□ □□□□□□□ □□ □□ □□□ □□□ □□□ □□ □□□□ □□□ □□□□□ □□, □□□□□ □□□ □□□ □□ □□□□ □□□□ □□ □□ □□ □□□ □□□ □□□ □□ □□ □□□ □□□ □□□□□ □□□ □□ □□□ □□□ □□□ □□□□□□□ □□□□□ □□□□ □□□ □□□□□ □□ □□□ □□□ □□ □□□ □□□□□□□ □□□□□ □□□□ □□□ □□ □□□ □□□ □□□”

— □□-□□□□□□□ □□□□□□□ □□-□□□□□ □□□□□□ - □□□□□□ □□□□□ □□ □□□ □□□□□ □□□□□□, □□□ □□□□□□□□ □□□ □□□□ □□□□ □□ □□□□□ □□□□□ □□□ □□□□□□ □□□□□ □□□□ □□□ □□□□ □□ □□□□□ □□□□□ □□□ □□ □□□□ □□□ □□ □□□□□□ □□□□□□ □□ - □□□ □□□□ □□□□, □□□ □□□□□□□□□□□ □□□□□ □□ □□□□□□ □□□□ □□□ □□□ □□□□□□□□□

[illegible]

"[illegible]," [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] "[illegible]: [illegible] [illegible] [illegible], [illegible] [illegible] [illegible] [illegible], [illegible] [illegible] [illegible]: [illegible] [illegible] [illegible], [illegible] [illegible] [illegible]: [illegible] [illegible] [illegible], [illegible] [illegible]" [illegible] [illegible] [illegible] "[illegible], [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]"

"[illegible]?" [illegible], "[illegible]"

"[illegible], [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]," [illegible] "[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]" [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]"

[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible], [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

***

[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible], [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [

सिकुड़ती है और उसे ठीक होने का समय मिलता है। पेंच के छेदों के किनारों पर सिकुड़न लगभग चार दिन की थी, जो अक्टूबर के महीने की शुष्कता के अनुरूप थी।
उन्होंने कहा, "चार दिन।"
मैंने कहा, "हुक चार दिन पहले लगाया गया था।"
“आज रात की हत्या से चार दिन पहले हुक लगाया गया था,” उन्होंने कहा। “इसका मतलब है कि कोई इस पेड़ पर था, जिसके पास ड्रिल और लोहे का हुक था और वह जानता था कि दत्ताराम जोशी को यहाँ लाए जाने से चार दिन पहले इस जगह का इस्तेमाल किस लिए किया जाएगा।” उन्होंने ऊपर की शाखा की ओर देखा। “चार दिन पहले जोशी जीवित थे। चार दिन पहले ही किसी ने इस पेड़ को चुन लिया था और इसके लिए तैयारी कर रहा था।” वे थोड़ी देर रुके। “चार दिन पहले जोशी अभी भी प्रतिष्ठान निवेश से चुपचाप निकलने के बारे में पत्र लिख रहे थे।”
करण के समझाने से पहले ही मैं समझ गया था कि उसका क्या मतलब था। मैंने धीरे से कहा, "चार दिन पहले इस स्थान की पहचान करने के लिए, आपको यह जानना ज़रूरी था कि जोशी किसी खास रात को कहाँ होंगे। इतना ही नहीं, बल्कि उन्हें अंततः यहाँ ढूँढ़ना भी ज़रूरी था - वे कहाँ होंगे, किस रात को होंगे, ताकि उस रात के लिए स्थान तैयार किया जा सके।"
“आपको उनकी गतिविधियों की पहले से जानकारी होनी चाहिए थी,” करण ने कहा। “सामान्य जानकारी नहीं - विशिष्ट जानकारी। किस रात, किस जगह, किस समय।” उसने रस्सी और बाड़ की ओर देखा। “जोशी नियमित रूप से इस झाड़ी में आता था। जांच से पता चलेगा कि क्यों - शायद आदत या जान-पहचान, कुछ ऐसा जिससे किसी को उनकी गतिविधियों के बारे में पता चल जाता था और वह उनका अनुमान लगा सकता था।” वह रुका।

“सवाल यह है कि जोशी की नियमित गतिविधियों के बारे में किसे पता था।”
मैंने कहा, "कोई आम पर्यवेक्षक नहीं। कोई ऐसा व्यक्ति जो जोशी परिवार से संबंधित हो। कोई ऐसा व्यक्ति जो उनके इतना करीब रहा हो कि उनकी आदतों को जानता हो।"
"या फिर कोई ऐसा व्यक्ति जो उन पर विशेष रूप से नज़र रख रहा था," करण ने कहा। "ज़्यादा देर तक नहीं - चार दिन की तैयारी महीनों की निगरानी का नतीजा नहीं होती। यह किसी ऐसे व्यक्ति का काम है जिसका जोशी के साथ सीधा संबंध था और जिसने उस संबंध का इस्तेमाल अवसरों की पहचान करने के लिए किया।"
मैंने खेदकर द्वारा दिए गए नाम के बारे में सोचा। कोरेगांव पार्क में व्यावसायिक पता। प्रतिष्ठान संगठन का संपर्क व्यक्ति, जिसे जोशी ने शांतिपूर्ण पलायन के संबंध में पत्र भेजे थे।
मैंने कहा, "वे जिस संपर्क व्यक्ति से पत्राचार कर रहे थे, उनके बारे में। उनके पास उनकी योजनाओं की सीधी जानकारी थी।"
करण ने मेरी तरफ देखा।
मैंने कहा, "वे जानते थे कि वे जाने की कोशिश कर रहे हैं। उन्हें जाने से संबंधित पत्र मिल रहे थे। उन्हें इस बात की पूरी जानकारी थी कि वे क्या कर रहे हैं और उनकी बातचीत किस चरण में है।" मैं थोड़ा रुका। "और अगर उनके पास उनके पत्र व्यवहार का पता होता या वे उनसे व्यक्तिगत रूप से मिलकर जाने के बारे में बात कर चुके होते, तो उन्हें उनकी आदतों की भी जानकारी हो सकती थी।"
करण एकदम शांत खड़ा था।

“दो हत्यारे,” उन्होंने कहा। उन्होंने ठीक उसी तरह कहा जैसे पाटिल से मुलाकात के बाद कहा था, लेकिन इस बार बात में कुछ और ही गंभीरता थी—संभावना का पहला आभास नहीं, बल्कि सबूतों का आना जिसने संभावना को एक ढांचा प्रदान किया। “राव की हत्याओं का एक पैटर्न है। उनका अपना पैटर्न—रूप उनकी अपनी परंपरा से लिया गया है। मंडल के पांच दिशात्मक बिंदु, उनके अपने व्याख्यान में वर्णित संरचना। उन्होंने इसे तार्किक परंपरा की अपनी ही भाषा में बनाया था। पूर्ण परिचालन सटीकता के साथ व्यवस्थित—पहले से कटी हुई बत्तियाँ, दिशात्मक चिह्नों की व्यवस्था, उनकी विशेष तकनीक के चिह्न, हर दृश्य में एकरूप।” वे रुके। “इस हत्या में भी उसी ढांचे का प्रयोग किया गया है। पैटर्न इतना मिलता-जुलता है कि इसे एक श्रृंखला का हिस्सा माना जा सकता है। लेकिन पीड़ित संस्था में एक निवेशक था जो बाहर निकलने की कोशिश कर रहा था—एक ऐसा व्यक्ति जो अच्छी तरह जानता था कि बाहर निकलना खतरनाक हो सकता है, जो सीधे उस व्यक्ति के संपर्क में था जिसे बाहर निकलने से सबसे ज्यादा नुकसान होने वाला था।” उन्होंने बोर्ड की ओर देखा। “सवाल यह है कि क्या यह एक संयोग है, एक अभिसरण है, या यह शुरू से ही जानबूझकर किया गया था।” वह रुका। "मुझे अभी पता नहीं है कि कौन सा।"
हमारे आस-पास की झाड़ियाँ एकदम शांत थीं। अक्टूबर के कीड़े- मकोड़े। दूर से आती सड़क की हल्की आवाज़। आसमान के सामने खड़ा पुराना पीपल का पेड़ अपनी आकृति को समेटे हुए था।
मैंने कहा, "राव का तरीका, किसी और की मंशा।"
"शायद," करण ने कहा।
मैं अंधेरे में झाड़ियों में खड़ा होकर सोच रहा था कि अगर कोई सिलसिलेवार हत्याएं कर दे तो कैसा लगेगा। अगर कोई आपके बनाए

[illegible]

[illegible]

[illegible]

***

[illegible]

होता था। पॉलीप्रोपाइलीन एक व्यावसायिक सामग्री है जिसे 1960 के दशक में पेश किया गया था। यह विधि के किसी भी प्रामाणिक रूप में उपलब्ध नहीं है क्योंकि जब यह विधि विकसित की गई थी तब यह मौजूद नहीं थी और तब से इसे शामिल नहीं किया गया है।" उन्होंने रस्सी के सिरे की जांच की। "यह रस्सी व्यावसायिक रूप से एक मानक लंबाई में पहले से कटी हुई आती है, जबकि अनुष्ठान के लिए रस्सी इस तरह नहीं बनाई जाती है। अनुष्ठान के लिए रस्सी का उपयोग करते समय उसे काटा जाता है। पहले से नापी हुई व्यावसायिक रस्सियाँ नहीं खरीदी जातीं।"
सफेद पर्दा एक और उदाहरण था। "एक रस्सी के चारों ओर लिपटा हुआ सूती कपड़ा - धागे की बुनाई सामान्य, मध्यम वजन की है, जो किसी भी कपड़े की दुकान पर मिल जाती है। असली वेताल बंधन के लिए इस्तेमाल होने वाला कपड़ा एक विशेष ढीली बुनाई वाला सूती कपड़ा होता है जो हवा को आने-जाने देता है, इस विचार के साथ कि आत्मा पर्दे के आर-पार जा सके, न कि उसमें बंद हो जाए। सामान्य कपड़ा बंद रहता है। यह एक झूठा दर्शन है जिसे झूठे साहित्य में व्यक्त किया गया है।" उसने पर्दे की ओर देखा। "अंत में लगी गांठ भी झूठी है - यह एक पारंपरिक गांठ है, न कि इस पारंपरिक बंधन में इस्तेमाल होने वाली सात-गोल गांठ। किसी को पता था कि गांठ जरूरी है और उन्होंने वही गांठ इस्तेमाल की जो उन्हें आती थी।"
कटोरे के नीचे ज़मीन पर बने चाक के निशान तीसरे थे। "कटोरे से चार के बजाय पाँच रेखाएँ निकल रही थीं। वेताल प्रणाली में, दिशात्मक चिह्न चार होते हैं - मुख्य दिशाएँ, जो शरीर के लटकने की चार दिशाओं को दर्शाती हैं। ये पाँच दिशात्मक चिह्न एक बिल्कुल अलग परंपरा, पंचमुख प्रणाली से हैं। किसी ने दो अलग-अलग परंपराओं के तत्वों को मिला दिया, शायद यह जाने बिना कि वे अलग-

अलग परंपराएँ थीं। उन्होंने एक से अधिक स्रोतों से जानकारी एकत्र की और उन्हें इस बात को समझे बिना मिला दिया कि कौन सा स्रोत किस प्रणाली से संबंधित है।"
अंतिम संस्कार का विवरण सटीक और संक्षिप्त था। उन्होंने कुल पाँच गलतियाँ गिनाईं - डोरी, आवरण, दिशात्मक निशान, धूप की संरचना - एक विशिष्ट राख और जड़ी-बूटी के मिश्रण के बजाय व्यावसायिक धूप, और अंत्येष्टि कील का कोण, जो छाती की हड्डी के एक विशिष्ट शारीरिक बिंदु पर अनुप्रस्थ होना चाहिए था, लेकिन इसके बजाय थोड़ा ऊपर की ओर झुका हुआ था, जो किसी ऐसे व्यक्ति के लिए उपयुक्त था जिसके पास सामान्य ज्ञान तो था लेकिन सटीक माप नहीं थे। पाँचों गलतियाँ, प्रत्येक बिना अभ्यास के शोध का परिणाम थीं।
एक उपयुक्त तत्व: भूगोल। शहर के किनारे पर एक पीपल का पौधा, आबादी वाले और निर्जन क्षेत्र की सीमा, सही परंपरा के लिए सही पेड़। किसी को पता था कि इस दृश्य को कहाँ बनाना है।
अंत में माने ने कहा, "भौगोलिक स्थिति तो सही है। बाकी सब कुछ तस्वीरों और लिखित सामग्री से लिया गया लगता है। लेकिन जिसने भी इस जगह को चुना, उसे परंपरा की इतनी जानकारी थी कि वह समझ सके कि इस जगह के लिए किस तरह की जगह चाहिए।" वह थोड़ी देर रुके। "यह जानकारी बाकी गलतियों के कारण बनी जानकारी से अलग है। यह व्यावहारिक जानकारी है; ऐसी जानकारी जो उन जगहों पर रहने से मिलती है जहाँ इस पद्धति का अभ्यास किया जाता है।" उन्होंने करण की ओर देखा। "किसी ने उन्हें यह जगह दिखाई होगी, या वे कभी न कभी इस पद्धति के लिए इस्तेमाल की जाने वाली किसी जगह पर गए होंगे। गलतियाँ लिखित सामग्री से काम करने वाले व्यक्ति की हैं। स्थान का चुनाव अनुभव के आधार पर किया गया है।"

मैं बार-बार स्थान के चुनाव पर विचार कर रहा था। पान के पौधे का ज्ञान बाकी ज्ञान से अलग था। यह अकादमिक नहीं, बल्कि अनुभवजन्य ज्ञान था। ऐसा ज्ञान जो इन स्थानों में निहित था।

***

सुबह के तीन बजकर पंद्रह मिनट पर, झाड़ियों में, मैंने खेदकर से बात की, जबकि करण घटनास्थल का अपना तीसरा चक्कर पूरा कर रहा था। मैंने कहा, "संगठन का संपर्क व्यक्ति। कोरेगांव पार्क का पता। क्या आप यह साबित कर पाए हैं कि इसके पीछे कौन है?"
"मेरी टीम ने रात में पंजीकरण की जाँच की," खेदकर ने कहा। "यह संस्था कल्याणी कंसल्टेंसी सर्विसेज नामक एक प्राइवेट लिमिटेड कंपनी है। तीन साल पुरानी। पंजीकृत पता: कोरेगांव पार्क, पुणे। एकमात्र निदेशक: हेमंत कुलकर्णी।"
उन्होंने मुझे अपना पूरा नाम बताया। मैंने उसे लिख लिया। मैंने कहा, "हेमंत कुलकर्णी।"
“पुणे के एक व्यवसायी,” खेड़कर ने कहा। “उनका नाम कई पेशेवर रजिस्टरों में दर्ज है – निवेश सलाह, धर्मार्थ ट्रस्ट प्रशासन, शिविर सुविधा प्रबंधन। वे कई संबंधित संगठनों के बोर्ड में भी हैं।” वे कुछ देर रुके। “वे सार्वजनिक रूप से दिखाई नहीं देते। उनका नाम उन संगठनों के किसी भी सार्वजनिक साहित्य में नहीं है जिनसे वे जुड़े हैं। लेकिन उनका नाम संस्थापक दस्तावेजों में, आधिकारिक हस्ताक्षरकर्ताओं की सूची में, नियामक दस्तावेजों में दर्ज है।” वे फिर रुके। “वे ऐसे व्यक्ति हैं जो हर महत्वपूर्ण निर्णय के समय मौजूद रहते हैं और हर सार्वजनिक बातचीत से अनुपस्थित रहते हैं।”

"हेमंत कुलकर्णी," करण ने कहा। मुझे पता भी नहीं चला कि वह मेरे पीछे-पीछे आ गया था - झाड़ियों की नरम मिट्टी और उसकी आदत वाली चुप्पी।
मैंने कहा, "जोशी के निवेश निकासी संबंधी पत्राचार के लिए प्रतिष्ठान संस्था का संपर्क व्यक्ति कौन है? कल्याणी एडवाइजरी सर्विसेज, कोरेगांव पार्क, पुणे। एकमात्र निदेशक।" करण ने वह नोट पढ़ा जो मैंने उसे दिया था। उसने उसे एक बार पढ़ा और फिर दोबारा इस तरह ध्यान से पढ़ा जैसे वह सुनिश्चित कर रहा हो कि उसने जो पढ़ा है उसे ठीक से पढ़ लिया है।
"कोरेगांव पार्क," उन्होंने कहा। वे थोड़ी देर रुके। "यह उस संस्थान का पत्राचार पता है।"
हमारे कॉर्कबोर्ड पर भी वही पिन लगी है।
मुझे लगा कि आकृति पूर्ण हो रही है – पूरी तरह नहीं, अभी नहीं, लेकिन अगले किनारे स्पष्ट होने लगे थे। कॉर्कबोर्ड पर चौथा पिन केवल संस्था का पत्राचार पता नहीं था। यह कुलकर्णी का क्षेत्र था। वह हस्ती जो हर सार्वजनिक रिकॉर्ड में अदृश्य थी, कदम से ऊपर का व्यक्ति, उस कंपनी का एकमात्र निदेशक जिसे जोशी के रिट्रीट के पत्र मिल रहे थे – कुलकर्णी शुरू से ही उस खाली आकृति के केंद्र में थे, उस प्रश्न चिह्न के भीतर बैठे हुए जिसे मैंने पाँच दिन पहले रविवार दोपहर को बनाया था।
मैंने पूछा, "क्या उन्होंने जोशी को मार डाला?"
"या फिर, शायद उन्होंने ही जोशी परिवार को मारा हो," करण ने अपनी विशिष्ट सटीकता के साथ कहा। "हमें अभी तक यह नहीं पता कि झाड़ियों में उनका हाथ था या नहीं। हम जानते हैं कि उनका कोई मकसद था - जोशी चुपचाप निकलना चाह रहे थे, और संबंधित निवेशक का चुपचाप निकलना इस बात का जोखिम पैदा करता है कि अगर निवेशक

[illegible]

[illegible]

***

[illegible]

*[illegible] [illegible] [illegible] [

[illegible], [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

[redacted] 8 - [redacted]

[redacted]
[redacted]
[redacted]

शेख को पहले ही जानकारी दे दी गई थी और वह बैठक का उपयोग उस जानकारी के बचे हुए हिस्से की जांच करने के लिए कर रही थीं। सावधानीपूर्वक। उनकी उम्र शायद बयालीस वर्ष थी, एक ऐसी शख्सियत जो नौकरशाही प्रणालियों में कुशलता से काम करती है लेकिन उनसे बंधी नहीं रहती - एक वरिष्ठ अधिकारी का विशिष्ट रवैया जिसने यह सीख लिया है कि संस्थागत संरचनाएं मार्गदर्शन के साधन हैं, लक्ष्य नहीं। उन्होंने बैठक में तीन प्रश्न पूछे, प्रत्येक प्रश्न सटीक था, प्रत्येक प्रश्न रिपोर्ट के मूल बिंदु के बजाय उसमें मौजूद त्रुटियों पर केंद्रित था। त्रुटियों से संबंधित प्रश्न हमेशा सही प्रश्न होते हैं। मैंने उनके बारे में यह बात नोट कर ली और उनकी जानकारी के बिना हाशिये में लिख ली।
मीटिंग के बाद, रास्ते में, उसने करण से कहा: "वित्तीय दस्तावेज़ों में समय लगेगा। ये संस्थाएँ जानकारी को छिपाने के लिए ही बनी हैं। मैं इस बारे में सभी की अपेक्षाएँ स्पष्ट करना चाहती हूँ।"
"कितना समय लगेगा?" करण ने कहा।
"प्राथमिक संस्थानों - संस्थागत ट्रस्टों, कल्याण सलाहकारों - के लिए दो से तीन सप्ताह का समय लगता है। औपचारिक अनुरोध पहले ही जमा किया जा चुका है।" वह थोड़ी देर रुकी। "माध्यमिक और तृतीयक स्तरों के लिए, इसमें अधिक समय लगता है। धन का हस्तांतरण एक विशिष्ट तरीके से होता है जिसके लिए पूरी जानकारी मिलने से पहले काफी संख्या में अनुरोधों की आवश्यकता होगी।"
"पहले हफ्ते में हम क्या देख सकते हैं?" करण ने कहा।
“कुलकर्णी की केंद्रीय भूमिका की पुष्टि करने के लिए यह काफी है,” उसने कहा। “पूरे संबंध को प्रमाणित करने के लिए पर्याप्त नहीं है।” उसने उसकी ओर देखा। “राव की समयरेखा और कुलकर्णी के

वित्तीय दस्तावेज़ एक साथ मेल नहीं खाएंगे। हमें आदेश के बारे में निर्णय लेना पड़ सकता है।”
"वहाँ पहुँचने पर पता चल जाएगा," करण ने कहा।
उन्होंने इसे स्वीकार कर लिया और आगे अनुरोध किए। मैंने गौर किया कि उन्होंने यह नहीं बताया था कि उनके द्वारा विचार किए गए आदेश के संबंध में क्या निर्णय होने चाहिए। उन्होंने समस्या को नोट कर लिया था और निर्णय को सही जगह पर रख दिया था।

***

कुलकर्णी की चिकित्सीय पृष्ठभूमि से संबंधित जानकारी छत्तीस घंटे के भीतर प्राप्त हो गई थी।
गोखले की टीम को मेडिकल काउंसिल के रिकॉर्ड में उनका पता नहीं चला, जबकि सबसे पहला और स्पष्ट स्थान जहाँ जाँच करनी चाहिए थी, वहाँ भी कुछ नहीं मिला। उन्हें विश्वविद्यालय के रिकॉर्ड में उनका पता चला: कुलकर्णी ने पच्चीस साल पहले पुणे के मेडिकल कॉलेज में मेडिकल डिग्री प्रोग्राम के लिए दाखिला लिया था और दो साल पूरे होने से पहले ही पढ़ाई छोड़ दी थी। यह असफलता नहीं थी - उन्होंने पढ़ाई छोड़ दी थी। अकादमिक रिकॉर्ड में उत्तीर्ण अंक दर्ज हैं। पढ़ाई छोड़ने का कारण प्रशासनिक था, और उन्होंने व्यक्तिगत कारणों का हवाला दिया था।
दो साल का चिकित्सा प्रशिक्षण। कोई मेडिकल डिग्री नहीं। कोई लाइसेंस प्राप्त चिकित्सक नहीं। दो साल तक शरीर रचना विज्ञान, शल्य चिकित्सा तकनीकें और प्रारंभिक नैदानिक अनुभव, जो मेडिकल डिग्री कार्यक्रम अपने दूसरे वर्ष में प्रदान करते हैं - वह वर्ष जब छात्र पहली बार शवों से परिचित होते हैं और यह बुनियादी समझ प्राप्त करते हैं कि शरीर एक तेज उपकरण से कैसे खुलता और बंद होता है।

□□□□□ □□□, "□□ □□□□"

"□□ □□□," □□□ □□ □□□□

□□□□□□□□□□ □□□ □□□□□ □□□□□□ □□ □□□ □□□□ □□ □□□□ □□□ □□ □□□ □□ □□□□□□□□□, □□ □□□□ □□□□ □□□, □□ □□□□□ □□□□□□□ □□□□□□ □□□□ □□□□ □□□, □□□□□ □□□□□ □□□ □□□ □□□ □□ □□□□ □□ □□□□□ □□□□ □□□□□□□ □□□□□□ □□ □□□□□ □□□□□ □□□□ □□□□ □□□□□, □□ □□□□□ □□ □□□ □□□□□□□□ □□□□□ □□□ □□□□ □□□□□□ □□ □□□□ □□□□ □□, □□□□□ □□□□□□ □□□□ □□□□ □□□□, □□ □ □□ □□□ □□□□ □□□□ □□□□ □□ □□□□ □□ □□ □□□□□ □□□□ □□□□ □□ □□□□□ □□□□□□□□ □□□□□□ □□□□□□□ □□ □□□□ □□□□□ □□□, "□□□ □□ □□□□□□□□□□□□□ □□□□ □□□□□ □□□□, □□□□□□ □□□□□ □□□□ □□□□□□ □□□□□□□ □□□"

“□□□□ □□□□□□□□ □□ □□□□□□ □□□□ □□□□□□ □□ □□□ □□□ □□ □□,” □□□ □□ □□□□ “□□□□ □□ □□□□ □□ □□□□□□ □□□□□□ □□ □□□” □□ □□□□□ □□□ □□□□□ “□□ □□□□ □□□ □□ □□ □□□ □□ □□□□ □□□□ □□□□ □ □□□ □□□□ □□□□□□□ □□□ □□□□—□□□□ □□□□□□□□ □□ □□□ □□□ □□□ □□□□□□ □□□□□ □□ □□□□□□ □□□□□□ □□□□□ □□ □□□□□□□□□ □□□□□□ □□□□□□ □□□ □□□□□□ □□ □□□ □□□ □□ □□□□ □□□ □□ □□□ □□□ □□ □□: □□ □□□□□□□ □□ □□□□□□□□□□□□ □□□□□ □□□□□ □□ □□□□□□ □□□□□□ □□ □□ □□□ □□□□ □□□”

> *— □□□ □□ □□□□□□□□□: □□□ □□ □□□□□□ □□□□□□ □□□□□ □□ □□□□□□ □□□□ □□□□□□ □□ □□□ □□, □□□□□□ □□□□ □□□□□□□□ □□□□□□ □□□□□ □□ □□□□□□ □□ □□□□□ □□□ □□ □□□□□□□□ □□□□□□ □□□□, □□□□□ □□□□ □□ □□□□ □□ □□□□□□□ □□□ □□□□ □□□□□□□□ □□ □□□□□□□□□ □□□ □□ □□□□□□□□ □□□□□□□ □□□ □□□ □□□□□□□□ □□ □□□ □□□□ □□ □□□□ □□□□□□□*

□□□□□ □□□, "□□ □□□□□□□□ □□ □□ □□□ □□□□□ □□□□"

"यह उस्मानाबाद के तौर-तरीकों से मेल खाता है। कोई ऐसा व्यक्ति जो सिद्धांत को जानता हो, जिसके पास कुछ शुरुआती नैदानिक संपर्क हों और वह उस ज्ञान का उपयोग करके काम कर रहा हो, लेकिन सिद्धांत को स्वचालित करने के लिए वर्षों का अभ्यास न कर रहा हो," करण ने पुष्टि की।

***

यह कॉल बुधवार शाम 6:47 बजे नागपुर से आई थी।
देशमुख से नहीं, बल्कि नागपुर शहर पुलिस के इंस्पेक्टर वानखेड़े से, जिन्होंने उसी दोपहर एक नए अपराध स्थल का पता लगाया था और मृतक के रिकॉर्ड में संगठन से जुड़े होने का पता चलने के बाद सीधे गोखले को फोन किया था। गोखले ने शाम 6:47 बजे करण को फोन किया। 6:55 तक हमारे पास सारी जानकारी थी: मृतक, स्थान और प्रारंभिक आकलन।
7:15 बजे तक, करण ने पुणे से नागपुर के लिए इंडिगो की 8:30 बजे की फ्लाइट बुक करा दी थी। सड़क मार्ग से जाना संभव नहीं था - कम से कम दस घंटे लगते। साइट दोपहर 3:30 बजे मिली थी और हम तीन घंटे से अधिक समय से इंतज़ार कर रहे थे। सड़क पर दस घंटे और बिताने का मतलब था कि बिना कैंप लगाए लगातार गाड़ी चलाने के बाद सुबह जल्दी साइट का निरीक्षण शुरू करना। फ्लाइट एक घंटा पैंतीस मिनट की थी। हम किसी तरह रात 10:15 बजे नागपुर पहुँचे।
हवाई यात्रा से मेरा एक खास रिश्ता है जिसे मैंने अभी तक पूरी तरह से नहीं समझा है। यह डर नहीं है - बल्कि एक ऐसी व्यवस्था में होने का एहसास है जिसे मैं देख या समझ नहीं सकता, जो उस अपराध में होने के एहसास से अलग है जिसे मैं अभी पूरी तरह से देख नहीं सकता। मैं अपराध के बारे में लिख सकता हूँ। मैं केवल हवाई जहाज में सफर कर सकता हूँ। मैंने इसे सहा, अपनी नोटबुक में दिन भर की

घटनाओं का सारांश लिखा, जो उन चीजों को सहने का एक आजमाया हुआ तरीका है जिनकी जांच नहीं की जा सकती।
करण मेरे बगल में बैठा पढ़ रहा था। उसके पास कुलकर्णी का दस्तावेज़ था - वह दस्तावेज़ जिसे गोखले की टीम ने पिछले अड़तालीस घंटों में तैयार किया था। उसके दाहिने हाथ में एक मैकेनिकल पेंसिल थी, जिससे वह अपने बगल की जगह पर छोटे-छोटे निशान बना रहा था। एक घंटे बीस मिनट की उड़ान के दौरान वह चुप रहा, मैंने भी उससे बात नहीं की, और हम रात 10:12 बजे नागपुर में उतरे।

***

नागपुर, पुणे, नासिक या उस्मानाबाद पठार का भीतरी इलाका नहीं है। यह बिल्कुल अलग है - देश के भौगोलिक केंद्र में बसा एक शहर, संतरा पट्टी की राजधानी, संसदीय दृष्टि से महाराष्ट्र की दूसरी राजधानी, एक ऐसा शहर जिसने हमेशा यह स्वीकार किया है कि राज्य के पश्चिमी भाग के शहरों की तुलना में इसकी अपनी एक अलग पहचान है। अक्टूबर में नागपुर की वायु गुणवत्ता पुणे से अलग होती है: कम नमी, अधिक खुला आसमान, पश्चिम में अरब सागर की छाया न होने के कारण महाद्वीपीय आंतरिक भाग की विशिष्ट स्पष्टता। ऐसा लगता है मानो यह एक ऐसा शहर है जिसने अपने लिए विचार किए हैं और उन विचारों को स्वीकार्य पाया है।
यह वानखेड़े हवाई अड्डे पर हुआ था।
इससे मुझे पता चला कि उन्होंने हमारे आगमन पर हमारी ज़रूरतों का पहले से ही अनुमान लगा लिया था और हमारे परिवहन की व्यवस्था करने का इंतज़ार नहीं किया था। वे ऐसे अधिकारी थे जो सहयोग की व्यावहारिक बारीकियों के बारे में पहले से ही सोच लेते हैं, इससे पहले कि इसकी आवश्यकता पड़े – यह प्रवृत्ति उस व्यक्ति की

होती है जिसने पहले भी अतिथि अधिकारियों के साथ काम किया हो और यह समझता हो कि किसी शहर की पहली छाप हवाई अड्डे से बाहर निकलते ही बनती है।
वह प्रवेश द्वार के पास एक सफेद गाड़ी के बगल में खड़ा था - तीस साल का एक हट्टा-कट्टा आदमी, जिसकी बेबाकी से ऐसा लग रहा था मानो वह दोपहर 3:30 बजे से ही इस मामले को संभाल रहा हो, खाना न खाया हो और इनमें से किसी भी बात को शिकायत के तौर पर दर्ज न करने वाला हो क्योंकि ये शिकायतें थीं ही नहीं, यही तो यथास्थिति थी। उसने करण का परिचय कराया और मुझे उस नज़र से देखा जैसे लोग किसी दस्तावेज़ सहायक को देखते हैं - तिरस्कारपूर्ण नहीं, बस थोड़ी सी अपेक्षा में बदलाव, जब कोई वैज्ञानिक सहयोगी या अपराध शाखा के सहकर्मी की उम्मीद करता है और बदले में एक नोटबुक लिए हुए आदमी को पाता है।
“घटनास्थल वर्धा रोड पर स्थित कैंप की ज़मीन पर है,” उन्होंने गाड़ी की ओर बढ़ते हुए कहा। “इस ट्रैफिक में यहाँ से तीस मिनट लगेंगे। मैं रास्ते में जानकारी देता रहूँगा।”
वर्धा रोड मध्य नागपुर से दक्षिण-दक्षिण-पश्चिम दिशा में जाती है – यह आश्रम, गांधी जी के सेवाग्राम का मार्ग है, और विदर्भ की चेतना में इस सड़क का विशेष ऐतिहासिक महत्व है। जिस शिविर की संपत्ति पर गोडबोले का शव मिला था, वह सेवाग्राम में नहीं बल्कि इसी मार्ग पर स्थित थी। वानखेड़े ने दक्षिण की ओर जा रहे एक वाहन में इस संपत्ति का वर्णन करते हुए कहा कि यह एक आवासीय शिविर था जिसका उपयोग सामूहिक और आध्यात्मिक कार्यक्रमों के लिए किया जाता था।
“चंद्रशेखर गोडबोले,” वानखेड़े ने कहा। “अड़तालीस वर्ष। गोडबोले हेरिटेज प्रॉपर्टीज के निदेशक। नागपुर और विदर्भ

क्षेत्र में मुख्य व्यवसाय करने वाले संपत्ति विकासकर्ता। समुदाय में उनकी महत्वपूर्ण भूमिका है – वे नागपुर के तीन व्यावसायिक संगठनों के बोर्ड में हैं और कई सांस्कृतिक संगठनों से जुड़े हुए हैं। वे तीन वर्षों से संगठन के विदर्भ कार्यक्रमों से जुड़े रहे हैं।” वे कुछ देर रुके। “समुदाय में उनकी उपस्थिति गुमनाम नहीं थी। लोगों को उनकी अनुपस्थिति का एहसास जरूर होगा।”
करण ने कहा, "वे सामुदायिक संपर्क में निवेश करने वाले लोग थे। संगठन ने विदर्भ में संपर्क स्थापित करने के लिए अपने स्थानीय संपर्कों का इस्तेमाल किया होगा।"
वानखेड़े ने आगे की सीट से उन पर एक नज़र डाली। उन्हें पुणे से जुड़े मामले की जांच के बारे में सामान्य जानकारी तो दी गई थी, लेकिन उतनी विस्तृत जानकारी नहीं दी गई थी जितनी अब हमारे पास है। “जी हां,” उन्होंने कहा। “उन्होंने अपना नाम और संपर्क दिए। नागपुर के व्यापारिक और सांस्कृतिक समुदाय में उनकी प्रतिष्ठा ने संगठन को उस क्षेत्र में ऐसी विश्वसनीयता प्रदान की जो वे विज्ञापन के माध्यम से नहीं हासिल कर सकते थे।” कुछ देर रुककर उन्होंने आगे कहा, “वे नवरात्रि मनाने के लिए शिविर परिसर में आए थे—यह दो दिवसीय कार्यक्रम संगठन ने दशहरा के आसपास आयोजित किया था। वे विशेष आमंत्रित थे, कार्यक्रम में प्रतिभागी नहीं। वे शाम के कार्यक्रम के लिए आए थे।”
मैंने कहा, "वे दशहरा के कपड़ों में मिले थे।" मुझे गोखले की पहली फोन बातचीत से शुरुआती जानकारी मिली थी।
"पीला रेशम," वानखेड़े ने पुष्टि की। "उसने जो कुर्ता पहना था, वह दशहरा पूजा के अवसरों पर पहना जाने वाला कुर्ता था। वह दिन में पहले एक पारिवारिक समारोह से आया था और वहीं से सीधे शिविर

में आया था, उसी पोशाक में।" कुछ देर रुककर उन्होंने आगे कहा, "वह शिविर परिसर में मुख्य हॉल के बगल में स्थित ध्यान उद्यान में मिला। अंदर नहीं, कमरों में नहीं - बल्कि उद्यान में।" "इन्हें किसने ढूंढा?" करण ने कहा।
"शाम 3:15 बजे, शिविर की एक पर्यवेक्षक ने नवरात्रि कार्यक्रम के लिए शाम के दीये जलाने की व्यवस्था करने के लिए बगीचे में गई थीं। उन्हें शकरकंद मिले और उन्होंने कार्यक्रम समन्वयक को फोन किया, जिन्होंने हमें फोन किया।" वे थोड़ी देर रुके। "कार्यक्रम समन्वयक वसुधा कदम नाम की एक महिला हैं।"
करण ने कहा, "सीढ़ियाँ शिविर में थीं।"
“कार्यक्रम का संचालन कदम कर रही हैं,” वानखेड़े ने कहा। “वह नवरात्रि कार्यक्रम के प्रबंधन के लिए पिछले दो दिनों से परिसर में मौजूद हैं।” उन्होंने करण की ओर देखा। “मैंने अनौपचारिक अनुरोध पर उन्हें परिसर में रखा है। उन्होंने सहयोग किया है। उनका कहना है कि वह दोपहर 12 बजे से मुख्य हॉल में थीं और दोपहर 12 बजे से 3:15 बजे के बीच बगीचे में नहीं गईं।” वह थोड़ी देर रुके। “संगठन के तीन अन्य कर्मचारी भी परिसर में मौजूद थे। उन चारों को भी रुकने के लिए कहा गया है।”
मैं वाहन की गति के अनुसार जितनी तेजी से लिख सकता था, उतनी तेजी से लिख रहा था।
वसुधा कदम चौथे हत्याकांड के घटनास्थल पर मौजूद थीं। कार्यक्रम की समन्वयक, एक कुशल पेशेवर, जिन्हें अदृश्य निर्देश दिए जा रहे थे - कार्यक्रम स्थल पर मौजूद रहकर, आयोजन का प्रबंधन करते हुए, उन्हें रोकने के लिए कहा जा रहा था। या तो वह वहाँ मौजूद थीं और उनका इससे कोई लेना-देना नहीं था और वह जाँच के लिए

एक महत्वपूर्ण गवाह थीं। या फिर वह किसी ऐसे कारण से वहाँ थीं जिसका पता जाँच में अभी तक नहीं चल पाया था।
"क्या उनसे विस्तार से बात की गई है?" करण ने पूछा।
"मेरे पास उनका प्रारंभिक बयान है। स्थान, समयरेखा, उन्होंने क्या सुना और देखा," वानखेड़े ने कहा।
मैंने आपके लिए एक विस्तृत साक्षात्कार आरक्षित किया है।
सही निर्णय। मैंने इसे नोट कर लिया है।

***

वर्धा रोड स्थित कैंप परिसर की पहचान उसकी चारदीवारी में बने पत्थर के गेट से होती थी - यह गेट एक शांत और प्रभावशाली छवि प्रस्तुत करता था, मानो किसी संस्था के गेट की तरह यह दर्शाता हो कि आप एक ऐसे स्थान में प्रवेश कर रहे हैं जिसके नियम बाहर की सड़क से भिन्न हैं। पेंट से लिखा हुआ चिन्ह: प्रकाश सेवा संस्था
- वर्धा कैंप सेंटर। गेट पर नाम स्पष्ट रूप से अंकित है।
हम रात 10:48 बजे पहुंचे।
ध्यान उद्यान संपत्ति के पीछे स्थित था, जो मुख्य भवन से दो फूलों की क्यारियों की पंक्तियों से होकर गुजरने वाले एक रास्ते द्वारा अलग किया गया था। फूलों की क्यारियों को एक समान ऊँचाई और चौड़ाई में काटा गया था, एकरूपता जिसके लिए न केवल श्रम बल्कि ध्यान की भी आवश्यकता थी। रास्ते के अंत में, लगभग बीस मीटर चौड़ा एक खुला उद्यान था, जिसमें एक केंद्रीय पत्थर का चबूतरा और उसके चारों ओर चार पुराने पेड़ थे - एक आम का पेड़, एक बरगद का पेड़ जिसकी पहली हवाई जड़ें नीचे की ओर पहुँचने लगी थीं, एक नीम का पेड़ और एक सीताफल का पेड़ जिसका मौसम बीत चुका था। उद्यान में ध्यान के लिए लंबे समय से उपयोग किए जाने वाले

स्थान का गुण था, और उस उपयोग की शांति इसकी सतह में समाहित हो गई थी।
वानखेड़े की टीम द्वारा लगाई गई दो साइड लाइटों की रोशनी में, बगीचे के बीच में मौजूद दृश्य की प्रकृति को मैं, बड़ी अनिच्छा से, पहचानने लगा था: उस चीज की प्रकृति जिसने दृश्य को बनाया था। चंद्रशेखर गोडबोले ऊंचे स्थान के बीचोंबीच ध्यान मुद्रा में बैठे थे – न झुके हुए, न लेटे हुए, बल्कि स्थिर। उनका पीला रेशमी कुर्ता इस्त्री किया हुआ था, दशहरा के कपड़े कॉलर को छोड़कर पूरी तरह सही-सलामत थे। उनके हाथ घुटनों पर थे, हथेलियाँ ऊपर की ओर थीं, मानो वे कुछ ग्रहण कर रहे हों। उनकी आँखें बंद थीं। उनकी मुद्रा ऐसी थी मानो वे ध्यान करने बैठे हों और फिर कभी वापस न लौटे हों।
उनके माथे पर: वैष्णव तिलक - चंदन के लेप से बना एक सफेद ऊर्ध्वाधर चिह्न जिसके बीच में एक लाल ऊर्ध्वाधर रेखा होती है, जिसे भौंहों के मध्य में सावधानीपूर्वक उस व्यक्ति द्वारा लगाया जाता है जो इस चिह्न और इसके अर्थ को जानता है। सही जगह पर, सही अनुपात में। दीक्षा का चिह्न, भक्ति की एक विशेष परंपरा का हिस्सा होने का चिह्न।
उनकी जीभ पर - यह देखकर मैं एक पल के लिए अपनी नज़रें हटाकर फिर वापस देखने लगा - एक छोटा सा सोने का सिक्का। डिस्क के आकार का, लगभग दो सेंटीमीटर व्यास का, जीभ पर इस तरह रखा हुआ था जैसे किसी धार्मिक अनुष्ठान में महत्वपूर्ण वस्तु को रखा जाता है। यह एक पुराना सिक्का था, आधुनिक नहीं - दूर से ही इसका भार महसूस हो रहा था, जैसे पुराने सोने की एक अलग ही महक होती है, मानो धातु के इतिहास की झलक उसकी सतह से झलक रही हो।

स्थलों की तरह ही विवरण भी लगभग सटीक थे। लेकिन कुल मिलाकर जो धारणा बनी, वह अब तक की सबसे सुसंगत थी - पहली नज़र में यह वैसा ही दिखता था जैसा दावा किया गया था। यही अपने आप में एक जानकारी थी। जिसने भी इसे बनाया था, उसने इसमें सुधार किया था। या जिसने भी इसे बनाया था, वह दूसरों से अलग था और इस विशेष परंपरा से अधिक परिचित था।

***

वहाँ की देखभाल करने वाली साठ वर्षीय महिला लता ने मुझे यह बात तब बताई जब करण वानखेड़े के साथ घाव की जाँच कर रहा था। वह उन मीठी-मीठी बातें करने वालों को जानती थी जो पिछले दो वर्षों में शिविर में आते रहे थे। उसने उनका वर्णन इतने संक्षिप्त शब्दों में किया जैसे किसी ऐसे व्यक्ति का वर्णन कर रही हो जिसकी उपस्थिति रोजमर्रा की जिंदगी में सामान्य थी और इसलिए अब उसे उम्मीद से कहीं अधिक याद किया जा रहा है।
वह हमेशा मिठाई लेकर आते थे। यह कोई औपचारिक शिष्टाचार नहीं था
- वे नागपुर की मशहूर संतरे की मिठाई का एक छोटा डिब्बा लाते थे, जो एक क्षेत्रीय मिठाई है, और ऐसी मिठाई जो दशकों से केवल कुछ चुनिंदा दुकानों पर ही मिलती है। वे मिठाई लाते और बिना कुछ कहे रसोई में रख देते। उनके जाने के बाद सुपरवाइजर को मिठाई मिलती और वह उसे कर्मचारियों में बाँट देता।
वे शतरंज खेलते थे। पहली बार आने पर वे अपने साथ एक छोटा शतरंज सेट लाए थे और उसे वहीं रखा था। जब भी वे आते, शाम को एक घंटे तक किसी भी इच्छुक व्यक्ति के साथ शतरंज खेलते थे। उनमें से कोई भी गंभीर खिलाड़ी नहीं था। वे आसानी से जीत जाते थे और बड़ी सहजता से अपना खेल इस तरह संभालते थे कि दूसरे खिलाड़ी के लिए भी मैच दिलचस्प बना रहे।

[illegible]

[illegible]

— [illegible]

[illegible]

***

वानखेड़े के वैज्ञानिक सलाहकार डॉ. बोरकर रात 11:30 बजे घटनास्थल पर पहुंचे। उनकी उम्र लगभग सत्तर वर्ष थी और वे नागपुर विश्वविद्यालय से धार्मिक अध्ययन के सेवानिवृत्त प्रोफेसर थे, जिनके बारे में वानखेड़े ने बताया कि उन्हें विदर्भ की पैतृक परंपरा का पूर्ण ज्ञान था।
उन्होंने घटनास्थल का सावधानीपूर्वक निरीक्षण किया, जिसमें उन्होंने जो देखा और जिस विषय पर उन्हें बोलने के लिए कहा गया था, दोनों का सम्मान किया। उन्होंने किसी भी चीज़ को नहीं छुआ। उन्होंने देखा, और उन्होंने पूर्ण और सटीक वाक्यों में बात की, और पैंतालीस मिनट में छह अवलोकनों के साथ अपना काम समाप्त कर दिया।
पहला: तिलक। "सही जगह पर, सही मात्रा में, सही रंग में। वारकरी परंपरा में लगाया जाने वाला वैष्णव तिलक - विदर्भ के संदर्भ में विठोबा के भक्तों द्वारा इस्तेमाल किया जाने वाला एक विशेष प्रकार का तिलक। यह बिल्कुल सटीक है।" वे रुके। "यह एकमात्र पूर्णतः सटीक तत्व है जिसे मैं पहचान सकता हूँ।"
छह कारकों में से केवल एक ही सटीक था। पहली घटना स्थल पर एक सटीक कारक मिला। नासिक में भी एक सटीक कारक मिला। उस्मानाबाद में भी एक सटीक कारक मिला। यह क्रम एक जैसा ही था: एक सटीक कारक, बाकी लगभग सटीक। यह सटीक कारक सामान्य शोध के बजाय विशिष्ट ज्ञान का परिणाम था।
“एक सोने का सिक्का,” उन्होंने एक और अवलोकन करते हुए कहा। “मृत आत्मा के लिए जीभ पर रखा जाने वाला सिक्का एक प्रचलित प्रथा है - यह मार्ग भेंट का एक पैतृक रूप है, जो आत्मा की यात्रा के लिए प्रावधान है। हालांकि, प्रामाणिक प्रथा में, प्रयुक्त सिक्का सोने का नहीं होता। यह तांबे का सिक्का होता है, विशेषकर दशमलव

प्रणाली से पहले के पुराने सिक्के, यदि संभव हो तो - व्यक्ति के जीवनकाल का सिक्का, आदर्श रूप से ऐसा सिक्का जिसे उसने अपने जीवनकाल में छुआ हो। सोना वैष्णवों में धन का प्रतीक है, मार्ग का प्रतीक नहीं। यहां सोने का सिक्का दो अलग-अलग संरचनाओं - मार्ग भेंट और समृद्धि भेंट - का एक ही वस्तु में संयोजन है।” उन्होंने सिक्के को बिना छुए देखा। “जिस किसी ने भी यह सिक्का रखा, वह जानता था कि सिक्का आवश्यक है और जानता था कि यह पुराना होना चाहिए। उन्होंने सोना इसलिए चुना क्योंकि आम लोगों की समझ में सोना ही वह धातु है जो इस अनुष्ठान के महत्व से सबसे अधिक जुड़ी हुई है। यह एक परिष्कृत त्रुटि है - यह एक साधारण त्रुटि से कहीं अधिक ज्ञान दर्शाती है, और उस ज्ञान की सीमाओं को सटीक रूप से दिखाती है।”
दूसरा अवलोकन: एक परिष्कृत त्रुटि। उस्मानाबाद की त्रुटियों की तुलना में अधिक ज्ञान, लेकिन सटीकता की कमी।
तीसरी बार देखने पर उन्होंने कहा, "चावल का एक घेरा। साबुत, दीपक के घेरे के ठीक बाहर रखा हुआ, दाने एक-दूसरे को छू रहे हैं। यह लगभग सही है। पूर्वजों की परंपरा में इस अनुष्ठान में कच्चे चावल का उपयोग किया जाता है। यह विशेष तरीके से हाथ से छिला हुआ चावल होना चाहिए - बाहरी परत आंशिक रूप से साबुत होनी चाहिए, पॉलिश किया हुआ व्यावसायिक चावल नहीं। यहाँ रखा हुआ चावल पॉलिश किया हुआ व्यावसायिक चावल है, जो आपको किसी भी दुकान में मिल जाएगा। अंतर नंगी आँखों से दिखाई नहीं देता, लेकिन साधक जानता है कि बाहरी परत क्यों महत्वपूर्ण है - ऐसा माना जाता है कि इसमें चावल की जीवन शक्ति होती है, जिसे पूर्वजों की आत्माओं को अर्पित किया जा रहा है। परंपरा के अनुसार, पॉलिश किया हुआ चावल एक व्यर्थ भेंट है। जिन्होंने यह अनुष्ठान देखा है, वे जानते

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

[illegible] [illegible], [illegible], [illegible] [illegible] [illegible]

मैंने नोटबुक में लिखी हुई प्रविष्टि को कुछ देर तक देखा और फिर उसे करण को दिखाया।

***

जब मैं करण के पास पहुंचा, तब वह वानखेड़े के साथ घाव वाली जगह की जांच कर रहा था।
प्रवेश बिंदु: सबक्लेविकुलर, बायां भाग। दबाकर निर्देशित किया गया। झिझक का कोई संकेत नहीं। कोई परीक्षण सेटअप नहीं। और अंत में कलाई को घुमाने की प्रवृत्ति - एक ऐसी प्रवृत्ति जिसे प्रिया ने राव की निरंतर तकनीक के रूप में पहचाना, एक ऐसी तकनीक जो नासिक और उस्मानाबाद में अनुपस्थित थी - लेकिन यहां मौजूद थी।
मैंने कहा, "भवानी पेठ की तरह।"
"हां," करण ने कहा।
उन्होंने यह बात इतनी स्पष्ट रूप से कही कि इसमें कोई आश्चर्य की बात नहीं थी - उन्हें इसकी उम्मीद थी क्योंकि उस्मानाबाद के निष्कर्ष ने दो अलग-अलग दोषियों को साबित कर दिया था। भवानी पेठ और नासिक में राव की रणनीति। उस्मानाबाद में कोई और। यहाँ राव की रणनीति।
मैंने पूछा, "क्या राव ने नागपुर हत्याकांड को अंजाम दिया था?" "शायद," करण ने कहा। उसने घाव की ओर देखा। "इसका मतलब है कि राव को उस्मानाबाद के बारे में पता है। या फिर उसने उस्मानाबाद हत्याकांड को अपनी सीरियल के हिस्से के रूप में रचा और इसे किसी ऐसे व्यक्ति को सौंप दिया जिस पर उसके तरीके का इस्तेमाल करने के लिए भरोसा किया जा सकता था, और उस्मानाबाद के अपराधी का टेस्ट सेटअप कुलकर्णी का नहीं बल्कि किसी और का था।"

"या फिर राव ने उस्मानाबाद का निर्माण ही नहीं किया था," मैंने कहा।
“इस संस्करण से राव की श्रृंखला में आंतरिक सुसंगति आ जाती है,” करण ने कहा। “उनकी श्रृंखला में एक तर्क है — संस्थागत निवेशक, सामुदायिक संपर्क, वे लोग जिन्होंने नेटवर्क को विश्वसनीयता और पूंजी प्रदान की। जोशी एक अलग श्रेणी के थे। जोशी कुलकर्णी की वित्तीय स्थिति के लिए खतरा थे।” वे थोड़ी देर रुके। “राव के संस्करण में, जोशी श्रृंखला में नहीं होते। कुलकर्णी के संस्करण में, जोशी की मृत्यु श्रृंखला में गायब हो जाने के रूप में होती।”
मैंने कहा, "कुलकर्णी ने श्रृंखला को विकसित होते देखा, और जब जोशी एक खतरा बन गया, तो उसने श्रृंखला में हत्या को शामिल कर लिया और राव की पद्धति का उपयोग करके इसे राव का काम दिखाने की कोशिश की।"
"राव की जानकारी के बिना," करण ने कहा। "या उनकी जानकारी के साथ - हमें अभी पता नहीं है कि कौन सा तरीका सही है।" वह मुड़ा। "मुझे दिखाओ कि तुम्हें क्या मिला है।"
मैंने उसे पेड़ के बारे में लिखा हुआ नोट दिखाया।
उसने उसे पढ़ा। दो बार पढ़ा, जैसे वह उन चीजों को पढ़ता है जो किसी जांच की दिशा बदल रही हों। फिर उसने उस ऊंचे स्थान की ओर देखा जहां मीठी ज़ुबान वाला व्यक्ति अपने माथे पर पंख लगाए बैठा था, और उसके चेहरे पर ऐसा भाव था मानो उसने डिजाइन का अधूरा संस्करण देखा हो और अब उसके पास वह टुकड़ा हो जो उसे दिखाता हो कि अंततः वह कैसा दिखेगा।
उन्होंने कहा, "सीढ़ियाँ यहीं थीं।"

“वे यहाँ दो दिन से हैं,” मैंने कहा। “वह कार्यक्रम का संचालन कर रही थीं। वे फिलहाल मुख्य भवन में विस्तृत साक्षात्कार की प्रतीक्षा कर रही हैं।” मैं थोड़ा रुका। “वे इस परंपरा को अच्छी तरह जानते हैं। वारकरी परंपरा को—कोटियान ने उन्हें पर्याप्त ज्ञान रखने वाले सच्चे पेशेवर के रूप में मान्यता दी थी। वारकरी भक्ति परंपरा विठोबा, पंढरपुर और उस विशिष्ट वैष्णव तिलक पर केंद्रित है जिसे डॉ. बोरकर ने इस स्थल का एकमात्र सटीक तत्व बताया था।” मैं फिर रुका। “उन्होंने तिलक लगाया।”
करण ने बगीचे को देखा, चारों पेड़ों को देखा, उन दीपों को देखा जिनसे अंधेरे में भी ऊंचाइयां दिखाई दे रही थीं। गोडबोले की जीभ पर रखे सोने के सिक्के को देखा, जो अपने अर्थ में गलत था लेकिन अपनी जगह पर सही था। उस कंकड़ को देखा, जो हर तरह से सही था।
उन्होंने कहा, "उन्हें बताया गया था।"
मैंने इसे संभाल कर रखा।
“वह यहाँ थी,” उसने कहा। “दो दिन कार्यक्रम का संचालन कर रही थी। किसी ऐसे व्यक्ति ने, जिसे पता था कि वह यहाँ होगी, उसकी उपस्थिति का फायदा उठाया। हत्या के बाद—जब किसी और ने उसे अंजाम दिया—कदम को पूरी साजिश रचने के लिए कहा गया या निर्देश दिया गया। उस एक तत्व का प्रयोग करने के लिए जिसे वह सही ढंग से लागू कर सकती थी।” वह रुका। “जो इस पेशेवर के ज्ञान का सबसे निंदनीय दुरुपयोग है, या उस व्यक्ति की हरकत है जो एक महत्वपूर्ण बिंदु पर साजिश को निष्पक्ष रखना चाहता था।”
मैंने कहा, "राव ईमानदारी का तत्व क्यों चाहते थे?" "गलतियाँ तो उनकी पहचान हैं।"

“[illegible] [illegible] [illegible] [illegible],” [illegible] [illegible] “[illegible] [illegible] [illegible] [

दिखा रहा था, और जब हम पहुँचे तो उसके हाथ में वही पेन था जिसका वह इस्तेमाल कर रही थी। हमारे पहुँचते ही उसने पेन नीचे रख दिया। उसने करण को देखा, फिर मुझे देखा और फिर वापस करण को देखा, और उसके चेहरे पर डर का कोई भाव नहीं था। बल्कि ऐसा लग रहा था जैसे वह किसी खास घटना के होने का इंतज़ार कर रही हो।
करण उसके सामने बैठ गया। मैं बगल में बैठ गया।
"मुझे बलूत के फल के बारे में बताओ," करण ने कहा।
उन्होंने उसकी ओर देखा। एक लंबा विराम - झिझक नहीं, बल्कि उस व्यक्ति की खामोशी जो यह तय कर रहा था कि कितना बोलना है और अब यह तय कर रहा था कि पूरी बात बताना सही होगा या नहीं।
“मुझे बताया गया था,” उसने कहा। “दोपहर 1:30 बजे, चौकीदार के उसे ढूंढने से पहले। मैं बगीचे में गई थी – मैं शाम की रस्म की तैयारियों की जाँच करने गई थी। सब कुछ पहले से ही तैयार था।” उसकी आवाज़ स्थिर और स्पष्ट थी, और उसमें न तो पछतावा था और न ही अलगाव, बल्कि दोनों से जुड़ी एक सतर्कता थी। “मैंने पहचान लिया था कि क्या हुआ था। मैंने रस्म को पहचान लिया था। मैंने गलतियाँ देखीं।” वह थोड़ी देर रुकी। “और मैंने देखा कि तिलक गायब था।” "तुमने इसे बोया था," करण ने कहा।
“मैंने इसे लगाया,” उसने कहा। “क्योंकि वे इसके लायक थे। क्योंकि वे योद्धा थे – उन्हें बीस साल पहले दीक्षा दी गई थी, वे परंपरा में विश्वास रखते हुए शिविर में आए थे, और पिछले कुछ महीनों में उन्हें धीरे-धीरे समझ आ गया था कि संगठन ने उनके विश्वास का दुरुपयोग किया है।” उसने अपने हाथों की ओर देखा। “किसी ने उन्हें अभ्यास की ऐसी स्थिति में रखा था जिसका वे वास्तव में पालन कर रहे थे, और उनके माथे पर कोई निशान नहीं

लगाया था। मैंने निशान लगाया। मैं मानती हूँ कि यह एक गलत निर्णय था।”
"तुम्हें दोपहर 1:30 बजे बगीचे में आने के लिए किसने कहा?" करण ने कहा।
उन्होंने उन दोनों को ध्यान से देखा। "मुझे किसी ने नहीं बताया। मैं खुद गई थी।" वह थोड़ी देर रुकी। "लेकिन मुझे उस सुबह जल्दी ही बताया गया था कि समापन समारोह सभागार के बजाय बगीचे में होगा। मुझे बताया गया था कि जगह तैयार कर दी गई है। मुझे समझ आया कि मुझे वहाँ यह पता लगाने के लिए भेजा गया था कि क्या व्यवस्था की गई है।" वह थोड़ी देर रुकी। "मुझे समझ आया कि किसी ने मुझसे समारोह को बगीचे में स्थानांतरित करने के लिए कहा था।" "तुम्हें किसने बताया?" करण ने कहा।
उन्होंने मुझे एक नाम दिया। मैंने उसे लिख लिया।
वह नाम कुलकर्णी नहीं था। वह नाम तांबे था।
पहला नाम या अंतिम नाम अज्ञात - पूरा नाम, चेहरा, फ़ोन नंबर।
सुरेश तांबे। खरीद समन्वयक, जिसका आंशिक नाम नासिक में सामने आया था, वह व्यक्ति जो शिकायत वापस लेने के बाद गायब हो गया था।
उसने उस सुबह कदम से फ़ोन पर संपर्क किया था। उसने उसे बताया था कि समापन समारोह को बगीचे में स्थानांतरित किया जा रहा है। उसने उसे सही समय पर घटनास्थल पर पहुँचने के लिए तैयार किया था। करण ने कहा, "तांबा को पता था कि बगीचे में क्या है।"
“ताम्बा को हमेशा पता होता है कि क्या व्यवस्थित है,” कदम ने कहा। उन्होंने यह बात ऐसे कही जैसे वे आरोप लगाने के बजाय संरचनात्मक तथ्यों का वर्णन कर रही हों। “ये कार्यात्मक परतें हैं। इन शिविरों में क्या होता है, जगहों का उपयोग कैसे होता है, कौन कहाँ और कब होता है — यह तांबे का क्षेत्र है।” वह थोड़ी

देर रुकीं। “पैसा नहीं। निवेश नहीं। वह किसी और के अधिकार क्षेत्र में आता है। लेकिन संगठन जो काम करता है उसका भौतिक संगठन — वह तांबे का है।”
"तुम तांबे से निर्देश ले रहे हो," करण ने कहा।
“मैं पिछले तीन सालों से तांबे से निर्देश ले रही हूँ,” उसने कहा। “उन तीन सालों में से दो साल तक मुझे लगा कि मैं ही कार्यक्रम चला रही हूँ। मुझे लगा कि तांबे तो बस समन्वयक हैं। पिछले साल मुझे एहसास हुआ कि मैं ही कार्यक्रम चला रही हूँ, और तांबे समन्वयक नहीं बल्कि एक माध्यम थे जिसके ज़रिए ऐसे फैसले लागू किए जाते थे जिनमें मेरी कोई भूमिका नहीं थी।” उसने फिर से अपने हाथों की ओर देखा। “मैं जाने वाली थी। मैं छह महीने से जाने के बारे में सोच रही थी। मैं नहीं गई क्योंकि मुझे नहीं पता था कि जाना कैसा होगा – क्या यह शांतिपूर्ण होगा या इसके बुरे परिणाम होंगे।” वह थोड़ी देर रुकी। “वाघ गया। या जाने की कोशिश कर रहा था। और फिर वाघ नासिक मंदिर में मिला।” उसने सीधे करण की ओर देखा। “वाघ के बाद मुझे एहसास हुआ कि जाना ऐसा फैसला नहीं था जो मैं शांति से ले सकती थी।”
इस कमरे में यह रखा हुआ था।
उन्होंने कहा, "जांच में मैं हर तरह से सहयोग करूंगी। मैं बस किसी के आकर मुझसे पूछने का इंतजार कर रही थी। पिछले तीन महीनों से मैं जो कर रही हूं, उसका यही सच है - इंतजार।"
उन्होंने यह बात बिना किसी आत्म-दया और बिना किसी उपदेशक के अहंकार के कही। उन्होंने यह बात उस थकावट के साथ कही, जैसे किसी ने कोई निर्णय ले लिया हो, उस प्रवाह में बह रहा हो, और उस बिंदु पर पहुँच गया हो जहाँ निर्णय उसके हाथ से निकल चुका हो, जो एक अलग तरह की मुक्ति है।

***

हमने कदम से एक घंटा चालीस मिनट तक बात की। उन्होंने पूछे गए सभी सवालों के जवाब दिए और कुछ ऐसे सवालों के भी जवाब दिए जो पूछे नहीं गए थे लेकिन उन्हें प्रासंगिक लगे। यह एक ऐसे व्यक्ति का व्यवहार है जो जानकारी को सावधानीपूर्वक प्रबंधित करता है और उसे प्रदान करने में प्रसन्न होता है।
कुलकर्णी के बारे में: उन तीन वर्षों में उनकी मुलाकात दो बार हुई। छोटी, औपचारिक बैठकें, संगठन की रणनीतिक चर्चाओं के संदर्भ में हुईं, जिनमें उन्होंने कार्यक्रम निदेशक के रूप में और उन्होंने संगठन के मुख्य निवेशक के रूप में भाग लिया। उन्होंने कुलकर्णी का वर्णन ऐसे व्यक्ति के रूप में किया जो कमरे में मौजूद होते हुए भी उस पर अपना अधिकार नहीं जमाते थे – ऐसे व्यक्ति जो सीधे तौर पर बहुत कम बोलते थे, लेकिन जिनकी उपस्थिति कमरे में मौजूद अन्य लोगों की बातों को प्रभावित करती थी। उन्होंने कहा: उन बैठकों में जो निर्णय लिए गए, वे कुलकर्णी के आने से पहले ही लिए जा चुके थे। बैठकें केवल रिकॉर्ड के लिए थीं।
तांबे के बारे में: तीन साल का संपर्क। एक फ़ोन नंबर, दो ईमेल पते, पुणे का एक व्यावसायिक पता जो कोरेगांव पार्क का पत्राचार पता नहीं था - औंध क्षेत्र का एक और पता। वह उनसे कभी आमने-सामने नहीं मिली थीं। सारा संपर्क फ़ोन या संदेश के ज़रिए ही होता था। उन्होंने बताया कि तांबे में यह खूबी थी कि शिविर की भौतिक व्यवस्थाओं के बारे में उन्हें सब कुछ पता होता था - यहाँ तक कि उनके पूरा होने से पहले ही। ठीक वैसे ही जैसे उनकी व्यवस्थाओं के बारे में उन्हें तय होने से पहले ही पता होता था। उन्होंने

दो साल तक सावधानीपूर्वक योजना बनाई थी। अब उन्हें पता चल गया था कि यह मामला अलग था।
नागपुर शिविर के बारे में: तांबे के नंबर से उन्हें सुबह 9:30 बजे समापन समारोह को बगीचे में स्थानांतरित करने के निर्देश मिले। उन्होंने निर्देशों का पालन किया। वे शाम की तैयारियों का जायजा लेने के लिए दोपहर 1:20 बजे बगीचे में गए। उन्हें दोपहर 1:25 बजे गोडबोले का पौधा मिला। उन्होंने 1:25 से 1:30 के बीच टीला का पौधा लगाया। पर्यवेक्षक लता दोपहर 3:15 बजे पहुंचीं।
उनके जाने और वानखेड़े के औपचारिक बयान देने के बाद मैंने कहा, "लगभग दो घंटे। उन्होंने उसे 1:25 बजे पाया और 3:15 बजे तक इंतजार किया, जब लता वहाँ पहुँचीं।"
करण ने कहा, "वह फैसले ले रही थी।"
मैंने कहा, "मुझे पुलिस को बुलाना चाहिए या नहीं?"
“आपको कौन बताएगा कि उन्होंने क्या किया,” उन्होंने कहा। “टीला। उन्होंने उस जगह को छुआ। उन्होंने उसमें बदलाव किया, ऐसा कोई बदलाव नहीं जिससे वैज्ञानिक रिकॉर्ड प्रभावित हो, लेकिन उन्होंने कुछ ऐसा जोड़ा जो उस व्यक्ति ने नहीं जोड़ा था जिसने उस जगह की रूपरेखा तैयार की थी।” वे थोड़ी देर रुके। “वे लगभग दो घंटे तक निर्णय लेते रहे।”
मैंने कहा, "उन्होंने पुलिस के पूछने का इंतजार करने का फैसला किया।"

***

कामत रिपोर्ट के लीक होने का खुलासा सुबह 2:45 बजे उसी कमरे में हुआ जहां कदम बैठे थे, जब वानखेड़े करण के साथ अंतर-जिला समन्वय दस्तावेज देख रहे थे।

वानखेड़े ने हमारे उतरने से पहले ही इसका ज़िक्र कर दिया था - हवाई अड्डे से आते समय कार में उन्होंने इसका उल्लेख किया था, लेकिन विस्तृत जानकारी सही समय के लिए बचाकर रखी थी। अब, 2:45 बजे, घटनास्थल का मुआयना करने और कदम का बयान लेने के बाद, सही समय आ गया था, और अब हम जांच के अगले चरणों को जोड़ने की तैयारी कर रहे हैं।
वांखेड़े ने मेज पर एक कागज रखा। “सोमवार को सिस्टम में एक समन्वय नोट भेजा गया था – उस्मानाबाद की जांच के निष्कर्षों का औपचारिक सारांश, कुलकर्णी की पहचान और दो दोषियों के सिद्धांत का प्रारंभिक आकलन। यह संगल्या को भेजा गया था – बाईस लोगों को।” उन्होंने कागज देखा। “मंगलवार सुबह, एक क्षेत्रीय समाचार वेबसाइट ने अनुष्ठानिक हत्याओं की श्रृंखला के बारे में एक लेख प्रकाशित किया, जिसमें संगठन के वित्तीय संचालन में पुणे के एक व्यवसायी की संलिप्तता का नाम लिया गया था। कुलकर्णी का नाम सीधे तौर पर नहीं लिया गया था – इस्तेमाल की गई शब्दावली थी ‘कोरेगांव पार्क का एक व्यवसायी जो संगठन की निवेश संरचना से जुड़ा हुआ है’।”
करण काफी स्थिर हो गया।
"वही शब्दावली समन्वय नोट में है," वानखेड़े ने कहा। "वही शब्द - कोरेगांव पार्क व्यवसाय, संस्थागत निवेश संरचना। नोट में इसका इस्तेमाल किया गया था। लेख में भी इसका इस्तेमाल किया गया था।" वे थोड़ी देर रुके। "किसी अन्य स्रोत में शब्दों का वह संयोजन नहीं था।"
मैंने कहा, "यह साठे लीक से अलग है।" साठे लीक एक व्यक्ति था - एक सैनिक जिसका एक पत्रकार के साथ पहले से ही गुप्त संबंध था, एक अनौपचारिक माध्यम जिसका इस्तेमाल अवसरवादी रूप से किया गया

था। साठे लीक एक व्यक्ति था जो निर्णय ले रहा था। यह एक प्रणाली थी। समन्वय नोट प्रणाली में था और प्रणाली से ही समाचार वेबसाइट पर जाता था, और उस गतिविधि की कार्यप्रणाली अभी तक स्पष्ट नहीं हो पाई थी।
“स्टॉक लीक होने का काम एक ही व्यक्ति का था,” करण ने कहा। “यह किसी ऐसे व्यक्ति का काम है जिसकी सिस्टम तक पहुंच थी - या तो किसी अधिकृत सिस्टम एक्सेस वाले व्यक्ति ने इसका इस्तेमाल किया, या फिर सिस्टम तक बाहरी पहुंच का पता नहीं चल पाया।” उन्होंने वानखेड़े की ओर देखा। “आपको कब पता चला?”
“मंगलवार दोपहर,” वानखेड़े ने कहा। “मैंने गोखले को बताया। गोखले सिस्टम एडमिनिस्ट्रेटर के साथ काम कर रहे हैं।” वे थोड़ी देर रुके। “कोरेगांव पार्क संदर्भ के जारी होने से कुलकर्णी को एक बात पता चलती है: कि जांच में उनके ठिकाने और संदर्भ का पता चल गया है।” वे फिर रुके। “कुलकर्णी शायद गायब हो गए हों।” मैंने कहा, "वे जानते हैं कि हम करीब हैं। और वे यह भी जानते हैं कि हमने उन्हें बताया है कि हम करीब हैं।"
“हमने उन्हें नहीं बताया,” करण ने कहा। “सिस्टम ने उन्हें बताया। फर्क है।” वह थोड़ी देर रुके। “लेकिन व्यावहारिक असर एक ही है। कुलकर्णी परिवार जानता है कि जांच में उनके कोरेगांव पार्क का पता आधिकारिक दस्तावेजों में दिया गया है। वे उस पते पर नहीं होंगे।” उन्होंने अखबार की ओर देखा। “समन्वय नोट सोमवार को भेजा गया था। लेख मंगलवार सुबह छपा।” वह थोड़ी देर रुके। “बारह घंटे।”
समन्वय नोट प्रणाली में दर्ज होने से लेकर किसी समाचार लेख में उसकी विशिष्ट भाषा के प्रकटीकरण तक बारह घंटे का समय लगा। इन

[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

*[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] - [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

*[illegible] [illegible] [illegible] [

[illegible] [illegible] [illegible] [

"हम नागपुर, कामत लीक और तांबे की पहचान से जुड़ी जानकारी लेकर पाटिल जा रहे हैं। और फिर हम लातूर जाएंगे। लातूर में पांचवीं घटना स्थल तैयार होने से पहले।"
वानखेड़े ने अपनी इडली खत्म कर ली। पुणे जाने वाली 6:15 बजे की फ्लाइट गेट पर आ पहुंची और गुरुवार की सुबह की पहली किरणें पूरब से हवाई अड्डे की खिड़कियों से अंदर आ रही थीं।
मैंने नोटबुक बंद कर दी। मैंने उसे अपनी जैकेट में रख लिया। घर पर कॉर्कबोर्ड पर चार पिन लगे थे और चित्र के खाली केंद्र में एक नाम लिखना था। कल, उसके पास पाँचवाँ पिन होगा और वृत्त को पूरा होने से पहले रोकने के लिए जाँच का पहला वास्तविक प्रयास होगा।
द्वार खुल गया।

अध्याय 9 - अध्ययन कक्ष में प्रकाश
नागपुर से पुणे की सुबह 6:15 बजे की उड़ान एक अनूठा अनुभव प्रदान करती है: आप एक ऐसे शहर से उड़ान भरते हैं जिसने अभी तक यह तय नहीं किया है कि सुबह हुई है या नहीं, और आप एक ऐसे शहर में उतरते हैं जो सुबह होने का फैसला करने की प्रक्रिया में एक घंटा आगे है। इन दोनों शहरों की सुबह के बीच एक अंतराल है, जिसे उड़ान बिना नाम लिए पार करती है। नीचे दक्कन पठार पर सुबह हो रही थी, और फिर, बीस मिनट में, पश्चिमी घाट अपनी चोटियाँ फैलाते हैं और फिर पुणे की घाटी में उतर जाते हैं - एक ऐसा शहर जो अक्टूबर में सुबह 7:45 बजे हवाई दृष्टि से देखने पर एक विशेष प्रकार की व्यवस्थित उद्देश्यपूर्णता का अनुभव कराता है। पूर्वी प्रकाश छतों पर पड़ रहा था। नीचे राजमार्ग पर यातायात, सुबह के उस दृढ़ संकल्प के साथ आगे बढ़ रहा था, जैसे लोग अपने सुबह के निर्णय पहले ही ले चुके हों और अब उन्हें अमल में ला रहे हों।
नागपुर के रनवे से ही मैं एक नोटबुक में लिख रहा था। जांच उड़ान के दौरान मेरी यह आदत बन गई थी, क्योंकि चलते विमान में लिखना उन कुछ परिस्थितियों में से एक था जहाँ नोटबुक किसी रिकॉर्ड की बजाय एक प्रक्रिया की तरह लगती थी – विचार बनने की प्रक्रिया में ही आते थे, पूरी तरह से विकसित नहीं होते थे, ठीक वैसे ही जैसे शरीर के गतिमान होने पर विचार आते हैं, और मन केवल वही लिखने में लगा रहता था जो वह करना चाहता था। मैंने गोडबोले घटना स्थल पर तीन पृष्ठ, कदम की गवाही पर दो पृष्ठ और वानखेड़े पर आधा पृष्ठ लिखा था, जिसे बाद में मैंने देखा और पाया कि यह अभी भी अधूरा है और मैंने इसे खाली छोड़ दिया, अतिरिक्त जानकारी की प्रतीक्षा में जो मुझे लगता था कि आएगी लेकिन अभी तक नहीं आई थी।

करण मेरे बगल में बैठा था और अपने फोन पर कुलकर्णी की फाइल पढ़ रहा था, जिसे उसने गोखले की सामग्री से संकलित किया था। हवाई अड्डे के बाद से उसने एक शब्द भी नहीं बोला था। यह कोई असामान्य बात नहीं थी - घटना के बाद यात्रा के दौरान करण की चुप्पी किसी ऐसे व्यक्ति की चुप्पी नहीं थी जिसके पास कहने के लिए कुछ न हो, बल्कि किसी ऐसे व्यक्ति की चुप्पी थी जो आंतरिक रूप से काम कर रहा था और बाहरी संवाद में योगदान नहीं दे सकता था। मैंने उनकी चुप्पी को दूरी के रूप में समझना नहीं सीखा था। वे जांच के अगले चरण की आवाजें थीं, और उनके साथ सही व्यवहार यही था कि आप अपना काम जारी रखें और जब संबंध स्थापित हो, तब उपस्थित रहें।
हम सुबह 7:52 बजे उतरे। सुबह का समय था।
सुबह के सवा नौ बजे, फ्लैट में वही सन्नाटा पसरा हुआ था जो हमेशा तब होता है जब हम चौबीस घंटे से ज़्यादा समय के लिए बाहर जाते हैं: ऐसा लग रहा था मानो कोई जगह हमारे बिना ही सोच रही हो। न पूरी तरह स्वागत करने वाला, न पूरी तरह रूखा - एक ऐसा तटस्थ माहौल जो अपने लेआउट को बरकरार रखे हुए है और दोबारा इस्तेमाल के लिए तैयार है। एक कॉर्कबोर्ड जिस पर चार पिन और एक डायग्राम लगा है। करण के कागज़ उसकी डेस्क पर उसी क्रम में रखे हैं जैसे उसने छोड़े थे। पंखा अपनी सामान्य गति से घूम रहा था, क्योंकि करण जब बाहर जाकर जाँच-पड़ताल करता है तो उसे बंद नहीं करता। यह आदत मुझे पहले तो अजीब लगी, लेकिन बाद में समझ आई कि यह एक तरह की अनमनेपन की स्थिति है जो खामोशी से ज़ाहिर होती है। फ्लैट चलता रहा। पंखा घूमता रहा। कमरे में जाँच-पड़ताल जारी रही, भले ही जाँच-पड़ताल करने वाले घंटों के लिए बाहर गए हुए थे।
मैंने चाय बनाई। करण कॉर्कबोर्ड के पास गया।

उसने पाँचवीं पिन को एक पल के लिए हाथ में पकड़े रखा - वही हरकत जो पहले हुई थी, वह पिन जो सबूत मिलने पर बोर्ड पर लगाई जाती है। उसने उसे वापस डिब्बे में रख दिया। अभी नहीं।
लेकिन हम दोनों जानते थे कि बात किस ओर जा रही है। मैंने उसे देखा जब वह दक्षिण-दक्षिण-पूर्व दिशा की ओर देख रहा था, जो महाराष्ट्र का मध्य भाग था, उस्मानाबाद के नीचे, मराठवाड़ा का समतल क्षेत्र जहाँ घाटों का अंत हो चुका था और पठार क्षितिज तक फैला हुआ था। परंपरा की पाँच बाहरी दिशाएँ महाराष्ट्र के पाँच धार्मिक क्षेत्रों से मेल खाती थीं – देश, नासिक मार्ग, मध्य विदर्भ क्षेत्र, मराठवाड़ा दक्षिण और दक्षिण-मध्य क्षेत्र। लातूर पाँचवें क्षेत्र में ठीक से समाहित था। वह स्थान एक ऐसे शहर और स्थल की प्रतीक्षा कर रहा था जो अभी तक अस्तित्व में नहीं आया था, और जाँच का प्रश्न यह था कि क्या यह हमारे वहाँ पहुँचने से पहले होगा या बाद में।
मैं उसके लिए चाय लाया। उसने बोर्ड से नज़र हटाए बिना ही चाय पी ली।
"गोखले," उसने कहा।
“वह तैयार हैं,” मैंने कहा। “हमारे जहाज पर चढ़ने से पहले ही उन्होंने पुष्टि भेज दी थी। नागपुर की फाइल तैयार है और आपकी समीक्षा का इंतजार कर रही है। तांबे से संबंधित सामग्री लगभग पूरी है।” मैं थोड़ा रुका। “मंगलवार और बुधवार की कुलकर्णी अनुपालन रिपोर्ट पैकेज में हैं। पाटिल की बैठक से पहले उन्होंने इन्हें आपके ध्यानार्थ चिह्नित कर दिया था।”
“पल्टी में तुमने क्या देखा?” उसने कहा।
मैंने कहा, "कोरेगांव पार्क का पता। मंगलवार दोपहर, सिस्टम में निर्देशांक दर्ज किए जाने के छह घंटे बाद। निगरानी टीम ने

इमारत में हलचल दर्ज की - एक वाहन, दो यात्री, एक बक्सा वाहन में ले जाया जा रहा था। मंगलवार शाम तक कार्यालय खाली था। बुधवार सुबह तक ताले बदल दिए गए थे।"
उसने बोर्ड पर लगे कोरेगांव पार्क के पिन को देखा।
उन्होंने कहा, "छह घंटे।"
मैंने कहा, "समन्वय सूचना से लेकर पते पर पहली कार्रवाई तक छह घंटे लगे। सूचना से लेकर समाचार लेख तक बारह घंटे। पते की पुष्टि और लेख दोनों एक ही जानकारी से हुए, लेकिन उनकी प्रगति की गति अलग-अलग थी।"
वह कुछ पल के लिए चुप रहा।
“पाटिल को दोनों बातें एक ही बैठक में बताई जानी चाहिए,” उन्होंने कहा। “नागपुर फाइल और सिस्टम लीक, दोनों एक ही कमरे में। अगर हम इन्हें अलग-अलग पेश करते हैं, तो लीक पर संस्थागत प्रतिक्रिया और जांच पर रणनीतिक प्रतिक्रिया अलग-अलग चर्चा का विषय बन जाएगी। यह एक ही बातचीत होनी चाहिए।” उन्होंने अपनी चाय उठाई। “गोखले को फोन कीजिए। आज दोपहर, कल नहीं।”
मैंने गोखले को फोन किया। उन्होंने कहा दोपहर 2 बजे। मैंने हाँ कहा और घड़ी देखी - सुबह के 9:30 बज रहे थे, जिसका मतलब था कि हमारे पास सोने के लिए ढाई घंटे, फाइल की समीक्षा करने के लिए तीसरा घंटा और क्राइम ब्रांच की इमारत तक पहुँचने के लिए चौथा घंटा था।
मैं गद्दे पर लेटा हुआ था, अक्टूबर की सुबह की हल्की रोशनी से बचने के लिए मैंने जैकेट अपने चेहरे पर ओढ़ी हुई थी, और मैं आश्रम के कॉमन रूम में रखे गोडबोले के शतरंज के सेट, हारमोनियम बजाते वाघ और जोशी के चुपचाप चले जाने से संबंधित पत्रों के बारे में सोच रहा था – ये तीनों ही अपने-अपने अलग-अलग तरीकों से

समझने, जाने देने या बस रुकने की कोशिश कर रहे थे, और उन्हें समय नहीं दिया गया। फिर मैंने सोचना बंद कर दिया और सो गया।

***

जब मैं सुबह 11:45 बजे उठा, तो करण पहले से ही अपनी डेस्क पर था। वह सोया नहीं था—या सोया था और मेरे ध्यान देने से पहले ही डेस्क पर वापस आ गया था—और गोखले द्वारा सुबह 10 बजे भेजी गई मुद्रित फ़ाइल पढ़ रहा था, जिसके पन्ने तीन ढेरों में व्यवस्थित थे, उनके प्रस्तुतीकरण के तार्किक क्रम में। जब करण किसी वरिष्ठ अधिकारी के लिए फ़ाइल तैयार करता है, तो वह उस क्रम के बारे में सोचता है जिसमें पाठक जानकारी चाहता है—खोज का क्रम नहीं, जांच का कालानुक्रमिक क्रम नहीं, बल्कि वह क्रम जो पाठक को यह समझने में सबसे मज़बूत संरचना प्रदान करेगा कि वह इसका क्या करेगा। उसके ढेरों की व्यवस्था आपको पहला पृष्ठ खोलने से पहले ही संरचना बता देती है।
मैंने और चाय बनाई और बीस मिनट तक उनके कंधे के ऊपर से पढ़ा। संरचना अच्छी थी। सबसे पहले लिखावट की पुष्टि प्रस्तुत की गई, जिसे राव के विरुद्ध मामले की रीढ़ बताया गया। फिर प्रगति आपूर्ति श्रृंखला, जिसका संबंध राव से था। फिर चोटों का संक्षिप्त विवरण - तीनों, प्रिया के तुलनात्मक विश्लेषण को पाटांगे के नासिक निष्कर्षों और माने के उस्मानाबाद दस्तावेज़ीकरण के संदर्भ में रखते हुए। फिर गोडबोले घटना स्थल और डॉ. बोरकर का विश्लेषण। फिर कदम का बयान। फिर तांबे। फिर कुलकर्णी। और अंत में प्रणाली में हुई कमियों को, साक्ष्यों के कालानुक्रमिक क्रम में, सबसे महत्वपूर्ण परिचालन मुद्दों के रूप में प्रस्तुत किया गया, चाहे वे कहीं भी हों।
मैंने कहा, "घावों की रूपरेखा।"

“पाटिल के पाठकों को तांबे की संलिप्तता को समझने से पहले दो अपराधों की संरचना को समझना होगा,” करण ने कहा। “अगर वे पहले तांबे की संलिप्तता को समझ लेते हैं, तो वे तांबे को कुलकर्णी की कार्ययोजना में एक उपकरण के रूप में देखेंगे। अगर वे पहले घावों की रूपरेखा को समझ लेते हैं, तो वे समझ जाएंगे कि हत्याओं की श्रृंखला की संरचना बाहर से दिखने वाली संरचना से अलग है – दो हाथ, दो उद्देश्य, एक ढांचा। और फिर तांबे इसमें पूरी तरह फिट बैठता है: न केवल एक कार्यकारी समन्वयक, बल्कि कुलकर्णी के उद्देश्य और अपराध स्थल को डिजाइन करने की उस विधि के बीच एक कड़ी, जिसे कुलकर्णी ने राव से सीखा था।” वे रुके। “क्रम से तांबे की भूमिका बदल जाती है।”
जब मैं करण की खोजी सोच को सर्पिलाकार गति से आगे बढ़ने के रूप में वर्णित करता हूँ, तो मेरा तात्पर्य यही है। एक ही जानकारी को अलग-अलग दृष्टिकोण से देखने पर एक अलग और अधिक सटीक तस्वीर सामने आती है।
मैं वापस अपने बिस्तर पर गया और दो घंटे तक लिखता रहा।
मेरे पास जो जानकारी थी, वह थी फाउंडेशन की लातूर कार्यक्रम योजना। दो साल पहले के वार्षिक रिकॉर्ड में "लातूर-नांदेड़ मार्ग" पर आयोजित एक रिट्रीट श्रृंखला का उल्लेख था - यह उस कार्यक्रम का विशिष्ट प्रारूप था जिसे मध्य मराठवाड़ा के बाज़ार को ध्यान में रखकर तैयार किया जा रहा था। लातूर जिले में स्थित एक स्थान का नाम रिकॉर्ड में नहीं था, उसे केवल संबंधित नगरपालिका की स्वीकृति प्राप्त एक पंजीकृत सुविधा के रूप में वर्णित किया गया था। रिट्रीट श्रृंखला एक वर्ष तक चली और फिर इसका विशेष उल्लेख रिकॉर्ड से गायब हो गया, और अगले वर्षों में

[illegible]

[illegible] [illegible] [illegible] [

प्रसारित करने के लिए कर रहे हों। उनके दाहिनी ओर: करण, जिनके सामने मेज पर फाइल बंद पड़ी थी, पन्ने उसी क्रम में थे जैसे उन्होंने व्यवस्थित किए थे। पाटिल के बाईं ओर: सहायक पुलिस आयुक्त शेख, अपने पीले लीगल पैड के साथ, और एकाग्रचित्त भाव से, मानो एक सप्ताह से जांच के दायरे में रही हों और अब उनकी भूमिका में काफी विस्तार होने वाला हो। उनके बगल में, गोखले। प्रिया देसाई अपने कंप्यूटर के साथ। मूल टीम के तीन अधिकारी, दो नए चेहरे जिन्हें मैंने पहले नहीं देखा था - वित्तीय खुफिया विभाग की एक महिला, दृढ़ और सटीक, मानो वह पैसे के बारे में उसी तरह सोचती हो जैसे एक फोरेंसिक विश्लेषक भौतिक साक्ष्यों के बारे में सोचता है, एक ऐसी भाषा जिसे समझा जा सकता है; और सांख्यिकी विभाग का एक पुरुष, जिसकी चिंता, जैसा कि मुझे बाद में पता चला, सिस्टम सुरक्षा मुद्दों से थी।
मैं कोने में बैठा था, जो इन बैठकों में मेरी पसंदीदा जगह है। बारह सीटें थीं। अगर कागजी कार्रवाई सहायक को भी गिनें तो तेरह लोग थे, जिसे पाटिल अब बिना किसी औपचारिकता के गिन रहे थे - उन्होंने जांच के दूसरे सप्ताह में ही मुझे गिनना बंद कर दिया था और मेरी उपस्थिति को केवल नोट करके स्वीकार करना शुरू कर दिया था, जो स्वीकृति का सबसे उपयोगी तरीका है।
पाटिल ने फाइल से शुरुआत की।
उन्होंने सात मिनट तक बिना अपने नोट्स देखे बात की – पाटिल के मामले में यह इस बात का संकेत था कि उन्होंने इतनी गहराई से पढ़ा था कि नोट्स की आवश्यकता ही नहीं थी। उन्होंने सबसे पहले गोडबोले जुज़ाह आउटलाइन पर बात की, जिससे यह पुष्टि हुई कि नागपुर राव का काम था। उन्होंने कदम के खुलासों और तिलक के बारे में बताया। उन्होंने तांबे की पूरी पहचान के बारे में बताया।

और फिर उन्होंने कोरेगांव पार्क के पते को खाली करने और कामत रिपोर्ट के लीक होने के बारे में बात की, और यहीं उनकी बोलने की गति बदल गई – न धीमी, न तेज, बल्कि अधिक सधी हुई, उस व्यक्ति की गति जो ऐसी जानकारी दे रहा है जिसके निहितार्थों की उसने पहले ही जाँच कर ली है और वह तब तक किसी को भी उस पर विचार करने का मौका नहीं देना चाहता जब तक कि उसे पूरी जानकारी न मिल जाए। “सोमवार के समन्वय नोट में कोरेगांव पार्क का पता उन्हीं शब्दों में बताया गया था,” उन्होंने कहा। “मंगलवार सुबह एक क्षेत्रीय समाचार वेबसाइट पर भी वही शब्द छपे। मंगलवार शाम तक वह पता खाली हो चुका था। कुलकर्णी को सिस्टम में आने के छह घंटे के भीतर ही समन्वय नोट मिल गया था।” उन्होंने मेज के चारों ओर देखा। “यह साठे का रास्ता नहीं है। साठे तो पहले से संपर्कों का इस्तेमाल करने वाला व्यक्ति था जो अनौपचारिक मार्ग अपना रहा था। यह सिस्टम स्तर का रिसाव है – किसी ऐसे व्यक्ति का जिसने आधिकारिक सिस्टम तक पहुंच बनाई हो या बाहरी पहुंच बनाई हो जिसकी पहचान हम नहीं कर पाए हैं। सांख्यिकी विभाग के उपाध्याय अब अपनी प्रारंभिक रिपोर्ट पेश करेंगे।”
उपाध्याय चालीस घंटे तक सिस्टम में मौजूद रहे। वे सटीक थे और उन्होंने अपने तकनीकी निष्कर्षों से अधिक शब्दों का प्रयोग नहीं किया, जो कि किसी भी प्रकार की फोरेंसिक गवाही में मेरे लिए एक महत्वपूर्ण गुण है। उनका निष्कर्ष था: कोई बाहरी उल्लंघन नहीं पाया गया। जानकारी एक अधिकृत एक्सेस पॉइंट से प्राप्त की गई थी - एक वैध पासवर्ड वाला सिस्टम उपयोगकर्ता जिसने सिस्टम से सोमवार की समन्वय प्रविष्टि प्राप्त की थी और जिसका एक्सेस पैटर्न, बाद में देखने पर, एक निश्चित व्यवहार दर्शाता है: प्रविष्टि अपलोड होने के चालीस मिनट के भीतर

कुलकर्णी-उल्लेख अनुभाग तक पहुंच, उसके बाद छह घंटे तक सिस्टम में कोई गतिविधि नहीं, और फिर समाचार लेख।
उन्होंने कहा, "हमारे पास एक्सेस रिकॉर्ड हैं। हमारे पास टाइमशीट और एक यूजर अकाउंट है। यह यूजर अकाउंट टीम के प्रशासनिक स्टाफ के एक सदस्य का है, जिसका काम दस्तावेज़ों का वितरण करना है।" वे थोड़ी देर रुके और फिर बोले, "अकाउंट एक्सेस शायद खुद अकाउंट होल्डर ने किया हो, या फिर उसके किसी करीबी ने, जिसके पास पासवर्ड है। हम अभी भी यह पता लगा रहे हैं कि किसने किया है।"
टेबल ने इसे सोख लिया।
“खैर,” पाटिल ने कहा, “आज से संचार संरचना का पुनर्गठन किया जा रहा है। इस बैठक से आगे, कुछ विशिष्ट स्तरों के कार्यकारी दस्तावेज़ एक प्रतिबंधित उपप्रणाली में जाएंगे, जिस तक केवल इस कमरे में बैठे लोग और उनके अधीनस्थ कर्मचारी ही पहुंच सकेंगे। उपाध्याय और शेख इस संरचना का सह-प्रबंधन कर रहे हैं।” उन्होंने गोखले की ओर देखा। “पिछली प्रणाली में लंबित सभी दस्तावेज़ों का वितरण समीक्षा होने तक रोक दिया गया है।”
ये सही फैसले थे, और इन्हें उतनी ही तेज़ी से लिया गया जितनी तेज़ी से सही फैसले लेने के लिए ज़रूरी होती है। मैंने इन्हें लिख लिया।
शेख ने आगे कहा। वह एक सप्ताह से फाउंडेशन के वित्तीय दस्तावेज़ीकरण संबंधी अनुरोधों पर काम कर रही थीं और कुछ प्रारंभिक निष्कर्षों पर पहुंची थीं जो निष्कर्ष के रूप में प्रस्तुत करने के लिए पर्याप्त रूप से पूर्ण नहीं थे, लेकिन इतने मामूली भी नहीं थे कि उनकी अपेक्षा की जा सके।

“कुलकर्णी,” उन्होंने कहा। “प्रतिष्ठान न्यास और कल्याणी कंसल्टेंट्स के वित्तीय दस्तावेज़ – मेरे पास पिछले सोमवार को जमा किए गए औपचारिक अनुरोधों के पहले रिटर्न हैं। जैसा कि उम्मीद थी, ये आंशिक हैं।” उन्होंने कंप्यूटर खोला। “पहली परत में जो मैं देख सकती हूँ: पिछले वित्तीय वर्ष में प्रतिष्ठान न्यास की आय घोषित आय से लगभग दोगुनी थी। घोषित आय और वास्तविक आय के बीच का अंतर चार संबंधित व्यावसायिक संस्थाओं के माध्यम से आता है, जिनमें से कल्याणी कंसल्टेंट्स एक है और अन्य की पहचान अब हो चुकी है।” उन्होंने कंप्यूटर पर आरेख दिखाया – एक सरल संरचना, चार नोड और एक मध्यबिंदु। “ये चारों बिंदु कुलकर्णी को एकमात्र निदेशक या अधिकृत हस्ताक्षरकर्ता के रूप में इंगित करते हैं। धर्मार्थ ट्रस्ट सार्वजनिक चेहरा है। वास्तव में पैसा चार संस्थाओं में जाता है।” वह थोड़ी देर रुकीं। “प्रतिभागियों द्वारा भुगतान की गई रिट्रीट फीस से रिट्रीट कार्यक्रमों का वित्तपोषण नहीं हुआ। उन्होंने कुलकर्णी की संगठनात्मक संरचना को फंड में डाला। वित्तीय दृष्टि से, ये कार्यक्रम आध्यात्मिक शिक्षा के रूप में आय निकालने का एक तंत्र थे।”
उस कमरे में वो खास माहौल था जो किसी बड़ी बात के मात्र संदेह के बजाय पुष्टि होने पर पैदा होता है। इसमें कोई आश्चर्य नहीं— अगले दिन के स्थापना रिकॉर्ड से ही जांच इसी ओर इशारा कर रही थी। किसी संदिग्ध बात की पुष्टि होना और कुछ नया सीखना दो अलग बातें हैं। इसका एक गहरा प्रभाव होता है। यह कमरे पर किसी भार की तरह भारी लगता है।
शेख ने कहा, "जिस वित्तीय वर्ष की जानकारी मेरे पास है, उस वर्ष के लिए कुल राशि लगभग नौ करोड़ चालीस लाख रुपये है।"

कुछ देर तक मेज पर बैठे किसी ने कुछ नहीं कहा।
पाटिल ने कहा: "पूर्ण दस्तावेजीकरण।"
“पूरी जानकारी मिलने में दो से तीन सप्ताह लगेंगे,” शेख ने कहा। “मैं चार रजिस्ट्रार कार्यालयों में एक साथ अनुरोधों का प्रबंधन कर रहा हूँ। वित्तीय खुफिया विभाग की एक सदस्य—” उन्होंने उस महिला की ओर इशारा किया जिससे मैं अभी तक नहीं मिला था, जिसने सिर हिलाया—“संबंधित व्यावसायिक रिकॉर्ड की जाँच साथ-साथ कर रही हैं। महीने के अंत तक हमारे पास पूरी संरचना तैयार हो जाएगी।”
"महीना," पाटिल ने कहा।
"महीने के अंत तक," शेख ने पुष्टि की। यह कोई बहाना नहीं था - वह वही रिपोर्ट कर रही थी जो सिस्टम चाहता था, न कि वह जो जांच चाहती थी।
"फिर जांच की प्रक्रिया में वित्तीय दस्तावेज़ीकरण की अवधि को ध्यान में रखना होगा," पाटिल ने कहा। उन्होंने करण की ओर देखा। "आपका आकलन।"
करण का आकलन वह था जिसकी तैयारी वह नागपुर से ही कर रहा था। उसने इसे संयमित और शांत तरीके से प्रस्तुत किया - यह किसी अनिश्चित या खोजपूर्ण आवाज की तरह नहीं था जो सार्वजनिक रूप से चीजों को सुलझाने की कोशिश कर रही हो, बल्कि यह उन निष्कर्षों की सटीक आवाज थी जिनका आंतरिक रूप से परीक्षण किया जा चुका था और जो सही साबित हुए थे।
“मंडल के पास घटना के चार पुष्ट स्थल हैं,” उन्होंने कहा। “पांचवीं दिशा मौजूदा चार बिंदुओं के दक्षिण-दक्षिणपूर्व की ओर है। प्रतिष्ठान की भौगोलिक कार्यक्रम योजना के इतिहास और शेख द्वारा दस्तावेजित निवेशक नेटवर्क के आधार पर, पांचवां घटना

स्थल लातूर-नांदेड़ मार्ग पर होगा – संभवतः लातूर में।” वे रुके। “हमारे पास लातूर से जुड़ा एक संभावित प्रतिष्ठान समन्वयक का नाम है। उस संबंध की पुष्टि अभी बाकी है। यदि पांचवें घटना स्थल की जानकारी मिलने से पहले पुष्टि हो जाती है, तो हम संसाधन जुटा सकते हैं। यदि यह बाद में होती है, तो हम पांचवें घटना स्थल पर उसी तरह होंगे जैसे हम भवानी पेठ पर थे – घटना के बाद, जो कुछ बचा है उसका अध्ययन करेंगे।” फिर रुके। “राव की गिरफ्तारी से पांचवां दृश्य नहीं रुकता – राव ने श्रृंखला को इस तरह व्यवस्थित किया है कि प्रत्येक दृश्य अलग से तैयार और मंचित किया जाता है, सामग्री पहले से प्राप्त की जाती है। यदि पांचवें दृश्य की सामग्री पहले से तैयार है और पीड़ित का चयन पहले से ही हो चुका है, तो आज रात राव की गिरफ्तारी से पांचवें दृश्य पर शायद कोई फर्क नहीं पड़ेगा। दृश्य निर्माण की अपनी गति होती है।” उन्होंने मेज की ओर देखा। “पांचवें घटनास्थल की कार्रवाई पांचवें पीड़ित की पहचान करने और घटना होने से पहले घटनास्थल को सुरक्षित करने पर निर्भर करती है। राव की गिरफ्तारी पूरे मामले के सुलझने पर निर्भर करती है – नासिक की सप्लाई चेन, प्रिया की पुष्टि, कदम की गवाही का औपचारिक रूप से प्रमाणित होना, और नागपुर के घावों के विवरण को प्रिया द्वारा सीधे तुलना के माध्यम से भवानी पेठ के विवरण से औपचारिक रूप से जोड़ना।” वह रुके। “दोनों ही प्रक्रियाएं जारी हैं। कोई भी पूरी नहीं हुई है।”
"कुलकर्णी," पाटिल ने कहा।
“कुलकर्णी पलायन कर गया है,” करण ने कहा। “हमें नहीं पता कहाँ। तांबे की पहचान से हमें औंध का पता मिला है। औंध का पता आज सुबह ही ट्रैक किया गया है। अगर तांबे वहाँ पहुँच जाता है, तो हमारे

पास एक ऑपरेशनल लॉजिस्टिक्स लेयर होगी। तांबे हमें किसी भी दस्तावेज़ से ज़्यादा तेज़ी से कुलकर्णी तक पहुँचा देगा।” वह रुका। “कुलकर्णी जानता है कि जाँच में उसके कोरेगांव पार्क वाले संदर्भ की पहचान हो गई है। उसे तांबे के बारे में नहीं पता — तांबे की पहचान उन दस्तावेज़ों में से किसी में भी नहीं है जो हैक किए गए सिस्टम से आए हैं। उसकी पहचान सिर्फ़ इसी कमरे में है।” उसने पाटिल की ओर देखा। “अगर हम तांबे की पहचान को सुरक्षित रखते हैं, तो हम उस एकमात्र सुराग को बचाए रखेंगे जिसके बारे में कुलकर्णी को नहीं पता कि हमारे पास है।”
पाटिल ने एक पल के लिए मेज की ओर देखा।
“विशेष जांच दल की संरचना,” उन्होंने कहा। “शेख वित्तीय दस्तावेज़ीकरण का नेतृत्व करेंगे। गोखले एक समर्पित टीम के साथ तांबे-कुलकर्णी निगरानी का नेतृत्व करेंगे, जिसमें केवल सीमित संचार की अनुमति होगी। उपाध्याय सिस्टम सुरक्षा उपायों का नेतृत्व करेंगे। करण और विशेष जांच दल मूल राव की गिरफ्तारी के लिए सबूत तैयार करना जारी रखेंगे – प्रिया के घावों की तुलना, कदम का औपचारिक बयान, लातूर में पांचवें घटनास्थल की आशंका।” वे रुके। “लातूर कनेक्शन – आपके पास समन्वयक का नाम है। इसकी पुष्टि करें। यदि पुष्टि हो जाती है, तो समन्वयक को संभावित पीड़ित मानकर इस तरह से सुरक्षित रखा जाना चाहिए कि जांच स्थल के बारे में जानकारी का खुलासा न हो। अप्रत्यक्ष संपर्क।” उन्होंने करण की ओर देखा। “आज।”
"आज," करण ने पुष्टि की।
परिचालन संबंधी विवरणों पर बैठक चालीस मिनट तक चली। कौन किस प्रणाली तक सीमित रहेगा, इस पर चर्चा हुई। दूसरी विशेष जांच टीम की औपचारिक नियुक्ति हुई। नागपुर-पुणे समन्वय के लिए

प्रोटोकॉल तय किया गया, जिसमें अब वानखेड़े टीम को साक्ष्य रिकॉर्ड में औपचारिक भूमिका दी गई है। पाटिल ने एक बात याद दिलाते हुए बैठक समाप्त की, जो पिछली सभी बैठकों और इस बैठक पर भी लागू होती है: इस स्तर की कोई भी जानकारी शेख और करण की दोहरी अनुमति के बिना इस कमरे से बाहर नहीं जाएगी।
इस बार लॉन्चर ठीक काम कर रहा था।

***

गोखले मुझसे पानी के डिस्पेंसर के पास गलियारे में मिले, जहाँ मैं अक्सर जाता हूँ क्योंकि वह खिड़की के पास है।
“कॉपर का पता,” उन्होंने कहा। उनके हाथ में फोन था। “सुरक्षा टीम से पहली रिपोर्ट तीस मिनट पहले आई है। औंध ऑफिस बिल्डिंग - तीसरी मंजिल, नासिक CIDCO परिसर जैसी ही इमारत। दरवाजे पर पंजीकृत कंपनी का नाम: सुरेश उद्योग, तीन साल पुराना। बिल्डिंग मैनेजर ने पुष्टि की है कि एक अकेला निवासी अनियमित अंतराल पर आता-जाता है, पुरुष, लगभग चालीस वर्ष का। पिछले चार दिनों से उसे नहीं देखा गया है।” वे रुके। “चार दिन पहले ही सिस्टम में पते दर्ज किए गए थे।”
मैंने कहा, "जब कुलकर्णी ने पलायन किया, तब उन्होंने भी पलायन किया।"
"या उससे पहले," गोखले ने कहा। "या तांबे के कहने पर कुलकर्णी ने कदम उठाया होगा। हमें अभी तक सुझाव की दिशा का पता नहीं है।" उन्होंने फोन रख दिया। "करण यह जानना चाहेंगे।"
मैंने गलियारे में करण को बताया। उसने इसे उस शांत भाव से स्वीकार किया जैसे कोई व्यक्ति किसी विशिष्ट जानकारी की प्रतीक्षा कर रहा हो और अब उसे अपने द्वारा निर्मित संरचना में उसका उचित स्थान दे रहा हो।

उन्होंने कहा, "रिकॉर्ड से पहले ही टैम्पा को समन्वय की जानकारी थी। टैम्पा जांच को कागजी कार्रवाई प्रणाली से अलग तरीके से देखता है। रिकॉर्ड ने उस बात की पुष्टि की जो वह निकटता के माध्यम से पहले से ही जानता था - जांच से जुड़े किसी ऐसे व्यक्ति के माध्यम से जो पूरी जानकारी दे रहा है।"
मैंने कहा, "एक सुरक्षित रास्ता। या फिर एक ऐसा रास्ता जो हमें अभी तक मिला ही नहीं है।"
“यह एक ऐसा रास्ता है जिस पर हमने अभी तक विचार नहीं किया है,” उन्होंने कहा। “भंडार संबंधी खुलासे एक पत्रकार को दी गई मौके की जानकारी थी। तांबे तक अंदरूनी पहुंच कार्यकारी खुफिया जानकारी है - यह वह नहीं है जो हमने खोजा है, बल्कि वह है जो हम खोजे गए तांबे के संबंध में कर रहे हैं। उन्हें एक अलग पहुंच की आवश्यकता है।” उन्होंने आंतरिक लेखा-जोखा करते हुए सीढ़ियों की दीवार की ओर देखा। “मुख्य अधिकारी द्वारा बताई गई प्रशासनिक खाता पहुंच दस्तावेज़ के पाठ के लिए थी। कार्यकारी छवि के लिए एक अलग स्रोत की आवश्यकता होगी।” वे रुके। “एक ऐसा स्रोत जो उन कमरों में मौजूद हो जहां कार्यकारी निर्णय लिए जाते हैं।”
हम कुछ देर तक सीढ़ियों पर खड़े रहे।
मैंने कहा, "जिन कमरों में पहले कार्यकारी निर्णय लिए जाते थे, वे ऐसे लोगों से भरे हुए थे जो अब सीमित प्रणाली में नहीं हैं।" "हां," उन्होंने कहा। "आज से, सीमित प्रणाली में केवल आज की बैठक के लोग ही शामिल होंगे।" वे जाने के लिए मुड़े। "प्रिया की तुलना।"
प्रिया द्वारा औपचारिक घाव प्रोफाइल तुलना - भवानी पेठ के प्रवेश और नागपुर के प्रवेश का प्रत्यक्ष विश्लेषण, दोनों राव की तकनीक की पुष्टि करते हुए - उस सुबह पूरी हो चुकी थी और जब हम

शाम 4:30 बजे फ्लैट लौटे तो वह सीमित स्थान में रखी हुई थी। उसने नासिक और भवानी पेठ प्रोफाइल के आधार पर उस्मानाबाद दस्तावेज़ की पूरी समीक्षा भी कर ली थी और चार पृष्ठों का विश्लेषण तैयार किया था, जिसका निष्कर्ष अंतिम पंक्ति में उसी स्पष्टता के साथ बताया गया था जो वह विस्तृत तुलना के माध्यम से निकाले गए निष्कर्षों के लिए रखती है।
उस्मानाबाद का घाव भवानी पेठ और नागपुर के घावों से अलग है। नासिक का घाव भी भवानी पेठ और नागपुर के घावों से अलग है, लेकिन दोनों के साथ एक ही प्रशिक्षण वर्ग में रहा है। उस्मानाबाद का घाव नासिक के साथ एक ही प्रशिक्षण वर्ग में रहा है, लेकिन इसमें भवानी पेठ-नागपुर के घावों की तरह कलाई घुमाने का विशिष्ट पैटर्न नहीं है। ये निष्कर्ष उस ढांचे के अनुरूप हैं जिसमें एक ही अपराधी भवानी पेठ और नागपुर स्थलों के लिए जिम्मेदार है और दो अन्य - जिनके ग्राफ एक दूसरे से और पहले वाले से अलग हैं - क्रमशः नासिक और उस्मानाबाद के लिए जिम्मेदार हैं।
तीन हाथ। दो नहीं। तीन।
मैंने करण से कहा, "तीन।" वह अपने फोन पर वही दस्तावेज़ पढ़ रहा था।
“प्रिया नासिक और उस्मानाबाद को अलग-अलग देखती है,” उन्होंने कहा। “हम उन्हें एक ही ग्राफ मान रहे थे – राव से अलग, लेकिन एक ही स्रोत से। वह कहती है कि वे आपस में भी अलग हैं।” उन्होंने फोन रख दिया। “तीन लोग राव के नजरिए से काम कर रहे हैं। राव भवानी पेठ और नागपुर के लिए। एक और व्यक्ति नासिक के लिए, राव के समान प्रशिक्षण वर्ग का, लेकिन आखिरी चाल अलग। तीसरा व्यक्ति उस्मानाबाद के लिए, सामान्य तौर पर उसी वर्ग का, लेकिन प्रिया अब उन्हें नासिक की रूपरेखा से भी अलग करती है।” वे रुके।

“□□□□□□□□□□ □□ □□□□□□ □□□□ □□ □□□□□□□□□□ □□□ □□□□□ □□ □□□□□□ □□□ □□□□□ □□ □□□ □□□ □□□□ □□□□□□ □□□□”
□□□□□ □□□, "□□□ □□□□□ □□ □□ □□ □□□□ □□□□□ □□□□□ □□□ □□□□□□□□□ □□□□ □□□ □□□□□□□□□ □□ □□ □□□□ □□□"
“□□□□□ □□ □□□□□,” □□□□□□□□ □□□□ “□□ □□ □□□□□ □□□□ □□□ □□ □□ □□□□□ □□□□□ □□□ □□□□□ □□□□ □□□ □□□ □□□ □□ □□□ □□□□ □□□□□□□ □□□ □□□□□ □□□□ □□□ □□□□□□□□□□ □□ □□□□□□ □□ □□□□ □□ □□□□”
□□□□□□□□ □□□□□□□□□□ □□ □□ □□□□□ “□□ □□□□□ □□ □□□□□□ □□□□□□□□ □□□□ □□ - □□ □□ □□ □□ □□□□□□ □□□□□□□□ □□□□ □□□ □□□ □□□□□□□□ □□□□□□□□□□ □□ □□□□□□ □□, □□ □□□□□ □□ □□□□□□ □□□ □□ □□□”
□□□□□ □□□ □□□ □□ □□ □□□□□ □□□□□ □□□ □□□□□ □□□ □□□□ □□□□□□ □□□ □□□□□ □□ □□□ □□□□:

— □□□ □□□□□□□□□ □□□ □□ □□□□□ □□□ □□ □□□□□□ □□□ □□□□□ □□ □□□□□ □□□□ □□ □□□□□□□□□□ □□□□□ □□ □□□ □□□□ □□□□□□□□□□ □□ □□ □□□□□□□□□□ □□□□□ □□ □□□ □□□, □□□□□□ □□□□□□□□ □□ □□□ □□□□ □□ □□□□□ □□□□□□□□ □□ □□ □□□□□□□□□ □□□□□□ □□ □□ □□□□□ □□□□□□□□ □□ □□□□ □□□□ □□□ □□□□□ □□□□ □□ □□ □□□□ □□ - □□□ □□ □□□□□□□□□ □□ □□□□□ □□□, □□□□□□□□□□ □□□□□ □□□ □□ □□□□□□□□□ □□ □□□□□□□□ □□ □□□□□□□□□□ □□ □□□ □□ □□□□□

□□□□□ □□□ □□□ □□? □□□□ □□□□□□□ □□□□□□□□□ □□□□□□□ □□? □□□ □□ □□ □□ □□□ □□□□□ □□□ □□?

— □□□ □□□□□ □□□□□□ □□□ □□ □□□□□ □□ □□□□ □□□□□ □□□ □□? □□□□□□ □□ □□□□ □□□□□ □□□□□ □□□□ □□□□ □□□ □□ □□ □□□□□□□□□□ □□ □□ □□□□ □□□□□□ □□ □□□□ □□□□ □□ □□□□□□ □□ □□□ — □□□□□□□□ □□ □□□□ □□□□□, □□□□ □□□□□ □□ □□□□□□□ □□

[illegible], [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]?

[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible] [illegible], "[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] - [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible], [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

जैसे उसे पोषण मिल रहा हो, न कि सिर्फ़ खाना, जो कि परीक्षा के तीसरे सप्ताह तक भोजन के साथ एक आम रिश्ता बन जाता है।
कुछ मिनट खाना खाने के बाद मैंने कहा, "निंबालकर।"
उसने ऊपर देखा।
“यह शिंदे के कैलेंडर में था,” मैंने कहा। “पहली रात – वह नाम जो उनके पेशेवर रिकॉर्ड में बिना किसी महत्व के पड़ा था, एक संदर्भ की प्रतीक्षा कर रहा था जो अभी तक नहीं आया था। पी. निम्बालकर, कार्यक्रम समन्वयक, प्रकाश सेवा प्रतिष्ठान। शिंदे के कैलेंडर में तीन साल के संशोधन दर्ज हैं। और लातूर रिट्रीट पंजीकरण रिकॉर्ड में – प्रतिष्ठान की मराठवाड़ा श्रृंखला के कार्यक्रम समन्वयक।” मैंने चम्मच नीचे रख दिया। “यदि निम्बालकर पांचवीं दिशा के प्रतिष्ठान समन्वयक हैं – लातूर-नांदेड़ मार्ग पर वह व्यक्ति जिसने समुदाय को विश्वसनीयता प्रदान की, जैसे गोडबोले ने नागपुर में की थी – तो पांचवीं दिशा कैलेंडर के उसी पृष्ठ से शुरू होती है जहाँ पहली हत्या हुई थी।”
“शिंदे के कैलेंडर में प्रकाश सेवा प्रतिष्ठान का एक संपर्क नंबर था,” उन्होंने कहा। “कार्यक्रम समन्वय में प्रतिष्ठान संपर्क की भूमिका वही होती है जो क्षेत्रीय स्तर पर सामाजिक संपर्क निवेशक की होती है – जरूरी नहीं कि निवेशक स्वयं हो, बल्कि वह व्यक्ति जो प्रतिष्ठान को निवेशकों के समुदाय से जोड़ता है। कार्यक्रम समन्वयक ही निवेशकों को कार्यशालाओं में लाता है।” वे थोड़ी देर रुके। “अगर निम्बालकर ने शिंदे को प्रतिष्ठान के निवेश दायरे में लाया, तो कहानी फिर से शुरू हो जाती है। पहले पीड़ित का संबंध पांचवें दृश्य के पीड़ित से प्रतिष्ठान के अपने कार्यों के माध्यम से जुड़ जाता है।” वे कुछ

[illegible] [illegible] “[illegible] [illegible] [illegible] [

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

— [illegible]

[illegible]

*[illegible]: [illegible] [illegible] [illegible]

*[illegible]: אה. [illegible], [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] אה [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] - אה [illegible] אה [illegible] [illegible], [illegible] אה [illegible] אה [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] אה [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] אה [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] אה [illegible] [illegible] [illegible] אה [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

[illegible] 7:15 [illegible] 9 [illegible]

[illegible]

> *[illegible] - [illegible]*

[illegible]:

> *— [illegible]*

[illegible]

हमें काम करना पड़ा।

अध्याय 10 - पाँचवीं दिशा
निंबालकर का ग्राफ सीमित सिस्टम पर सुबह 7:52 बजे आया, जिसका मतलब है कि गोखले सुबह 6 बजे से पहले से काम कर रहे थे। यह उनकी आदत है जब किसी जांच की समय सीमा घोषित नहीं की जाती है, लेकिन कमरे में मौजूद सभी लोग इसे समझते हैं - जैसा कि करण ने कल दोपहर पाटिल परिवार को बताया था, पांचवें दृश्य की अपनी गति थी, और गोखले समय सीमा को एक प्रक्रिया मानते हुए, समय सीमा पूरी होने तक या काम पूरा होने तक अपनी नींद को अपने शेड्यूल से बाहर रखते हैं।
मैंने सुबह की पहली चाय के साथ कॉफी टेबल पर रखे ग्राफ को पढ़ा। करण पहले से ही अपनी टेबल पर था, जिसका मतलब था कि मेरे जागने से चालीस मिनट पहले उसने इसे अपने फोन पर पढ़ लिया था। पुरुषोत्तम निम्बालकर, जिनकी उम्र तिरपन वर्ष है। उनका जन्म लातूर जिले में हुआ था। उन्होंने शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर से वाणिज्य में डिग्री प्राप्त की, जिसके बाद उन्होंने नगर निगम के ठेकेदारी क्षेत्र में दस वर्ष बिताए। चालीस वर्ष की आयु में उन्होंने इवेंट मैनेजमेंट और सामुदायिक आयोजनों के क्षेत्र में कदम रखा। उन्होंने लातूर के नागरिक आयोजन क्षेत्र में एक छोटा लेकिन टिकाऊ व्यवसाय स्थापित किया था: सरकारी आयोजनों की व्यवस्था, सांस्कृतिक आयोजनों का समन्वय, और सामुदायिक आयोजनों को सार्वजनिक रूप से मनाने की इच्छा और उन्हें सुचारू रूप से संपन्न करने के लिए आवश्यक बुनियादी ढांचे के बीच प्रशासनिक समन्वय। उनके व्यवसाय का नाम 'समर्थ इवेंट्स सर्विसेज' था और लातूर के व्यावसायिक केंद्र शिवाजी चौक पर उनका कार्यालय था। गोखले बताते हैं कि जिला स्तर पर उनके तीन संपर्कों के आधार पर उनकी यह प्रतिष्ठा थी कि वे

[illegible]

*[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible], [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

धीरे-धीरे वृद्धि, लहजे की गर्माहट में कमी। निम्बालकर ने यह उपस्थिति और संवाद के माध्यम से किया। तीन लोग जो कुछ ऐसा समझ चुके थे जिसे वे खुलकर कहने को तैयार नहीं थे, और जो बिना कहे ही उससे पीछे हटने की कोशिश कर रहे थे।
उनमें से दो की मौत हो चुकी थी।
"संपर्क बनाने का एक तरीका," करण ने अपनी मेज से बिना ऊपर देखे कहा। उसने मुझे चाय नीचे रखते हुए सुन लिया था।
मैंने कहा, "आज।"
“हम साढ़े नौ बजे निकलेंगे,” उन्होंने मुड़कर कहा। “क्योंकि यह राज्य सांस्कृतिक कार्यक्रम सर्वेक्षण है—एक सरकारी पहल जो मराठवाड़ा क्षेत्र में सामुदायिक कार्यक्रमों के बुनियादी ढांचे की समीक्षा कर रही है। निंबालकर की पेशेवर पृष्ठभूमि उन्हें स्वाभाविक रूप से जवाब देने वाला बनाती है। गोखले दस्तावेज़ तैयार कर रहे हैं। यह दो घंटे की बातचीत चलेगी।” मैंने कहा, "क्या दो घंटे काफी हैं?"
“इतना काफी होना चाहिए,” उन्होंने कहा। “हम पीछे नहीं हट सकते। उसी कारण से दोबारा संपर्क करना संयोग पर बहुत ज्यादा निर्भर करता है।” वे रुके। “मैं जानना चाहता हूँ कि वे क्या जानते हैं। उन्हें क्या शक है, यह नहीं – बल्कि वे वास्तव में क्या जानते हैं। इस अंतर से हमें पता चलेगा कि हमारे पास कितना समय है।” मैंने ग्राफ को फिर से देखा। गोखले ने तीन साल पहले एक सार्वजनिक कार्यक्रम से जो तस्वीर ली थी, उसमें एक हट्टा-कट्टा आदमी, लगभग पचास साल का, गहरे रंग का कुर्ता पहने, माथे पर चश्मा लगाए, एक खुले मंच पर खड़ा था, जिसके पीछे मराठवाड़ा की सपाट रोशनी पड़ रही थी। उसके चेहरे पर एक ऐसे व्यक्ति का भाव था जो इतने लंबे समय से आयोजन कर रहा था कि आयोजन उसके लिए अदृश्य हो

गया था - व्यवस्था संबंधी कार्य पृष्ठभूमि में चल रहे थे जबकि मुख्य कार्य कार्यक्रम के लिए उपलब्ध था।
तीन महीनों के भीतर, इस व्यक्ति को एक ऐसी बात समझ आ गई थी जिसकी वजह से दो अन्य लोगों की जान चली गई थी। संपर्क विधि का प्रश्न यह था कि क्या हम उन्हें यह बताए बिना कि हम उन्हें किससे बचा रहे हैं, उनके पर्याप्त करीब पहुँचकर उनकी रक्षा कर सकते हैं। मैं यात्रा की तैयारी करने गया था।
हम सुबह 9:30 बजे पुणे से निकले, चार मिनट देरी से। करण ने घड़ी देखकर और फिर दोबारा देखकर इस बात पर बिना कुछ कहे गौर किया। हमारा रास्ता राष्ट्रीय राजमार्ग 35 था, जो सोलापुर से दक्षिण की ओर जा रहा था - वही राजमार्ग जो पुणे को मध्य मराठवाड़ा क्षेत्र से जोड़ता है, वह सड़क जो घाटों के पूरी तरह समाप्त होने और पठार के शुरू होने के बिंदु पर हमेशा ऐसा प्रतीत होता है जैसे महाराष्ट्र की एक अलग ही पहचान में प्रवेश कर रही हो। तट की पहचान, घाटों, कोंकण और समुद्र की पहचान, ढलान के बिंदु पर समाप्त हो जाती है। पठार की पहचान तल से शुरू होती है, और यह एक लंबी, शुष्क, अधिक दृढ़ पहचान है - एक ऐसी भूमि की पहचान जिसे समुद्र का सहारा नहीं है और इसलिए उसने समुद्र के साथ काम करना सीख लिया है।
करण गाड़ी चला रहा था। मैंने ग्राफ नोट्स पढ़े और अपने फोन पर गोखले द्वारा लातूर जिले में प्रतिष्ठान कार्यक्रम के इतिहास पर संकलित अतिरिक्त सामग्री पढ़ी। सोलापुर तक पहले एक सौ चालीस किलोमीटर तक सड़क अच्छी थी, उसके बाद बदल गई - मराठवाड़ा के मध्य भाग में राजमार्गों की स्थिति ऐसी थी कि वे केवल माल ढुलाई और लंबी दूरी तय करने के लिए बने थे। हम दोपहर 1:51 बजे सोलापुर

पहुंचे, बीस मिनट रुके और फिर दक्षिण-पूर्व दिशा में लातूर की ओर चल दिए।
मैंने किलोमीटर के निशान गिने। लंबी यात्राओं में यह एक आदत बन जाती है – गिनने से एक लय बनती है जिससे मन में विचार चलते रहते हैं। सड़क की नीरसता इसे बाधित नहीं करती, क्योंकि संख्याएँ एक तरह की संगति होती हैं जिन्हें किसी लक्ष्य की आवश्यकता नहीं होती। सोलापुर बाईपास से लातूर जिले के पहले चिन्ह तक तैंतालीस निशान थे। दोपहर की रोशनी पठार पर सीधी पड़ रही थी और फिर, जैसे- जैसे हम पूर्व की ओर बढ़े, वह धीरे-धीरे बाईं ओर ढलने लगी।
हम दोपहर 2:48 बजे लातूर पहुंचे।

***

लातूर एक ऐसा शहर है जिसका पुनर्निर्माण 1939 के बाद हुआ। भूकंप से पहले का शहर अब टुकड़ों में बिखरा हुआ है: व्यापारिक केंद्र में कुछ पुरानी इमारतें, एक मस्जिद, और कुछ नागरिक भवन जो अपनी स्थिति के अनुसार बचे हुए हैं। इनके आसपास और भीतर, भूकंप के बाद का शहर बसा हुआ है – बाद में योजनाबद्ध ग्रिड पर बने आवासीय क्षेत्र, चौड़ी सड़कें, और नागरिक संस्थान जिनका पुनर्निर्माण उनके पुराने संस्थानों से अलग मानकों पर किया गया है। एक ही स्थान पर दो शहर बसे हुए हैं, और दोनों में एक ही आबादी का आवागमन होता है। एक ऐसा शहर जिसने अपना पुनर्निर्माण किया है, वह जानता है कि उसकी ज़मीन में क्या क्षमता है, और वह इसे भूलता नहीं है।
शिवाजी चौक स्थित निम्बालकर का कार्यालय एक व्यावसायिक इमारत की दूसरी मंजिल पर था, जिसके भूतल पर चिकित्सा सामग्री की दुकान और तीसरी मंजिल पर एक चार्टर्ड अकाउंटेंट का कार्यालय था। इमारत की सीढ़ियों से फर्श साफ करने वाली मशीन और बंद सीढ़ियों

की खास तरह की सीलन की गंध आ रही थी - सर्दियों के मौसम की शुष्कता के लिए हवा अभी उतनी ठंडी नहीं हुई थी, दीवारों में मानसून की नमी अभी भी बाकी थी। दूसरी मंजिल के दरवाजे पर एक बोर्ड लगा था: समर्थ प्रोग्राम सर्विसेज। इसके नीचे, छोटे अक्षरों में, सेवाओं की एक सूची थी जो एक ऐसे व्यक्ति के बायोडाटा की तरह थी जिसने कभी भी अपनी सेवाओं के लिए मना नहीं किया: सरकारी कार्यक्रम, सांस्कृतिक कार्यक्रम, शादी की व्यवस्था, कॉर्पोरेट बैठकें, सामुदायिक उत्सव।
करण ने दरवाजे पर दस्तक दी।
दरवाजा खोलने वाला व्यक्ति बिल्कुल अपनी तस्वीर जैसा था, ठीक वैसे ही जैसे सक्षम लोगों की तस्वीरें उनके व्यक्तित्व से मेल खाती हैं - बिना किसी अहंकार के। निंबालकर दृढ़ और चौकस थे, उनके चश्मे अब माथे पर नहीं बल्कि नाक पर थे, उन्होंने हल्के सूती कमीज और पैंट पहनी हुई थी, और वे अपने कार्यस्थल में सहजता से काम कर रहे थे। उन्होंने हमें संक्षिप्त और प्रभावी ढंग से परख लिया, मानो वे इस कार्यालय में कई लोगों से मिलते रहे हों और पहले पांच सेकंड में ही किसी के आने का उद्देश्य समझ लेते हों। उन्होंने हममें क्या समझा, यह मैं नहीं कह सकता। उन्होंने दरवाजा खुला रखा।
"पुरुषोत्तम निम्बालकर?" करण ने कहा.
"जी हां," उन्होंने कहा। "कृपया अंदर आइए।"
कार्यालय में एक कार्यात्मक स्थान था जिसे दिखावे के लिए नहीं बल्कि कार्य-संपन्न तरीके से व्यवस्थित किया गया था—लेबल लगी अलमारियों पर फाइलें, अलग-अलग चरणों में खाली की जा रही दो ट्रे वाली एक मेज, अगले तीन सप्ताहों की घटनाओं की समयरेखा वाला एक व्हाइटबोर्ड। आगंतुकों के लिए दो कुर्सियाँ। कोने में एक पानी

का डिस्पेंसर। उनकी डेस्क के पीछे की दीवार पर: एक सामुदायिक उत्सव की मुद्रित तस्वीर, खुले में सौ लोग, उस पर लिपटा एक रंगीन कपड़ा, फ्रेम के बाईं ओर निंबालकर स्वयं उसी मुद्रा में दिखाई दे रहे हैं जैसे उस सार्वजनिक उत्सव की तस्वीर में थे—मौजूद और साथ ही साथ सब कुछ संचालित करते हुए।
उन्होंने करण की दलीलों को ध्यानपूर्वक सुना, मानो वे अनेक ब्रीफिंग सुन चुके हों और उनका सार समझना जानते हों। राज्य सांस्कृतिक कार्यक्रम सर्वेक्षण, मराठवाड़ा के सामुदायिक कार्यक्रम अवसंरचना की समीक्षा, साक्षात्कार के लिए स्थापित क्षेत्रीय रिकॉर्ड वाले विशेषज्ञों का चयन। उन्होंने उन बिंदुओं पर सहमति जताई जो ऐसे सर्वेक्षणों के कार्य के बारे में उनकी अपनी समझ से मेल खाते थे, आयोग के प्राधिकरण के बारे में एक प्रश्न पूछा - जिसका उत्तर गोखले के दस्तावेज़ में स्पष्ट था - और फिर अपनी कुर्सी पर इस भाव से बैठ गए जैसे उन्होंने सहयोग करने का निर्णय ले लिया हो और अब आवश्यक समय दे रहे हों।
उन्होंने लातूर जिले में कार्यक्रमों के बुनियादी ढांचे के बारे में चालीस मिनट तक बात की। वे सटीक और शांत थे, ठीक वैसे ही जैसे लोग तब होते हैं जब वे अपने विषय को इतनी अच्छी तरह जानते हैं कि वे सोच-समझकर ही उस पर बात कर सकते हैं। करण ने सर्वेक्षण के प्रश्न पूछे और निम्बालकर ने उनके उत्तर दिए, और मैं अपनी नोटबुक में लिखता रहा, और दोपहर की रोशनी में कार्यालय का माहौल धीरे-धीरे बदलता गया।
तब करण ने कहा: "संस्था से जुड़े रिट्रीट कार्यक्रम? हम सर्वेक्षण में सामुदायिक कल्याण कार्यक्रमों को भी शामिल कर रहे हैं। प्रकाश सेवा प्रतिष्ठान इस क्षेत्र में सक्रिय है।"

एक विराम। ज़्यादा देर नहीं—दो सेकंड, शायद तीन। लेकिन बातचीत में आए बाकी विरामों से यह विराम अलग था। यह एक ऐसी स्थिति थी जिसमें व्यक्ति जानकारी को याद करने की कोशिश कर रहा था, मानो वह अपने सुव्यवस्थित मानसिक भंडार में सही जानकारी खोज रहा हो। यह विराम कुछ अलग था।
"हां," निम्बालकर ने कहा। "कुछ समय के लिए।"
मुझे पता चला है कि आपकी कंपनी ने लातूर में उनके कई कार्यक्रमों का समन्वय किया था।
उन्होंने कहा, "तीन रिट्रीट। दो साल में। आखिरी वाला चौदह महीने पहले हुआ था।"
"क्या आप अब उनके कार्यक्रम में भाग नहीं ले रहे हैं?"
फिर वही ठहराव। उसने एक पल के लिए मेज की सतह को देखा, फिर करण की ओर।
"काम पूरा हो गया है," उन्होंने कहा। उन्होंने यह बात बड़ी सावधानी से कही, जिसमें शब्दों का चुनाव सटीक तो था, लेकिन पूर्णता नहीं थी।
करण ने इंतजार किया।
साक्षात्कार के दौरान करण की एक तकनीक यह है - एक ऐसा विराम जो प्रश्न नहीं पूछता बल्कि एक ऐसा स्थान बनाता है जिसमें उत्तर स्वयं प्रकट हो सके। इसके लिए धैर्य और मौन को स्वीकार करने की इच्छाशक्ति की आवश्यकता होती है, क्योंकि मौन वह कर सकता है जो शब्द नहीं कर सकते। अधिकतर लोग मौन को भर देते हैं। जो लोग मौन को नहीं भरते, वे वे लोग होते हैं जिन्होंने सचेत रूप से यह निर्णय लिया होता है कि वे क्या कहेंगे और क्या नहीं कहेंगे, और ऐसे लोगों में, मौन आपको बताता है कि एक निर्णय लिया जा चुका है, भले ही वह यह न बताए कि वह निर्णय क्या है।

निम्बालकर ने इसे भरा।
उन्होंने कहा, "मुझे कुछ चिंताएँ थीं। कुछ वित्तीय व्यवस्थाओं को लेकर। मैंने उचित आंतरिक माध्यमों से उन्हें उठाया। लेकिन प्रतिक्रिया संतोषजनक नहीं थी।" वे थोड़ी देर रुके और फिर बोले, "मैंने निष्कर्ष निकाला कि अब मेरा इसमें शामिल होना उचित नहीं है।"
“क्या चिंताएँ थीं?” करण ने कहा। उसकी आवाज़ में कोई बदलाव नहीं आया था। सर्वेक्षण के प्रश्नों के समान ही लहजा था।
निम्बालकर ने उसे काफी देर तक देखा। उसकी आँखों में एक ऐसे व्यक्ति का चिंतन झलक रहा था जो महीनों से कुछ छिपाए बैठा था और अब, एक ऐसे कार्यक्रम में जो संचार और बुनियादी ढांचे के बारे में होना चाहिए था, यह आकलन कर रहा था कि उसके सामने बैठा व्यक्ति वह व्यक्ति है जिसे वह अपनी बात बता सकता है या नहीं। "क्या मैं आपसे कुछ पूछ सकता हूँ?" निम्बालकर ने कहा। "बिल्कुल," करण ने कहा।
उन्होंने कहा, "यह सर्वेक्षण, क्या वास्तव में कार्यक्रम के बुनियादी ढांचे के बारे में है?"
कमरे की गुणवत्ता में बदलाव आया। बहुत ज़्यादा नहीं - न रोशनी में, न आवाज़ में। लेकिन निम्बालकर ऐसे व्यक्ति थे जो कमरे के माहौल को भांप लेते थे, और उन्होंने ऐसा किया भी, और इस ज्ञान ने उन्हें उस स्थान तक पहुँचा दिया जो उस उद्देश्य से परे था।
करण कुछ देर चुप रहा। फिर उसने कहा, "यह सवाल पूछने का क्या फायदा?"
निंबालकर ने कहा, "सवाल बहुत अच्छे थे। बहुत विस्तृत थे। लेकिन प्रतिष्ठान वाले सवाल के बाद का सवाल अलग था। सर्वे के सवाल एक जैसे थे, एक जैसे नहीं थे।" उन्होंने मेरी तरफ देखा, फिर करण की

तरफ। "और दस्तावेज़ सहायक लिखता ही रहा। जो सर्वे के लिए बिल्कुल सही है। लेकिन जब मैंने कहा कि काम पूरा हो गया है, तो लिखावट की गति बदल गई।"
मैंने बिना लिखे ही यह बात समझ ली: वे देखते हैं। वे बीस वर्षों से कार्यक्रमों का आयोजन कर रहे हैं, जिसका अर्थ है कि वे बीस वर्षों से कमरे देख रहे हैं, और उन्होंने लेखन की गति में बदलाव देखा है।
करण ने एक पल के लिए मेज की ओर देखा – ठीक उसी तरह जैसे निम्बालकर ने किया था, जो मुझे नहीं लगता कि संयोगवश था। फिर उन्होंने कहा: “जांच चल रही है। मैं आपको इसकी सीमा या इसके विषय के बारे में नहीं बता सकता। मैं आपको बता सकता हूँ कि प्रतिष्ठान के संबंध में आपका नाम सामने आया है, और इस बातचीत का उद्देश्य आपको डराए बिना आपके संपर्कों और आपकी चिंताओं के आधार को समझना था।” वे रुके। “सर्वेक्षण के दस्तावेज़ असली हैं। सर्वेक्षण मौजूद है। यह बातचीत उनमें एक वैध साक्षात्कार के रूप में दर्ज की जाएगी। हमारी उपस्थिति के बारे में कुछ भी उस रिकॉर्ड से आगे जाने की आवश्यकता नहीं है।” फिर एक और विराम। “लेकिन अगर आपको प्रतिष्ठान की वित्तीय व्यवस्थाओं के बारे में कोई चिंता है, और यदि वे चिंताएँ सामान्य के बजाय विशिष्ट हैं, तो मैं उन्हें सुनना चाहता हूँ।”
निम्बालकर कुछ देर वहीं बैठे रहे। फिर उन्होंने अपनी मेज का बायां दराज खोला और एक मैनीला फोल्डर निकाला। उन्होंने उसे उन दोनों के बीच मेज पर रख दिया।
उन्होंने कहा, "मैंने इसे आठ हफ्ते पहले बनाया था। मुझे नहीं पता था कि इसे किसे दूं। मुझे यकीन नहीं था कि यह किसी को देने

लायक चीज है या ऐसी चीज जिसे कोई व्यक्ति अपने पास तब तक रखे जब तक कि यह अपने आप गायब न हो जाए।"
करण ने तुरंत फोल्डर की ओर हाथ नहीं बढ़ाया। "इसमें क्या है?" “तीन दस्तावेज़ों की प्रतियां,” निम्बालकर ने कहा। “दो साल पहले फाउंडेशन द्वारा जारी किया गया एक वित्तीय सारांश, जिसमें बताया गया है कि सामुदायिक योगदान का प्रबंधन और वितरण कैसे किया जाता है। उसी अवधि के लिए फाउंडेशन संगठन द्वारा जारी किया गया एक ऑडिटेड स्टेटमेंट, जो मुझे नागपुर की एक अकाउंटिंग फर्म में एक संपर्क के माध्यम से मिला। और इन दोनों के बीच का अंतर।” उन्होंने फ़ोल्डर पर नज़र डाली। “सामुदायिक संपर्कों को दिए गए सारांश में एक ऐसे मॉडल का वर्णन है जिसमें योगदान से कार्यक्रम का वित्तपोषण किया जाता था। ऑडिटेड स्टेटमेंट में एक ऐसे मॉडल का वर्णन है जिसमें कार्यक्रम एक लागत केंद्र था और योगदान से किसी बिल्कुल अलग चीज़ का वित्तपोषण किया जाता था।” उन्होंने ऊपर देखा। “मैंने तीन महीने खुद को यह समझाने में बिताए कि मेरी गणना गलत हुई है। लेकिन ऐसा नहीं था।”
करण ने फ़ोल्डर उठाया। उसने उसे भावहीन होकर पढ़ा – ठीक उसी तरह जैसे वह हर चीज़ पढ़ता है, यानी बिना किसी सहमति या आश्चर्य के, बिना किसी ऐसी जानकारी के जिसे सामने वाला समझ सके। उसने चार मिनट तक पढ़ा। फिर उसने फ़ोल्डर बंद किया और उसे वापस मेज़ पर रख दिया।
उन्होंने कहा, "जब आप कहते हैं कि आपने उचित आंतरिक चैनलों के माध्यम से चिंताएं उठाईं, तो आपने उन्हें किसके साथ उठाया?" “तांबे नाम का एक आदमी,” निंबालकर ने कहा। “सुरेश तांबे। मुझे बताया गया था कि वह प्रतिष्ठान के मराठवाड़ा क्षेत्र के कार्यकारी समन्वयक हैं। वह पिछले साल दो बार लातूर आए थे। शांत

[illegible] [illegible] [illegible]" [illegible] [illegible] [illegible] "[illegible] [illegible] [illegible] [

पहले फोन पर बात की थी। उनकी भी ऐसी ही चिंताएँ थीं। वे अपनी सोच में मुझसे आगे थे।"
कमरे की स्थिति में फिर बदलाव आया - इस बार और भी स्पष्ट रूप से। करण ने अपने चेहरे के भावों को नियंत्रित रखा। मैंने अपनी कलम पकड़ी रखी।
"उन्होंने क्या कहा?" करण ने पूछा।
निम्बालकर ने कहा, “संस्था वैसी नहीं थी जैसा वह खुद को दिखाती थी। सामुदायिक कार्यक्रम—उनके शब्दों में—विकास के बजाय आय निकालने का एक जरिया थे। वे यह समझने की कोशिश कर रहे थे कि इसकी संरचना कितनी गहरी है।” वे रुके। “उन्होंने मुझे सावधान रहने को कहा। उन्होंने कहा कि जो लोग संस्था की वित्तीय संरचना के बारे में बहुत सवाल पूछते हैं, उनके साथ हमेशा अच्छा व्यवहार नहीं किया जाता।” वे फिर रुके। “मुझे लगा कि उनका मतलब प्रतिष्ठा पर पड़ने वाले प्रभाव से है। एक प्रभावशाली संस्था क्षेत्रीय ठेकेदार पर किस तरह का दबाव डाल सकती है, जो सामुदायिक संबंधों पर निर्भर करता है।”
उन्हें अभी तक यह पता नहीं था कि गोडबोले की मृत्यु हो चुकी है। जांच के सार्वजनिक रिकॉर्ड में उनका नाम केवल नागपुर में हुई एक संदिग्ध मौत के रूप में दर्ज था - प्रतिष्ठान से उनके संबंध का खुलासा नहीं हुआ था। निंबालकर संगठन की वित्तीय गतिविधियों और उस व्यक्ति की चेतावनी को लेकर चिंतित थे, जिसकी आवाज वे फिर कभी नहीं सुन पाएंगे, और उन्हें यह नहीं पता था कि यह चेतावनी पहले ही अपर्याप्त साबित हो चुकी थी।
करण ने कहा: "श्री निंबालकर, जांच के कुछ पहलू ऐसे हैं जो मैं इस समय आपके साथ साझा नहीं कर सकता। मैं आपको बता सकता हूं कि इस संवाद में आपका सहयोग सराहनीय और महत्वपूर्ण है। मैं आपको

[illegible]

"[illegible]"

[illegible]

"[illegible]"

[illegible]

"[illegible]"

[illegible]

"[illegible]"

[illegible]

***

[illegible]

[illegible]

*[illegible] [illegible] [illegible] [

[illegible]

— [illegible]

[illegible] [illegible] – [illegible] [illegible] [illegible], [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] – [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

कामचलाऊ था, यात्रा के दौरान खाए गए भोजन की यही आम जाँच होती है। हम रात 10:48 बजे पुणे पहुँचे, जिससे दिन का कुल सड़क समय बारह घंटे से थोड़ा अधिक हो गया। रात ग्यारह बजे शहर में ऐसा माहौल था मानो दिन समाप्त हो गया हो और अब दिन के अंत और रात की पूर्ण शांति के बीच संक्रमण काल से गुजर रहा हो - रेस्तरां अभी भी रोशन थे, ऑटो-रिक्शा अभी भी चल रहे थे, लेकिन गति शोरगुल से उद्देश्यपूर्ण हो गई थी, सड़कें केवल उन लोगों से भरी थीं जो कहीं न कहीं जा रहे थे।
करण ने रात 10:52 बजे गोखले को फोन किया।
पंजीकरण का पता लगाने का काम फिर से शुरू हो गया था।
लाल रंग का स्कूटर - पुणे में पंजीकृत वाहन, जिसे शिंदे की हत्या से कुछ दिन पहले भवानी पेठ मिल के आसपास और वाघ की हत्या से पहले नासिक के सीताराम मंदिर के पास दो बार देखा गया था - सुलोचना माने नाम की एक महिला के नाम पर पंजीकृत था। 47 वर्षीय सुलोचना पुणे निवासी हैं और सदाशिव पेठ में रहती हैं। उनका पेशा सेवानिवृत्त स्कूल शिक्षिका है। उनका कोई आपराधिक रिकॉर्ड नहीं है। प्रतिष्ठान से उनका कोई ज्ञात संबंध नहीं है। राव, कुलकर्णी, तांबे या जांच के मौजूदा नेटवर्क में शामिल किसी भी व्यक्ति से उनका कोई ज्ञात संबंध नहीं है।
मैंने कहा, "एक सेवानिवृत्त स्कूल शिक्षक।"
“सदाशिव पेठ,” करण ने कहा। यह बात अपने आप में ही अटपटी लगती है – सदाशिव पेठ पुणे का एक पुराना रिहायशी इलाका है, जहाँ ब्राह्मण परिवार और उनकी सांस्कृतिक गतिविधियाँ बहुतायत में होती हैं, और यह भंडारकर संस्था और दक्कन जिमखाना दोनों से दो किलोमीटर की दूरी पर स्थित है। सदाशिव पेठ की किसी महिला का भवानी पेठ इलाके के इतने करीब होना असामान्य तो है, लेकिन अनसुना नहीं है

– [illegible] [illegible] [illegible]

लिए तैयार नहीं थी, लेकिन नोटबुक के एक संभावित ढेर के लिए पर्याप्त रूप से एकत्रित हो चुकी थी।
नासिक में मध्यम स्तर की हस्ती। प्रिया का निष्कर्ष स्पष्ट था: राव नहीं, कुलकर्णी नहीं, बल्कि उसी उन्नत श्रेणी में प्रशिक्षित कोई व्यक्ति। मैं पिछले दो दिनों से गोखले की सामग्री के माध्यम से नासिक के साक्ष्य अभिलेखों का पता लगा रहा था, और उस सामग्री में एक नाम दो बार एक ऐसे संदर्भ में आया था जिसे अभी तक जोड़ा नहीं गया था।
पहली बार दर्ज: फाउंडेशन के नासिक स्थित निवेशक रिकॉर्ड में, जिसे शेख ने वित्तीय दस्तावेज़ीकरण के हिस्से के रूप में प्राप्त किया था। निष्क्रिय निवेशक खाते के संबंध में एक प्रविष्टि, जिसमें पुनर्भुगतान प्रक्रिया दर्ज थी जो कभी पूरी नहीं हुई। निवेशक ने अठारह महीने पहले प्रारंभिक योगदान दिया था, नौ महीने पहले पुनर्भुगतान का अनुरोध किया था, और पुनर्भुगतान लंबित दर्ज किया गया था। खाते पर नाम: वी. शास्त्री।
दूसरी उपस्थिति: एसपी देशमुख की टीम द्वारा नासिक एसआईटी के द्वितीयक दस्तावेज़ीकरण में। नौ महीने पहले नासिक में आयोजित विस्तारित प्रतिष्ठान रिट्रीट में उपस्थित लोगों की सूची - वही रिट्रीट जिसमें वाघ ने साइट समन्वयक के रूप में काम किया था। एक प्रतिभागी ने रिट्रीट कार्यक्रम के बारे में एक औपचारिक शिकायत दर्ज कराई थी, जिसे प्रतिष्ठान के आंतरिक चैनलों के माध्यम से भेजा गया था। शिकायत प्राप्त हुई थी लेकिन उस पर आगे कोई कार्रवाई नहीं की गई। शिकायतकर्ता: वंदना शास्त्री, नासिक। रिट्रीट रजिस्टर में दर्ज व्यवसाय: पारंपरिक चिकित्सा व्यवसायी।

*— [illegible], [illegible] [illegible] [illegible] - [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]: [illegible] [illegible] [illegible] [illegible], [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

अठारहवें दिन की सुबह अपार्टमेंट में उसी तरह पहुंची जैसे लंबी यात्रा के बाद सुबह आती है: सामान्य से अधिक तनावपूर्ण, शरीर तैयार नहीं था, लेकिन रोशनी को शरीर की तैयारी में कोई दिलचस्पी नहीं थी। मैं सुबह सात बजकर पंद्रह मिनट पर कॉफी टेबल पर अपनी दूसरी कप चाय लेकर बैठा था - पहली चाय जागने और होश में आने के बीच के बीस मिनट के अंतराल में ही बन कर खत्म हो गई थी - और रात भर की उन चीजों को पढ़ रहा था जो मेरे सीमित दिमाग में जमा हो गई थीं।
सुलोचना माने के बारे में गोखले का अंतिम अपडेट सुबह 6:38 बजे आया। उन्होंने जिस अतिरिक्त रिकॉर्ड की मांग की थी - भवानी पेठ और नासिक के दृश्यों के आसपास के समय का उनके फोन का लोकेशन डेटा - वह प्राप्त हो चुका था। दो पन्नों के सारांश के अंत में उनका निष्कर्ष पाँच शब्दों में था: उनके बीच कोई कार्यकारी संबंध नहीं है।
आंकड़ों से पता चला कि वे उस रात भवानी मंदिर में मौजूद थे, और उनका समय शाम की आरती के समय से मेल खाता था। वे शिंदे की मृत्यु से पहले ही मंदिर छोड़ चुके थे। नासिक में, उनके स्थान के आंकड़ों के अनुसार वे दो अलग-अलग सुबह पंचवटी के गोदावरी घाट पर थे - जो तीर्थयात्रा का समय था। वे बाघ की हत्या वाली शाम से पहले ही नासिक छोड़ चुके थे।
एक देवी उपासक जो अपने मंदिर भ्रमण के दौरान उसी इलाके में जाती थी जहाँ दो हत्याएं हुई थीं, क्योंकि उन इलाकों में उसके नियमित मंदिर थे। लाल रंग का स्कूटर, पुणे में पंजीकृत। लाल साड़ी पहने एक लंबी कद-काठी की महिला। एक ऐसी महिला जिसका इस सब से कोई लेना-देना नहीं था।

*— [illegible] [illegible] [illegible] [illegible], [illegible] [illegible] [illegible]: [illegible] [illegible] [illegible]

[illegible]

> [illegible]

[illegible]
[illegible]
[illegible]

“राव पाल्टी स्थित अपने अपार्टमेंट और कैंपस में हैं। उन्होंने लातूर की यात्रा नहीं की है, लातूर स्थित संसाधनों से कोई संपर्क नहीं किया है, और आपूर्ति पक्ष की कोई ऐसी गतिविधि नहीं हुई है जिससे यह संकेत मिले कि पाँचवें दृश्य की सामग्री वहाँ मौजूद है।” उन्होंने बोर्ड की ओर देखा। “इसका मतलब है कि उन्होंने इसे अभी तक नहीं खोजा है, या उन्होंने निगरानी शुरू होने से पहले ही इसे खोज लिया था, या उनके पास तैनाती की ऐसी विधि है जिसमें हाल ही में यात्रा की आवश्यकता नहीं है।” वे रुके। “तीसरा विकल्प मुझे पसंद नहीं है।”
पूर्व-निर्धारित व्यवस्था। जांच शुरू होने से हफ़्तों या महीनों पहले ही लातूर में सामग्री पहले से ही मौजूद है। राव ने इतनी पहले से योजना बना रखी है कि जब भी उन्हें कार्रवाई करने का निर्णय लेना हो, तो केवल घटनास्थल पर पहुंचना ही पर्याप्त है, किसी पूर्व व्यवस्था की आवश्यकता नहीं है।
मैंने कहा, "अभयारण्य का स्थान। निंबालकर ने लातूर आश्रम का समन्वय किया था। उन्हें पता है कि उदगीर तालुका में कौन सी धर्मशाला का उपयोग किया गया था। यदि राव के पास प्रतिष्ठान के कार्यक्रम इतिहास से उस स्थान की जानकारी थी—"
"तो फिर शायद वो सामग्री वहां मिल जाए," करण ने कहा। उसने अपना फोन उठाया। "गोखले।"
गोखले को किया गया फोन संक्षिप्त और सीधा था: उदगीर धर्मशाला के गुप्त निरीक्षण का अनुरोध, जिसका समन्वय जांच से असंबंधित एक स्थानीय संपर्क व्यक्ति द्वारा किया जाना था, ताकि यह पता लगाया जा सके कि क्या वहां प्रतिष्ठान से संबंधित कोई सामग्री बची है। "गुप्त" शब्द दो बार बोला गया। गोखले ने पुष्टि की और फोन काट दिया।

"अब," करण ने कहा, "एक और सवाल।"
मैं कल रात से इस बारे में सोच रही थी। अनन्या देशमुख - यह नाम मैंने पहली बार दो हफ्ते पहले देखा था, जब मैं महाराष्ट्र की आध्यात्मिक अर्थव्यवस्था पर आठ महीने पहले प्रकाशित एक खोजी लेख पढ़ रही थी। यह एक विस्तृत लेख था, जिसे लिखने वाले ने एक साल तक विषय पर काम किया था और पाठकों पर भरोसा किया था कि वे पाँच हज़ार शब्दों तक इसे पढ़ेंगे। लेख विस्तृत और विश्वसनीय स्रोतों से भरा था। इसमें प्रतिष्ठान का नाम उन संगठनों में शामिल था जो महामारी के बाद के दौर में कल्याणकारी कार्यक्रमों और वित्तीय निवेश संरचनाओं को मिलाकर तेजी से विकसित हुए थे। पीछे मुड़कर देखने पर, वह लेख ही उस जांच की शुरुआत थी जो अब इस मुकाम पर है। किसी भी औपचारिक प्रणाली में किसी और के देखने से पहले ही उसने इसका स्वरूप देख लिया था।
उस लेख के बाद उन्होंने दो संक्षिप्त अनुवर्ती लेख प्रकाशित किए। सबसे हालिया लेख तीन सप्ताह पुराना था - मैंने इसे कल शाम सीमित प्रणाली के मीडिया निगरानी थ्रेड की खोज में पढ़ा, जिसे गोखले नियमित रूप से बनाए रखती हैं। वह लेख पहले लेख से छोटा था: पुणे के एक दैनिक समाचार पत्र में चार कॉलम में प्रकाशित, जो विशेष रूप से फाउंडेशन के मराठवाड़ा विस्तार पर केंद्रित था, जिसमें वित्तीय विवरण का स्तर ऐसा था जिससे पता चलता है कि उनके पास ऐसे दस्तावेज़ थे जिनका वे पूरी तरह से हवाला नहीं दे सकीं, लेकिन उन्होंने उन्हें स्पष्ट रूप से पढ़ा था। उन्होंने मराठवाड़ा क्षेत्र में तीन सामुदायिक संपर्कों का नाम लिया। उन्होंने निंबालकर का नाम नहीं लिया। उन्होंने सोलापुर स्थित एक निवेशक, नांदेड़ के एक सामुदायिक आयोजक और उस्मानाबाद के एक तीसरे व्यक्ति का नाम लिया, जिसका नाम मैंने दो बार पढ़ा।

उस्मानाबाद नाम जोशी के नाम से अलग था। जोशी पीड़ित थे। यह कोई और ही व्यक्ति था - एक सेवानिवृत्त सरकारी अधिकारी जिसने फाउंडेशन के उस्मानाबाद कार्यक्रम में निवेश किया था, जो स्पष्ट रूप से जीवित था, और जिसने स्पष्ट रूप से अनन्या देशमुख से बात की थी।
मैंने करण से कहा, "उसके पास ऐसे सूत्र हैं जो हमारे पास नहीं हैं। उस्मानाबाद में उसका संपर्क जोशी से नहीं है। वह एक ऐसा व्यक्ति है जो अभी जीवित है और पत्रकारों से बात कर रहा है। उसके पास एक सामुदायिक संपर्क है - ऐसे लोग जो चिंतित हैं और जिन्हें अभी तक निशाना नहीं बनाया गया है।"
"या फिर वे लोग जिनकी पहचान अभी तक अगले लक्ष्य के रूप में नहीं हुई है," करण ने कहा।
"हां," मैंने कहा। "इसीलिए दोनों दिशाओं में उसकी जानकारी जुटाना बेहद जरूरी है। उसके पास ऐसी जानकारी है जिसकी जांच को जरूरत है, और उसके स्रोत उसी व्यवस्था से खतरे में पड़ सकते हैं जो संस्था के खुलासे को नियंत्रित कर रही है।"
“क्या आपको उनके संपर्क विवरण मिल पाए हैं?” करण ने कहा।
मैंने कहा, "अखबार की वेबसाइट पर उनका संपर्क पृष्ठ है। उनके नाम के आगे उनकी संस्था का नाम भी लिखा है - वे पुणे में जर्नलिज्म फेलोशिप में कार्यरत हैं। मुझे लगता है कि सिम्बायोसिस इंस्टीट्यूट में हैं।" मैं थोड़ा रुका। "वे ज़्यादा दूर नहीं हैं।"
करण ने एक पल के लिए मेरी ओर देखा, उसके चेहरे पर एक ऐसा भाव था जिसे शब्दों में व्यक्त करना मुश्किल था - ऐसा भाव जो तब आता है जब कोई निर्णय मन में ले लिया गया हो और अब उसे शब्दों के बजाय भाव के माध्यम से बताया जा रहा हो, क्योंकि शब्दों की आवश्यकता

नहीं है। यह निर्णय बातचीत शुरू होने से पहले ही ले लिया गया था। उसने अनन्या का लेख भी पिछली रात पढ़ा था।
“पहले अखबार को फोन कीजिए,” उन्होंने कहा। “यह मानक प्रक्रिया है – आप महाराष्ट्र सांस्कृतिक अर्थव्यवस्था अध्ययन पर काम करने वाले शोधकर्ता हैं, आप आध्यात्मिक कल्याण क्षेत्र को कवर करने वाले उनके संवाददाता का साक्षात्कार लेना चाहते हैं। जांच का कोई जिक्र नहीं। शुरुआती संपर्क में संस्था का नाम भी नहीं लेना।” वे थोड़ी देर रुके। “अगर वह अच्छी हैं – और लेखों से यही लगता है – तो वे पहले पांच मिनट के भीतर ही बातचीत का विषय स्पष्ट कर देंगी। फिर हम आगे बढ़ सकते हैं।”
मैंने सुबह 10:17 बजे पुणे डेली को फोन किया। फोन उठाने वाले संपादकीय सहायक ने सहयोगपूर्ण और शांत स्वभाव से बात की, जैसा कि प्रकाशन कार्यालयों में सुबह के समय होता है, जब दिनभर के फैसलों का दबाव बढ़ने से पहले का माहौल होता है। उन्होंने मेरा संदेश लिया और कहा कि वे इसे आगे भेज देंगे। उन्होंने यह भी बताया कि उन्हें उम्मीद है कि अनन्या देशमुख दोपहर के भोजन के बाद कार्यालय में होंगी।
उसने दोपहर एक बजकर चौवालीस मिनट पर दोबारा फोन किया।
उनकी आवाज़ में एक ऐसी शख्सियत की झलक थी जिसने फ़ोन उठाने से पहले उसे पढ़ना सीख लिया हो—उन्हें बताया गया था कि यह एक शोध संबंधी कॉल है, और उन्होंने एक ऐसे पत्रकार की पेशेवर गर्मजोशी के साथ जवाब दिया जो शोध संबंधी कॉलों को गंभीरता से लेता है और साथ ही उनका विश्लेषण भी करता है। मैंने उन्हें वही ढांचा दिया जो करण ने बताया था। उन्होंने बिना रुके सुना।

मेरे बोलने के बाद उन्होंने कहा, "सांस्कृतिक अर्थव्यवस्था का अध्ययन। क्या इसका संबंध उस लेख से है जो मैंने तीन सप्ताह पहले प्रकाशित किया था?"
मैंने कहा, "यह किसी मिलती-जुलती सामग्री के पास हो सकता है," जो कि बिना जवाब दिए उत्तर देने का एक तरीका था।
एक और विराम। इस बार कम विराम। “मैं यह बातचीत आमने-सामने करना पसंद करूंगी,” उन्होंने कहा। “मैं उन लोगों से फोन पर संवेदनशील जानकारी पर चर्चा नहीं करती जिनसे मैं मिली नहीं हूं।” उन्होंने बिना किसी झिझक या संकोच के यह बात कही—ऐसा लग रहा था जैसे उन्होंने यह निर्णय व्यापारिक सिद्धांत के तौर पर लिया हो और उन्हें फोन करने वाले को समझाने की ज़रूरत नहीं है। “क्या आप पुणे में हैं?”
"हां," मैंने कहा।
"वैशाली," उसने कहा। "कल सुबह दस बजे। मैं पीछे वाले कोने में, खिड़की के पास वाली मेज पर मिलूंगी।" थोड़ी देर रुकने के बाद, "और तुम दोनों भी आना।"
उसने फोन काट दिया।
मैंने एक पल के लिए फोन को देखा, फिर करण को देखा।
"उसे नंबर मिल गया," उसने कहा। यह कोई सवाल नहीं था।
“उसके वापस कॉल करने से पहले,” मैंने कहा। “संपादकीय कार्यालय के संदेश और कॉल के बीच पैंतालीस मिनट का समय था। पुणे नंबर पर बेसिक ट्रेसिंग करने के लिए काफी समय था।” मैं रुका।
एक पल। फिर करण के चेहरे के भाव बदल गए, जो पूरी तरह से प्रशंसा तो नहीं थी, लेकिन उस गुण की पहचान थी जिसे जांच में पहले कभी ध्यान में नहीं रखा गया था।
"वैशाली," उसने कहा। "सुबह के दस बजे।"

***

[illegible]

— [illegible]?

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

*[illegible], [illegible], [illegible] [illegible] [illegible]

मैंने कॉफी टेबल से कॉर्कबोर्ड को काफी देर तक देखा। चार पिन। बॉक्स में पाँचवीं पिन। एक पेंसिल से बनाया गया मंडला ज्यामिति का अनुमानित चित्र - चार पुष्टिकरण बिंदु, एक परिकलित पाँचवीं दिशा, लातूर के दक्षिण में वह केंद्रीय क्षेत्र जहाँ करण ने पिछले सप्ताह प्रश्नचिह्न लगाया था, जो अब प्रश्नचिह्न नहीं बल्कि एक शहर था।
जांच की शुरुआत आधी रात को एक चक्की में सात लपटों और उनके बीच घुटनों के बल बैठे एक व्यक्ति के साथ हुई थी, और यह अठारहवीं शाम को वैशाली के एक पत्रकार और लातूर के एक कार्यक्रम समन्वयक से मिले एक मैनीला फोल्डर के साथ पहुंची, जो एक उचित बैठक के लिए आठ सप्ताह से इंतजार कर रहे थे।
कल अनन्या का दिन था।
पंखा चालू हो गया। रात 11 बजे के अपडेट के अनुसार, राव के अध्ययन कक्ष में बत्तियाँ अभी भी जल रही थीं।
वे टस से मस नहीं हुए।
पांचवीं पिन को हिलाया तक नहीं गया।
लेकिन ये दोनों चीजें बदलने वाली थीं।

प्रकरण ११ - पत्रकार
वैशाली, दक्कन में फर्ग्यूसन कॉलेज से कुछ ही दूरी पर स्थित है, और इसमें पुणे के पुराने संस्थानों की वह खासियत है जो लंबे समय तक खुले रहने के बाद आम हो जाती है - आम इस मायने में कि वे शहर के ताने-बाने में पूरी तरह घुलमिल जाते हैं, ठीक वैसे ही जैसे पचास साल से एक ही जगह पर खड़ा पेड़ अब परिदृश्य का हिस्सा नहीं रह जाता, बल्कि उसका ही एक भाग बन जाता है। रेस्टोरेंट सुबह जल्दी खुलता है और दक्कन जिमखाना की सुबह की आम भीड़ से भर जाता है: सेवानिवृत्त प्रोफेसर, लैपटॉप लिए छात्र, वे लोग जो छात्रों के जन्म से पहले से यहां आते रहे हैं और लंबे समय से अपनी पसंदीदा मेजों पर नियमित रूप से बैठते आ रहे हैं। यहां फिल्टर कॉफी की खुशबू और रसोई की एक अलग सी महक फैली हुई है, जो सुबह छह बजे से चल रही है और तीन घंटे में अपनी लय में आ चुकी है।
हम सुबह नौ बजकर चौवन मिनट पर पहुँचे। खिड़की के पास कोने वाली मेज पर कोई बैठा था, लेकिन वो व्यक्ति नहीं जिससे हमें मिलना था। वहाँ एक आदमी अखबार लिए बैठा था और ऐसा लग रहा था जैसे वो पिछले पैंतालीस मिनट से उसी कुर्सी पर बैठा हो। मैंने प्रवेश द्वार और कोने के बीच की मेजों को गिना - आठ - और ध्यान दिया कि कौन सी मेज प्रवेश द्वार और सड़क की खिड़की दोनों को सीधे देख सकती है। कोने वाली मेज से दोनों दिखाई दे रही थीं।
सुबह के दस बजकर दो मिनट पर, अखबार लिए हुए वह आदमी बिना कुछ ऑर्डर किए ही चला गया, उसने अखबार को इस सचेत चिंता के साथ मोड़ा कि वह अपना खाना खत्म करने के बजाय पेट में जगह बना रहा है, और जाने से पहले प्रवेश द्वार पर एक बार सिर हिलाया।
मैंने करण की तरफ देखा। वह पहले से ही दरवाजे की तरफ देख रहा था।
अनन्या देशमुख सुबह 10:03 बजे इससे बाहर आईं।

वह मेरी सोच से कम उम्र की थी—लगभग तीस या तीस के आसपास, और उसकी आँखों में एक ऐसी एकाग्रता थी जो कुछ लोगों में तीव्रता और दूसरों में ध्यान का प्रतीक होती है, और उसके मामले में दोनों ही भाव एक साथ थे। उसने एक साधारण गहरे नीले रंग का सलवार कमीज़ पहना था, एक कंधे पर मैसेंजर बैग टांगा हुआ था, और अगल-बगल की मेजों की ओर देखे बिना, वह रेस्तरां के उस पार एक कोने वाली मेज की ओर चली गई। वह हमारे सामने ऐसे सहजता से बैठ गई जैसे उसने पहले से ही अपनी जगह चुन ली हो।
हम दोनों के कुछ बोलने से पहले ही उसने कहा, “कल आप लातूर गए थे।” वह करण की ओर देख रही थी। “मैंने सड़क से निंबालकर का दफ्तर देखा था। मुझे यकीन नहीं था कि आप ही हैं, जब तक मैंने आज सुबह टोल बूथ के रिकॉर्ड में आपका नाम दर्ज नहीं कराया।” थोड़ी देर रुकने के बाद उसने कहा, “मैं पिछले छह हफ्तों से निंबालकर के बारे में जानकारी जुटा रही हूँ। मराठवाड़ा मार्ग पर मैं जिन चार सामुदायिक संपर्कों पर नज़र रख रही हूँ, उनमें से वह एक हैं। मैं अगले महीने उनसे संपर्क करने की योजना बना रही थी।” उसने हम दोनों की ओर देखा। “मुझे लगता है कि हम सांस्कृतिक अर्थव्यवस्था सर्वेक्षण के दायरे से बाहर निकल चुके हैं।” "हां," करण ने कहा।
"बहुत खूब," उसने कहा। "मुझे ऐसी बातें करना पसंद नहीं है जिन्हें दोनों पक्ष जानते हों कि वे जानबूझकर की जा रही हैं। इससे बातचीत का वह समय बर्बाद होता है जो महत्वपूर्ण है।"
जब वेटर आया, तो उसने कॉफी मंगाई। करण ने चाय मंगाई। मैंने कुछ नहीं मंगाया और नोटबुक खोल ली।
"तीन हफ्ते पहले आपने जो लेख प्रकाशित किया था," करण ने कहा।
"उस्मानाबाद का सूत्र - एक सेवानिवृत्त अधिकारी। वह कौन है?"

"मैं सूत्रों की रक्षा करती हूँ," उसने तुरंत कहा, बिना किसी नरमी या आक्रामकता के। यह पेशेवर सिद्धांतों का एक बयान था, ठीक वैसे ही जैसे उसने फोन पर मुझसे कहा था कि वह आमने-सामने मिलना पसंद करेगी। यह इनकार नहीं था - बल्कि एक स्पष्ट रुख था।
"मैं समझता हूँ," करण ने कहा। "मैं आपसे उसका नाम बताने के लिए नहीं कह रहा हूँ। मैं बस यह पूछ रहा हूँ कि क्या वह इस समय शारीरिक रूप से किसी खतरे में है जिसके बारे में जांच को जानना ज़रूरी है।"
एक पल का विराम। उसने करण की ओर ऐसे देखा जैसे वह बातचीत की दिशा का पुनर्मूल्यांकन कर रही हो। फिर बोली: "शारीरिक जोखिम को परिभाषित करो।"
करण ने कहा, "महाराष्ट्र में प्रतिष्ठान के सामुदायिक निवेश नेटवर्क से जुड़े तीन लोगों की पिछले अठारह दिनों में हत्या कर दी गई है। चौथा व्यक्ति कल से लागू किए गए अनौपचारिक सुरक्षा प्रोटोकॉल के तहत है। आपका उस्मानाबाद सूत्र, अगर वह प्रतिष्ठान से जुड़ा कोई सामुदायिक सदस्य या निवेशक था और अगर उसने प्रतिष्ठान की वित्तीय संरचना के बारे में सवाल पूछे थे, तो वह भी अन्य तीन लोगों की श्रेणी में आ सकता है।"
अनन्या ने अपना कॉफी कप नीचे रख दिया।
वह काफी देर तक चुप रही। उस पल मुझे लगा जैसे हिसाब-किताब चल रहा हो - यह हिसाब-किताब नहीं कि हम पर भरोसा किया जाए या नहीं, जो मुझे लगता है कि बैठने से पहले ही उसने कर लिया था, बल्कि यह हिसाब-किताब कि आठ महीने से जिस चीज़ पर वह काम कर रही थी और जिस व्यक्ति ने उसे जानकारी दी थी, उसके बारे में हमें बताने का क्या मतलब होगा, जिसका उसने अभी तक इस्तेमाल नहीं किया था। पत्रकार का हिसाब-किताब, जो जांचकर्ता के हिसाब-किताब से अलग

होता है: जांचकर्ता पूछता है कि जानकारी का मामले पर क्या असर पड़ता है, और पत्रकार पूछता है कि जानकारी का कहानी और जानकारी देने वाले व्यक्ति पर क्या असर पड़ता है, और इन दोनों सवालों के जवाब हमेशा एक जैसे नहीं होते।
“वे एक सेवानिवृत्त जिला राजस्व अधिकारी हैं,” उन्होंने कहा। “उस्मानाबाद के। उन्होंने दो साल पहले फाउंडेशन के उस्मानाबाद कार्यक्रम में निवेश किया था—एक मामूली रकम। उन्हें एक साल पहले वित्तीय अनियमितताओं के बारे में पता चला और उन्होंने आंतरिक रूप से इस बारे में चिंता जताई। प्रतिक्रिया वही थी जो मुझे लगता है कि आपने अन्य स्रोतों से सुनी होगी: रिपोर्ट दर्ज की गई, समीक्षा लंबित है, लेकिन कोई कार्रवाई नहीं की गई।” उन्होंने अपनी कॉफी की ओर देखा। “उन्होंने मुझसे इसलिए बात की क्योंकि वे चाहते थे कि फाउंडेशन के बाहर का कोई व्यक्ति भी उनकी जानकारी को जाने। वे इकहत्तर वर्ष के हैं और पिछले साल अपनी पत्नी के निधन के बाद से अकेले रह रहे हैं। वे ऐसे व्यक्ति नहीं हैं जो सुरक्षा की भीख मांगते हों। वे ऐसे व्यक्ति हैं जो चीजों को लिखकर रखते हैं और उम्मीद करते हैं कि उन्हें लिखना ही काफी होगा।”
"उसका नाम," करण ने कहा।
इस बार लंबा विराम. फिर: "मधुकर देशपांडे।"
करण ने इसे अपनी कमीज़ की जेब में रखे एक छोटे से कार्ड पर लिख लिया। वह इसे बाद में गोखले को भेज देगा। दोपहर होने से पहले ही देशपांडे का नाम सुरक्षा प्रोटोकॉल सूची में शामिल कर लिया जाएगा।
अनन्या ने कहा, "मैं उन्हें बताना चाहती हूं।"

“उन्हें बता दो,” करण ने कहा। “कि उनकी चिंताओं को उन लोगों के सामने उठाया गया है जिनके पास उन पर कार्रवाई करने के साधन हैं। जब तक आप उन्हें किसी सत्यापित सूत्र से इसकी जानकारी नहीं दे देते, तब तक वे इस प्रतिष्ठान के बारे में किसी और से बात न करें।” वह थोड़ी देर रुका। “उन्हें जांच का दायरा मत बताओ। ऐसा नहीं है कि हमें उन पर भरोसा नहीं है—जितने ज़्यादा लोगों को दायरे का पता चलेगा, जानकारी लीक होने का दायरा उतना ही बढ़ जाएगा, और हम पहले ही दो बार इसका अनुभव कर चुके हैं, जिससे जांच में देरी हुई है और एक संदिग्ध लापता हो गया है।”
उसने सिर हिलाकर इसे स्वीकार किया। "मैं उन्हें काफी कुछ बता दूंगी," उसने कहा।
"मुझे पता है तुम मुझे सही-सही बताओगे," करण ने कहा।
उनके बीच एक क्षणिक सामंजस्य स्थापित हो गया - यह बिल्कुल सहज तो नहीं था, लेकिन उस तरह की आपसी पहचान थी जो दो ऐसे लोगों के बीच बनती है जिन्होंने यह पता लगाने में समय बिताया है कि क्या जानना आवश्यक है और क्या कहा जा सकता है, और जिन्होंने स्वतंत्र रूप से इस पर चलने के लिए सिद्धांतों का एक समूह विकसित किया है।
मैंने कहा, "आपके तीन लेख। पहला - आठ महीने पहले का 'आध्यात्मिक अर्थव्यवस्था' लेख। आपको व्यवस्था कैसी लगी?"
वह मेरी ओर मुड़ी। जब से हम बैठे थे, तब से वह मुझे और नोटबुक को देख रही थी, लेकिन उसने अपनी बातचीत करण की ओर मोड़ दी थी, जिसे मैं समझ गया था - करण का मतलब जांच था, और वह जांच के लिए शब्द ढूंढ रही थी। अब उसने मुझे वह ध्यान दिया जो वह अब तक नहीं दे रही थी।

“एफसीआरए अनुपालन समीक्षा प्रक्रिया में एक सूत्र के हवाले से,” उन्होंने कहा। “धार्मिक और आध्यात्मिक संस्थानों को विदेशी योगदान – प्रतिष्ठान उन संस्थाओं की सूची में था जिन्होंने लगातार दो वर्षों तक अपूर्ण रिटर्न दाखिल किए थे। अपूर्णता इतनी गंभीर नहीं थी कि औपचारिक कार्यवाही शुरू की जाए, लेकिन यह एक पैटर्न था। एक सुव्यवस्थित संस्था दो वर्षों तक अपूर्ण रिटर्न दाखिल नहीं करती जब तक कि अपूर्णता जानबूझकर न की गई हो।” वह थोड़ी देर रुकीं। “मैंने कुछ भी लिखने से पहले तीन महीने वित्तीय स्थिति का जायजा लेने में बिताए। पहला लेख मेरी न्यूनतम जानकारी पर आधारित था। सामुदायिक निवेश स्तर में सूत्रों के बिना मैं जितनी जानकारी जुटा सकती थी, उतनी जुटाई। दो अनुवर्ती लेख मेरी अधिकतम पहुँच तक ही थे।” उन्होंने मेरी ओर स्थिर दृष्टि से देखा। “तो मैं छह सप्ताह से मराठवाड़ा का प्रोफाइल तैयार कर रही हूँ।”
मैंने कहा, "आपके पास चार लिंक हैं। निंबालकर उनमें से एक हैं। बाकी तीन कौन हैं?"
"निंबालकर, उस्मानाबाद के देशपांडे, नांदेड़ के एक शिक्षक भोसले और सोलापुर की एक महिला, जो किसी आश्रम के बजाय प्रतिष्ठान से जुड़े सूक्ष्म ऋण कार्यक्रम के माध्यम से जुड़ी हुई हैं।" वह थोड़ी देर रुकी। "भोसले ने दो महीने से मेरे संपर्क का जवाब नहीं दिया है। मुझे चिंता होने लगी थी।"
करण ने मेरी तरफ देखा, फिर अनन्या की तरफ। "भोसले हमारे मौजूदा नेटवर्क में नहीं हैं। हमें उस प्रोफाइल की ज़रूरत है।"
"मैं इसे आज ही भेज दूंगी," उसने बिना किसी झिझक के कहा। सहयोग करने का निर्णय उसने बैठने से पहले ही ले लिया था।
मैंने कहा, "तुम्हारा नक्शा।"

उसने मेरी तरफ देखा।
मैंने कहा, "आपके पास नक्शा है। आप छह सप्ताह से मराठवाड़ा पर एक रिपोर्ट तैयार कर रहे हैं। एक पत्रकार जो किसी भौगोलिक कहानी पर काम करता है, वह नक्शा बनाता है। वह नक्शा कहाँ है?"
कुछ पल का विराम। फिर उसने अपना मैसेंजर बैग खोला और एक तह किया हुआ नक्शा निकाला - महाराष्ट्र का एक मुद्रित नक्शा, जैसा सड़क यात्रियों के पास होता है, जिस पर दो रंगों में हाथ से लिखे हुए नोट्स थे। नीली स्याही से प्रतिष्ठानों और घटनाओं के स्थानों को चिह्नित किया गया था। लाल स्याही से नामों और जोड़ने वाली रेखाओं को चिह्नित किया गया था। नक्शा दोनों रंगों से भरा हुआ था।
उसने उसे मेज पर एक कॉफी कप में खोलकर रख दिया।
मैंने उसे काफी देर तक देखा। फिर मैंने अपनी नोटबुक निकाली और उसे उस पृष्ठ पर खोला जिस पर मैंने नागपुर हवाई अड्डे के फर्श का मोटा-मोटा खाका बनाया था, और उसे उसके नक्शे के बगल में रख दिया।
उसने पहले मेरा स्केच देखा, फिर अपना नक्शा देखा, फिर मेरी तरफ देखा। "तुम भी वही कर रहे थे," उसने कहा।
मैंने कहा, "दूसरी दिशा में।"
करण आगे झुका। उसने एक ही समय में उसका नक्शा और मेरा रेखाचित्र देखा, उसके चेहरे पर एक ऐसा भाव था जिसे शब्दों में बयां नहीं किया जा सकता—ऐसा भाव जो तब आता है जब दो अलग-अलग दिशाओं में किए गए काम अलग-अलग शुरुआती बिंदुओं से आकर मिलते हैं, और यह मिलन कोई संयोग नहीं बल्कि पुष्टि होती है। उसने उसका नक्शा उठाया और उसे पढ़ने की दूरी पर रखा।

“मराठवाड़ा में आपके चार बिंदु,” उन्होंने कहा। “और यह प्रतिष्ठान का लातूर कार्यक्रम है।” उन्होंने कागज को छुए बिना एक उंगली से उन स्थानों को चिह्नित किया। “अगर मैं आपके नक्शे में पुष्ट हत्या स्थलों को जोड़ दूं तो—”
"मुझे दिखाओ," उसने कहा।
उन्होंने नक्शे को समतल किया। उन्होंने इशारा किया: भवानी पेठ। नासिक। उस्मानाबाद। नागपुर। और फिर, लातूर जिले के क्षेत्र पर अपनी उंगली रखते हुए कहा: "पांचवां।"
उसने कुछ देर तक पाँचों स्थितियों को देखा। फिर उसने धीमी आवाज़ में कहा: "यह एक पैटर्न है।"
करण ने कहा, "यह एक मंडल है। पाँच दिशाएँ। दिशात्मक और केंद्रीय। प्रत्येक दृश्य की व्यवस्था क्षेत्र के प्रमुख भक्ति अनुष्ठान की प्रतिमा-रचनात्मक परंपरा का उपयोग करती है - एक ऐसी परंपरा जिसके साथ संस्था नाममात्र रूप से जुड़ी हुई है।" अनन्या बेहद स्थिर थी। उसमें उस व्यक्ति की स्थिरता थी जिसने किसी आकृति को आकार देने के लिए कड़ी मेहनत की हो और जिसने उस आकृति को पहली बार पूरी तरह से देखा हो, और वह आकृति उसकी अपेक्षा से कहीं अधिक बड़ी हो।
उन्होंने कहा, "हत्या ही मुख्य मुद्दा है। कोई यह तर्क दे रहा है कि सत्ताधारी तंत्र ने उन परंपराओं को भ्रष्ट कर दिया जिनका प्रतिनिधित्व करने का वह दावा करता था।"
"हां," करण ने कहा।
उन्होंने कहा, "और पीड़ित वे लोग हैं जिन्होंने समुदाय को विश्वसनीयता प्रदान की। वे लोग जिन्होंने इसकी गारंटी दी।" "हो."

उसने कुछ देर नक्शे को देखा। फिर मेरी तरफ देखा। "तुम मध्यबिंदु की गणना कर रहे थे।"
मैंने कहा, "लगभग। मोटा अनुमान है कि यह मराठवाड़ा के मध्य में कहीं होगा - उस्मानाबाद के दक्षिण में, लातूर के उत्तर-पश्चिम में।"
उसने अपने बैग से एक पेंसिल निकाली और मेरी तरफ देखा। "क्या मैं ले सकती हूँ?"
"कृपया," मैंने कहा।
उसने मेरे नोटबुक से दिए गए निर्देशांकों का उपयोग करके अपने मानचित्र पर पाँच स्थानों को छोटे क्रॉस से चिह्नित किया - चार स्थान पक्के थे, एक लातूर में होने की संभावना थी। फिर उसने मुड़े हुए कार्ड पर नाप लगाई, मानो वह पहले भी इस तरह की भौतिक मानचित्र गणनाएँ बिना किसी डिजिटल उपकरण की सुविधा के, वास्तविक परिस्थितियों में कर चुकी हो। उसने पूर्व-पश्चिम अक्ष पर पुणे और नागपुर के बीच का मध्यबिंदु ज्ञात किया। उसने उत्तर-दक्षिण अक्ष पर नासिक और उस्मानाबाद के बीच का मध्यबिंदु ज्ञात किया। उसने लातूर के दक्षिण-पूर्व स्थान के अनुसार समायोजन किया। उसने पेंसिल की नोक से मानचित्र पर तीन छोटे निशान बनाए, उन पर विचार किया और जहाँ निशान मिलते थे वहाँ एक छोटा वृत्त बनाया।
उसने पेंसिल नीचे रख दी।
यह वृत्त बीड जिले में स्थित है। बीड शहर में नहीं, बल्कि उससे थोड़ा उत्तर और पश्चिम में, जिले के ग्रामीण मध्य भाग में, गोदावरी और मंजरा नदी बेसिन की उत्तरी सहायक नदियों के समतल कपास उत्पादक क्षेत्र में। अक्टूबर में सूखी ज़मीन। लाल मिट्टी। ऐसा इलाका जो महाराष्ट्र के पर्यटन मानचित्रों पर तो

[illegible], [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible], [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

*— [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] — [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible], [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] — [illegible] [illegible] [illegible], [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible], [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

[illegible] [illegible], "[illegible]" [illegible] [illegible] [illegible]

प्रतिपूर्ति अनुरोध का निपटारा नहीं हुआ है। उन्होंने नौ महीने पहले वाघ द्वारा आयोजित प्रतिष्ठान के एक सम्मेलन में औपचारिक शिकायत दर्ज कराई थी। उनके पेशेवर प्रशिक्षण में फिजियोथेरेपी भी शामिल है।” मैं थोड़ा रुका। “प्रिया ने नासिक में लगी चोट को मामूली हाथ की चोट बताया—राव के समान ही प्रशिक्षण वर्ग, बस कलाई की गति अलग है। इतने व्यापक शारीरिक प्रशिक्षण वाली पारंपरिक चिकित्सा चिकित्सक के पास प्रिया की मामूली चोट के लिए आवश्यक योग्यता होनी चाहिए।” मैंने कलम नीचे रख दी। “मुझे इस बात को लिखित रूप से बोर्ड तक ले जाने से पहले एक पुख्ता दस्तावेज़ चाहिए।”
करण ने मेरी ओर ऐसे भाव से देखा जैसे उसे अचानक पता चल गया हो कि एक ऐसा पहलू जिसके बारे में उसे पता नहीं था कि वह खेल में शामिल है, पिछली शाम से ही खेल में शामिल था और अब जांच-पड़ताल की संरचना के दरवाजे से प्रवेश करने के लिए जगह ढूंढ रहा है। “तुमने मुझे यह बात कल रात क्यों नहीं बताई?” उसने कहा।
मैंने कहा, "क्योंकि उसे एक और दस्तावेज़ चाहिए था।"
वह कुछ पल चुप रहा। फिर उसने अपना फोन उठाया और गोखले को फोन किया।
उन्होंने कहा, "वंदना शास्त्री, नासिक। पारंपरिक चिकित्सा की प्रैक्टिशनर। प्रतिष्ठान में निवेशक की फाइल निष्क्रिय है, नौ महीने से भुगतान लंबित है। मुझे प्रशिक्षण संबंधी रिकॉर्ड चाहिए - किसी भी पेशेवर संस्था में पंजीकरण, किसी भी संस्थान से संबद्धता, या किसी भी पाठ्यक्रम में उपस्थिति जिससे पता चले कि उनका प्रशिक्षण राव के समान ही व्यापक है। आज ही।"
उसने फोन रख दिया और मेरी तरफ मुड़कर देखा। "एक दस्तावेज़," उसने कहा।

मैंने पुष्टि की, "एक दस्तावेज़।"
अनन्या ने एक पत्रकार की तरह ध्यान से यह बातचीत सुनी, जिसे पता था कि वह जो सुन रही है वह उसकी मौजूदा रिपोर्ट के लिए नहीं है, बल्कि एक ऐसी कहानी को आकार दे रही है जिसका दायरा उस कहानी से कहीं बड़ा है जिसे वह इस कॉफी शॉप में लेकर आई थी। उसने इस दौरान कोई सवाल नहीं पूछा। उसने बातचीत खत्म होने तक इंतजार किया। "नासिक वाली घटना से जुड़ी महिला," उसने कहा। "क्या वह संदिग्ध है या फिर जांच के दायरे में आने वाली कोई व्यक्ति?"
"संदिग्ध व्यक्ति," करण ने कहा। "पुष्टि लंबित है।"
और अगर इसकी पुष्टि हो जाती है तो?
उन्होंने कहा, "तब नासिक घटना के लिए एक मध्यस्थ का नाम पता चल जाएगा और इस सिलसिलेवार घटनाओं को अंजाम देने वालों की जांच में पूरी जानकारी मिल जाएगी।"
अनन्या ने अपने नक्शे को देखा। पाँच क्रॉस, बीड जिले का छोटा गोला, और उसके आठ महीनों के काम के नीले और लाल निशान अब जांच की वास्तुकला के साथ एक ही भौतिक स्थान में मौजूद थे। उसने धीरे- धीरे, सोच-समझकर नक्शे को मोड़ा, ठीक वैसे ही जैसे कोई व्यक्ति किसी ऐसी चीज़ को मोड़ता है जिसे उसने लंबे समय तक अपने साथ रखा हो और जिसका अब वजन बदल गया हो।
“मैं इस कहानी पर काम करना जारी रखना चाहती हूँ,” उसने कहा। “ब्रेक के बाद। जब आप उस मुकाम पर पहुँच जाएँ जहाँ सार्वजनिक रिकॉर्ड पूरा होना ज़रूरी हो।” उसने करण की ओर देखा। “मेरे पास ऐसे स्रोत और दस्तावेज़ हैं जो औपचारिक जाँच रिकॉर्ड में नहीं होंगे—समुदाय के नज़रिए, वे निवेशक जो अभी ज़िंदा हैं और सार्वजनिक रूप से सामने आने से डरते हैं, उन लोगों के साथ जो हुआ उसकी पूरी कहानी, जिन तक सत्ता प्रतिष्ठान वास्तव में पहुँचा।

[illegible]

अगर वह शीर्ष पर होती तो कहानी और भी बेहतर होती। इस बारे में वह बिल्कुल सही है।

***

हम सुबह 11:31 बजे वैशाली से रवाना हुए।
करण ने गोखले को फोन करके देशपांडे, भोसले और राव परिवारों की पूरी वंशावली और निवास स्थान का पता लगाने का अनुरोध किया - विशेष रूप से बीड जिले से उनके किसी भी संबंध के बारे में। उन्होंने पाटिल के कार्यालय में फोन करके सुबह की घटनाओं की जानकारी दी और वारंट आवेदन की स्थिति की पुष्टि की। उन्होंने प्रिया को फोन करके यह सुनिश्चित किया कि औपचारिक आवेदन मजिस्ट्रेट के समीक्षा अधिकारी तक पहुँच गया है, जो सुबह 9:15 बजे हुआ था।
वारंट मजिस्ट्रेट के पास था। आवेदन की समीक्षा की समय सीमा चौबीस से अड़तालीस घंटे थी, जो इस प्रकार के आवेदनों के लिए मानक प्रक्रिया है।
हमने अपनी यात्रा शुरू की।
अपार्टमेंट पहुंचने से पहले ही गोखले का संदेश बारह बजकर उन्नीस मिनट पर आया।
दो बातें।
पहला मामला: उदगीर धर्मशाला। उदगीर तालुका में एक स्थानीय संपर्क द्वारा समन्वित एक गुप्त जांच, जो पास में ही एक कृषि सहकारी समिति चलाता था और एक पिछले, असंबंधित मामले में गोखले का ऋणी था। जांचकर्ता नगरपालिका सुविधा मूल्यांकन के अवसर पर सुबह 9 बजे धर्मशाला पहुंचा। हाल के महीनों में धर्मशाला का उपयोग बहुत कम हुआ था—निंबालकर के विवरण के अनुसार, संस्था का मराठवाड़ा रिट्रीट कार्यक्रम समाप्त हो चुका था। लेकिन

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]:

> *[illegible]*

मैंने करण से कहा, "एक तरफ हट जाओ।" वह सड़क के किनारे रुक गया।
मैंने वह नोट करण को दिखाया।
उसने उसे पढ़ा। उसने उसे दोबारा पढ़ा। उसने नोटबुक वापस कर दी और सामने से आ रहे वाहनों की ओर देखा।
“सराय,” उसने कहा। “अगर हम इसे तुरंत सुरक्षित कर लेते हैं, तो राव को पता चल जाएगा कि हमें लातूर के बारे में जानकारी है। अगर राव के पास कोई और तैयार जगह है जिसके बारे में हमें पता नहीं है, तो सराय को सुरक्षित करने से वह सामग्री उस जगह से हट जाएगी जिसके बारे में हम जानते हैं और पाँचवाँ दृश्य एक ऐसी जगह पर चला जाएगा जिसके बारे में हम नहीं जानते।”
मैंने कहा, "अगर हम कुछ नहीं करते हैं, तो सामग्री मौजूद है। राव वारंट पूरा होने से पहले लातूर जा सकता है और पांचवें दृश्य को अंजाम दे सकता है।"
“हमारे पास वारंट प्राप्त करने के लिए चौबीस से अड़तालीस घंटे हैं,” उन्होंने कहा। “अभी दोपहर के बाद का समय है। सबसे जल्दी वारंट कल दोपहर तक मिल सकता है। सबसे देर से परसों तक।” वे थोड़ी देर रुके। “राव आज सुबह पाल्टी स्थित विश्वविद्यालय परिसर में हैं। विश्वविद्यालय के कैलेंडर के अनुसार दोपहर में उनका एक सेमिनार है। पिछले चार दिनों से उनका आवागमन अपार्टमेंट से कैंपस और फिर अपार्टमेंट में ही रहा है। वे पुणे से बाहर नहीं गए हैं।”
मैंने कहा, "जब तक वे तैयार न हो जाएं, उन्हें पुणे से बाहर जाने की जरूरत नहीं है। सामग्री मौजूद है। निम्बालकर भी वहीं हैं। उन्हें बस जाने के लिए समय चाहिए।"

करण ने कहा, "हमें धर्मशाला को सुरक्षित किए बिना निम्बालकर को सुरक्षित करना है। हमें राव को यह बताए बिना निम्बालकर को वहां से निकालना है कि हमने पांचवीं दिशा की पहचान कर ली है।"
मैंने कहा, "सर्वेक्षण।"
करण ने मेरी तरफ देखा।
“सांस्कृतिक कार्यक्रम सर्वेक्षण,” मैंने कहा। “यह सच है – गोखले ने असली दस्तावेज़ तैयार किया है। निंबालकर को यह एक वास्तविक साक्षात्कार के रूप में मिल चुका है। यदि सर्वेक्षण के लिए पुणे में अनुवर्ती बैठक की आवश्यकता होती है – यदि सर्वेक्षण समन्वयक कल निंबालकर को फोन करके क्षेत्रीय अभ्यासकर्ताओं के साक्षात्कारों के राज्य स्तरीय संकलन के हिस्से के रूप में दो दिनों के लिए ब्रीफिंग हेतु पुणे में उनकी उपस्थिति का अनुरोध करते हैं, और उनके खर्चों का वहन करते हैं – तो निंबालकर पुणे में होंगे। वे लातूर में नहीं होंगे। वे शिवाजी चौक स्थित अपने कार्यालय में नहीं होंगे। वे एक ऐसे शहर में होंगे जहाँ जाँच की सुरक्षा प्रत्यक्ष रूप से नहीं बल्कि परिस्थितिजन्य रूप से की जाएगी।”
करण कुछ देर चुप रहा। उसने कहा, "यह दो दिन चलेगा। अगर हम सर्वेक्षण की अवधि बढ़ा दें तो शायद तीन दिन भी चल सकता है। लेकिन यह अनिश्चित काल तक नहीं चलेगा।"
मैंने कहा, "यह वारंट जारी होने तक चलेगा। हमें यही समय चाहिए।" उन्होंने फोन उठाया। गोखले को निर्देश मिले और उन्होंने दो मिनट के भीतर पुष्टि कर दी: सर्वेक्षण समन्वयक—एक कनिष्ठ अधिकारी जो शुरू से ही इस अभियान का दस्तावेजी चेहरा था—उसी शाम पांच बजे निंबालकर को फोन करेगा। अगली सुबह पुणे में एक अनुवर्ती ब्रीफिंग निर्धारित की जाएगी, जिसके लिए आवास की

[illegible] [illegible] [illegible] [

जानकारी जुटाई: दो सवाल, एक स्पष्टीकरण, और फिर पुष्टि कि वह कार्यदिवस समाप्त होने से पहले मजिस्ट्रेट के समक्ष प्रस्तुत करने के लिए एक पूरक पृष्ठ तैयार कर देगी। पूरक पृष्ठ संक्षिप्त होगा - मंडल के मध्य बिंदु से संबंधित जीवनी संबंधी जानकारी, दस्तावेजी प्रमाण के रूप में गोखले के स्थान की जानकारी। इसे विस्तृत करने की आवश्यकता नहीं थी। सरल तथ्य ही सबसे अधिक विश्वसनीय होते हैं।

***

हम दोपहर 1:07 बजे अपार्टमेंट पहुंचे।
यह संदेश गोखले के नासिक स्थित संपर्क से दोपहर 2:33 बजे आया। यह वही दस्तावेज़ था जिसका मैं पिछली शाम से इंतज़ार कर रहा था
– वही दस्तावेज़ जो वंदना शास्त्री को नोटबुकों के संभावित ढेर से कॉर्क बोर्ड तक ले जाएगा। नासिक संपर्क ने एक मानक व्यावसायिक पूछताछ अनुरोध के माध्यम से महाराष्ट्र राज्य पारंपरिक चिकित्सा व्यवसायी बोर्ड पंजीकरण अभिलेखागार तक पहुँच प्राप्त की। यह अभिलेखागार बोर्ड की वार्षिक प्रमाणन नवीनीकरण प्रक्रिया के हिस्से के रूप में पंजीकृत चिकित्सकों की सतत शिक्षा में उपस्थिति का रिकॉर्ड रखता था।
तीन साल पहले पुणे स्थित एक प्रशिक्षण केंद्र में पांच सप्ताह में आयोजित किए गए चालीस घंटे के एक्सटेंडेड प्रेसिजन एनाटॉमी पाठ्यक्रम के उपस्थिति रिकॉर्ड में - जो पारंपरिक बिंदु सिद्धांत और आधुनिक शारीरिक मानचित्रण के बीच संबंध पर केंद्रित था - एक ही सप्ताह की सहपाठी सूची में दो नाम साथ-साथ दिखाई दिए।
राव, ए. संबद्धता: एस.पी.पी.यू., पुणे. उपस्थिति: सभी पाँच सप्ताह, पूर्णकालिक.

[illegible], [illegible]. [illegible]: [illegible] [illegible], [illegible] [illegible]: [illegible] [illegible] [illegible] [illegible], [illegible] [illegible] [illegible]

[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible], [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

उसने कोई नई पिन नहीं लगाई - नासिक दृश्या के पास पहले से ही उसकी पिन थी। लेकिन उसने दराज से कागज का एक टुकड़ा निकाला और उस पर दो शब्द लिखकर उसे नासिक की पिन पर एक छोटी घड़ी के साथ चिपका दिया: शास्त्री, बनाम।
उन्होंने कहा, "वह एक संदिग्ध व्यक्ति है। अभी तक उसका नाम संदिग्ध के रूप में दर्ज नहीं किया गया है - प्रिया की प्रोफाइल फोरेंसिक अनुमान पर आधारित है, पहचान पर नहीं, और पाठ्यक्रम में उसकी उपस्थिति अवसर को दर्शाती है, कार्रवाई को नहीं। लेकिन अब वह हमारे साथ जुड़ गई है।"
मैंने कहा, "उनकी वित्तीय शिकायत है। भुगतान लंबित है। उन्होंने वाघ्स रिट्रीट में औपचारिक शिकायत दर्ज कराई है। नासिक में फाउंडेशन के संचालन से उनके दो संबंध हैं।"
“और बाघ मर चुके हैं,” करण ने कहा। “और शिकायत कभी पूरी नहीं हुई।” उसने नासिक पिन की ओर देखा। “सवाल यह है कि क्या उन्होंने अपनी शिकायत पर कार्रवाई की या उन्हें ऐसा करने का निर्देश दिया गया था? नासिक का दृश्य प्रतिष्ठान की चित्रात्मक शैली में तैयार किया गया था। उन्हें घाव के चित्रण को लागू करने का प्रशिक्षण दिया गया था। लेकिन क्या वे राव की श्रृंखला के बारे में जानते थे? क्या वे मंडल के बारे में जानते थे? या उन्होंने किसी व्यक्तिगत शिकायत पर कार्रवाई की और राव की योजना से स्वतंत्र होकर, प्रतिष्ठान में अपने अनुभव से लेआउट शैली को अपनाया?”
मैंने इस पर विचार किया। "यदि उन्होंने स्वतंत्र रूप से कार्य किया, तो यह व्यवस्था पद्धति का एक संयोग है - उन्होंने संस्था की प्रतीकात्मक व्यवस्था को इसलिए अपनाया क्योंकि वे संस्था के अधिष्ठाता सत्रों में भाग ले चुके थे और परंपरा को अच्छी तरह

समझते थे ताकि उसका उपयोग कर सकें। यदि वे राव द्वारा निर्देशित थे, तो वे एक श्रृंखला का हिस्सा होंगे।"
“प्रिया की खोज उन्हें राव से अलग करती है,” करण ने कहा। “चार दृश्यों में तीन घाव – राव ने भवानी पेठ और नागपुर के लिए, शास्त्री ने नासिक के लिए, कुलकर्णी ने उस्मानाबाद के लिए। अगर राव ने उन्हें निर्देशित किया, उन्हें मंचन की विधि और घाव के चित्रण का तरीका सिखाया और पुणे में रहते हुए उन्हें नासिक भेजा, तो इसके लिए उनके बीच समन्वय का एक माध्यम होना चाहिए जो हमें अभी तक नहीं मिला है।” वह रुके। “या फिर उन्होंने स्वतंत्र रूप से, उसी आधारभूत प्रशिक्षण से, जिसके आधार पर राव ने श्रृंखला की रचना की, वही मंचन विधि सीखी, और विधियों का यह मेल उतना संयोग नहीं है जितना लगता है – दो लोग जिन्होंने एक ही तरह के प्रशिक्षण सत्र और शरीर रचना विज्ञान के पाठ्यक्रम किए हैं, एक ही तरह की पीड़ा को व्यक्त करने के लिए एक ही तरह की मंचन शैली का चुनाव करते हैं।”
मैंने कहा, "दो लोगों की शिकायत एक जैसी है। एक ही संगठन के बारे में। एक ही समय पर।"
उन्होंने बोर्ड की ओर देखा। "वाघ प्रतिष्ठान से अपना नाम वापस ले रहे थे। शास्त्री ने शिकायत दर्ज कराई थी और उन्हें धन वापसी मिलनी थी। दोनों नासिक प्रतिष्ठान के सदस्य थे। अगर वे एक-दूसरे को जानते थे - अगर प्रतिष्ठान के नासिक स्थित ध्यान समुदाय इतना छोटा था कि संदेह होने पर सदस्य एक-दूसरे से सलाह लेते थे - "
मैंने कहा, "तो नासिक का दृश्य एक साझा शिकायत हो सकता है जिसे उस व्यक्ति द्वारा अंजाम दिया गया था जिसे विशेष रूप से बाघ से सबसे अधिक प्रत्यक्ष शिकायत थी।"

"शास्त्री की औपचारिक शिकायत," करण ने कहा। "उसका विषय क्या था?"
मैंने पिछली रात के नोट्स देखे। "देशमुख की टीम के नोट में केवल रिट्रीट कार्यक्रम का उल्लेख था। शिकायत को एक सामान्य कार्यक्रम संबंधी चिंता के रूप में दर्ज किया गया था। शिकायत का विशिष्ट विषय मेरे पास मौजूद दस्तावेज़ में नहीं था।"
"यह प्रतिष्ठान के शिकायत रिकॉर्ड में दर्ज होगा," करण ने कहा। "शेख यही तो चाहती है। इसे भी उसकी रिक्वेस्ट में जोड़ दीजिए।" उसने अपना फोन उठाया।
दिन भर की घटनाओं - धर्मशाला तलाशी, बीड जिले का संबंध, वंदना शास्त्री का दस्तावेज़, निम्बालकर संरक्षण प्रोटोकॉल, देशपांडे का संबंध - पर पाटिल की प्रतिक्रिया शाम 5:17 बजे एक उन्नीस मिनट लंबी कॉल के रूप में आई, जिसे करण ने खिड़की के पास खड़े होकर लिया, उस भाव के साथ जो उसके चेहरे पर तब होता है जब उसे ऐसे निर्देश मिल रहे होते हैं जिनका उसने पहले से अनुमान लगा लिया होता है और अब वह उनकी पुष्टि कर रहा होता है, भले ही वह उन्हें सीख न रहा हो।
परिणाम: निम्बालकर सर्वेक्षण स्थानांतरण स्वीकृत और सक्रिय कर दिया गया, निम्बालकर को शाम 5 बजे निर्धारित समय पर फोन किया जा चुका था। उदगीर धर्मशाला सामग्री को वारंट की अवधि (चालीस घंटे) तक वहीं रखा जाना था और उपाध्याय की टीम द्वारा आज रात कृषि सहकार संपथ द्वारा स्थापित गुप्त कैमरा यूनिट के माध्यम से निरंतर दूरस्थ निगरानी की जानी थी। यदि राव वारंट आने से पहले लातूर चले जाते, तो सर्वेक्षण टीम को कुछ ही मिनटों में पता चल जाता। लातूर स्थित संरक्षित संसाधन - वानखेड़े का प्रस्ताव - स्वीकृत; पाटिल सीधे नागपुर एसपी कार्यालय से संपर्क करेंगे।

वंदना शास्त्री को नासिक टीम द्वारा लीड एसपी देशमुख भेजा जाना था ताकि प्रतिष्ठान की आंतरिक फाइलों में पृष्ठभूमि, ठिकाना और शिकायत रिकॉर्ड जुटाए जा सकें। पाटिल की अनुमति के बिना उनसे संपर्क नहीं किया जाना था। प्रिया के पूरक आवेदन में बीड जिले का संबंध शामिल किया जाना था, जिसकी प्राप्ति की पुष्टि पाटिल पहले ही कर चुके थे। वारंट की समीक्षा की जा रही थी।
करण ने फोन रखा और कॉफी टेबल के पास आया। वह बैठ गया - अपनी डेस्क पर नहीं, बल्कि कॉफी टेबल पर, मेरे काम करने की जगह के ठीक सामने, जो कि असामान्य था। वह ऐसा तब करता है जब जांच उस मुकाम पर पहुंच जाती है जहां अलग-अलग जगहों के बजाय साझा स्थान में विचार-विमर्श करना आवश्यक होता है।
“कल,” उन्होंने कहा। “निंबालकर पुणे में होंगे। धर्मशाला पर कड़ी निगरानी रखी जा रही है। शास्त्री नासिक टीम के साथ हैं। वारंट मजिस्ट्रेट के पास है।” उन्होंने बोर्ड की ओर देखा। “जो कुछ भी हटाया जा सकता था, हटा दिया गया है। जो कुछ भी सुरक्षित किया जा सकता था, सुरक्षित कर लिया गया है।” वे थोड़ी देर रुके। “जांच अब ऐसे मोड़ पर है कि आगे क्या होगा, यह हमारे कार्यों से नहीं, बल्कि हमारे द्वारा किए गए कार्यों और क्या वे पर्याप्त थे, इस पर निर्भर करेगा।”
मैंने कहा, "वारंट।"
"हो."
"और पांचवा दृश्य," मैंने कहा। "अगर राव वारंट के सामने पेश होता है तो-"
उन्होंने कहा, "सर्वेक्षण से हमें पता चल जाएगा। हमारी नज़र उनके अपार्टमेंट, कैंपस और अब धर्मशाला पर है। तीन बिंदु। इनमें से कम से कम एक से गुज़रे बिना वे लातूर नहीं पहुँच सकते।"

मैंने कहा, "अगर उन्होंने पहले ही कोई दूसरा रास्ता अपना लिया होता। एक ऐसा रास्ता जिसे सर्वेक्षण में शामिल नहीं किया गया है क्योंकि वह ऐसा रास्ता नहीं था जिसे हम अपनाना चाहते थे।" उसने काफी देर तक बोर्ड को देखा।
"हां," उसने कहा। "अगर कोई और रास्ता न हो तो।"

***

शाम 7:45 बजे अनन्या ने सुरक्षित मैसेजिंग चैनल के ज़रिए भोसले का प्रोफ़ाइल भेजा, जिसे उसने ऐसे दस्तावेज़ों के आदान-प्रदान के लिए बनाया था। मैंने देखा कि उसने चैनल पहले से ही कॉन्फ़िगर कर रखा था, जिसका मतलब था कि वह किसी के साथ ऐसी संवेदनशील फ़ाइलें साझा करने की उम्मीद कर रही थी और ज़रूरत पड़ने से पहले ही उसने ज़रूरी इंफ्रास्ट्रक्चर तैयार कर लिया था। प्रोफ़ाइल में विवरण था: रमेश भोसले, 58 वर्ष, औरंगाबाद ज़िले में माध्यमिक विद्यालय के भूगोल शिक्षक। प्रतिष्ठान में दो साल से निवेशक। अनन्या के संदेशों का दो महीने से कोई जवाब नहीं दिया था।
मेरे द्वारा नाम भेजने के बीस मिनट के भीतर ही गोखले को वह नाम मिल गया। उनकी प्रारंभिक जाँच रात 8:52 बजे हुई: भोसले जीवित थे, पता सत्यापित था, पिछले नब्बे दिनों में किसी प्रतिष्ठान से संपर्क की सूचना नहीं मिली थी। उन्हें निगरानी सूची में डाल दिया गया। अभी तक उन्हें सक्रिय सुरक्षा प्रोटोकॉल के तहत नहीं रखा गया था - इस बात का कोई सबूत नहीं था कि उन्हें निशाना बनाया जा रहा था - लेकिन उन पर नज़र रखी जा रही थी।
मैंने खाना तैयार किया। फिर से चावल, जो अब एक नियमित प्रक्रिया बन चुकी थी, न कि कोई आपातकालीन स्थिति—जांच रसोई ने जांच के लिए भोजन को एक ऐसी नियमित दक्षता के साथ तैयार किया जो बार-बार

[illegible]

[illegible] 10:11 [illegible], [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] 6:30 [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] 8:15 [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

[illegible]
[illegible] - [illegible], [illegible], [illegible] [illegible], [illegible] [illegible] [illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]
[illegible]
[illegible]

□□□□□□ 12 - □□□□□

□□□□□□□□ □□□ □□□□□ □□ □□□□ 6:41 □□□ □□□□□ □□ □□□□□□□ □□□□ □□□ □□□ □□ □□□□□□□□□ □□□□□ □□ □□□□ □□□□□ □□□□□□ □□□□□□□ □□□□□ □□□ □□□□□□ □□ □□□□ □□□ □□□□ □□ □□□ □□□, □□ □□□□□ □□□ □□ □□□□ □□□ □□□□ □□, □□□□□□□ □□ □□□□□ □□ □□□□□□ □□□□□□□ □□ □□□ □□ □□□□ □□□□□□ □□□□, □□ □□ □□□□□ □□ □□□□ □□□ □□□□ □□□ □□□□ □□ □□□ □□ □□□ □□, □□ □□ □□ □□□□□□ □□□□□□ □□, □□ □□ □□□ □□□□ □□□□ □□□ □□ □□□□□□ □□ □□ □□ □□□□□ □□□ □□ □□□ □□□□ □□□□ □□ □□□ □□□ □□□ □□ □□□□□ □□ □□□□ □□□ □□□ □□□□ □□□□□ □□□ □□ □□□□□□□□ □□□□□□ □□□: □□□□□□□□ □□□□□ □□□□□□ □□ □□□ □□ □□□□ □□□□

□□□□□ □□ □□□□□□□□□ □□□ □□ □□□□□□ □□□□□ □□□□ □□ □□□□□□□ □□□□ □□ – □□ □□□ □□□ □□ □□□□ □□□ □□□□ □□□□□□□ □□ □□□□ □□□ □□□□ □□, □□□□□□□ □□□□□□□□□ □□□□□□ □□ □□□ □□□□ □□ □□□□□□ □□□□ □□□ □□□□ □□□□□□ □□ □□ □□ □□ □□□□□ □□□□ □□□□□ □□ □□□□□□ □□ □□□ □□ □□□□□ □□□ □□□□□ □□□ □□□□□□□□□ □□ □□□□ □□ □□□□ □□□, □□□□□□ □□□□□□ □□□□□ □□□ □□ □□□□□ □□□ □□ □□□□□□□□□ □□ □□□□□□□□□ □□□□□□□ □□□□ 9:30 □□□ □□□ □□ □□ □□□□□□ □□□□□ □□□ □□□□ □□□□□ □□□□□ □□ □□□□□□□□□ □□□□□□□ □□ □□□□□□ □□□□□ □□ □□□ □□□ □□□□□ □□□□□□□□□ □□□□□□□ □□ □□□□ □□□□□ □□□□ □□ □□□□ □□□□ □□□ □□□□ □□□□ □□□□□□□□ □□□□□□ □□ □□□ □□□□

□□ □□□□ □□ □□□□ □□□ □□□□ □□ □□□□□ □□□□ □□□□□□□

□□□□□□□□□ □□□□ □□□□ □□ □□□ □□ □□□ □□ □□□□□□ □□□ □□□□ □□ □□ □□□□ □□□ □□ □□□ □□□ □□□ □□□ □□□□ □□□□□ □□ □□□ □□ □□□□□□□□ □□ □□□□ □□□□□□□□ □□□□□□□□□ □□ □□□ □□ □□□□ □□ □□□□ □□□□ □□□□□□□ □□□□ □□□ □□□□ □□□ □□ □□ □□□□ □□ □□ □□□□□□□□ □□□ □□□□, □□□□ □□□□□□ □□ □□□ □□□□ □□□□□ □□□□□ □□□□ □□□□□□□□ □□ □□□□□□ □□□

यह बात समझ आ गई हो कि सर्वेक्षण का ढांचा पूरी तस्वीर का आंशिक स्पष्टीकरण है और ट्रेन यात्रा के दौरान उन्होंने पूरी तस्वीर का पुनर्मूल्यांकन कर लिया हो। उन्होंने तुरंत कुछ नहीं कहा। उन्होंने हमारे बैठने तक प्रतीक्षा की।
"पुणे आने के लिए धन्यवाद," करण ने कहा।
निम्बालकर ने कहा, "मुझे लगा कि यह पूरी तरह से स्वैच्छिक नहीं था।"
करण ने कहा, "यह स्वैच्छिक नहीं था। मैं इस बारे में आपसे स्पष्ट रूप से बात करना चाहता हूं। इसके कुछ कारण हैं जिन्हें मैं अभी पूरी तरह से नहीं समझा सकता। मैं आपको बता सकता हूं कि दो दिन पहले आपने जो चिंताएं उठाई थीं, उन पर कार्रवाई करने में सक्षम लोगों ने गंभीरता से विचार किया है, और अगले कुछ दिनों के लिए पुणे में आपकी उपस्थिति एक एहतियाती उपाय है जो आपके हित में है।"
निम्बालकर ने इस बात को एक ऐसे व्यक्ति की तरह सहमति में सिर हिलाया जो पहले ही इस निष्कर्ष पर पहुँच चुका था और अब उसे जानकारी के बजाय पुष्टि मिल रही थी। उन्होंने कहा, "आपने दो दिन पहले कहा था कि फाउंडेशन के सामुदायिक निवेश नेटवर्क से जुड़े तीन लोगों की हत्या कर दी गई है। मैं उस वाक्य के बारे में चालीस घंटे से सोच रहा हूँ।"
"हां," करण ने कहा।
निंबालकर ने कहा, "गोडबोले उनमें से एक थे।"
एक विराम. "हो."
निम्बालकर ने अपनी चाय के प्याले की ओर देखा। उनके चेहरे पर एक ऐसे व्यक्ति का भाव था जो किसी ऐसी बात को पचाने की कोशिश कर रहा हो जिसे वह अब तक एक पूर्ण विचार के रूप में व्यक्त करने से डर

रहा था, और जिसे अब उसे एक रूप मिल चुका था। गोडबोले ने उन्हें सावधान रहने के लिए कहा था। गोडबोले पर्याप्त सावधान नहीं रहे थे - या उन्होंने अपने पास उपलब्ध साधनों से सावधानी बरती थी और पाया कि वे साधन अपर्याप्त थे। निम्बालकर ने उस चेतावनी को प्रतिष्ठा के दबाव के बारे में एक चेतावनी के रूप में लिया था। अब उन्होंने इसे कुछ और ही रूप में लिया।
"बाकी दो," उसने कहा।
"मैं अभी आपको उनके नाम नहीं बता सकता," करण ने कहा। "मैं आपको बता सकता हूँ कि उन तीनों ने वही किया जो आपने किया - आंतरिक रूप से चिंताएँ उठाईं, कोई प्रतिक्रिया नहीं मिली, और प्रतिष्ठान की भागीदारी से पीछे हटने लगे।" वह रुका। "मैंने उनकी इस वापसी को देखा।"
निम्बालकर कुछ देर चुप रहे। फिर बोले, "आप मुझसे क्या चाहते हैं?"
"जानकारी," करण ने कहा। "तांबे। जब वह लातूर आया था, तब तुम्हारी उससे दो बार मुलाकात हुई थी। मुझे उन मुलाकातों के बारे में बताओ।"
पहली मुलाकात: आठ महीने पहले। वे तांबे प्रतिष्ठान के मराठवाड़ा कार्यक्रम कैलेंडर की समीक्षा करने और क्षेत्रीय संपर्कों के साथ आगामी रिट्रीट कार्यक्रम पर चर्चा करने के लिए लातूर आए थे। शिवाजी चौक के पास एक रेस्तरां में दोपहर के भोजन पर उनकी मुलाकात निंबालकर से हुई थी और वे, जैसा कि निंबालकर ने पहले बताया था, शांत और कुशल थे। लेकिन एक बात ऐसी थी जिस पर निंबालकर ने पहली मुलाकात में ध्यान नहीं दिया था, जिसे उन्होंने अब नोट किया - शायद इसलिए कि उस वाक्य के बारे में दो

दिनों तक सोचने के बाद उन्होंने उस बात के महत्व को नए सिरे से समझा जिसे उन्होंने पहले एक सामान्य प्रक्रिया मान लिया था। तांबे अपने साथ दोपहर के भोजन के लिए एक और व्यक्ति को लाए थे। उन्होंने उस व्यक्ति का नाम लेकर परिचय नहीं कराया - उन्होंने बस इतना कहा, "पुणे से आए एक सहकर्मी जो हमारे मराठवाड़ा संचालन की समीक्षा कर रहे हैं" - और उस सहकर्मी ने बहुत कम बात की, खाना खाया और दोपहर के भोजन का अधिकांश समय रेस्तरां में अन्य मेजों को ध्यानपूर्वक देखते हुए बिताया, मानो वह माहौल का जायजा ले रहे हों, न कि उसमें भाग ले रहे हों।
"उनका वर्णन करो," करण ने कहा।
निम्बालकर ने उनका वर्णन इतनी सटीकता से किया मानो कोई व्यक्ति बिना दिखे ही लोगों को परख लेता हो: लगभग पचास वर्ष के, मजबूत कद-काठी, कानों के कोनों पर बाल सफेद होने लगे थे, तार के फ्रेम का चश्मा, कुर्ता। उनमें किसी व्यवसायी की बजाय एक विश्वविद्यालय के छात्र की झलक थी—उनके हाव-भाव से ऐसा लगता था मानो उनका जीवन लेन-देन के बजाय विचारों पर आधारित हो। उन्होंने शाकाहारी भोजन मंगवाया था और बिना चीनी की चाय पी थी।
“क्या पुलिस ने कभी अपना नाम दर्ज कराया था?” करण ने कहा। “नहीं,” निंबालकर ने कहा। “लेकिन उन्होंने दोपहर के भोजन के दौरान एक टिप्पणी की थी – यह प्रासंगिक नहीं हो सकती। वे प्रतिष्ठान के दार्शनिक ढांचे पर चर्चा कर रहे थे, और सहकर्मी ने विदर्भ और मराठवाड़ा परंपराओं में इसकी जड़ों के बारे में कुछ कहा। उन्होंने कहा कि परंपराओं की जड़ें बीड जिले के लोकगीतों में गहरी हैं, और प्रतिष्ठान का दृष्टिकोण उसी से लिया गया है।” निंबालकर थोड़ी देर रुके। “तांबे को यह सुनकर आश्चर्य हुआ। सहकर्मी ने तांबे के आश्चर्य को देखा और आगे कुछ

[illegible]" [illegible] [illegible] [illegible] "[illegible] [illegible] [illegible] [

[illegible]
"[illegible]?" [illegible]
[illegible], "[illegible]
[illegible]"
"[illegible]?"
[illegible], "[illegible]
[illegible]" [illegible] "[illegible]
[illegible]?"

[illegible]

"[illegible]," [illegible] "[illegible] - [illegible]
[illegible]?"

[illegible] “[illegible], [illegible]
[illegible]

वाले सजावटी सामान—के भंडारण की क्षमता की पुष्टि कर रहा था। उस कमरे में एक अलमारी थी जिसे उनकी सामग्री रखने के लिए हटा दिया गया था।” वे रुके। “वे सजावट सामग्री को लेकर बहुत सख्त थे — अधिकतर इवेंट क्लाइंट्स से भी ज़्यादा सख्त। वे अपना विशेषज्ञ भी लाए थे।”
"किस तरह का विशेषज्ञ?"
“एक व्यक्ति जो विशेष रूप से अनुष्ठान की सामग्री का प्रबंधन कर रहा था,” निम्बालकर ने कहा। “दीये, बर्तन, वस्त्रों की व्यवस्था। वह लातूर का नहीं था – मुझे लगता है कि वह कार्यक्रम दल के साथ पुणे से आया था। वह व्यवस्था करने और उसे हटाने के समय मौजूद था, लेकिन मैंने उससे विस्तार से बात नहीं की।” वह रुका। “वह शांत था। व्यवस्थित था। उसे पता था कि सामग्री को कैसे व्यवस्थित करना है।”
करण कुछ पल चुप रहा। "क्या आपने इस व्यक्ति को प्रतिष्ठान के उन अन्य कार्यक्रमों से जोड़ा है जिनका आपने समन्वय किया था?" “दूसरी बैठक में भी,” निम्बालकर ने कहा। “दोनों बैठकों में लेआउट की व्यवस्था एक जैसी थी, और मैंने मान लिया कि विशेषज्ञ एक ही था। मैं निश्चित रूप से नहीं कह सकता कि वह एक ही व्यक्ति था—मैंने लेआउट सामग्री पर ध्यान दिया क्योंकि ग्राहकों की विशिष्ट आवश्यकताएं व्यवस्था के लिए महत्वपूर्ण होती हैं, लेकिन मेरे पास विशेषज्ञ का अध्ययन करने का कोई कारण नहीं था।” वे थोड़ी देर रुके। “मैं आपको बता सकता हूँ कि दूसरी बार, वह कार्यक्रम टीम से पहले आया और उनके बाद चला गया। उसने लेआउट तत्वों को अपनी एकमात्र जिम्मेदारी माना और किसी और को इसमें शामिल नहीं किया।”

*— [illegible] [illegible] [illegible]

जांच की इलेक्ट्रॉनिक फाइलों तक पहुंच के माध्यम से, जो दो सप्ताह पहले पाटिल के मजिस्ट्रेटीय आदेश द्वारा उपलब्ध कराई गई थीं और जिन पर तब से जांच व्यवस्थित रूप से चल रही थी। वी. शास्त्री की शिकायत फाइल, जो नौ महीने पहले जमा की गई थी, संस्था की आंतरिक प्रणाली में दाखिल होने के बाद से ही "प्राप्त - समीक्षाधीन" के रूप में चिह्नित थी। शिकायतें संस्था को प्राप्त होने पर आंतरिक प्रणाली में जाती हैं, जहां उन्हें निपटाने के लिए नहीं बल्कि संबंधित व्यक्ति को भेजा जाता है, ताकि उनकी अनदेखी न हो।
शेख ने पूरा पाठ भेजा। मैंने इसे दोपहर 12:52 बजे कॉफी टेबल पर पढ़ा।
वंदना शास्त्री ने रिट्रीट कार्यक्रम के बारे में सामान्य तौर पर कोई शिकायत नहीं की। उन्होंने वाघ द्वारा आयोजित नासिक रिट्रीट में हुई एक विशेष घटना के बारे में शिकायत की, जिसमें वाघ मेजबान थे और शास्त्री प्रतिभागी थीं। रिट्रीट के अंतिम सत्र में, प्रतिष्ठान के सहयोगी ने एक वित्तीय कार्यशाला आयोजित की, जिसमें "सामुदायिक विकास योगदान" के लिए एक निवेश योजना प्रस्तुत की गई। कार्यशाला में योजना के प्रतिफल और जोखिम संरचना का वर्णन इस प्रकार किया गया था कि शास्त्री को वह भ्रामक लगा। उन्होंने सत्र के दौरान निधि की कानूनी संरचना और योगदान की गई धनराशि के लिए जवाबदेही तंत्र के बारे में विशिष्ट प्रश्न पूछे। सहयोगी ने जो उत्तर दिया, उसे शास्त्री ने "संक्षिप्त और तकनीकी रूप से सटीक नहीं" बताया।
सत्र के बाद, शास्त्री ने सीधे वाघ से संपर्क किया। वाघ ही आयोजन स्थल के आयोजक थे, स्थानीय प्रतिनिधि थे और नासिक के कई प्रतिभागियों को फाउंडेशन से जोड़ने वाले सामुदायिक संपर्क

[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]— "[illegible] [illegible]"— [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [

और बाघ ने पुष्टि की कि निवेश सही था।
"हो."
उन्होंने कहा, "इसका मतलब यह है कि टाइगर को पता था कि निवेश धोखाधड़ी वाला है और फिर भी उसने इसकी पुष्टि कर दी," या "टाइगर को लगा कि यह वैध है और उसने ईमानदारी से, लेकिन झूठी पुष्टि कर दी।" वे थोड़ी देर रुके। "शिकायत में यह नहीं बताया गया है कि शास्त्री ने क्या सोचा था।"
"नहीं," मैंने कहा।
हमने बोर्ड पर नजर डाली। नासिक प्वाइंट पर एक बाघ का पिन लगा हुआ था। उसके बगल में एक छोटा सा कागज का टुकड़ा था जिस पर शास्त्री का नाम लिखा था।
करण ने कहा, "नासिक की टीम। देशमुख की रिपोर्ट।"
एसपी देशमुख की नासिक टीम की रिपोर्ट सुबह 11:34 बजे आई, जब हम अभी भी गेस्ट हाउस में ही थे – मैंने नोटिस देखा था लेकिन अभी तक खोला नहीं था। देशमुख ने दो अधिकारियों को उस सुबह प्रतिष्ठान के निवेशक रिकॉर्ड और पारंपरिक चिकित्सा चिकित्सक बोर्ड के पंजीकरण में दर्ज पते का उपयोग करके वंदना शास्त्री को खोजने का काम सौंपा था। उनके क्लिनिक का पता नासिक के पंचवटी इलाके में एक परामर्श कक्ष था – जो, मैंने अनजाने में ही ध्यान दिया, वही इलाका था जहाँ सीताराम मंदिर स्थित था, जहाँ सुलोचना माने को उनके मंदिर भ्रमण के दौरान फोटो खींची गई थी। जांच का भौगोलिक क्षेत्र इस तरह से आपस में जुड़ा हुआ था जैसे शहर का भौगोलिक क्षेत्र हमेशा तब आपस में जुड़ जाता है जब आप एक ही जिले को अलग-अलग कोणों से देखते हैं।
शास्त्री सुबह 10:15 बजे अपने क्लिनिक में थीं जब पुलिस अधिकारी पहुंचे। उन्होंने दरवाजा खोला और दो पुलिस अधिकारियों

को देखा। रिपोर्ट करने वाले अधिकारी के अनुसार, उन्होंने आश्चर्य या घबराहट का कोई संकेत नहीं दिखाया। वह दरवाजे से पीछे हट गईं और बोलीं: "कृपया अंदर आइए।" ये बातचीत के पहले शब्द थे, और मैंने इन्हें निम्बालकर के "कृपया अंदर आइए" की श्रेणी में रखा - क्योंकि ये बिल्कुल एक जैसे तो नहीं थे, लेकिन इनमें एक ही लय थी, उस व्यक्ति की लय जो इस आगमन की प्रतीक्षा कर रहा था और पहले से ही तय कर चुका था कि उसका स्वागत कैसे करना है।
वह इक्यावन वर्ष की थीं। उनका एक क्लिनिक था जो पंद्रह वर्षों से चल रहा था। उन्होंने नासिक स्थित एक संस्थान से पारंपरिक चिकित्सा का प्रशिक्षण पूरा किया था और उसके बाद राव के सटीक शरीर रचना विज्ञान के पाठ्यक्रम में शामिल होने के लिए एक और प्रशिक्षण लिया था। वह अविवाहित थीं। वह अपने क्लिनिक के ऊपर वाले फ्लैट में अकेली रहती थीं। उनके परामर्श कक्ष की दीवार पर दो फ्रेम किए हुए प्रमाण पत्र और मराठी और संस्कृत में संदर्भ ग्रंथों की एक अलमारी थी, और एक अंग्रेजी में भी थी - एक आधुनिक शरीर रचना विज्ञान एटलस, जो पैरामेडिकल प्रशिक्षण में उपयोग किया जाता है, जिसका उल्लेख रिपोर्टिंग अधिकारी ने कमरे के विवरण में किया था।
अधिकारियों ने औपचारिक प्रोटोकॉल के तहत प्रारंभिक पूछताछ की। उन्होंने फाउंडेशन में उनकी भागीदारी के बारे में पूछा और उन्होंने स्पष्ट रूप से जवाब देते हुए रिट्रीट में उपस्थिति, वित्तीय योगदान, शिकायतों और बकाया प्रतिपूर्ति की पुष्टि की। वाघ के साथ अपने संबंधों के बारे में पूछे जाने पर उन्होंने कहा: "उन्होंने मुझे कुछ ऐसा बताया जो सच नहीं था। मुझे नहीं लगता कि उन्हें पता था कि यह सच नहीं है। लेकिन इससे नुकसान कम नहीं हुआ।"

अधिकारियों ने उससे पूछा कि बाघ की हत्या वाली रात वह कहाँ थी। उसने एक पता और एक संपर्क व्यक्ति का नाम बताया - नासिक के गंगापुर रोड इलाके की एक बुजुर्ग महिला, जिनसे वह उस शाम घर पर परामर्श के लिए मिली थी। परामर्श शाम 6:30 बजे से रात 9 बजे तक चला था।
अधिकारियों ने उसे गिरफ्तार नहीं किया। उन्होंने उसका प्रारंभिक बयान और संपर्क विवरण एकत्र किया और उसे सूचित किया कि आगे की पूछताछ में उसे बुलाया जा सकता है। उसने कहा, "मैं उपलब्ध रहूंगी।" उसने वकील की मांग नहीं की।
मैंने कहा, "उसने उन्हें एक पुख्ता सबूत दे दिया - कहीं और मौजूद होने का प्रमाण।"
“उसने उन्हें पता और संपर्क व्यक्ति का नाम दिया,” करण ने कहा। “अपराधी का अलबी (घटनास्थल पर मौजूद होने का सबूत) अभी तक पुष्ट नहीं हुआ है। जैसा कि पतांगे ने कहा था, हत्या रात नौ से दस बजे के बीच हुई थी। अगर मरीज इस बात की पुष्टि कर दे कि घर पर परामर्श रात नौ बजे समाप्त हुआ था, तो उसे सीताराम मंदिर क्षेत्र तक पहुँचने और अपराध करने के लिए एक घंटा मिल जाता है।” उसने बोर्ड की ओर देखा। “नासिक के गंगापुर रोड से पंचवटी जिला मंदिर क्षेत्र तक – उस समय ऑटो-रिक्शा या स्कूटर से तीस से चालीस मिनट लगते हैं।”
मैंने कहा, "वह छिप नहीं रही है। वह अपने क्लिनिक में थी। उसने दरवाजा खोला। उसने कहा कि उसे नहीं लगता कि वाघ को पता था कि निवेश धोखाधड़ी वाला था।" मैं थोड़ी देर रुका। "या तो वह पूरी तरह निर्दोष है, या उसने कुछ ऐसा किया है जिसके लिए उसे नैतिक रूप से पछतावा हो रहा है और वह जवाब देने के लिए तैयार है।"

“देशमुख दोपहर में अपनी बेगुनाही की पुष्टि कर देगी,” करण ने कहा। “जब तक वह पुष्टि नहीं हो जाती, तब तक वह एक संदिग्ध व्यक्ति है जिसकी बेगुनाही की पुष्टि नहीं हुई है।” उसने अपना फोन उठाया। “लेकिन नासिक, पुणे और नागपुर की घटनाएं संरचनात्मक रूप से अलग हैं, चाहे शास्त्री नासिक का अपराधी हो या नहीं। राव ही इस पूरे मामले का मुख्य सूत्रधार है। वारंट राव के नाम पर है। शास्त्री का मामला देशमुख की गिरफ्तारी से जुड़ा सुराग है।”

***

करण ने पाटिल के कार्यालय में फोन करके उन्हें सुबह की घटनाओं के बारे में जानकारी दी: निंबालकर से मिली अतिरिक्त जानकारी, लातूर रिट्रीट के लेआउट विशेषज्ञ, शिकायत का पाठ, शास्त्री का प्रारंभिक साक्षात्कार।
पाटिल के कार्यालय ने दोपहर 1:55 बजे गोखले द्वारा प्रसारित एक वाक्य के साथ जवाब दिया: वारंट पर मजिस्ट्रेट ने दोपहर 1:32 बजे हस्ताक्षर किए थे।
मैं कॉफी टेबल पर बैठा था जब गोखले का संदेश आया। मैंने उसे दो बार पढ़ा। फिर मैंने अपना फोन नोटबुक के बगल में टेबल पर रख दिया और कुछ देर पंखे को देखता रहा।
भवानी पेठ मिल से लगभग बीस दिन। लिखावट का विश्लेषण, आपूर्ति श्रृंखला, घाव का स्वरूप, पदचिह्न के साक्ष्य, जबड़े की संरचना, बीड जिले से संबंध - यह सब संकलित, प्रस्तुत, समीक्षा किया गया और अब, मजिस्ट्रेट के क्लर्क द्वारा तीस शब्दों में दिए गए पुष्टिकरण पत्र में, एक ऐसे प्रोफेसर की गिरफ्तारी को अधिकृत किया गया, जो कार्वे रोड पर किताबें खरीदता था और रात में अपने अध्ययन कक्ष में रोशनी जलाए रखता था, और जिसने कम से कम दो

[illegible] [illegible] [illegible] [

[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] "[illegible] [illegible] [illegible] [

*[illegible] [illegible], [illegible] [illegible] [illegible]

शाम 6:24 बजे गंगापुर रोड पर मरीज़ को छोड़ने और रात 9 बजे उसके घर से निकलने की पुष्टि हो चुकी थी। पंचवटी में सीताराम मंदिर क्षेत्र ऑटो-रिक्शा से तीस से चालीस मिनट की दूरी पर था। बाघ को रात 10 बजे से पहले मार दिया गया था। गणित के हिसाब से शास्त्री के पास एक मौका था। यह मुश्किल था, लेकिन नामुमकिन नहीं। देशमुख के अलबी विवरण के अंतर्गत लिखे नोट में लिखा है: विवरण संक्षिप्त है, लेकिन स्पष्ट नहीं है। मरीज़ ने पुष्टि की है, और ड्राइवर ने केवल पुष्टि की गई अवधि की शुरुआत और समाप्ति की पुष्टि की है। रात 9:05 बजे से हत्या के समय के बीच क्या हुआ, यह किसी ने नहीं देखा। शास्त्री के पास कोई वाहन नहीं है। रात 9:00 बजे से 10:00 बजे के बीच गंगापुर रोड से किसी भी ऑटो-रिक्शा का किराया दर्ज नहीं है। यदि वह पैदल चली, तो दूरी लगभग पाँच किलोमीटर है - एक स्वस्थ व्यक्ति के लिए यह दूरी पैंतालीस मिनट में तय की जा सकती है। यदि उसने बिना पंजीकृत कैश ऑटो लिया, तो इसकी पुष्टि करने का कोई तरीका नहीं है। वह अभी भी संदिग्ध बनी हुई है।
मैंने करण से कहा, "स्पष्ट नहीं है।"
“स्पष्ट नहीं,” उन्होंने पुष्टि की। “लेकिन मौजूदा रिकॉर्ड से भी इसकी पुष्टि नहीं हो सकती। देशमुख जांच जारी रखेंगे। नासिक रोड उनका इलाका है।” वे रुके। “उसकी एनाटॉमी कोर्स में उपस्थिति और घाव का विवरण अभी भी सबसे महत्वपूर्ण कारक हैं। अलबी की अस्पष्टता गौण है।” उन्होंने अपनी घड़ी देखी—घड़ी देखने का कोई संकेत नहीं, बल्कि एक ऐसी घड़ी जो समय के अलावा कुछ और भी मापती है। “शास्त्री का सवाल कल का काम है। आज वारंट के लिए है।”

दोपहर 3:15 बजे एक सर्वेक्षण अपडेट ने पुष्टि की कि राव अभी भी परिसर में थे, बैठक को तीस मिनट के लिए बढ़ा दिया गया था, और उनके प्रस्थान का अनुमानित समय शाम 4:10 बजे था।
दोपहर 3:28 बजे, उदगीर कैमरे ने निर्धारित निरीक्षण प्रसारित किया: धर्मशाला में कोई हलचल नहीं थी। अलमारी के पीछे बने भंडार कक्ष में सामान सुरक्षित था। कैमरे की बैटरी 73 प्रतिशत चार्ज थी। कृषि सहकार संपर्क आज शाम 7 बजे आसपास की संपत्ति का दृश्य निरीक्षण करेगा।
दोपहर 3:30 बजे मैंने चाय बनाई, करण को दी और चाय लेकर खिड़की पर खड़ी हो गई, नीचे सड़क पर लगे नींबू के पेड़ों को देखने लगी। अक्टूबर की एक साफ़ दोपहर थी - पुणे में मानसून का मौसम पूरी तरह से समाप्त होने पर जो अक्टूबर की ऐसी ही स्पष्टता होती है। अक्टूबर की शुरुआत की क्षणिक स्पष्टता नहीं, बल्कि आसमान की स्थिर, अटूट स्पष्टता, जिसने अपना मौसमी फैसला कर लिया है और अब बारिश जल्द ही वापस नहीं आएगी। हवा में एक ठंडक थी जो दो हफ्ते पहले नहीं थी। नीचे शहर अपने दोपहर के काम में व्यस्त था, पुणे की ऊर्जा से भरा हुआ, एक ऐसा शहर जो दोपहर की व्यस्तताओं से शाम की व्यस्तताओं की ओर बढ़ रहा था, सड़कों पर यातायात बढ़ रहा था, चाय की दुकानों पर दोपहर बाद के ग्राहक आने लगे थे।
मैंने कहा, "अध्ययन कक्ष में रोशनी।"
करण ने अपनी मेज से ऊपर देखा।
मैंने कहा, "वे बाहर जाते समय अपने अध्ययन कक्ष की बत्ती जलाकर छोड़ देते हैं। सर्वेक्षण में इसे एक आदत के रूप में दर्ज किया गया है - जब वे अपने डेस्क पर होते हैं तो बत्ती जलती रहती है और जब वे जाते हैं तब भी जलती रहती है, क्योंकि उनका इरादा वापस आने

का होता है।" मैं थोड़ा रुका। "आपको क्या लगता है कि वे किस बारे में लिख रहे हैं?"
करण ने एक पल के लिए मेरी ओर देखा। "रिकॉर्ड," उसने कहा। "जिस परंपरा में वे काम करते हैं, उसमें ज्ञान के हस्तांतरण के लिए रिकॉर्ड रखना ज़रूरी है। शायद वे पहले हत्याकांड से पहले से ही अपने किए और किए गए कार्यों का विवरण लिख रहे होंगे।" वह रुका। "रिकॉर्ड में शायद जांच से मिली जानकारी से कहीं ज़्यादा विस्तृत विवरण होगा।"
मैंने कहा, "गिरफ्तारी से इसका पता चल जाएगा।"
"हां," उसने कहा।
यह विचार सहज नहीं था - इसलिए नहीं कि रिकॉर्ड से मामले को नुकसान होगा, जो कि बिल्कुल नहीं होगा, बल्कि इसलिए कि इससे मेरे द्वारा बीस मिनट से लिखे जा रहे लेख की सार्थकता की पुष्टि होती है। जो व्यक्ति अपने कार्यों को स्थानांतरण के रूप में दर्ज करता है, वह अंधेरे में हिंसा करने वाला और पकड़े जाने की उम्मीद रखने वाला व्यक्ति नहीं होता। उसने यह काम दिन दहाड़े किया और पकड़े जाने की उम्मीद रखी, और उसका इरादा था कि पकड़ा जाना उसकी योजना का एक हिस्सा हो। गिरफ्तारी उसकी योजना की विफलता नहीं थी; बल्कि उसका निष्कर्ष था।
शाम 4:22 बजे, सर्वेक्षण दल ने पुष्टि की कि राव परिसर छोड़ चुके थे। उन्होंने एक बस ली - वही पुणे सिटी बस रूट जो उन्होंने पिछली शाम को कोथरूड के लिए लिया था, एक ऐसा रूट जो दक्कन जिमखाना से होकर गुजरता है, जो भंडारकर संस्थान से एक किलोमीटर के भीतर से गुजरता है, जहाँ वह पांडुलिपि सावधानीपूर्वक रखी गई थी जिसने जांच की पहली दिशा तय की थी। मैंने इसे बिना लिखे ही नोट कर लिया, क्योंकि कुछ भौगोलिक विसंगतियाँ इतनी सटीक होती हैं कि

उन्हें बिना तर्क-वितर्क के दर्ज करना मुश्किल होता है, और नोटबुक तर्क-वितर्क करने की जगह नहीं है।
शाम 4:51 बजे: राव अपार्टमेंट बिल्डिंग पहुंचे। आज शाम वे किताबों की दुकान पर नहीं रुके थे। वे सीधे घर चले गए थे।
करण ने पहले ही जैकेट पहन रखी थी। उसने मेरी तरफ देखा। उन्होंने कहा, “आप गिरफ्तारी दल में नहीं हैं। यह सवाल जांच में आपकी भूमिका से संबंधित नहीं है - यह रिकॉर्ड से संबंधित है। गिरफ्तारी पूरी तरह से निष्पक्ष होनी चाहिए और यह काम पाटिल के नेतृत्व में अधिकृत दल द्वारा किया जाना चाहिए। इसके अलावा कुछ भी होने से विरोधी वकील को बीच में ही फंसने का मौका मिल जाएगा।” वे थोड़ी देर रुके और फिर बोले, “मैं पाटिल द्वारा अधिकृत जांच प्रतिनिधि के रूप में उपस्थित रहूंगा। जांच पूरी होने पर आपको जानकारी दी जाएगी।”
मैंने एक पल के लिए उसकी ओर देखा।
मैंने कहा, "मुझे पता है।"
उसने अपना सिर हिलाया। वह दरवाजे की ओर चल पड़ा।
मैंने कहा, "करण।"
वह घूम गया।
मैंने कहा, "पांचवीं पिन। बाद में।"
उसने बोर्ड पर नज़र डाली - चार पिन, पाँचवीं पिन वाला एक बॉक्स, एक नक्शा, एक वृत्त ज्यामिति का प्रश्न और तीन हफ़्तों की मेहनत एक ही कॉर्कबोर्ड पर सिमटी हुई थी। फिर उसने एक ऐसे भाव से मेरी ओर देखा जिसे शब्दों में बयान करना मुश्किल है, और वह चला गया। मैं कॉफी टेबल पर बैठ गया।
पंखा घूमने लगा।
मैंने नोटबुक का सारांश पृष्ठ खोला और सबसे ऊपर लिखा:

— [illegible], [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible], [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

[illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [

[illegible]

[illegible]

[illegible]

- □□:

□□□□□□□□□□ □□ □□□□ □□□□ □□□ □□ □□□□□□ □□ □□□□ □□□□ □□□□ □□□□, □□ □□□ □□□□ □□□□ □□□□□ □□□

***

□□□ □□□ 7:34 □□□ □□□□□ □□□□ □□□ □□ □□□□ □□□□□ □□□□ - □□□□ □□□, □□□□□□□ □□□□ - □□ □□ □□□□□□ □□□ □□□□ □□□□ □□□ □□□□□ □□□□ □□□ □□ □□□□ □□□, □□□□ □□□□ □□ □□□ □□□ □□ □□□□□ □□ □□□ □□□□ □□ □□□ □□□□□□□ □□ □□□□□

□□□□□ □□□, "□□ □□□□ □□□?"

“□□□□,” □□□ □□ □□□□ “□□□□□□□ □□□□□□□ □□□□□□□□ □□□□ □□□ □□□□□, □□□ □□□□□, □□□□□ □□□□□ □□□□ □□ □□□□ □□□ □□□ □□□□ □□□□ □□□□□□□□ □□□□ □□□□□ □□ □□ □□□□□□ □□ □□□□□□□□ □□ □□□ □□□” □□□□□□□□ □□□□ □□□ □□□□□ “□□□□ □□□□□□□□□□ – □□□□□ □□□□ □□□□□□□ □□□□ □□□, □□□□ □□ □□□□ □□□□□□ □□□ □□□ □□ □□□□ □□□, □□□□ □□□□□ □□□□□□ □□□□□ □□ □□□ □□ □□□□ □□□□□□□ □□ □□□ □□ □□□□□ □□ □□□□ □□□□□ □□ □□ □□□ □□□□□□ □□ □□□□□□□□□ □□ □□□□□□ □□□□□□□□ □□ □□□ □□□” □□ □□□□□ “□□□□□ □□□□□ □□□ □□□ □□□□ □□□□ □□□□ □□ □□□□□ □□□□, □□□□ □□□ □□□ □□ □□□□ □□ □□□ □□ □□□□□”

□□□□□ □□□, "□□□□□ □□ □□□□ □□□?"

□□□ □□ □□□ □□□ □□□□□ □□ □□ □□□□□ "□□□□□□□□ □□□: □□ □□ □□□□□□□□ □□□-□□□□□□ □□□□ □□□" □□ □□□□□ "□□ □□ □□ □□□ □□ □□ □□□□□□□□□□□□ □□□ □□ □□□□□□ □□□ □□, □□ □□□□□ □□ - □□□□ □□□□□□ □□□□□□ □□ □□ □□□ □□□ □□□ □□□ □□□□□□ □□ □□□□□□ □□ □□□□□□□□ □□□□ □□□□ □□ □□ □□ □□□□ □□ □□ □□□ □□□ □□□ □□□ □□□□□□□□" □□□□ □□□□ □□□ □□ □□□□□□ □□□ "□□□□ □□ □□ □□ □□□□□□□□□□ □□ □□□□□□ □□ □□□□ □□□□ □□□□□□ □□□ □□ □□□□ □□ □□□ □□□□□□ □□ □□□□ □□□□ □□ -

भक्ति के रूपों को आय की निकासी से भर देना, सच्ची रीति की प्रतीकात्मक भाषा का आर्थिक शोषण के लिए एक तंत्र के रूप में उपयोग करना, और परंपरा को समझने वाले अनुयायियों की सामूहिक मान्यताओं का उपयोग शोषण को विश्वसनीयता प्रदान करने के लिए करना।"
मैंने कहा, "सत्ता प्रतिष्ठान के बारे में उनकी राय गलत नहीं है।"
“नहीं,” करण ने कहा। “वे व्यवस्था के बारे में गलत नहीं हैं। वे तरीके के बारे में गलत हैं। पीड़ित व्यवस्था नहीं थी - वे लोग थे जिनका उसने इस्तेमाल किया, और राव के पहुंचने पर उनमें से कम से कम दो लोग बाहर निकलने की कोशिश कर रहे थे।” उसने अपना कप नीचे रख दिया। “गोडबोले के पास उसका शतरंज का सेट था। वाघ के पास उसका हारमोनियम था। जोशी के पास चुपचाप बाहर निकलने के बारे में पत्र थे। वे तर्क को नष्ट नहीं करना चाहते थे। वे उन लोगों को नष्ट करना चाहते थे जिन्हें उसने अपने वश में कर लिया था।” हम वहां थोड़ी देर बैठे रहे।
"कुलकर्णी," मैंने अंत में कहा।
"कल," करण ने कहा। "तांबे का उल्टा पता - गोखले का सर्वेक्षण दस दिनों से रुका हुआ है। राव की गिरफ्तारी से कुछ हलचल होगी। जो लोग राव पर केंद्रित जांच के कारण निष्क्रिय थे, वे राव की गिरफ्तारी की खबर सुनकर अपनी स्थिति का पुनर्मूल्यांकन करेंगे। तांबा उनके कब्जे में होगा।" उसने अपने हाथों की ओर देखा। "हमें हलचल की जरूरत है। वित्तीय दस्तावेज कुलकर्णी तक पहुंचने वाले सुरागों को बंद कर देते हैं, लेकिन वित्तीय दस्तावेजों में समय लगता है। हलचल से तांबा मिलता है, और तांबे से कुलकर्णी तक पहुंचने वाला रास्ता बंद हो जाता है।"

"और पांचवा दृश्य," मैंने कहा।
“निम्बालकर पुणे में हैं,” उन्होंने कहा। “धर्मशाला की सामग्री कैमरे की निगरानी में है। पाँचवें दृश्य का लक्ष्य लातूर के बाहर है। पाँचवें दृश्य को अंजाम नहीं दिया जा सकता।” वे थोड़ी देर रुके। “लेकिन सामग्री को औपचारिक रूप से सबूत के तौर पर सुरक्षित करना होगा। यह तब तक नहीं हो सकता जब तक गिरफ्तारी की प्रक्रिया पूरी नहीं हो जाती और पाटिल को लातूर स्थित स्थान को पुष्ट अपराध स्थल के रूप में तैयार करने की अनुमति नहीं मिल जाती। कल या परसों तक।”
मैंने बोर्ड पर नज़र डाली। पाँच पिन। पुणे के एक फ्लैट में, जहाँ पंखा चल रहा था, खिड़की के बाहर नींबू के पेड़ थे और अक्टूबर की रात अपनी ठंडक में डूब रही थी, कॉर्क बोर्ड पर धातु के पाँच छोटे-छोटे बिंदुओं में बीस दिनों की जांच की झलक दिखाई दे रही थी।
मैंने कहा, "हरी पिन।"
करण ने उसे देखा।
मैंने कहा, "वह पैटर्न पूरा करती है। लेकिन पैटर्न में एक और मृत्यु शामिल करने की योजना थी। आप मृत्यु के बिना पिन लगाते हैं। बोर्ड पर बना वृत्त पूरा हो जाता है। लेकिन ज़मीन पर बना वृत्त पूरा नहीं होता।"
वह कुछ पल चुप रहा। "हां," उसने कहा। "जांच का मकसद यही था।" पंखा चलने लगा। खिड़की के नीचे, पुणे पूरी तरह से गोधूलि बेला में डूबा हुआ था।
कल: खोज। लॉग। राव के सवालों का जवाब देना शुरू करना, जब कोई उनसे सवाल पूछेगा।

और वह सवाल जो पहले दिन से ही किताबों में दर्ज है, अब पहली बार जिसका जवाब दिया जा सकता है: हत्या से मंडला बनाने वाला व्यक्ति क्या कहता है जब मंडला पूरा हो जाता है और निर्माता एक ऐसे कमरे में होता है जहां से उनके अध्ययन कक्ष का कोई दृश्य नहीं होता और न ही जलने के लिए कोई दीपक होता है?

प्रकरण १३ - हस्तलेख
अपार्टमेंट खोज दल ने पिछली शाम राव के अध्ययन कक्ष को सील कर दिया था और इक्कीस तारीख की सुबह 8 बजे गोखले की देखरेख में दस्तावेज़ीकरण का काम फिर से शुरू किया। अध्ययन कक्ष यह बताता था कि वहाँ काम करने वाला व्यक्ति वास्तव में काशी का भक्त है - अव्यवस्था या विचित्रता से नहीं, बल्कि उसकी सुव्यवस्थित व्यवस्था से। दराज विषय और वर्ष के अनुसार व्यवस्थित थे, मेज के बीच में एक पांडुलिपि रखी थी, लंबे समय तक पढ़ने के लिए लैंप को एक कोण पर रखा गया था, और कार्वे रोड से लाई गई दो किताबें अभी भी अपने कागज़ के थैलों में बाएं कोने में रखी थीं, जिन्हें खोला नहीं गया था, खरीदा और घर लाया गया था, लेकिन अभी तक पढ़ा नहीं गया था क्योंकि मेज पर काम अधूरा था।
गोखले ने पांडुलिपि के स्कैन किए गए पन्नों को सुबह 9:17 बजे एक ही फाइल में प्रतिबंधित सिस्टम पर भेजा, कुल 87 पन्ने थे। जैसे ही मैंने उसे कॉफी टेबल पर खोला, करण पाटिल के कार्यालय में फोन पर सुबह के कार्यक्रम की पुष्टि कर रहा था: सुबह 11 बजे एक औपचारिक साक्षात्कार, सुबह 10 बजे लातूर जिला टीम द्वारा उदगीर धर्मशाला की सुरक्षा, और तांबे के औंध स्थित पते पर लगातार निगरानी, जिसमें उस सुबह 7:45 बजे ग्यारह दिनों में पहली बार हलचल दर्ज की गई थी।
जब करण अभी भी फोन पर ही था, मैंने पांडुलिपि को शुरू से पढ़ा। पांडुलिपि में कोई शीर्षक पृष्ठ नहीं था। यह एक वाक्य के मध्य से शुरू होती थी, या ऐसा प्रतीत होता था कि यह एक वाक्य के मध्य से शुरू होती है - मानो पहला पृष्ठ वास्तव में पहला पृष्ठ न होकर किसी विचार का हिस्सा हो जो कहीं और से शुरू हुआ था और यहाँ केवल उस बिंदु से दर्ज किया गया था जहाँ तर्क को दस्तावेजीकरण की

व्यक्ति अपनी मातृभाषा को पूरी तरह से तभी समझ पाता है जब वह दूसरी भाषा सीख लेता है। स्रोत सावधानीपूर्वक चुने गए थे – क्षेत्रीय मोनोग्राफ, मंदिर अभिलेख और वी.के. वैद्य का 1987 का भंडारकर संस्थान का विदर्भ शैव वंश पर शोध पत्र, जिससे मैं परिचित नहीं था लेकिन मैंने उसे नोट कर लिया।
मैंने इस भाग को दो बार पढ़ा। मैंने मन ही मन कहा - संरचना वास्तविक है। ज्ञान वास्तविक है। अंतर्निहित दुःख - क्योंकि दुःख ही वह भाव है जो लेखन के पहले भाग में व्यक्त किया गया है, भले ही इसे दुःख न कहा गया हो - वह वास्तविक है। वे एक ऐसी परंपरा के बारे में लिख रहे हैं जिससे उन्हें प्रेम है, और अगला भाग उस परंपरा के साथ जो हुआ उसके बारे में होगा, और तीसरा भाग उस परंपरा के साथ जो हुआ उसके बारे में उन्होंने क्या निर्णय लिया, उसके बारे में होगा। संरचना औपचारिक तर्क की संरचना है।
दूसरे भाग में संस्था के कामकाज का दस्तावेजीकरण एक ऐसे अन्वेषक की सटीकता से किया गया है जिसने कार्रवाई करने से पहले वर्षों तक अवलोकन किया हो। उन्होंने तीन वर्षों में अलग-अलग नामों से सात धार्मिक सभाओं में भाग लिया—संस्था के पंजीकरण प्रक्रिया में प्रतिभागियों के लिए पहचान पत्र की आवश्यकता नहीं थी, केवल वित्तीय योगदानकर्ताओं के लिए थी, और दो मामलों में उन्होंने गुप्त रूप से योगदान दिया। उन्होंने मराठवाड़ा क्षेत्र के निवेशकों और संपर्कों से बातचीत की, उन्हें बताई गई बातों और बाद में जो सच साबित हुआ, उसके बारे में गवाहियाँ एकत्र कीं, और संस्था के सार्वजनिक वैचारिक ढांचे और उसकी आर्थिक वास्तविकता के बीच के अंतर को उसी व्यवस्थित धैर्य से खोजा, जैसा उन्होंने परंपरा की वंशावली का अध्ययन करने में लगाया था।

मैं इस पंक्ति पर रुक गया। मैंने इसे तीन बार पढ़ा। वे गलत नहीं हैं। यह सत्ता प्रतिष्ठान द्वारा किए गए कार्यों का सही विश्लेषण है। असली रीति के चेहरे का इस्तेमाल नकली सामग्री को ले जाने के लिए किया गया - वह चेहरा किसी भी चेहरे से बदतर है क्योंकि वह चेहरा परंपरा का अपना है, और परंपरा का समुदाय उस चेहरे में विश्वास करता है, और यही विश्वास आय निकालने के लिए आवश्यक है। विश्लेषण सही है। लेकिन उससे निकाला गया निष्कर्ष गलत साबित होता है, और सही विश्लेषण और गलत निष्कर्ष के बीच का अंतर दार्शनिक और हत्यारे के बीच का अंतर है, और यह अंतर पाटा जा सकता है।
तीसरा भाग पहले दो भागों से लंबा था - तीस पृष्ठों का, जबकि पिछले भाग क्रमशः छब्बीस और सत्ताईस पृष्ठों के थे - और इसका लहजा भी अलग था: न तो वंशावली की स्थिर विद्वतापूर्ण गद्य शैली, न ही मूलभूत विश्लेषण की दस्तावेजी सटीकता, बल्कि ज्ञान का एक ऐसा प्रवाह था जिसे घटना घटित होने के बाद पढ़ा जाएगा ताकि यह समझा जा सके कि लोगों ने ऐसा क्यों किया।
उन्होंने अपने निर्णय का वर्णन हिंसा की भाषा में नहीं, बल्कि अनुष्ठानिक पुनर्स्थापना की भाषा में किया। परंपरा के अनुसार, किसी गंभीर अपवित्रता के लिए समान स्तर की अनुष्ठानिक प्रतिक्रिया आवश्यक होती है। उन्होंने इस सिद्धांत को लिखित स्रोतों में पाया था। उन्होंने इसकी उत्पत्ति क्षेत्रीय रीति- रिवाजों से खोजी थी। लेकिन यह सिद्धांत, अपने मूल संदर्भ में, सांप्रदायिक अपवित्रता के बाद सांप्रदायिक पुनर्स्थापना का वर्णन करता था। इसका उद्देश्य कभी भी व्यक्तिगत कार्रवाई नहीं था। उन्होंने इसे इसी रूप में समझा। यह गलत व्याख्या - एक जीवंत परंपरा के सहज अध्ययन से निर्मित उनकी अपनी व्याख्या - वह पुल

उन्होंने मंडल की ज्यामिति को अपनी स्वयं की संरचना के आधार पर तैयार किया – केंद्र में गेवराई, और प्रतिष्ठान के पाँच प्रमुख क्षेत्रीय बिंदुओं के अनुरूप पाँच दिशाएँ – क्योंकि परंपरा के अनुसार साधक को अपने अनुष्ठान के केंद्र में खड़ा होना चाहिए। वे अमूर्त रूप से केंद्र में नहीं खड़े थे। वे उस स्थान के केंद्र में खड़े थे जिसने उन्हें आकार दिया था। मंडल का निर्माण उनकी अपनी भौगोलिक स्थिति से हुआ था।
अंतिम पृष्ठों में क्रियान्वयन का वर्णन था - कार्यकारी रूप में नहीं, योजना के रूप में नहीं, बल्कि लेखन के समय तक जो कुछ हो चुका था, उसके अभिलेख के रूप में। भवानी पेठ। नासिक। उन्होंने नासिक के दृश्य का वर्णन इस प्रकार किया जिससे करण की परिकल्पना की पुष्टि हुई: उन्हें शास्त्री के बारे में जानकारी नहीं थी। जब वे सीताराम मंदिर क्षेत्र पहुँचे, तो उन्होंने देखा कि दृश्य पहले से ही निर्मित था। वे तुरंत समझ गए कि क्या हुआ था - प्रतिष्ठान के अपने ही समूह का एक व्यक्ति, समान प्रशिक्षण और समान शिकायत के साथ, स्वतंत्र रूप से कार्य कर रहा था और उसी अलंकारिक भाषा का प्रयोग कर रहा था क्योंकि अपने तर्क को प्रस्तुत करने के लिए उसके पास यही एकमात्र भाषा उपलब्ध थी। उन्होंने अपनी पांडुलिपि में एक टिप्पणी बनाई। वे दृश्य में कुछ भी जोड़े बिना चले गए।
वे उस्मानाबाद गए – जोशी – इस जानकारी के साथ कि कोई और भी उनकी अनुमति के बिना काम कर रहा था, जिससे उन्हें परेशानी हुई, इसलिए नहीं कि काम हो चुका था, बल्कि इसलिए कि वह योजना की आंतरिक सुसंगति के बिना किया गया था। कुलकर्णी द्वारा जोशी को शामिल करना, जिसे राव ने प्रतिष्ठान नेटवर्क की अपनी जांच से समझा, एक अलग तरह का था: यह कोई रस्म नहीं थी, बल्कि एक कार्यकारी दमन था।

[illegible]

[illegible]

[illegible]

*[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] — [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

सुबह ग्यारह बजे क्राइम ब्रांच की इमारत में वो खास माहौल था जो किसी जांच के औपचारिक पूछताछ के चरण तक पहुंचने पर बन जाता है - इमारत में कोई बदलाव नहीं होता, स्ट्रिप लाइटें और गलियारों में फर्श साफ करने वाली गंध हमेशा की तरह ही रहती है, लेकिन गलियारों से गुजरने वाले लोगों में एक अलग ही एकाग्रता और जागरूकता होती है, उस संगठन की जागरूकता जो एक खास पल के लिए काम कर रहा था और उस पल तक पहुंच चुका है और अब उस मुकाम पर है जहां उसका काम सबके सामने है। दूसरी मंजिल के गलियारे में कुछ ऐसे अधिकारी थे जिन्हें मैंने पहले कभी नहीं देखा था। तीन अधिकारी थे। बैठक कक्ष के दरवाजे पर पाटिल का सहायक। पानी के डिस्पेंसर के पास गोखले।
अंदर जाने से पहले मैंने गलियारे और प्रतीक्षालय में सात लोगों को गिना।
करण साक्षात्कार कक्ष में चला गया। मैं निगरानी कक्ष में था - एक अलग कमरा जिसमें एक तरफा कांच का पैनल लगा था और एक स्पीकर था जो कमरे से ऑडियो प्रसारित करता था। यह सही जगह थी, जैसा कि करण ने पिछली शाम बताया था: साक्षात्कार कक्ष में मेरी उपस्थिति किसी औपचारिक अनुमति के बिना थी, और आपराधिक मामले के साक्षात्कार रिकॉर्ड में मेरी कोई भी अस्पष्ट उपस्थिति दर्ज नहीं हो सकती थी। निगरानी कक्ष का उपयोग जांच अधिकारी की टीम करती है। मैं दस्तावेज़ीकरण सहायक था और यह दस्तावेज़ीकरण का काम था।
पाटिल पहले से ही साक्षात्कार कक्ष में मौजूद थे और मेज के शीर्ष पर बैठे थे। राव आगे थे, जिसका मतलब था कि मेरी स्थिति से शीशे के पार से उनका साइड व्यू दिखाई दे रहा था। उनकी वकील—एक महिला जिसे मैं नहीं जानती थी, एक सधे हुए और सलीके से पहने हुए

ग्रे कुर्ते में, उनके सामने एक फ़ोल्डर था और ऐसा लग रहा था जैसे उन्होंने ब्रीफिंग मिलने के बाद से नब्बे मिनट में वारंट का सारांश पढ़ लिया हो—उनके बगल में बैठी थीं। कोने में रिकॉर्डिंग अधिकारी थे। पाटिल के दाहिनी ओर करण थे।
राव संयमित थे। मुझे संयम की उम्मीद थी – पांडुलिपि, मेज पर रखी बंद किताबें, अध्ययन कक्ष की रोशनी – लेकिन संयम को औपचारिक कमरे, औपचारिक मेज, औपचारिक रिकॉर्डिंग के क्षण में बनाया जा सकता है और फिर वह टिकता नहीं है। उनका संयम कायम रहा। वे कुर्सी पर इस तरह स्थिर बैठे थे मानो उन्होंने इस स्थिति में व्यवहार करने का निर्णय ले लिया हो और उस निर्णय को लागू कर रहे हों। वे मेरी कल्पना से छोटे थे, उनके कार्यालय में लगी तस्वीर से भी छोटे – या कमरा उनकी उपस्थिति से बड़ा लग रहा था, जैसे कोई व्यक्ति जो अपने भीतर एक विशालता लिए रहता है, कभी-कभी भौतिक स्थान में छोटा सा प्रतीत होता है। उनके तार के फ्रेम वाले चश्मे वही थे जिनका वर्णन निंबालकर ने लातूर के दोपहर के भोजन के दौरान किया था। वे मेज पर कुछ भी नहीं लाए थे। उनके हाथ उनके सामने स्थिर थे।
पाटिल ने औपचारिक प्रोटोकॉल का पालन करते हुए साक्षात्कार शुरू किया - तिथि, समय और रिकॉर्ड के लिए उपस्थित लोगों की पहचान। फिर उन्होंने कहा: "प्रोफेसर राव, आप नंदकुमार शिंदे, सविता वाघ, दत्ताराम जोशी और चंद्रशेखर गोडबोले की हत्याओं के संबंध में यहां उपस्थित हैं। आपको वारंट और आपके अधिकार बता दिए गए हैं। आपके वकील उपस्थित हैं। क्या आप इस कार्यवाही की प्रकृति को समझते हैं?"
"हां," राव ने कहा। उनकी आवाज़ किसी व्याख्यान कक्ष की तरह थी - संयमित, शांत और स्पष्टता पर केंद्रित, न कि गर्मजोशी पर।

"प्रश्न शुरू होने से पहले क्या आप कुछ कहना चाहेंगे?"
एक पल का विराम। उनके वकील ने अपने हाथ मेज पर रखे - उन्हें छुआ नहीं, लेकिन मौजूद रहे, याद करते हुए।
"हां," राव ने कहा।
उनके वकील ने मुड़कर उनकी ओर देखा।
“मैंने भवानी पेठ और नागपुर में कार्रवाई की,” राव ने कहा। “मैंने उस्मानाबाद और नासिक में कार्रवाई नहीं की। मुझे नहीं पता कि उस्मानाबाद में कार्रवाई किसने की। मुझे पता है कि नासिक में कार्रवाई किसने की, लेकिन मैं उसमें शामिल नहीं था और न ही मैंने उसे अधिकृत किया था, और मुझे घटना होने से पहले इसकी जानकारी भी नहीं थी।” वे कुछ देर रुके। “मैं यह बात रिकॉर्ड पर कह रहा हूँ क्योंकि रिकॉर्ड सटीक होना चाहिए। मैं अपने वकीलों की सलाह पर, भवानी पेठ और नागपुर की कार्रवाइयों के बारे में औपचारिक साक्ष्य प्रक्रिया पूरी होने तक कुछ और नहीं कहूँगा।” फिर कुछ देर रुके। “मेरे अध्ययन कक्ष में मौजूद पांडुलिपि मेरा विवरण है। यह पूर्ण और सटीक है। मेरा सुझाव है कि प्रश्न पूछने से पहले इसे पढ़ा जाना चाहिए।”
उनकी वकील ने उन्हें ऐसे भाव से देखा जैसे वह किसी ऐसे मुवक्किल के साथ पेशेवर संबंध बनाए रख रही हो जिसने अप्रत्याशित बयान दिए हों और जिसने कार्यवाही की प्रकृति को काफी हद तक बदल दिया हो। उन्होंने राव से धीमी आवाज़ में कहा, "मुझे उनके साथ कुछ समय चाहिए।"
पाटिल ने कहा, "बेशक।" उन्होंने रिकॉर्डिंग अधिकारी की ओर देखा। "सलाह के लिए थोड़ी देर रुकिए।"
रिकॉर्डिंग बंद हो गई। करण ने अपनी कुर्सी से शीशे के पैनल की ओर देखा - मेरी ओर नहीं, बल्कि शीशे की ओर, जो एक अलग बात है लेकिन

[illegible]

> [illegible]

[illegible]: "[illegible]

पाटिल ने उन्हें देर तक देखा। "पांडुलिपि," उन्होंने कहा। "आपने कहा था कि प्रश्न पूछने से पहले इसे पढ़ लेना चाहिए। मैंने इसे पढ़ लिया है।" वे थोड़ी देर रुके। "मैं आपसे एक वाक्य के बारे में पूछना चाहता हूँ। पृष्ठ छियासठ।"
राव के वकील ने कहा: "उन्होंने इसकी पुष्टि कर दी है -"
"मैं पृष्ठ छियासठ के बारे में पूछे गए प्रश्न का उत्तर दूंगा," राव ने कहा। उन्होंने अपने वकील की ओर देखे बिना, एक ऐसी सपाटता के साथ यह बात कही जो असभ्य नहीं थी, बल्कि आत्मविश्वास से भरी थी।
पाटिल ने कहा: "आपने गोडबोले के बारे में लिखा था कि वह कार्रवाई करने से पहले संस्था के प्रभाव क्षेत्र से बाहर निकलने की कोशिश कर रहे थे। आपने लिखा कि इससे आपके साथ जुड़ी बातें बदल जाती हैं। अब आप क्या साथ लेकर चलते हैं?"
राव ने कुछ पल मेज की ओर देखा। फिर पाटिल की ओर। उन्होंने कहा, “मुझे यह ज्ञान है कि मैंने उनसे पहले ही निर्णय ले लिया था। मेरा निर्णय रचनात्मक था—सत्ता प्रतिष्ठान में उनकी स्थिति ने उन्हें चौथे निर्देश का विषय बना दिया था। बाद में उनके द्वारा अपने निर्णय को सुधारने के लिए पीछे हटने का विकल्प मेरे लिए उपलब्ध नहीं था, क्योंकि निर्णय लिया जा चुका था और कार्रवाई की तैयारी हो चुकी थी। मैंने बदली हुई जानकारी के बावजूद कार्रवाई की।” वे रुके। “मुझे यह ज्ञान है कि एक ऐसा समय था जब कार्रवाई और बदली हुई जानकारी में तालमेल बिठाया जा सकता था, और मैंने तालमेल न बिठाने का विकल्प चुना।” फिर थोड़ी देर रुके। “यह पांडुलिपि में लिखा है।”
"आपने समन्वय क्यों नहीं किया?" पाटिल ने कहा।

लंबा विराम। अब तक के साक्षात्कार का सबसे लंबा विराम। राव ने कहा, "क्योंकि तर्क की यही मांग थी। क्योंकि चयन में सुधार करने से नमूने में एक ऐसी विसंगति आ जाती जिसे तर्क दूर नहीं कर सकता था। क्योंकि मैंने यह तय कर लिया था कि सुधार से ज्यादा तर्क महत्वपूर्ण है।" उन्होंने तालिका की ओर देखा। "मैं इस बारे में गलत था। तर्क सुधार से अधिक महत्वपूर्ण नहीं हो सकता। नागपुर के बाद मुझे यह बात समझ में आई। अब मैं इसे और भी अच्छी तरह समझता हूँ।"
पाटिल उन्हें काफी देर तक देखते रहे। मैं शीशे के पार से पाटिल का चेहरा देख पा रहा था और उनके चेहरे पर एक ऐसे व्यक्ति के भाव थे जिन्होंने वर्षों तक पुलिस अधिकारी के रूप में काम किया है और कई पीड़ित लोगों के सामने बैठकर यह सीखा है कि किसी व्यक्ति के स्वभाव को काम के स्वरूप में बाधा नहीं बनने देना चाहिए, लेकिन इस विशेष क्षण में, वे किसी ऐसी चीज के सामने हैं जो उनके अनुभव द्वारा निर्मित श्रेणियों में फिट नहीं बैठती।
"विनाश का यह कृत्य किसने किया?" पाटिल ने पूछा।
राव के वकील ने कहा: "उन्हें ऐसा करना चाहिए -"
"शायद वंदना शास्त्री," राव ने कहा। और फिर, साक्षात्कार में पहली बार, उन्होंने सीधे कांच के पैनल की ओर देखा। कांच की ओर नहीं - क्योंकि वे उसके आर-पार नहीं देख सकते थे - बल्कि कांच के उस बिंदु की ओर जहाँ मैं खड़ी थी। ठीक वैसे ही जैसे कोई व्यक्ति उस जगह को देखता है जहाँ उसे पता होता है कि कोई रिकॉर्ड रखा जा रहा है।
उनके वकील का हाथ उनकी बांह पर चला गया।
उन्होंने कहा, "राव इस समय कोई और बयान नहीं देंगे।" साक्षात्कार सुबह ग्यारह बजकर सैंतालीस मिनट पर समाप्त हुआ।

[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible], [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]:

> [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

नहीं देखा, जिसका मतलब है कि उन्होंने उस प्रवेश द्वार का इस्तेमाल किया जो निगरानी क्षेत्र में नहीं था।” वे थोड़ी देर रुके। “हम इमारत के दूसरे प्रवेश द्वार की जाँच कर रहे हैं। इमारत में पीछे की गली से सामान ढोने वाली लिफ्ट के ज़रिए भी प्रवेश है, जो मूल निगरानी प्रणाली के दायरे में नहीं थी। निगरानी प्रणाली में बदलाव किया गया है।”
"तुम कब जानोगे?"
"शुभ दोपहर," उन्होंने कहा। "अगर संशोधित सेटअप से पुष्टि होती है कि वह लाइट टाइमर पर है, तो हम फिर से आकलन करेंगे। अगर वह गतिविधि की पुष्टि करता है, तो हमें सुराग मिल जाएगा।"
मैंने यह बात करण को प्रतीक्षालय में बताई। उसने सिर हिलाकर सहमति जताई, जिसका मतलब था कि यह वही विचार था जो उसने खुद सोचा था और अब उसे भी इसी तरह की जानकारी मिल रही थी।
“पाटिल औंध के पते पर जो भी जानकारी है, उसे आगे बढ़ाना चाहते हैं,” उन्होंने कहा। “राव की गिरफ्तारी आज सुबह 10 बजे क्राइम ब्रांच की प्रेस कॉन्फ्रेंस में सार्वजनिक रूप से दर्ज है। तांबे को दोपहर तक पता चल जाएगा। ग्यारह दिनों से चल रही कोई भी गतिविधि या गतिविधि पैटर्न, खबर मिलते ही बदल जाएगा, और यह बदलाव हमें पते के बारे में कुछ न कुछ बताएगा, भले ही तांबे वहां मौजूद न हों।” वे थोड़ी देर रुके। “गोखले दोपहर 2 बजे औंध के पते पर एक टीम का समन्वय कर रहे हैं। कोई गिरफ्तारी नहीं – पते की जांच, राव वारंट से जुड़ी साक्ष्य संग्रह गतिविधि के रूप में औपचारिक रूप से दर्ज की गई है। सुरेश एंटरप्राइजेज का जांच रिकॉर्ड में तांबे की पहचान के साथ एक दस्तावेजित कार्य संबंध है। यह प्रविष्टि के लिए पर्याप्त है।”

***

दोपहर 12:14 बजे, गोखले की निगरानी टीम ने पुष्टि की: औंध बिल्डिंग की पिछली गली में स्थित सामान ढोने वाली लिफ्ट का इस्तेमाल उस सुबह किया गया था। लिफ्ट के कैमरे ने सुबह 7:52 बजे लिफ्ट का इस्तेमाल करते हुए एक व्यक्ति की तस्वीर खींची - कार्यालय की बत्तियाँ जलने से तीन मिनट पहले। वह व्यक्ति लगभग 45 वर्ष का पुरुष था और उसके हाथ में एक बैग था। तस्वीर इतनी स्पष्ट नहीं थी कि चेहरा पहचाना जा सके, लेकिन यह बिल्डिंग मैनेजर द्वारा दिए गए सुरेश एंटरप्राइजेज के निवासी के विवरण से मेल खाती थी।
तांबे उस सुबह वहीं मौजूद था।
राव की गिरफ्तारी की खबर सुबह 10 बजे क्राइम ब्रांच की प्रेस कॉन्फ्रेंस के बयान में थी। बयान जारी होने से पहले तांबे इमारत में मौजूद थे। वे कुछ लेने आए थे - या यह देखने आए थे कि कोई चीज़ अभी भी वहाँ है या नहीं, या किसी के लिए कुछ छोड़ने आए थे, या बस उस जगह की स्थिति की पुष्टि करने आए थे जहाँ वे ग्यारह दिनों से नहीं गए थे - और बयान जारी होने से पहले ही वे चले गए। मैंने कहा, "वे खबर आने से पहले ही आ गए थे। इसका मतलब है कि वे किसी और मकसद से आए थे। प्रेस कॉन्फ्रेंस में बयान आने से पहले ही उन्हें पता था कि गिरफ्तारी हुई है।"
करण ने खिड़की से बाहर देखा। "सिस्टम लीक हो गया है," उसने कहा। "सिस्टम रीसेट होने से पहले कोऑर्डिनेशन लॉग को एक्सेस करने वाला अकाउंट। उपाध्याय ने अकाउंट की पहचान कर ली है, लेकिन उसके पीछे के व्यक्ति की नहीं। अगर उस व्यक्ति ने सिस्टम रीसेट होने के बाद भी सोशल कॉन्टैक्ट्स के ज़रिए तांबे को जानकारी देना जारी रखा - जैसा कि मैंने पिछले हफ्ते कहा था कि यह संभव है - तो

तांबे को वारंट जारी होने की जानकारी उन कॉन्टैक्ट्स के ज़रिए मिली होगी, न कि प्रेस कॉन्फ्रेंस के बयान से।"
मैंने कहा, "वे दस्तावेज़ लेने आए थे। सुरेश एंटरप्राइजेज के कार्यालय में कार्यकारी लॉजिस्टिक्स स्तर को जनादेश से जोड़ने वाली हर चीज़ - आपूर्ति श्रृंखला के रिकॉर्ड, कुलकर्णी के वित्तीय संस्थानों के साथ समन्वय, ब्लेड की खरीद। वे औपचारिक साक्ष्य स्थल बनने से पहले ही उन्हें ले जाने आए थे।"
"या फिर वे आए और उन्होंने पुष्टि की कि वे अभी भी वहीं हैं और उन्होंने अनुमान लगाया कि उन्हें हटाने में जितना समय लगा है उससे कहीं अधिक समय लगेगा," करण ने कहा। "कैमरा बैग के अंदर जाने की पुष्टि करता है। यह अलग वजन वाले बैग के बाहर जाने की पुष्टि नहीं करता है।"
दोपहर 2 बजे जब टीम पहुंची, तब तक गोखले के पास दोनों संभावनाएं मौजूद थीं। सुरेश एंटरप्राइजेज के कार्यालय में घुसपैठ हो चुकी थी - दरवाजे का ताला किसी चाबी वाले व्यक्ति द्वारा तोड़ा नहीं गया था, बल्कि उसका इस्तेमाल किया गया था। अंदर: कार्यालय इस तरह व्यवस्थित था मानो हाल ही में उसका नवीनीकरण किया गया हो, लेकिन उसका उपयोग नहीं किया गया हो; फाइलों को इधर-उधर किया गया था और उनमें कुछ मामूली त्रुटियां थीं जो किसी ऐसे व्यक्ति द्वारा की गई होंगी जो पहले काम करता था और फाइलों से अच्छी तरह परिचित था लेकिन अब सहज नहीं था। दो फाइलिंग कैबिनेट के दराज खोले और बंद किए गए थे - अंदर फाइलें मौजूद थीं लेकिन कम हो गई थीं, सामग्री निकाले जाने के कारण खाली जगहें दिखाई दे रही थीं। मेज पर रखे चार्जिंग स्टेशन से लैपटॉप गायब था, केवल केबल और स्टेशन ही मौजूद थे।
लैपटॉप और जो भी फाइलें ले जाई गईं, वे तांबे के साथ थीं।

[illegible]

> [illegible]

[illegible] 3:11 [illegible] “[illegible]

"संपर्क करना चाहते हो?" करण ने कहा।
“वे इस धंधे में इतने लंबे समय से हैं कि वे समझते हैं कि किसी मामले से ज़्यादा अहमियत बेदाग़ी की होती है,” गोखले ने कहा। “अगर राव के कबूलनामे से अभियोजन पक्ष के मामले में तांबे की कार्यकारी ज़रूरत खत्म हो जाती है — अगर तांबे की गवाही के बिना राव का बयान काफ़ी है — तो तांबे का पलड़ा भारी हो जाएगा। लेकिन अगर तांबे के पास ऐसे दस्तावेज़ हैं जो मामले को कुलकर्णी तक ले जाते हैं, और अगर कुलकर्णी पुलिस के लिए कोई बड़ा आदमी है, तो बातचीत में तांबे के दस्तावेज़ों का महत्व होगा।” एक विराम के बाद उन्होंने कहा, “उन्होंने लैपटॉप और उससे जुड़ी फाइलें इसलिए लीं क्योंकि उन्हें बातचीत के लिए उनकी ज़रूरत थी। उन्हें नष्ट करने के लिए नहीं — बल्कि अपने पास रखने के लिए।”
करण कुछ पल चुप रहा। फिर बोला, "उन्हें संपर्क करने दो। आज औंध वाले पते पर मत जाओ। इसे एक ज्ञात स्थान के रूप में खुला रखो। अगर वे बातचीत करना चाहते हैं, तो उन्हें एक माध्यम की आवश्यकता होगी। उन्हें वह माध्यम प्रदान करो।"
मैंने कहा, "सर्वेक्षण संख्या। वही संख्या जिस पर अनन्या ने वापस कॉल किया था।"
करण ने मेरी तरफ देखा। फिर बोला: "जी हाँ। गोखले - सर्वे का नंबर। इसे किसी निगरानी वाली लाइन पर डाल दो। अगर तांबे को जांच में किसी सामाजिक संपर्क से जानकारी मिल रही है, तो उस संपर्क ने उसे यह नंबर पहले ही दे दिया होगा। अगर नहीं, तो हम बिल्डिंग मैनेजर के ज़रिए पेरू के निवासी - सुरेश एंटरप्राइजेज - को एक संदेश छोड़ देंगे कि सरकारी सर्वे टीम उनसे संपर्क करने की

कोशिश कर रही है। यह कुछ ऐसा होगा जो जांच से ज़्यादा प्रशासनिक लगेगा।"
गोखले ने पुष्टि की और फोन काट दिया।

***

वंदना शास्त्री के बारे में सूचना हमें दोपहर 4:28 बजे एसपी देशमुख की नासिक टीम के माध्यम से मिली। राव द्वारा औपचारिक साक्षात्कार में शास्त्री का उल्लेख किए जाने की सूचना दोपहर 12:30 बजे देशमुख को दी गई। साक्षात्कार समाप्त होने के बाद पाटिल ने नासिक टीम को शास्त्री को संदिग्ध व्यक्ति की श्रेणी में रखने का अधिकार दिया। देशमुख ने दोपहर 1:45 बजे दो अधिकारियों को वारंट के साथ शास्त्री के अस्पताल भेजा। राव के साक्षात्कार के बयान, शरीर रचना विज्ञान पाठ्यक्रम में उपस्थिति और घाव के विवरण के आधार पर नासिक मजिस्ट्रेट ने वारंट पर कार्रवाई की।
शास्त्री अपने क्लिनिक में थीं। उन्होंने दरवाजा खोला। उन्होंने वारंट देखा। उन्होंने कहा, "मुझे परामर्श कक्ष बंद करना होगा।" उन्होंने ऐसा ही किया - पर्दा खींचा, साइनबोर्ड घुमाया, अंदर का दरवाजा बंद किया - और बिना किसी और चर्चा के अधिकारियों के साथ चली गईं।
नासिक क्राइम ब्रांच में, शास्त्री के वकील की उपस्थिति में दोपहर 3:15 बजे एक औपचारिक साक्षात्कार में देशमुख ने नासिक रिट्रीट में अपने नाम और उपस्थिति की पुष्टि की। वाघ के बारे में पूछे जाने पर उन्होंने कहा, "उसने मुझे कुछ ऐसा बताया जो सच नहीं था। मुझे नहीं लगता कि उसे पता था कि यह सच नहीं है। इससे नुकसान कम नहीं हुआ।" यही बात उन्होंने पिछले दिन अधिकारियों को भी कही थी, उन्हीं शब्दों में, जिससे पता चलता है कि वह इस बात

[illegible]

[illegible] 9:05 [illegible]: "[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible] 5 [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible], "[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]" "[illegible]," [illegible]

[illegible], "[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [

[illegible]: [illegible] [illegible] [illegible], [illegible] [illegible] [illegible]

किया गया था, एक ऐसी कार्रवाई का प्रमाण थी जो सुनियोजित थी, जिसका स्थान निर्धारित किया गया था और जिसका लक्ष्य एक ऐसा व्यक्ति था जो इस समय शिवाजीनगर के सरकारी गेस्ट हाउस में एक सांस्कृतिक कार्यक्रम सर्वेक्षण ब्रीफिंग में भाग ले रहा था और जीवित था।

***

करण शाम छह बजकर पंद्रह मिनट पर आकर कॉफी टेबल पर बैठ गया। उसके चेहरे पर एक ऐसे व्यक्ति का भाव था जो दिन भर की गहन जांच से थका हुआ था और जिसका आज का हिसाब-किताब अभी खत्म नहीं हुआ था। उन्होंने कहा, "कॉपर चैनल है। सर्वे नंबर - बिल्डिंग मैनेजर को सुरेश एंटरप्राइजेज के निवासी के लिए संदेश दे दिया गया है। हम इंतजार करेंगे।"
"हां," मैंने कहा।
“राव हिरासत में हैं। साक्ष्य प्रस्तुत करने की औपचारिक प्रक्रिया कल से शुरू होगी। उनके वकील विस्तार से जानकारी देंगे।” वे थोड़ी देर रुके। “हस्तलेख मुख्य बिंदु होगा। उनके द्वारा किए गए दो कार्य उनके स्वयं के दस्तावेज़ हैं – आपूर्ति श्रृंखला की पुष्टि, चोट का विवरण, भौतिक साक्ष्य – जिन पर मामला आधारित है। हस्तलेख में पूर्वविचार और सुनियोजित योजना का पहलू जुड़ जाता है। साथ ही, यह उनके नैतिक मूल्यों को भी दर्शाता है।” उन्होंने बोर्ड की ओर देखा। “अदालत को इस बात को स्वीकार करना होगा कि हस्तलेख में उनके मीठी-मीठी बातें करने के प्रयास का क्या अर्थ है।”
मैंने कहा, "इससे उनके द्वारा ले जाई जाने वाली चीज़ों में बदलाव आ जाता है।"

"हां," करण ने कहा। "और इससे अदालत के फैसलों में भी बदलाव आएगा।"
हम कुछ देर चुपचाप बैठे रहे। पंखा चल रहा था, हल्की ठंडक अब पूरी तरह महसूस हो रही थी, मौसम अपने पूरे रंग में था। इक्कीस दिनों की जांच, अब बोर्ड पर, बहीखाते में, सीमित प्रणाली के संचित अभिलेखों में, और प्रोफेसर की हस्तलिखित 83 पृष्ठों की पांडुलिपि में दर्ज थी, जो अब इस अपार्टमेंट से तीन किलोमीटर दूर अपराध शाखा भवन में साक्ष्य बैग में रखी है।
लगभग सात बजे मैंने रात का खाना खाया। चावल और वराना, जिसे मैं पिछले दो हफ्तों से सुधारने की कोशिश कर रहा था – एक अनिवार्य अभ्यास के रूप में, जो पोषण से कहीं बढ़कर कौशल था। करण ने काउंटर के बजाय मेज पर बैठकर खाना खाया, जिसका मतलब था कि शाम उस मुकाम पर पहुँच गई थी जहाँ खाना खाना एक औपचारिक गतिविधि के बजाय एक विराम हो सकता था।
मैंने कहा, "उसके चाचा। मेरा मतलब है, वानखेड़े से।"
“सुरक्षा प्रोटोकॉल बरकरार है,” करण ने कहा। “गोखले ने नागपुर स्थित एक अधिकारी को अनौपचारिक निगरानी के लिए तैनात किया है – काका अपना पूरा दिन वहीं बिताते हैं और वह अधिकारी उनके करीब तो है लेकिन प्रमुख भूमिका में नहीं है। वानखेड़े उस अधिकारी को हर दिन फोन करते हैं।” वे थोड़ी देर रुके। “राव की हिरासत और पांचवीं दृश्य सामग्री सुरक्षित होने के बाद, काका को कार्यकारी स्तर पर खतरा काफी हद तक कम हो गया है। बचा हुआ खतरा कुलकर्णी पक्ष से है – अगर कुलकर्णी की वित्तीय जांच से इतना दबाव बनता है कि वह प्रतिष्ठान के उन निवेशकों के खिलाफ कार्रवाई करते हैं जिन्होंने जांचकर्ताओं से बात करना शुरू कर दिया है, तो काका संभावित रूप से खतरे में पड़ सकते हैं।” वे

थोड़ी देर रुके। “लेकिन कुलकर्णी की जांच जारी है। शेख के वित्तीय दस्तावेज महीने के अंत तक पूरे हो जाएंगे। यह जांच तांबे से अलग कुलकर्णी के मामले को बंद कर देगी। तांबे अपनी जांच में तेजी ला रहे हैं।”
मैंने कहा, "और तांबा इंतजार कर रहा है।"
"वे हिसाब-किताब कर रहे हैं," करण ने कहा। "वे गणित में माहिर हैं। उन्होंने पूरी सीरीज़ की कार्यकारी व्यवस्था संभाली और बीस दिनों तक गायब रहे। वे आगे क्या करना है, इस बारे में जल्दबाजी में फैसला नहीं लेंगे।" उन्होंने अपने खाने की तरफ देखा। "वे फैसला करेंगे। शायद आज रात, शायद कल। जब वे अपना हिसाब-किताब कर लेंगे।"
सर्वे नंबर रात के नौ बजकर चौंतीस मिनट पर बजा।
करण अपनी डेस्क पर था। मैं कॉफी टेबल पर था। निगरानी वाली फोन लाइन से अलर्ट हम दोनों के फोन पर एक साथ आया - एक नंबर, जो पुणे के नाम से शुरू हो रहा था, जिसे निगरानी प्रणाली ने तुरंत औंध क्षेत्र के एक सार्वजनिक फोन बूथ से आया हुआ नंबर बता दिया। सार्वजनिक टेलीफोन बूथ। उनका फोन नहीं। कोई नया सिम कार्ड नहीं। बूथ उनके आखिरी ज्ञात पते के इलाके में था, जिसका इस्तेमाल किसी ऐसे व्यक्ति ने किया था जिसे लगा कि निगरानी में रखे गए फोन पर कॉल आएंगी और वह चाहता था कि कॉल स्वीकार्य हों लेकिन उनका पता न लगाया जा सके।
करण ने दूसरी घंटी बजते ही फोन उठा लिया।
आवाज शांत और सहज थी—ठीक वैसी ही आवाज जिसे निम्बालकर ने कुशल आवाज बताया था। एक ऐसी आवाज जो इतने लंबे समय से उन लोगों के लिए रसद का प्रबंधन कर रही थी जो बिना कागजी कार्रवाई के काम करना चाहते थे कि कुशलता उनकी स्वाभाविक शैली बन गई थी।

"मुझे पता चला है कि आप महाराष्ट्र में सामुदायिक कार्यक्रम के बुनियादी ढांचे के बारे में जानकारी एकत्र कर रहे हैं," आवाज ने कहा।
"हां," करण ने कहा।
“मेरे पास कुछ जानकारी है जो आपके सर्वेक्षण के लिए प्रासंगिक हो सकती है।” एक विराम। “मैं इसे आपको व्यक्तिगत रूप से, अपनी पसंद के स्थान पर, दोनों पक्षों के लिए सुविधाजनक समय पर देना चाहूंगा।” एक और विराम। “मैं कल सुबह उपलब्ध हूं।”
"हम मिल सकते हैं," करण ने कहा।
"वैशाली," आवाज ने कहा। "सुबह के दस बजे। पीछे वाले कोने की मेज पर।"
फोन पर सन्नाटा छा गया।
करण ने फोन नीचे रख दिया और मेरी तरफ देखा।
वैशाली। पीछे के कोने वाली मेज। वही मेज जहाँ अनन्या दो दिन पहले सुबह बैठी थी और बोली थी: मुझे ऐसी बनावट पसंद नहीं जिसमें दोनों पक्षों को पता हो कि यह बनावट है। इससे संवाद का वह समय बर्बाद होता है जो महत्वपूर्ण है।
तांबे ने भी वही मेज चुनी। मुझे नहीं पता था कि यह महज़ एक संयोग था कि वह मेज उन लोगों के बीच मशहूर थी जो पहली बार मिलने वाले लोगों से सावधानीपूर्वक बातचीत करना चाहते थे, या तांबे ने जानबूझकर प्रवेश द्वार से सबसे दूर और दूसरे निकास द्वार के सबसे नज़दीक वाला कोना चुना था, जहाँ से सड़क और दरवाजे दोनों दिखाई देते थे।
मैंने कहा, "वे अकेले नहीं होंगे। उनके अंदर आने से पहले कमरे पर नज़र रखने के लिए कोई न कोई मौजूद रहेगा।"
"मुझे पता है," करण ने कहा।

[illegible], "[illegible] [illegible] [illegible] [

[illegible] [illegible] [illegible] [

- [illegible]:

[illegible] [illegible] [illegible] [illegible]? [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]? [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] - [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]? [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

- [illegible]:

[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [

□□□□□□ 14 - □□□ □□□□

□□ □□□□ 9:41 □□□ □□□□□□ □□□□□□□

□□□ □□ □□□□ □□□□□□ □□□□□□ □□□□ □□□□: □□□□□ □□ □□□ □□ □□□□ □□□□ □□ □□□□□□ □□□□ □□ □□□ □□□□□ □□□ □□, □□□□ □□□□ □□ □□□□ □□□□□□□ □□ □□□□ □□□□ □□□ □□ □□ □□□□□ □□□□ □□ □□□□ □□□ □□□ □□□□□□ □□□□ □□□□ □□□□□ □□□□□□ □□□ □□□ □□□□□□ □□□□□ - □□□□ □□ □□□□ □□□□ □□□ □□ □□□ □□□ □□ □□□□□ □□□□ □□ □□□ □□□ □□□ □□ □□□□ □□□ □□□□□ □□□ □□□□□□ □□□□ □□□ □□□ □□□ □□□ □□ □□□□□□□ □□ □□□ □□□□ □□□□ □□ □□□□ □□□□□□ □□□□□ □□ □□□□□ □ □□ □□□ □□□

□□□□ □□□□ □□ □□ □□ □□□□□ □□ □□□ □□ □□□□ □□ □□□□ □□□□ □□, □□ □□□□ □□□□ □□□□ □□ □□ □□□□□ □□□ □□□□ □□□□ □□□ □□□□□ □□ □□□□□□□□□□ □□ □□□□□ □□□□ □□□□□□ □□□

□□□□ □□□□□ □□□□□ □□□ □□□□□□ □□□□□ □□ □□ □□□□ □□□□□□ □□ □□□ □□□□ □□□ □□□□□□ □□ □□□□□ □□□□ □□□□□□ □□ □□□ □□□□ □□□□□□ □□□ □□ □□□ □□□

□□□□□ □□□□, "□□□ □□ □□□□ □□□ □□□"

"□□ □□□□,"□□□ □□ □□□□

"□□□ □□ □□□□ □□□ □□□"

"□□ □□□□ □□□□□□□□ □□□□ □□□□□ □□□ □□□□ □□ □□ □□ □□□□ □□ □□□ □□□□□□□□ □□ □□ □□□ □□□□ □□□□ □□, □□ □□□□ □□□□ □□□ □□ □□□□ □□□ □□□□ □□□□ □□ □□ □□ □□□ □□□ □□, □□ □□□ □□ □□□ □□□ □□, □□ □□ □□□ □□□□ □□□□□□ □□□ □□ □□□□□□□□□□ □□ □□□□, □□□□□ □□□□ □□□□□□ □□□□□ □□ □□□□□□□□□□ □□ □□□□ □□□□□□□□□□" □□□□ □□□□ □□□ □□ □□ □□□□□□ "□□ □□□ □□□□ □□□ □□□ □□ □□□ □□□□ □□□ □□□□ □□ □□□□ □□□ □□ □□□ □□□ □□ □□ □□□□□□□□□□ □□□□□□□ □□ □□□□□□□ □□, □ □□ □□□□ □□□ □□□□□□□ □□□"

वह सही था, और मुझे पता था कि वह सही है, और मैंने इसलिए नहीं पूछा क्योंकि मुझे लगा कि तांबे नहीं आएगा, बल्कि इसलिए कि सुबह नौ बजकर 41 मिनट पर वैशाली के पिछले कोने में बैठे रहना और बैठक शुरू होने में उन्नीस मिनट बचे होना, ऐसे विचार पैदा करता है जिन्हें कहीं न कहीं जगह चाहिए होती है, और ऐसे प्रश्न पूछना जिनके उत्तर आपको पता हों, उन्हें कहीं न कहीं जगह देने का एक तरीका है।
मैं प्रवेश द्वार की ओर देख रहा था।
सुबह 9:54 बजे एक आदमी दरवाजे से अंदर आया जो पुलिसवाला नहीं था। वह साठ वर्ष का था, सिर पर चश्मा लगाए, कुर्ता पहने, एक नियमित ग्राहक की सुबह की दिनचर्या के अनुसार। वह काउंटर पर गया, कुछ पार्सल मंगवाए और चला गया। मैंने उसे नोट कर लिया और नोटबुक एक तरफ रख दी।
सुबह 9:58 बजे, दो बच्चों वाली एक महिला आई और बीच में एक मेज पर बैठ गई। मैंने उन पर ध्यान दिया।
सुबह दस बजकर एक मिनट पर, चालीस वर्ष का एक व्यक्ति दरवाजे से अंदर आया, प्रवेश द्वार पर दो सेकंड के लिए रुका - यह ठहराव किसी व्यक्ति के कमरे में चारों ओर देखने के दौरान होता है, जो अंदर की रोशनी के अनुसार अपनी आंखों को समायोजित करने के दौरान होने वाले ठहराव से अलग होता है - और फिर पीछे के कोने की ओर चल पड़ा, उस उद्देश्यपूर्ण सरलता के साथ जैसे कोई व्यक्ति तब चलता है जब उसने पहले ही तय कर लिया हो कि उसे कहाँ जाना है और दरवाजे से गंतव्य तक कम से कम जानकारी ले जाना चाहता हो।
वह हमारे सामने बैठ गया।
तांबे तेज और सधे हुए थे, उनका चेहरा ऐसा लग रहा था मानो वे इतने लंबे समय से कुशल रहे हों कि कुशलता ही उनकी दिनचर्या बन गई हो।

बिल्डिंग मैनेजर के अनुसार उनकी उम्र चालीस थी। उन्होंने एक सादी कमीज और पैंट पहनी हुई थी, जिसमें कोई खास बात नहीं थी—ऐसे कपड़े जो किसी ऐसे व्यक्ति के हों जो गुमनाम दिखना चाहता हो।
उनके हाथ मेज पर थे। उनका बैग उनकी गोद में, मेज के नीचे था।
उन्होंने करण को देखा, फिर मुझे, और फिर वापस करण को।
"तुम अकेले आए हो," उसने कहा।
"हां," करण ने कहा।
"क्या बाहर कोई नहीं है?"
करण ने कहा, "इमारत के कोनों पर दो पुलिस अधिकारी तैनात हैं। जब तक मैं कोई संदेश नहीं भेजता, वे पास नहीं आएंगे। मैंने कोई संदेश नहीं भेजा।"
तांबे ने इसे बिना किसी भावना के स्वीकार कर लिया। यही उसकी उम्मीद थी - वह वैशाली यह सोचकर नहीं आया था कि पाली नहीं होगी, और जो वह पहले से जानता था उसकी पुष्टि होना इनकार से कहीं अधिक संतोषजनक था। जो व्यक्ति पाली के बारे में झूठ बोलता है, उसके अन्य कथन भी विश्वसनीय नहीं होते। करण की पुष्टि होना विश्वसनीयता हासिल करने का एक तरीका था।
तांबे ने कहा, "मेरे पास दस्तावेज हैं।"
"मुझे पता है," करण ने कहा।
“दस्तावेजों से कुलकर्णी के संगठन और फाउंडेशन के सामुदायिक निवेश माध्यमों की पूरी वित्तीय संरचना स्थापित होती है,” उन्होंने रुककर कहा। “इनसे कुलकर्णी की खरीद प्रक्रिया का भी विस्तृत विवरण मिलता है – ब्लेड की सोर्सिंग, सामग्री की व्यवस्था। उन्होंने हत्याओं का निर्देश नहीं दिया था। लेकिन उन्हें पता था कि खरीद प्रक्रिया चल रही है और उन्होंने इसे

रोका नहीं, और दो मामलों में उन्होंने रसद की व्यवस्था में मदद की क्योंकि यह उनके परिचालन हित में था।”
"कुलकर्णी कहाँ है?" करण ने कहा।
रुको। "नासिक।" उसने सपाट लहजे में कहा, मानो कोई ऐसा पत्ता मेज पर रख रहा हो जिसे उसने पहले ही अपने पास रखने का फैसला कर लिया हो। "वह उस सुबह वहाँ गया था जब आपका कोरेगांव पार्क समन्वय नोट सिस्टम में आया था। तब से वह नासिक के त्रिंबक रोड इलाके में एक जगह पर है। संपत्ति एक ट्रस्ट के नाम पर है - उन चार संस्थाओं में से एक नहीं जिनका शेख दस्तावेजीकरण कर रहा है। पाँचवीं संस्था। ट्रस्ट की त्रिंबक रोड इलाके में एक संपत्ति है जिसका वित्तीय दस्तावेजों में अभी तक उल्लेख नहीं है।"
करण ने उसे स्थिर निगाहों से देखा। "तुम मुझे कुलकर्णी दे रहे हो।"
तांबे ने कहा, "मैं आपको कुलकर्णी और पूरी वित्तीय श्रृंखला सौंप रहा हूँ। बदले में, मैं अनुरोध करता हूँ कि परिचालन व्यवस्था में मेरी भूमिका—जो प्रशासनिक थी, निर्देशात्मक नहीं, और जिसे मैं दस्तावेजों से स्वयं सिद्ध कर सकता हूँ—किसी भी औपचारिक प्रक्रिया में सटीक रूप से दर्ज की जाए।" वे कुछ देर रुके। "मैं छूट नहीं माँग रहा हूँ। मैं सटीकता की माँग कर रहा हूँ।"
करण ने कहा, "मैं सटीकता प्रदान कर सकता हूं। औपचारिक प्रक्रिया सटीकता के साथ क्या करती है, यह तय करना मेरा काम नहीं है।" “मैं समझता हूँ,” तांबे ने कहा। “मैं बीस साल से ऐसे लोगों के लिए प्रशासनिक काम कर रहा हूँ जिनके फैसले मैंने नहीं लिए। मुझे पता है कि रिकॉर्ड में सटीकता का क्या मतलब होता है और क्या नहीं।” उन्होंने अपनी गोद में रखे बैग में से बैग को बिना

उतारे ही उसमें हाथ डाला—ऐसा लग रहा था जैसे उन्होंने पहले भी कई बार ऐसा किया हो—और मेज पर एक यूएसबी ड्राइव रख दी। फिर छपे हुए पन्नों का एक फोल्डर। फिर एक और छोटा फोल्डर। “इस ड्राइव में डिजिटल फाइलें हैं। पहला फोल्डर वित्तीय संरचना का है। दूसरा फोल्डर कुलकर्णी के पत्राचार का है—कुलकर्णी और फाउंडेशन के परिचालन विभाग के बीच के संदेश जिनमें खरीद के उनके विशिष्ट विवरण दर्ज हैं।”
उसने अपने हाथ मेज पर रखे। उसने करण की ओर देखा।
करण ने कहा, "त्रिंबक रोड। संपत्ति। कितने लोग रहते हैं?" तांबे ने कहा, “कुलकर्णी और उनका एक सहयोगी। सहयोगी की कोई परिचालन भूमिका नहीं है—वह एक ड्राइवर है जो आठ साल से उनके साथ है। कुलकर्णी उसके बिना यात्रा नहीं करते।” थोड़ा रुककर उन्होंने आगे कहा, “जब आप जाएंगे तो वह भागेंगे नहीं। कुलकर्णी भागने वाले व्यक्ति नहीं हैं। वह हिसाब-किताब करने वाले व्यक्ति हैं, और जब आप पहुंचेंगे, तो उनका हिसाब-किताब यह होगा कि उनके पास कुछ ऐसा है जो मेरे पास नहीं है—फाउंडेशन के सामुदायिक कार्यक्रमों से जुड़े संपर्क, निवेशकों के नेटवर्क की जानकारी, उन लोगों के नाम जो अभी तक वित्तीय दस्तावेजों में नहीं हैं।” फिर उन्होंने थोड़ा रुककर कहा, “उनका हिसाब-किताब यह होगा कि नाम एक साफ-सुथरे आपराधिक रिकॉर्ड से कहीं अधिक मूल्यवान होते हैं। हो सकता है वह सही हों। यह फैसला आपको करना है।”
"एक और सवाल," करण ने कहा। "प्रशासनिक खाता। एस.आई.टी. सिस्टम तक पहुंच जिससे आपको परिचालन संबंधी जानकारी मिल रही थी।"
शांति।

“[illegible] [illegible] [illegible] [

*[illegible] [illegible] [illegible] [

हम कल शाम से ही इस विषय पर चर्चा कर रहे थे - एक ऐसा विषय जो पढ़ने से अभी तक पूरी तरह स्पष्ट नहीं हो पाया था। पहला भाग, वंशावली, महज एक संदर्भ ग्रंथ होने के लिए बहुत अधिक विस्तृत था। जिस व्यक्ति ने पाँच हत्याओं की योजना बनाने में तीन साल लगाए और अपने तर्क को 83 पृष्ठों के दस्तावेज़ में समेटा, उसने 27 पृष्ठों की अकादमिक वंशावली को केवल एक प्रस्तावना के रूप में नहीं लिखा। उसने 27 पृष्ठों की अकादमिक वंशावली इसलिए लिखी क्योंकि ये 27 पृष्ठ तर्क की सैद्धांतिक नींव स्थापित करने से कहीं अधिक महत्वपूर्ण कार्य कर रहे थे।
पहले भाग में किसी चीज का नक्शा था।
मैं सुबह सात बजे से इस बारे में सोच रहा था, गद्दे पर लेटा हुआ था और जैकेट से अपना चेहरा ढके हुए था, अपनी याददाश्त में वंशावली के पन्नों को पलट रहा था और यह पहचानने की कोशिश कर रहा था कि इसमें क्या अकादमिक नहीं था।
सुबह 8:15 बजे जवाब मिला, आधे मन से, और मैंने अभी तक इसे करण को नहीं बताया था क्योंकि नोटबुक और बोर्ड वाले हिस्से में कुछ और पूरा करने की ज़रूरत थी। लेकिन वैशाली से लौटने का समय उस आधे मन से लिखी कहानी को बताने का सही समय था, क्योंकि वह आधी मन से लिखी कहानी सुबह 8:15 बजे से ही पूरी होने वाली थी और लगभग खत्म होने ही वाली थी।
“वंशवाल खंड में एक मंदिर है,” मैंने कहा। “एक खास मंदिर। पृष्ठ ग्यारह पर – वे बीड जिले के गेवराई तालुका में स्थित षडभुज मंदिर का जिक्र करते हैं, जिसे शैव वंश परंपरा की स्थानीय अभिव्यक्ति का मुख्य स्थल बताते हैं। वे कहते हैं कि छह मंदिरों वाली इसकी संरचना परंपरा के दिशात्मक ब्रह्मांड विज्ञान का प्रतिनिधित्व करती है – मंडल की पांच दिशाएँ और छठी,

जो मध्य में है।” मैं रुका। “वे इसे अकादमिक संदर्भ के रूप में नहीं, बल्कि एक स्थान के रूप में संदर्भित कर रहे हैं।”
करण कुछ क्षणों तक बिना बोले गाड़ी चलाता रहा।
उन्होंने कहा, "छठी दिशा।"
"हो."
“मंडल में पाँच खुन हैं,” उन्होंने कहा। “पाँच दिशाएँ। उन्होंने पाँच दृश्यों की योजना बनाई थी। लेकिन परंपरा की अपनी संरचना छह की है - पाँच दिशाएँ और केंद्र, जहाँ साधक खड़ा होता है।” उन्होंने सड़क की ओर देखा। “छठी दिशा को तो उन्हें स्वयं ही पूरा करना था।”
मैंने कहा, "षट्कोणीय मंदिर में। गेवराइट में। उनके जन्मस्थान से बारह किलोमीटर दूर।"
करण कुछ पल चुप रहा। कामकाजी दिन की सुबह हमारे चारों ओर पुणे का यातायात उमड़ रहा था, मानो अंदर हो रही बातों से बेखबर हो। "उसके लिए छठी दिशा क्या है?" करण ने कहा। "वह वहाँ क्या करने जा रहा था?"
मैंने कहा, "मुझे नहीं पता। और इसीलिए हमें डॉक्टर की जरूरत है।"
विदर्भ शैव परंपरा पर 1987 का भंडारकर संस्थान का शोधपत्र - वह स्रोत जिसका उल्लेख राव ने वंशावली खंड में किया था, जिसका नाम मैंने आज सुबह इसे पढ़ते समय नोट किया था। वी.के. वैद्य। वह शोधकर्ता जिन्होंने मूल रूप से उस परंपरा का दस्तावेजीकरण किया जिस पर राव ने अपना पूरा तर्क आधारित किया। यदि कोई षट्कोणीय मंदिर के संदर्भ को एक विद्वान के फुटनोट के बजाय एक साधक के मानचित्र के रूप में पढ़ सकता था, तो वह वही व्यक्ति था

जिसके अकादमिक कार्य ने परंपरा के अपने शब्दों में षट्कोणीय मंदिर के अर्थ को परिभाषित किया।
भंडारकर संस्थान के प्रशासनिक विभाग ने सुबह 11:20 बजे फोन उठाया। मैंने जिस अभिलेखपाल से बात की, वह एक सच्चे शैक्षिक उद्देश्य वाले संस्थानों में काम करने वाले लोगों की तरह मददगार थे – इसलिए नहीं कि उन्हें मददगार बनने का प्रशिक्षण दिया गया है, बल्कि इसलिए कि काम और उस काम की सुलभता ही मुख्य मुद्दा है और किसी को वहां तक पहुंचने में मदद करना ही उसका स्वाभाविक रूप है। वी.के. वैद्य, जो 2009 में सेवानिवृत्त हुए, पुणे निवासी हैं। वर्तमान में संस्थान से जुड़े नहीं हैं, लेकिन संस्थान ने वरिष्ठ फेलो के संपर्क विवरण रखे हुए थे। अभिलेखपाल को घर के पते के लिए औपचारिक अनुरोध की आवश्यकता थी। "उन्हें बताओ कि यह अपराध की जांच से संबंधित है," करण ने कमरे के दूसरी तरफ से कहा।
मैंने उन्हें बताया। अभिलेखागार अधिकारी ने कहा कि वह निदेशक से बात करके वापस फोन करेंगे। उन्होंने सुबह 11:17 बजे वापस फोन किया और सदाशिव पेठ का पता दिया—जो संस्थान से कुछ ही दूरी पर स्थित एक घनी आबादी वाला आवासीय क्षेत्र है, जहाँ पीढ़ियों से शैक्षणिक समुदाय का जमावड़ा रहा है।
मैंने इस विडंबना पर ध्यान दिया: सुलोचना माने सदाशिव पेठ में रहती थीं। एक सेवानिवृत्त शिक्षिका जो मंदिरों में नियमित रूप से जाती थीं। एक लाल स्कूटर जो हमें कहीं नहीं ले गया। सदाशिव पेठ के दो अलग-अलग निवासी, और जांच जिस बात को समझने की कोशिश कर रही है, उसके बारे में दो अलग-अलग तरह की जानकारी।
डॉक्टर का भवन तिलक रोड से थोड़ी दूर एक संकरी गली में था – सदाशिव पेठ की उन संकरी भीतरी गलियों में से एक, जहाँ इमारतें

निवासियों की यादों से भी पुरानी हैं और जहाँ एक समय में एक ही ऑटो-रिक्शा बड़ी सावधानी से चलता है। हम सुबह 11:40 बजे पहुँचे और तीन मंजिला सीढ़ियाँ चढ़े, जिनमें एक विद्वान भवन की महक थी: कागज़, पहले पड़ाव पर स्थित प्रार्थना कक्ष से आती हल्की कपूर की खुशबू, और पुरानी किताबों और खाना पकाने की एक विशिष्ट मिश्रित गंध, जो यह दर्शाती है कि कोई व्यक्ति बौद्धिक कार्य के लिए व्यवस्थित एक स्थान पर लंबे समय से अकेला रहा है।
वी.के. वैद्य, कपड़े की धोती और कमीज पहने, पैरों में चप्पल नहीं, माथे पर चश्मा लगाए, हाथ में किताब लिए, पन्ने पर अंगूठा रखे, मानो किसी पैराग्राफ के बीच में अटक गए हों और हल होते ही वापस लौट आएंगे। वे सत्तर वर्ष के थे - दुबले-पतले, चश्मे के पीछे पैनी नज़र वाले, ऐसे व्यक्ति जिनकी नज़र एक बार किसी चीज़ पर टिक जाए तो पूरी तरह से उसी पर रहती है और कहीं और नहीं। उन्होंने हमें ऐसे देखा जैसे उनका आकलन सीधा हो, लेकिन अप्रिय न हो।
“मुझे उस संगठन से फोन आया था,” उसने कहा। “अपराध जांच से संबंधित।” उसने करण की ओर देखा। “अंदर आ जाओ।”
फ्लैट बिल्कुल वैसा ही था जैसा सीढ़ियों ने मुझे दिखाया था - कमरे की हर दीवार पर, जहाँ तक मेरी नज़र जा रही थी, फर्श से लगभग छत तक अलमारियों में किताबें रखी थीं, फर्श पर करीने से ढेर लगे हुए थे, और खिड़की के पास एक मेज थी जिस पर एक लैंप, एक आवर्धक लेंस और एक चाय का कप रखा था जो संस्थान के बुलावे के समय वहीं छूट गया था। उसने अपनी मेज के सामने रखी कुर्सियों से पत्रिकाओं के दो ढेर हटाए और उन पर हाथ से निशान लगाया। उन्होंने चाय नहीं पिलाई। या तो वे भूल गए थे, या फिर हमारे आने की अत्यावश्यकता को देखते हुए उन्हें लगा कि चाय की औपचारिकता

को नज़रअंदाज़ करना ठीक होगा। लेकिन मैंने सोचा कि इसके पीछे कोई और वजह थी।
करण ने कहा, "प्रोफेसर वैद्य, हम महाराष्ट्र में हुई सिलसिलेवार हत्याओं की जांच कर रहे हैं। हत्या करने वाला व्यक्ति पुलिस हिरासत में है। वह विश्वविद्यालय में तकनीकी अध्ययन का छात्र है।"
"राव," डॉक्टर ने कहा।
हम दोनों ने उसकी ओर देखा।
“ए. राव,” वैद्य ने कहा। उन्होंने अपनी किताब मेज पर रख दी। “मैं उनके काम को पच्चीस वर्षों से जानता हूँ। मैंने उनसे 2003 में और फिर 2011 में पत्राचार किया था। उन्होंने अपने डॉक्टरेट शोध प्रबंध और कम से कम तीन बाद के प्रकाशनों में मेरे भंडारकर संस्थान के शोध पत्र का उल्लेख किया था।” उन्होंने हमारी ओर ध्यान से देखा। “कल जब विश्वविद्यालय के प्रौद्योगिकी प्रोफेसर की हत्याओं के सिलसिले में गिरफ्तारी की खबर आई, तो मैंने उस विवरण को पहचान लिया। तार के फ्रेम वाला चश्मा, गेवराई मूल का।” वे थोड़ी देर रुके। “मैं कल दोपहर से ही इस बारे में सोच रहा हूँ।”
मैंने कहा, "हमारे आने से पहले ही आपको पता था कि गिरफ्तारी राव की है।"
"मुझे शक था," उसने कहा। "अब मुझे पता चल गया है।" वह एक पल के लिए चुप रहा। "तुम मुझसे क्या चाहते हो?"
करण ने पांडुलिपि के पहले भाग की तस्वीर अपने फोन से ली और डॉक्टर को सौंप दी।
डॉक्टर ने इसे पढ़ा।

वह उस तरह पढ़ रहा था जैसे कोई व्यक्ति किसी जानी-पहचानी सामग्री को पढ़ता है - धीरे-धीरे नहीं, न ही किसी अपरिचित काम को करने वाले व्यक्ति की तरह, बल्कि उस विशिष्ट गति से जैसे कोई व्यक्ति किसी की हस्तलेख में लिखे अपने बौद्धिक परिदृश्य को पढ़ रहा हो, जो जानता हो कि प्रत्येक संदर्भ कहाँ से आया है और उसका क्या अर्थ है, और जो विषयवस्तु पर नहीं बल्कि उसके उपयोग पर ध्यान केंद्रित कर रहा हो। उसने नौ मिनट तक पढ़ा। उसका अंगूठा षट्कोणीय मंदिर के संदर्भ वाले पृष्ठ पर गया और रुक गया।
उसने ऊपर देखा।
डॉक्टर ने कहा, "वह छठे आदमी को मारने वाला नहीं था।"
"नहीं," मैंने कहा।
“वह मंडल को पूरा करने जा रहा था,” डॉक्टर ने कहा। “षट्कोणीय मंदिर की छह-मंदिर संरचना परंपरा के छह चक्रों की भौतिक अभिव्यक्ति है—छह दिशात्मक बिंदु, पाँच परिधीय और एक केंद्रीय। साधक के पूर्ण होने के अनुष्ठान में, छह-दिशात्मक मंडल छठे परिधीय कार्य से नहीं, बल्कि साधक के स्वयं को केंद्र में स्थापित करने से पूर्ण होता है। केंद्र में कोई हत्या नहीं होती। केंद्र में एक साक्षी होता है।” वह रुका। “परंपरा के अपने शब्दों में, जो कोई भी पाँच दिशात्मक कार्य करता है और फिर केंद्र में खड़ा होता है, वह परंपरा की अपनी भाषा में अपने द्वारा किए गए कार्य की गवाही दे रहा होता है। वे परंपरा को पुनर्स्थापित करने का दावा नहीं कर रहे हैं। वे परंपरा के अपने शब्दों में इसके अपवित्र होने का दस्तावेजीकरण करने का दावा कर रहे हैं, और वे इसकी पुष्टि करने के लिए दस्तावेजीकरण के भीतर खड़े हैं।” उसने करण की ओर देखा। “छठी दिशा स्वयं राव हैं।

षट्कोणीय मंदिर में। उनके द्वारा निर्मित मंडल के केंद्र में खड़े हुए।”
कमरा बहुत शांत था।
मैंने कहा, "वह वहाँ जाने वाला था। पाँचवें दृश्य के बाद। निम्बालकर के बाद।"
“जी हां,” डॉक्टर ने कहा। “और मध्य अनुष्ठान—परंपरा के रूप में — में एक अभिलेख छोड़ना शामिल है। वृत्त के मध्य में, साधक अपना अभिलेख छोड़ता है ताकि उसके बाद आने वाले लोग उसे पढ़ सकें।” उन्होंने करण के फोन पर हस्तलिखित पन्ने देखे। “उसने अभिलेख लिख दिया है। हस्तलिखित। लेकिन षट्कोणीय मंदिर में समापन के लिए, उसे वहां कुछ रखना होगा—एक भौतिक वस्तु, एक अंतिम पृष्ठ, कुछ ऐसा जो मध्य अनुष्ठान को पूरा करे।” वे रुके। “वह वहां जाने की योजना बना रहा था। वह अब हिरासत में है। सवाल यह है कि क्या वह अपनी गिरफ्तारी से पहले मध्य अनुष्ठान की तैयारी के लिए वहां गया था?”
मैंने करण की तरफ देखा।
करण ने अपना फोन देखा। राव की गिरफ्तारी से पहले के दिनों में उसकी गतिविधियों की तुलना में उसकी निगरानी कब से शुरू हुई थी? इसका जवाब निगरानी लॉग में था: चौदहवें दिन से लगातार। गिरफ्तारी से पहले छह दिनों तक राव को उसके अपार्टमेंट से कैंपस और वापस आते-जाते देखा गया था। उसने कार नहीं चलाई थी। उसने लंबी दूरी की बस या ट्रेन नहीं ली थी। वह पुणे से बाहर नहीं गया था।
मैंने कहा, "गिरफ्तारी से पहले वह बीड नहीं गया था।"
"इसका मतलब है कि छठी दिशा अधूरी है," करण ने कहा, "या उसने मध्य भाग की तैयारी चौदह दिन पहले पूरी कर ली थी।"

"□□ □□□□□□," □□□□□□□ □□ □□□□□ □□□□□□ □□□□ □□□□□
□□□□□ □□□□□ □□ □□□□□□
□□□□□□□ □□ □□□□, "□□ □□□□□□□□□□ □□□□□□ □□□□ □□□□□□ □□□□□□ □□□□□ □□ □□□□ □□□□ □□□□□□ □□□□□□□ □□ □□□□□□ □□ □□□□□ □□□□ □□ □□□□□□-□□□□□□□ □□ □□□□□□ □□ - □□□□□ □□□□□□ □□ □□□□□ □□□□□□□□□□ □□□□□ □□ □□□□□ □□ □□ □□ □□□□□□ □□ □□□□□□□ □□□□□ □□□□ □□ □□□□□□ □□ □□□□□□□ □□□□□ □□□□□ □□ □□□□□ □□□□"

> *— □□□□ □□□□□ □□ □□□□□□□ □□□□ □□□□□□ □□□□□□ □□□□□□□ □□□□ □□□□□ □□□□□ □□□□ □□□□ □□ □□□□□□□□ □□□□□□ □□ □□□□—□□□□□ □□□□ □□□□□□ □□ □□□□□□□□□□ □□ □□□□□□□ □□ □□□□—□□□□□ □□□□□ □□□□□ □□□□□□ □□□□□□□ □□□□□ □□ □□ □□□□□ □□□□□□□□□ □□□□□ □□□□□□□ □□□□ □□ □□□□□□ □□□□ □□□□□ □□ □□ □□□□□ □□□□□□ □□□□□ □□□□□□□□□ □□□□□□□ □□ □□□□□ □□□□ □□□□ □□□□ □□ □□□□ □□ □□□□□□□ □□ □□□□□□ □□ □□□□□□ □□ □□□□□□ □□ □□□□□ □□□□□ □□□□□ □□□ □□ □□□□□□ □□ □□□□□ □□□□□□□□□□—□□ **83** □□□□□□□ □□ □□□□□□□□□□ □□ □□ □□□□□□ □□ □□□□□ □□ □□ □□□□□ □□□□□□□□□ □□ □□□□□□ □□ □□□□ □□□□ □□□□ □□—□□□□□ □□□□□□ □□□□ □□ □□□□□ □□ □□□□□□□□□□ □□ □□□□ □□□□□ □□ □□ □□□□□□□ □□□□□□□ □□□□ □□□□ □□ □□ □□□□□ □□□□□□□ □□□□ □□□□ □□□□□ □□□□□ □□ □□□□□□□ □□□□□ □□□□□ □□□□□ □□□□□□*

***

□□ □□□□□□ 12:58 □□□□ □□□□□□□□□□□□ □□□□□□□□ □□□□ □□□□□□ □□□□ □□□□ □□ □□□□□ □□□□□□ □□□□□□ □□ □□□□ □□□□□□ □□□□□□□, □□□□ □□□□□ □□ □□□□□□□: □□□□□ □□ □□□□□□□ □□□□□□ □□□□□□ □□ □□□□□□□, □□□□ □□□□□□□□ □□□□ □□ □□□□□□-□□□□□□ □□ □□, □□□□ □□□□□□□□ □□ □□□□ □□□□ □□ □□□□□□ □□□□□□□□□ □□ - □□□□□ 275 □□□□□□□□□□□ □□□□□□□□ □□□□ □□□□□□□ □□□□□□□□□□□□□ □□□□□

हैं, अहमदनगर वाला हिस्सा ठीक है और अंदरूनी सड़कें अनिश्चित हैं: कम से कम साढ़े चार घंटे लगेंगे। हम शाम तक पहुंच जाएंगे।
मैंने कहा, "तांबे का दस्तावेज़।" गोखले को यह जानना ज़रूरी था। "मैं आज दोपहर प्रिया को यूएसबी ड्राइव भेज दूंगा," करण ने कहा। "पाटिल के पास पहले से ही फोल्डर हैं - मैंने वैशाली से उसे मैसेज किया था। कुलकर्णी की लोकेशन देशमुख के पास है।" वह रुका और बोला, "हम बीड जा रहे हैं।"
मैंने कहा, "हम बीड जा रहे हैं।"
"डॉक्टर," करण ने कहा।
मैंने उसकी ओर देखा।
"हां," करण ने कहा। "अगर षट्कोणीय मंदिर में कुछ ऐसा है जिसे परंपरा की भाषा में समझने की जरूरत है, तो मुझे उस व्यक्ति की जरूरत है जो इसे समझ सके।"
मैंने दोपहर 1:08 बजे डॉक्टर को फोन किया। उन्होंने तुरंत जवाब दिया और बताया कि वे मेरे फोन का इंतजार कर रहे थे।
मैंने कहा, "क्या आप आज बीड जा सकते हैं?"
एक मिनट रुको। "मुझे अपने जूते ढूंढने दो," उसने कहा।
हम दोपहर करीब 2 बजे पुणे से निकले, वैद्य की कार में चार लोग थे: करण गाड़ी चला रहा था, वैद्य आगे वाली सीट पर चश्मा लगाए बैठे थे और उनकी गोद में एक कपड़े का थैला था जिसमें, मेरे अनुमान से, दो किताबें और विदर्भ शैव परंपरा पर उनके अपने नोट्स का एक फोल्डर था, जो उन्होंने अपने फ्लैट से निकलने और करण के उन्हें लेने आने के बीच के मिनटों में इकट्ठा किए थे। मैं पीछे था। गोखले की एक जूनियर अधिकारी - पेंडसे नाम की एक युवती, जिसे मैंने गलियारे में तीन बार देखा था लेकिन कभी विस्तार से बात नहीं की थी, जो उस तरह से कुशल थी जैसे कोई अभी सीख रहा हो कि हर स्थिति

में किस तरह की कुशलता की आवश्यकता होती है - मेरे बगल में एक जांच कैमरे के उपकरण के साथ बैठी थी।
पुणे से अहमदनगर जाने वाली सड़क आपको शहर के बाहरी इलाकों से होते हुए पूर्व की ओर ले जाती है - पिछले दशक में सड़क के किनारे बने आईटी परिसरों और नई आवासीय इमारतों के बीच से गुजरते हुए - और फिर, वाघोली और पुराने टोल बैरियर के पार, आपको पूर्वी महाराष्ट्र के परिदृश्य में ले जाती है, जो घाटों और मराठवाड़ा पठार से अलग है और इसकी अपनी एक विशिष्ट विशेषता है: अर्ध-शुष्क, लाल मिट्टी वाली भूमि, जिसमें एक विशिष्ट समतल विस्तार है जिसका अर्थ है कि पहाड़ों या शहर की तुलना में यहां आकाश अधिक स्पष्ट रूप से दिखाई देता है।
डॉक्टर ने पहले एक घंटे तक बात की। मामले के बारे में नहीं, बल्कि परंपरा के बारे में। षडभुज मंदिर के बारे में, जहाँ वे 1987 में अपने शोध के लिए दो बार गए थे, पहली बार बीड शहर से बस द्वारा और दूसरी बार एक स्थानीय पुजारी के साथ, जो मंदिर के पुजारी के पिता थे और जिन्होंने डॉक्टर को मंदिर के भीतरी परिसर के तीन घंटे दिखाए, जो आमतौर पर जनता को नहीं दिखाया जाता है। उन्होंने मंडल संरचना में बने छह मंदिरों का वर्णन किया - एक केंद्रीय चौक के चारों ओर पाँच दिशात्मक मंदिर, जिसका उपयोग पारंपरिक रूप से साधक के अनुष्ठानों को पूरा करने के लिए किया जाता है। मंदिर विशाल या भव्य नहीं थे। षडभुज मंदिर ज्योतिर्लिंगों या शक्ति पीठों की तरह कोई प्रमुख तीर्थ स्थल नहीं था। यह साधकों का स्थान था - परंपरा के विद्वानों और गंभीर साधकों को ज्ञात, एक छोटे से स्थानीय ट्रस्ट द्वारा संरक्षित, जहाँ शायद साल में दो सौ बार वे लोग आते थे जो इसके महत्व को समझते थे।

"क्या राव वहां शोध के लिए गए थे?" करण ने कहा।
“लगभग निश्चित रूप से,” डॉक्टर ने कहा। “बीड जिले की शैव लोक परंपरा पर उनके 2009 के शोधपत्र में ऐसे स्रोतों का उल्लेख है जिनके लिए उस स्थान पर प्रारंभिक शोध की आवश्यकता है। वे वहाँ कम से कम एक बार, शायद दो बार तो गए ही होंगे।” वे थोड़ा रुके। “वे वर्तमान पुजारी को अवश्य जानते होंगे। यह परंपरा एक छोटा समुदाय है। विद्वान और गंभीर साधक एक-दूसरे को जानते हैं।” डॉक्टर रुक गया। श्रीगोंडा मोड़ से पहले सड़क थोड़ी चौड़ी हो गई थी और करण ने उस जगह का फायदा उठाते हुए माल से लदे ट्रक को ओवरटेक किया और फिर वापस लेन में आ गया।
"पुजारी," करण ने कहा। "क्या वह आज वहां होंगे?"
डॉक्टर ने कहा, "यह एक अंशकालिक देखभालकर्ता है। 1987 में यहाँ एक पादरी रहते थे। अब - मुझे नहीं पता। परिसर रखरखाव ट्रस्ट को वित्तीय कठिनाइयों का सामना करना पड़ रहा है। लेकिन कोई न कोई तो होगा जो भीतरी परिसर खोल सके।"
कुछ क्षणों के लिए सन्नाटा छा गया। सड़क पठार के पार सीधी जा रही थी।
वैद्य ने बताया, “1987 में भाऊराव पुजारी नाम का एक कार्यवाहक था। वह अंतिम प्रमाणित दीक्षा-पुजारी का पुत्र था, जिसकी मृत्यु 1968 में हुई थी। भाऊराव ने औपचारिक दीक्षा प्राप्त नहीं की थी - दीक्षा पूरी होने से पहले ही उसके पिता का निधन हो गया था। लेकिन बचपन से ही वह उस स्थान पर अपने पिता द्वारा किए जाने वाले हर कार्य में उपस्थित रहता था। उसने अनुष्ठान के हर पहलू को अवलोकन से सीखा, न कि किसी से ज्ञान प्राप्त करने से।” वह रूक गया।

“उन्होंने मुझे दूसरी बार दर्शन के दौरान आंतरिक परिसर दिखाया। उन्होंने प्रत्येक मंदिर, अनुष्ठान क्रम, साधक की अपनी समझ के अनुसार प्रत्येक दिशा की स्थिति का अर्थ समझाया। उन्होंने अपने पिता के बारे में बताया – कि कैसे उन्होंने एक बार अपने पिता को केंद्रीय चौक में पूर्णता का अनुष्ठान करते देखा था, जब भाऊराव शायद चौदह वर्ष के थे।” डॉक्टर की आवाज़ थोड़ी बदल गई थी
– कोमल नहीं, बल्कि धीमी, अकादमिक सटीकता की जगह एक ऐसे व्यक्ति की आवाज़ आ रही थी जो ज्ञान के बजाय स्मृति से बोल रहा हो। “उन्होंने कहा कि उनके पिता अनुष्ठान शुरू करने से पहले काफी देर तक केंद्रीय चौक में खड़े रहे थे। ध्यान में नहीं – या केवल ध्यान में नहीं। शोक में। उन्होंने कहा कि उनके पिता ने बाद में कहा कि पूर्णता का अनुष्ठान हमेशा शोक का एक रूप होता है, क्योंकि मंडल के केंद्र में खड़े होकर पांच दिशाओं को देखना यह समझना है कि पांच दिशाएँ उन शक्तियों द्वारा पहले ही पूर्ण हो चुकी हैं जिन्हें साधक ने निर्देशित नहीं किया है और न ही वापस ला सकता है।”
कार में किसी ने कुछ नहीं कहा।
“मैंने इसे अपने नोट्स में लिखा था,” डॉक्टर ने कहा। “एक फुटनोट के रूप में। यह मेरे शोध पत्र के विश्लेषणात्मक ढांचे में फिट नहीं बैठता था, इसलिए मैंने इसे प्रकाशित पाठ में शामिल नहीं किया।” उन्होंने सड़क की ओर देखा। “राव ने मेरा शोध पत्र कई बार पढ़ा। उनके पास मेरे नोट्स तक पहुंच नहीं थी। उन्हें नहीं पता था कि इस परंपरा के अंतिम संरक्षक ने समापन की रस्म को शोक के रूप में वर्णित किया था।” रुकिए। “हो सकता है कि वे इसी वर्णन तक दूसरी दिशा से पहुंचे हों। शोक को देखने के बजाय, शोक के भीतर से।”

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

***

[illegible]

□□ □□ □□□ □□□ □□ □□□□□□ □□□□□ □□ □□ □□□□□□ □□□

□□□□□□ □□□□□: □□□□□ 2 □□□ □□□ □□□□□ □□□□□□□ □□□□□□ □□□ □□□□□ □□□□□□□□ □□ □□□□ □□□□ □□□ □□□□□ □□□□□□□□ □□□□ □□□□□ □□ □□□□□ □□ □□□ □□□ □□, □□□□□ □□□ □□□ □□ □□□□ □□ □□□ □□ □□□□ □□□□ □□□□□□ □□□ □□□□□□□□ □□□ □□ □□ □□ □□□□□ □□ □□ □□ □□□ 9:05 □□□ □□□□□ □□□□ □□□□□ □□□□□□ □□□ □□□□□□□□ □□□ □□ □□ □□□ 8:40 □□□ □□□□□ □□□□ □□□□ □□□□ □□□□ □□ □□□ □□ □□□□□□ □□□□ □□□□□ □□ □□□□ □□ □□□□ □□□ □□□□ □□□, □□ □□□□□□□□ □□□: "□□□ □□□ □□□□□ □□ □□□□□ □□ □□□ □□□ □□□□ □□□ □□ □□□□ □□ □□□ □□□□□ □□□ □□□□ □□□□□" □□□□ □□□□ □□ □□□□□□□□□ □□□□ □□ □□□□□□ □□□ □□ □□□ □□□□□ □□ □□□□□ □□ □□□ □□□□ □□ □□□□□□ □□ □□: □□ □□□□□□□ □□□ □□ □□□ 8:40 □□□ □□□□□ □□□, □□□□□ □□□□□□ □□□ □□ □□□□□ □□ □□□ □□ □□ □□□□ □□ □□□□□□□ □□ □□□ □□□ □□□□ □□□□□ □□□□ □□□ □□□□□□□ □□□□□ □□ □□□□□□□ □□□ □□□ □□ □□□□□ □□□□□□□□□ □□□□, □□□□□ □□□□ □□ □□□□

□□□□□ □□□ □□ □□□□□ □□□ □□ □□□□□ □□□ □□□□ □□ □□□□:

> *— □□□□ □□□□ □□□ □□□□ □□□□ □□□□□ □□□□ □□ □□□□□□ □□ □□□ □□□□□ □□□□ □□□ □□ □□□□□□ □□□□□□ □□ □□□ □□□□□ □□□□ □□ □□□□ □□ □□□□ □□□□□ □□ □□□□□□□□ □□□ □□ □□□ □□ □□□□ □□□□ □□□ □□ □□ □□□□□ □□□□□□*

□□□□□ □□ □□□□□: □□□□□□□□□ □□□□□ □□□ □□□□□□□ □□□ □□□□□ □□□□□□□ - □□□□□□ □□ □□□ □□□□□ 3 □□□ □□□□ □□□□□□ □□□ □□□□□□□□ □□□□ □□□□□ □□□ □□ □□□□ □□□□□ □□□□□ □□ □□□□□□ □□□ □□: □□□□□□□□ □□ □□□ □□□□□□ □□□□, □□□□□□□□□□ □□ □□□□ □□□□□ □□□□ □□ □□□ - □□ □□□□□□ □□ □□□□□□□ □□□ □□ □□□□ □□ - "□□□□ □□□□□□ □□ □□ □□ □□□ □□□□ □□□□□□" □□□□□□□□ □□□□ □□□□ □□ □□□□ □□□ □□□□□□ □□□□□□

में भेज दिया गया। उनके ड्राइवर को अलग से पूछताछ के लिए ले जाया गया।
कोई नाटक नहीं। कोई भागदौड़ नहीं। एक आदमी जिसने हिसाब-किताब किया और अंत में पाया कि चाहे वह किसी भी तरीके से गणना करे, परिणाम एक ही आता है।
मैंने देशमुख की टीम के आने से पहले के समय में त्रिमबक रोड की संपत्ति की कल्पना करने की कोशिश की। यह वह काम नहीं है जो एक नोटबुक आमतौर पर करती है - नोटबुक में वह दर्ज होता है जो हम जानते हैं, न कि वह जो हम कल्पना करते हैं।
यह समझने के लिए पर्याप्त समय था कि औंध कार्यालय में कोई मुलाक़ात नहीं हुई थी, उस पर निगरानी सक्रिय से अधिक निष्क्रिय थी, और जांच सीधे उस तक पहुंचने के बजाय वारंट की ओर धीरे-धीरे बढ़ रही थी। उसके पास फाउंडेशन के खाते किसी ऐसे उपकरण में थे जिसे वह नासिक ले गया था - उस लैपटॉप में नहीं जिसे उसने औंध में छोड़ा था, जो तांबे का था - और ये खाते निर्माण और लागत का सबसे सटीक विवरण थे।
आंकड़े बहुत बड़े थे। वित्तीय रिकॉर्ड की संकीर्ण भाषा में कहें तो, ये बाईस वर्षों के काम को दर्शाते थे—फाउंडेशन के शुरुआती वर्ष एक वास्तविक संगठन के रूप में, न कि किसी धोखाधड़ी के रूप में, और बाद के वर्ष जब कार्यक्रम एक माध्यम बन गया और माध्यम ही मुख्य उद्देश्य बन गया। यह परिवर्तन एक साथ नहीं हुआ। यह उसी तरह हुआ जैसे ऐसे परिवर्तन हमेशा होते हैं: धीरे- धीरे, फिर पूरी तरह से, हर छोटा समझौता अगले के लिए जगह बनाता गया, जब तक कि मूल इतना पीछे छूट गया कि पीछे मुड़कर देखना असहज हो गया।

"हां," मैंने कहा।
“उसने समय इसलिए छिपाया क्योंकि उसके पास बस समय ही था,” उसने कहा। “यह कोई मनगढ़ंत कहानी नहीं है। यह वास्तविक जानकारी है जिसे थोड़ा-बहुत बदलकर बताया गया है। पच्चीस मिनट।” वह रुका। “उसने इसे छिपाया।”
मैंने कहा, "देशमुख उसके खिलाफ आरोप लगाएगा।"
गोखले द्वारा आरोप की पुष्टि करने के बाद, उनका पूरा औपचारिक बयान दोपहर 3:55 बजे एक अलग फाइल में आया। बयान लंबा था—देशमुख की टीम ने पूरी बारीकी से जांच की—लेकिन नोटबुक में जिस हिस्से की जरूरत थी, वह वही था जिसमें उस सवाल का जवाब था जो जांच दल हमसे तब से पूछ रहा था जब हमने पहली बार उनका नाम बोर्ड पर डाला था।
उसने देशमुख के कहने पर नासिक क्राइम ब्रांच भवन के एक खिड़की वाले कमरे में अपने हाथों से यह लिखा था। उसकी लिखावट किसी ऐसे व्यक्ति की सावधानीपूर्वक लिखी गई लिखावट थी जो अक्षरों को सोच-समझकर लिखने की परंपरा में प्रशिक्षित थी।
उन्होंने लिखा: नासिक में फाउंडेशन के रिट्रीट में, मैंने सीताराम मंदिर के प्रांगण में आयोजित शाम के सत्रों में भाग लिया। फाउंडेशन ने समापन समारोह के लिए प्रांगण का उपयोग किया। वे सामग्रियां लाए थे - काला कपड़ा, मिट्टी के दीपक, सरसों का तेल, पीतल के बर्तन। उन्होंने इन सामग्रियों को प्रांगण के मध्य भाग के चारों ओर एक विशेष ढंग से सजाया। व्यवस्थाओं के प्रभारी पुजारी नासिक के नहीं थे। वे बाहर से आए थे और उन्हें अपने कार्य की पूरी जानकारी थी।
उन्होंने लिखा: मैंने वहां मौजूद एक अन्य व्यक्ति से पूछा कि यह व्यवस्था क्या है। उन्होंने बताया कि यह देवी का आह्वान करने

लेकिन राव फिर भी आगे बढ़ गए। शास्त्री के बारे में राव क्या ढोते – एक ऐसी महिला जिसे चोट पहुँचाई गई, जो आँगन से गुज़री और शायद वहाँ रुकी भी, जिसके कार्यों को उनकी जानकारी के बिना ही राव के तर्क में शामिल कर लिया गया – यह बात पांडुलिपि में अभी तक लिखी नहीं गई थी। पांडुलिपि शास्त्री को जानने से पहले लिखी गई थी। ढोने की प्रक्रिया अभी जारी थी।

***

हम श्रीगोंडा से होते हुए दूसरी तरफ निकल गए, सड़क संकरी होती जा रही थी और राजमार्ग के आत्मविश्वास से भरे अक्षरों वाले साइनबोर्ड बदलकर भीतरी ज़िले की सड़कों के सरल साइनबोर्ड में तब्दील हो गए थे। सूरज अब हमारी पीठ के पीछे था, दोपहर ढल रही थी, और आगे की परछाइयाँ लंबी होती जा रही थीं, ठीक वैसे ही जैसे मराठवाड़ा के भीतरी इलाकों में अक्टूबर की परछाइयाँ होती हैं - लंबी, सुनहरी और पूरब की ओर इशारा करती हुई, जिस दिशा में हम जा रहे थे।
हम शाम 5:11 बजे बीड जिले में दाखिल हुए।
यह जिला मराठवाड़ा के भीतरी इलाकों का एक विशिष्ट उदाहरण है, जिसमें नासिक या औरंगाबाद जैसी उपलब्धियां नहीं हैं, जो उन्हें उनके आकार और व्यावसायिक स्थिति के कारण प्राप्त हुई हैं। यह जिला कपास और गन्ने की खेती और मौसमी श्रमिक प्रवास पर निर्भर है, समतल और विस्तृत है, और इसमें पर्यटन संबंधी बुनियादी ढांचे का अभाव है, जो इसे पर्यटकों के लिए इतना अनाकर्षक बनाता है। गेवराई उत्तरी तालुका में स्थित है, जहां हम बीड शहर से तीस किलोमीटर की सड़क से पहुंचे, जो आंशिक रूप से तारकोल से बनी थी और आंशिक रूप से कच्ची थी। यह सड़क तीन गांवों और दो सूखे नदी-तल

से होकर गुजरती थी और हम शाम छह बजकर चार मिनट पर गेवराई पहुंचे।
षट्भुजाकार मंदिर शहर के केंद्र में नहीं था। डॉक्टर ने हमें 1987 में अपनी यात्रा की यादों और अपने फोल्डर में मौजूद नोट्स से बनाए गए हस्तलिखित नक्शे के आधार पर रास्ता दिखाया—ये नोट्स पैंतीस साल पहले के एक फील्डवर्क दौरे के दौरान बनाए गए थे, जो एक विद्वान के कार्य नोट्स के विशिष्ट और विश्वसनीय प्रारूप में थे। मुख्य सड़क से तीन मोड़। एक कच्ची सड़क जो पैदल पथ की चौड़ाई तक संकरी हो जाती थी और फिर चौड़ी हो जाती थी।
वह जगह चारदीवारी से घिरी हुई थी, पुरानी पत्थर की नीची दीवारें थीं और फाटक खुला था। अंदर: छह छोटे मंदिर थे, जैसा कि डॉक्टर ने बताया था, प्रत्येक अक्ष पर तीन-तीन, और बीच में लगभग दो मीटर व्यास का एक नीचा पत्थर का चौकोर हिस्सा था। मंदिर सादे थे - प्रत्येक में काले पत्थर का एक छोटा शिखर था, प्रत्येक में एक दीपक रखने का स्टैंड था, छह में से चार में ऐसे दीपक थे जिनमें हाल ही में तेल भरा गया था, क्योंकि परिसर में ताज़े सरसों के तेल की महक आ रही थी। कोई हाल ही में यहाँ आया था - इतना कि तेल की महक अभी पूरी तरह से गायब नहीं हुई थी।
मैंने चलना बंद कर दिया।
मैंने कहा, "यह कब भरा गया था?"
डॉक्टर पास के लैंप के पास गए। उन्होंने तेल का स्तर जांचा। "आज ही," उन्होंने कहा। "या कल। इस तापमान पर खुले लैंप में सरसों का तेल लगभग अठ्ठावन घंटे में वाष्पित हो जाता है।"
"इसमें एक रखवाला है," करण ने कहा। वह परिसर के दूसरी तरफ बनी छोटी इमारत को देख रहा था - एक छोटा सा ढांचा जिसका एक दरवाजा बंद था और दूसरा खुला हुआ था। कोई आस-पास ही था।

पेंडसे इमारत तक गए और दरवाजा खटखटाया। बाहर आए व्यक्ति एक बुजुर्ग थे, जिन्होंने अपना परिचय गणपत के रूप में दिया। वे परिसर के अंशकालिक देखभालकर्ता थे – रखरखाव ट्रस्ट द्वारा नियुक्त, पास के एक गाँव में रहने वाले, जो शाम को देर से आकर दीये भरते हैं और परिसर की सफाई करते हैं। उन्होंने आज दोपहर 4:30 बजे दीये भरे। वे प्रतिदिन दीये भरते हैं जब ट्रस्ट के पास तेल के लिए धन होता है, जो कि लगभग हर दिन होता है, लेकिन हमेशा नहीं।
"क्या हाल ही में किसी ने उस जगह का दौरा किया है?" करण ने पूछा। गणपत सोचने लगा। "दो हफ्ते पहले," उसने कहा। "एक आदमी। वो कभी- कभार आता है। प्रोफेसर जैसा दिखता है। चश्मा पहने हुए। पुणे से है, शायद गेवराई से - लगता है उसे इस इलाके की अच्छी जानकारी है।" वह रुका। "उसने चौक पर काफी समय बिताया। उसने कुछ भी नहीं छेड़ा। उसने चौक पर एक पत्थर के नीचे कुछ छोड़ दिया।"
करण ने केंद्रीय चौक की ओर देखा।
"पत्थर के नीचे," करण ने कहा।
"चौक के पूर्वी हिस्से में एक छोटा सा गड्ढा है," गणपत ने कहा।
"पुराना है। परंपरा के अनुसार इसमें चढ़ावा चढ़ाया जाता था।
उसने इसमें कुछ डाला था।"
मैंने करण की ओर देखा। करण ने डॉक्टर की ओर देखा। डॉक्टर पहले ही केंद्रीय चौक की ओर चल रहे थे।
चौथी शिला लगभग दस सेंटीमीटर मोटी काले बेसाल्ट पत्थर की एक अकेली शिला थी, जो ज़मीन में धंसी हुई थी। इसके पूर्वी किनारे पर, जहाँ शिला ज़मीन से हल्के कोण पर मिलती थी, वहाँ एक खोखला हिस्सा था—पुराने पत्थरों में स्वाभाविक रूप से बनने वाला खोखला हिस्सा, जब नीचे की ज़मीन असमान रूप से बैठ जाती है; ऐसा

"गवाह बनो," उसने कहा।
पेंडसे अब कैप्सूल की तस्वीरें ले रही थी जबकि करण ने उसे सावधानीपूर्वक निकाला। दस्तावेज़ खोलने पर वह एक ही पृष्ठ का निकला। मोटी लिखावट। पाठ्यपुस्तक के 83 पृष्ठों पर भी वही लिखावट थी। स्याही ताज़ी नहीं थी - इसे हफ़्तों या महीनों पहले लिखा गया था और यहाँ सील करके रखा गया था।
मैंने डॉक्टर की तरफ देखा। डॉक्टर ने करण की तरफ देखा। करण ने पन्ने की तरफ देखा।
मैंने कहा, "पढ़ो।"
उसने उसे पढ़ा। ढलती हुई रोशनी अब तेज़ी से कम हो रही थी, पेंडसे के फोन की फ्लैशलाइट सूरज की बची हुई किरणों को और भी रोशन कर रही थी। उसने चार मिनट तक पढ़ा। पढ़ने के बाद उसने मंडल में स्थित छह मंदिरों को देखा, फिर केंद्रीय चौक को, और फिर मुझे देखा।
“यह परंपरा को संबोधित है,” उन्होंने कहा। “जांच को नहीं। अदालत को नहीं। सीधे परंपरा को।” वे रुके। “वे कहते हैं: मैंने वही किया जो परंपरा को चाहिए था, केवल उसी भाषा में जो परंपरा की अपनी भाषा थी, और मैं इस रिकॉर्ड को घेरे के बीच में रख रहा हूँ ताकि परंपरा को पता चले कि उसके नाम पर क्या किया गया और मैंने उसके जवाब में क्या किया। वे कहते हैं कि वे परंपरा से क्षमा नहीं मांग रहे हैं। वे परंपरा से मान्यता मांग रहे हैं - कि अपमान वास्तविक था, और उस अपमान की आवश्यकता के अनुसार प्रतिक्रिया ही एकमात्र उपलब्ध विकल्प था।” करण रुके। “और फिर वे एक और बात लिखते हैं।”
उसने वह पन्ना डॉक्टर को दिखाया। डॉक्टर ने आखिरी पैराग्राफ पढ़ा। उनके चेहरे पर कोई भाव नहीं बदला - लेकिन कुछ तो बदलाव

□□□, □□□ □□□□ □□ □□□□ □□□□ □□□□□ □□ □□ □□□□□ □□□ □□ □□ □□□ □□□ □□□ □□□□□□□ □□□□□ □□ □□ □□□□ □□□□□ □□ □□□ □□□□ □□□
□□□□□ □□□□, "□□□□□ □□□□ □□□□ □□?"
□□□□□□ □□ □□□ □□ □□ □□□ □□□□□□□□ □□□ □□ □□ □□□□□ □□□ □□□□ □□□ "□□□□□□□□ □□□□ □□: □□□ □□□□□□ □□ □□□ □□□□□□□□ □□□□ □□ □□□□□□ □□ □□□ □□, □□ □□□□ □□□□ □□□□ □□ □□□□ □□ □□ □□□□ □□□ □□□□□ □□ □□□□□ □□ □□ □□□□□□□□□□□□ □□ □□□□, □□□□□ □□□□□□ □□ □□□□□□ □□□ □□□□□□ □□ □□ □□□□□□ □□ □□□□□□□□ □□□ □□□ □□□□□□ □□□ □□□□ □□□□□□ □□ □□□ □□□□ □□□□, □□ □□ □□□□ □□□□ □□ □□□ □□□□ □□□"
□□□□□ □□□ □□□□□□□ □□□□ □□□ □□□ □□□ □□ □□□□ □□ □□□□□□ □□□ □□ □□□ □□ □□□□, □□□□ □□□□□□□□ □□□ □□□□ □□□, □□□□□ □□□□□□ □□□ □□□□ □□ □□□□□ □□□□□ □□□□□ □□□ □□□ □□ □□□□□□ □□□□□□□□ □□□□ □□ □□□□□□ □□□□□□ □□ □□□□□□ □□ □□ □□□□□□□□□□ □□□ □□□, □□□□□□□□□□□□□, □□□□□□□□□□□□□, □□□□□□□□□ □□□□□ □□ □□□□ □□ □□ □□ □□ □□□□□□□□ □□ □□□, □□ □□□□ □□ □□ □□□□□ □□ □□□□□□□ □□ □□□□□□ □□□□ □□□ □□□□ □□□ □□ □□□ □□□□ □□□
□□□□□ □□□□□□□ □□□ □□□ 6:31 □□□, □□□ □□□□ □□ □□□□□□ □□□ □□□□□□□ □□□□□ □□□□□ □□ □□□□□□□□ □□□ □□□ □□□□ □□□□, □□□□□□ □□ □□□ □□ □□□□□□□□□ □□ □□□ □□□□□ □□ □□ □□ □□□ □□ □□□□:

> *□□□□□□.*
>
> *□□□□□□□ □□□□□ □□□□ □□□□□□ □□□□□□□□ □□□□□□□ □□□□□□ □□□□ □□□□□□ □□ □□□□□□□ □□ □□ □□□□□, □□□□ □□□□ □□□□ □□□ □□□ □□□□ □□□□□ □□ □□ □□□□□□ □□□□□□□□□, □□□ □□□□ □□ □□□□ □□□□□ □□□□□ □□□ □□ □□□□ □□ □□□□□ □□□ □□□□□ □□ □□□□ □□□, □□□□ □□□□□□□□□ □□ □□□□ □□□□□□□□ □□□□*

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]:

> *— [illegible]*
>
> *[illegible] **10:09** [illegible]*
>
> *[illegible] **3** [illegible]*

[illegible]: [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] **8:40** [illegible] [illegible] [illegible] [illegible], [illegible] [illegible] **9:05** [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

[illegible]: [illegible].[illegible]. [illegible], [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible], [illegible] [illegible] **1987** [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

[illegible] [illegible], [illegible] [illegible] [illegible] [illegible], [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]?

[illegible] [illegible]

- [illegible]:

[illegible] [illegible] [illegible]

अध्याय 15 - अभिलेख
प्रिया ने 23 तारीख की सुबह 7:14 बजे फोन किया।
गोखले नहीं हैं। प्रिया - इसका मतलब है कि कोई तकनीकी मामला था, और वह बहुत ज़रूरी था, और इतना ज़रूरी था कि तकनीकी लोग संदेश भेजने के बजाय फोन से बात करते हैं क्योंकि संदेशों में शिष्टाचार नहीं झलकता।
"यूएसबी ड्राइव," उसने कहा। "कॉपर डॉक्यूमेंट।"
"हाँ," मैंने कहा। मैं कॉफी टेबल पर बैठी थी। करण अपनी डेस्क पर था। हम दोनों सुबह छह बजे से जागे हुए थे, ठीक वैसे ही जैसे बाईसवें दिन के बाद अगली सुबह होती है - नींद अपर्याप्त थी, इसलिए नहीं कि दिन छोटा था, बल्कि इसलिए कि पिछला दिन इतना लंबा था कि उसे पूरी तरह से समझना मुश्किल था, और नींद में भी वह प्रक्रिया जारी रही, इसलिए नींद आराम से ज़्यादा काम जैसी लग रही थी।
“ड्राइव में दो पार्टीशन हैं,” प्रिया ने कहा। “पहला पार्टीशन वही है जिसके बारे में तांबे ने आपको बताया था – वित्तीय संरचना, कुलकर्णी संचार। दूसरा पार्टीशन एन्क्रिप्टेड है। सामान्य एन्क्रिप्शन है, जटिल नहीं, लेकिन इसके लिए पासवर्ड की आवश्यकता है।” वह थोड़ी देर रुकी। “पासवर्ड मैं फ़ाइल संरचना से पता नहीं लगा सकती। लेकिन एन्क्रिप्टेड पार्टीशन पर फ़ाइल का नाम बिना डिक्रिप्शन के दिखाई दे रहा है।” थोड़ी देर रुकी। “इसका नाम मेहता है।”
हम दोनों बैठ गए।
"मेहता," करण ने कहा। वह कमरे के दूसरी तरफ था, लेकिन उसने सुन लिया।

"□□ □□□□□□□□," □□□□□□ □□ □□□□ "□□ □□□□□ □□□□□ □□□□ □□ □□□□□□□□ □□ □□□□ □□□ □□□□ □□□□ □□□□□□□ □□□ □□ □□□ □□ □□□□ □□□ □□□□□□□ □□□ □□ □□□□ □□ □□□□□□□ □□□□□ □□□ □□□□□□□□□□ □□□□ □□□"
"□□□," □□□□□ □□□□
"□□□□□ □□□ □□ □□□□ □□□ □□□□□□□□□□□□ □□□□□□□ □□ □□□□□ □□□□ □□□□□ □□□□□□□□□□ □□ □□□□ □□ □□□□□ □□," □□□□□□ □□ □□□□ "□□□□□□□□□□ □□□□□, □□□□□□□□ □□ □□□□□□ □□□□□□ □□ □□□□ □□ □□ □□□□□□□ □□□□□□□□□ □□□□ □□ □□□ □□□□ □□□□□□ □□□" □□□□□ "□□□□□ □□ □□□□□ □□ □□□□□ □□ □□□□ □□□□□ □□ □□□ □□□ □□□□□□ □□ □□□□□□□ □□□□ □□□ □□ □□□, □□ □□□□□-□□□□□ □□ □□□□□□□□ □□□□ □□□ □□ □□□□□□□ □□ □□□□□□□□□□ □□ □□□□□ □□□□□ □□□□ □□ □□□□□ □□□□□ □□ □□□ □□□ □□□"
□□□□□ □□□ □□ □□□ □□□□□ □□□ □□ □□□□ □□□ □□□□□
□□□□□ □□□, "□□□□ □□ □□□ □□□□□□□□□ □□ □□□□ □□□?"
□□□□□□□□ □□□, "□□□ □□□□ □□□ □□□ □□ □□□ □□ □□□□□ □□ □□□□□□□□ □□ □□□□□□□ □□□□ □□ □□□□ □□ □□□□ □□□, □□ □□□□□□□ □□ □□□□□ □□ □□□□ □□ □□□-□□□□□ □□□□□ □□□□□"
□□□ □□ □□□□ □□□ □□□ □□□□ □□□ "□□□□□," □□□□ □□□□ "□□□ □□ □□□□ □□□□"

> *— □□□□ □□ □□□□ □□□□ □□□ □□□□, □□□□□□ □□□□ □□□□□ □□□□□□ □□□□ □□ □□□ □□ □□□□□ □□ □□□ □□□□□ □□ □□□□□□□ □□□□ — □□ □□□□□□□ □□□□□ □□□□ □□ □□□□ □□ □□□□□ □□□□□ □□ □□□□□ □□□□□ □□□□ □□ □□□□□□□ □□□□□ □□ □□□ □□ □□□ □□□□ □□□□□□□□□□ □□ □□□□□□□□ □□□□ □□□□ □□□□□□ □□□ □□ □□□□□ □□ □□□ □□ □□□□□□ □□□ □□□ □□□□□ □□ □□ □□□□ □□□□□□□□ □□□□□□□ □□□□□□□□ □□□□□□□ □□ □□□ □□□ □□□□□ □□□□ —*

*[illegible] [illegible] [illegible] [

“मैं तुलना करके पुष्टि करना चाहूंगी, लेकिन मेरी शुरुआती जानकारी के अनुसार, यह गोखले के प्रशासनिक अधिकारी की आवाज है - वही जिसे उपाध्याय ने चिह्नित किया था।”
मैंने करण की ओर देखा। यह कोई आश्चर्य की बात नहीं थी - उपाध्याय ने इसकी पहचान कर ली थी, तांबे ने कहा था कि प्रमाण पत्र भाई-भतीजावाद के माध्यम से प्राप्त किए गए थे, और व्यवस्था पुनर्गठन के बाद जांच पूरी होने तक प्रशासनिक अधिकारी को बिना किसी औपचारिक कार्रवाई के चुपचाप दूसरे पद पर स्थानांतरित कर दिया गया था। लेकिन जानना और पुष्टि करना दो अलग-अलग बातें हैं, और पुष्टि का अपना महत्व होता है।
"प्रशासनिक अधिकारी को पता नहीं था," करण ने कहा। यह बचाव नहीं था - यह एक तथ्यात्मक बयान था। तांबे ने मेहता को धोखा देकर उससे पहचान पत्र प्राप्त किए थे, जैसा कि उसने हमें बताया था, और खाताधारक ने जानबूझकर जानकारी नहीं दी थी। लेकिन उसने अपने पहचान पत्रों के प्रति लापरवाही बरती, और इसी लापरवाही के कारण मामला मीडिया में आया।
“रिकॉर्डिंग से यह साबित हो जाएगा,” प्रिया ने कहा। “रिकॉर्डिंग में साफ दिख रहा है कि मेहता का सूत्र इस बात से अनजान है कि उसकी रिकॉर्डिंग हो रही है। ये बातचीत एकतरफा है – दृश्य विवरण लापरवाही से दिए गए हैं, न कि जानबूझकर जानकारी लीक करने के तरीके से, जैसे कोई बारह साल से परिचित प्रेस संपर्क के साथ जानकारी साझा करता है।” वह थोड़ी देर रुकी। “मेहता एक वरिष्ठ पत्रकार हैं। प्रशासनिक अधिकारी उन्हें बारह साल से जानती हैं। वह बारह साल से उनसे अपने काम के बारे में बात करती आ रही थीं, जैसे लंबे समय से पेशेवर संबंध रखने वाले लोग करते

[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible], [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]”

"[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]?" [illegible] [illegible]

"[illegible] [illegible] [illegible], [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible], [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

करते हैं, इरादे की ओर नहीं। बाकी मामले को आपराधिक कार्यवाही के बजाय आंतरिक विभागीय प्रक्रियाओं के माध्यम से निपटाया जाएगा। मेहता की रिकॉर्डिंग को जांच के साक्ष्य अभिलेखागार में रखा जाएगा।
दूसरी घटना सुबह ग्यारह बजे घटी, और यह उस दिशा में हुई जिसके लिए सुबह ने मुझे तैयार नहीं किया था।
राव के वकील ने करण के नंबर पर कॉल किया - यह एक मुख्य जांच नंबर था, न कि निजी फोन, जिसका मतलब था कि कॉल क्राइम ब्रांच के माध्यम से होकर करण तक पहुंची। उन्होंने मीटिंग रूम में कॉल उठाई, जबकि मैं कॉफी टेबल पर बैठा था, और बातचीत छह मिनट तक चली। जब वह कॉफी टेबल के पास आया, तो उसके चेहरे पर एक ऐसा भाव था जिसे नाम नहीं दिया जा सकता - जहां जांच से कुछ ऐसा सामने आया है जो नए तत्वों को जोड़कर नहीं बल्कि मौजूदा तत्वों के कोण को समायोजित करके तस्वीर का पुनर्निर्माण करता है।
उन्होंने कहा, "राव एक संदेश देना चाहते हैं।"
मैंने कहा, "उन्होंने एक बयान दिया है। पांडुलिपि। साक्षात्कार।"
"एक अलग बयान," करण ने कहा। "अदालत को नहीं। जांच को नहीं।" वह रुका। "डॉक्टर को।"
मैंने इस बारे में सोचा।
“वह डॉक्टर के साथ निगरानी में एक घंटे की मुलाकात की मांग कर रहा है,” करण ने कहा। “उसके वकील के आग्रह पर कोई रिकॉर्डिंग नहीं होनी चाहिए। बंदी और उस विद्वान के बीच निगरानी में बातचीत होनी चाहिए, जिनके काम का उसने हवाला दिया है और जिस पर वह निर्भर है, जिसे उसका वकील धार्मिक मुलाकात कह रहा है—एक ऐसी मुलाकात जो एक धार्मिक या अकादमिक गुरु किसी बंदी को देता

है।” उसने मेरी ओर देखा। “पाटिल जांच से जुड़े किसी भी व्यक्ति के साथ बिना रिकॉर्डिंग वाली मुलाकात की अनुमति नहीं देंगे।” मैंने कहा, "डॉक्टर जांच में शामिल नहीं हैं। उनसे सलाह ली गई थी। उनका नाम औपचारिक जांच सूची में नहीं है। वह कार में थे।" "वह कार में था," करण ने कहा।
मैंने कहा, "औपचारिक रिकॉर्ड में किसी भी दस्तावेज़ पर उनका नाम नहीं है। उनकी सलाह अनौपचारिक रूप से, हेक्सागोनल टेंपल स्थल पर ली गई थी। यह कोई औपचारिक गवाही नहीं थी। यह कोई रिकॉर्ड किया गया साक्षात्कार नहीं था।" मैं थोड़ा रुका। "कानूनी तौर पर वे एक आम नागरिक हैं जिन्हें इस मामले से संबंधित परंपराओं का अकादमिक ज्ञान है। वे न तो जांच अधिकारी हैं, न ही गवाह, और न ही औपचारिक रूप से साक्ष्यों की कड़ी का हिस्सा हैं।"
करण ने मुझे काफी देर तक देखा। "तुम बहस कर रहे हो," उसने कहा। मैंने कहा, "मैं बिल्कुल सही बात कह रहा हूँ।"
उन्होंने पाटिल को फोन किया। बातचीत चार मिनट तक चली। पाटिल का जवाब था: तकनीकी रूप से यह जायज़ है, क्योंकि डॉक्टर का नाम औपचारिक रिकॉर्ड में नहीं है। लेकिन व्यावहारिक रूप से यह उचित नहीं है अगर बैठक में कही गई कोई बात बाद में प्रासंगिक हो और उसका कोई रिकॉर्ड न हो। अंततः, पाटिल का निर्णय था: डॉक्टर को अपना फैसला खुद लेना चाहिए।
मैंने सुबह 11:27 बजे डॉक्टर को फोन किया।
मेरी बात समझाने के बाद वह काफी देर तक चुप रहे। फिर बोले, "ज़रूर, मैं ज़रूर जाऊँगा।"
मैंने कहा, "आपको पता है कि कोई रिकॉर्डिंग नहीं होगी। उस कमरे में जो कुछ भी कहा जाएगा - राव आपको जो कुछ भी बताएगा - वह

औपचारिक कार्यवाही का हिस्सा नहीं बनेगा, जब तक कि आप ऐसा करने का निर्णय न लें।"
डॉक्टर ने कहा, "मैं समझता हूँ। इसीलिए तो वह पूछ रहा है।"

***

वे दोपहर 2 बजे क्राइम ब्रांच की इमारत में गए। मैं इमारत में नहीं था। करण भी इमारत में नहीं था। गोखले इमारत में, गलियारे में था, ठीक वैसे ही जैसे वह गलियारे में होता है जब कोई ऐसी घटना घट रही होती है जिसके करीब रहना जरूरी होता है, लेकिन जरूरी नहीं कि वह वहां मौजूद हो।
वैद्य राव के साथ कमरे में चौवालीस मिनट तक रहे। जब वे बाहर आए, तो गोखले से बात किए बिना गलियारे से होते हुए सीढ़ियों से नीचे उतरे और सड़क पर आ गए, जहाँ मैं उनकी कार के पास इंतजार कर रहा था।
वह कुछ क्षणों के लिए फुटपाथ पर इस तरह खड़ा रहा जैसे कोई व्यक्ति किसी ऐसे कमरे में समय बिता चुका हो जहाँ महत्वपूर्ण बातें कही गई हों और अब उसे यह समझने से पहले कि वे महत्वपूर्ण बातें क्या थीं, कमरे के बाहर कुछ क्षण बिताने की आवश्यकता हो। फिर उन्होंने मेरी तरफ देखा और कहा: "उन्होंने मुझसे 1987 के उस शोधपत्र को दोबारा पढ़ने के लिए कहा। इसे ऐसे पढ़ो जैसे मैंने ही लिखा हो, और मुझे वही सब पता हो जो उन्हें पता था। वे जानना चाहते थे कि क्या मैं वह क्षण ढूंढ सकता हूँ जब वह अकादमिक कार्य उसी तरह उपयोग के लिए उपलब्ध हुआ जिस तरह उन्होंने किया था।"
मैंने इंतजार किया।
डॉक्टर ने कहा, "मैंने उनसे कहा कि मैं कल रात से किसी और चीज़ के बारे में नहीं सोच रहा था।" उन्होंने कहा, "समस्या अकादमिक

कार्य नहीं थी। समस्या यह थी कि अकादमिक कार्य में दर्ज परंपरा को किसी जीवंत रूप में नहीं, बल्कि अकादमिक भाषा में ही संजोकर रखा गया था, और जब परंपरा को केवल अकादमिक भाषा में ही संजोकर रखा जाता है, तो केवल विद्वान ही उसे पूरी तरह से समझ सकते हैं, और विद्वान ही उसका दुरुपयोग कर सकते हैं।" वे थोड़ी देर रुके। फिर उन्होंने कहा, "आपने मृत भाषाओं का बहुत अच्छा संग्रह किया है, और मैंने मृत भाषाओं का उपयोग करके उस समुदाय से कुछ कहने की कोशिश की है जो अब उन्हें नहीं बोलता।"
उन्होंने सड़क की ओर देखा।
मैंने कहा, “तुमने उससे क्या कहा?”
डॉक्टर ने कहा, "मैंने कहा: मुझे पता है।" "और मैंने कहा: ऐसा नहीं है कि अभिलेख कुछ भी नहीं है। अभिलेख वह भाषा है जब उसे बोलने वाला कोई नहीं होता।" वह थोड़ी देर रुके। "उन्होंने कहा: हाँ। और फिर उन्होंने कहा - दस्तावेज़ीकरण सहायक को बता दो कि यह नोटबुक इस जांच के लिए सही प्रारूप है, क्योंकि नोटबुक भी किसी ऐसी घटना का अभिलेख है जो घटित हो रही थी लेकिन अब समाप्त हो चुकी है, और यही समाप्ति इसे आकार देती है।"
मैं कुछ देर फुटपाथ पर खड़ा रहा और इस बारे में सोचता रहा।
एक नोटबुक उन घटनाओं का संग्रह है जो घटित हो रही थीं लेकिन अब समाप्त हो चुकी हैं। उन्होंने जांच को अपने तरीके से पढ़ा और मुझे बताया कि इस प्रक्रिया में क्या किया जा रहा था। क्राइम ब्रांच भवन के एक कमरे से, उन्होंने शीशे के पार से देखा और रिकॉर्ड में अपनी बात रखी।
मैंने इसे लिखा है। उसे पक्का पता था कि मैं ऐसा ही करूंगा।

तीसरी घटना दोपहर 4:30 बजे घटी, और इसने दोपहर की शुरुआत उसी तरह की जैसे चीजें तब शुरू होती हैं जब वे आपकी उम्मीद से कहीं अधिक समय से घटित हो रही होती हैं।
अनन्याचं आर्टिकल.
राव की गिरफ्तारी के बारे में अखबार की वेबसाइट पर छपी तीन सौ शब्दों की खबर नहीं, बल्कि तथ्यात्मक और सावधानीपूर्वक तैयार की गई खबर, उस तरह की ब्रेकिंग न्यूज़ जिसे एक अच्छा पत्रकार खबर पर और उस बड़े लेख पर नज़र रखते हुए प्रकाशित करता है जो अभी लिखा जा रहा होता है। 23 तारीख को शाम 4:30 बजे प्रकाशित खबर ही वह बड़ा लेख था।
पांच हजार चार सौ शब्द। दैनिक समाचार पत्र का मुख्य फीचर स्लॉट, ऑनलाइन, जिसका शीर्षक है: फाउंडेशन और भक्त: प्रकाश सेवा फाउंडेशन ने महाराष्ट्र के समुदायों का विश्वास कैसे तोड़ा - और इसकी क्या कीमत चुकानी पड़ी।
यह शब्द के सही अर्थों में विनाशकारी था।
वह पिछले आठ महीनों से तैयारी कर रही थी। उसके पास जांच का विवरण नहीं था – मामला, हत्या, सबूतों की कड़ी। उसके पास समुदाय का विवरण था: महाराष्ट्र भर से चौदह लोगों की आवाज़ें, निवेशक, अन्य संपर्क, बैठक में शामिल होने वाले लोग और पीड़ितों के परिवार के सदस्य, जिन्होंने अपने शब्दों में बताया कि फाउंडेशन ने खुद को कैसे प्रस्तुत किया और वास्तव में वह क्या था। उसके पास एफसीआरए अनुपालन रिकॉर्ड था। उसके पास वह वित्तीय सारांश था जो निंबालकर ने हमें दिया था और जिसे इस्तेमाल करने की हमने उसे अनुमति दी थी – जांच की प्रति नहीं, बल्कि वह प्रति जो निंबालकर ने अपने पास रखी थी और पुणे छोड़ने से पहले सीधे अनन्या को दी थी।

उन्होंने कुलकर्णी का नाम लिया। उन्होंने तांबे का नाम लिया। उन्होंने हत्याओं का सीधा नाम नहीं लिया - कहानी फाउंडेशन के बारे में थी, अपराध के बारे में नहीं, और उन्होंने दोनों के बीच इतनी सटीकता से अंतर किया जैसे उन्हें पता हो कि दोनों को मिला देने से दोनों धुंधले हो जाते हैं - लेकिन उन्होंने स्वीकार किया कि फाउंडेशन के संचालन की पुलिस जांच चल रही है और कई गिरफ्तारियां हुई हैं।
उन्होंने निंबालकर की अनुमति से उनका नाम लिया। उन्होंने ही यह अनुरोध किया था। उन्होंने उनके बारे में इस तरह विस्तार से लिखा जैसे उन्होंने उनके साथ घंटों बिताए हों: वह फ़ोल्डर जो उन्होंने किसी के अनुरोध करने से आठ सप्ताह पहले बनाया था, उसकी दो प्रतियां, वह सर्वेक्षण जिसके कारण वे पुणे आए थे, और उनका स्वयं का बयान, जिसे उन्होंने पूर्ण रूप से उद्धृत किया। "मैंने अपने समुदाय को इस संस्था की सिफ़ारिश इसलिए की क्योंकि मुझे इस पर भरोसा था। मेरा भरोसा सच्चा था। लेकिन जो मैंने सिफ़ारिश की, असलियत वो नहीं थी।" वह थोड़ा रुके। "मैं किसी को धोखा देने और खुद धोखा खाने के बीच का फ़र्क़ जानता हूँ। लेकिन जिसे नुकसान पहुँचा है, उसे ये फ़र्क़ नहीं पता होता। भले ही नुकसान मेरे ज़रिए हुआ हो, मुझे ही उसका बोझ उठाना पड़ता है।" शाम 6 बजे तक लेख को चालीस हजार बार पढ़ा जा चुका था। रात 8 बजे तक इसे तीन राष्ट्रीय प्रकाशनों और एक अंग्रेजी दैनिक में प्रकाशित किया जा चुका था। रात 9 बजे तक महाराष्ट्र राज्य विधानसभा में अगले सत्र के लिए नियामक निगरानी पर प्रश्न उठाया गया था।
रात 9:47 बजे निंबालकर ने मेरे नंबर पर कॉल किया—करण के नंबर पर नहीं, मेरे नंबर पर, क्योंकि मैंने उन्हें गेस्ट हाउस में

अपना नंबर दिया था और कहा था कि अगर उन्हें किसी चीज की जरूरत हो तो वे कॉल कर सकते हैं। उन्होंने कहा: “लेख बहुत अच्छा है।” उन्होंने यह बात ऐसे कही जैसे उन्होंने खुद किसी घटना को होते हुए देखा हो, उसे सटीक रूप से रिकॉर्ड किया हो और उस सटीक रिकॉर्डिंग की खुशी का आनंद ले रहे हों। उन्होंने कहा: “मैं कल सुबह लातूर वापस जा रहा हूँ।”
मैंने कहा, "क्या यह सुरक्षित है?"
उन्होंने कहा, “लातूर में गोखले के अधिकारी ने पुष्टि की है कि फिलहाल फाउंडेशन के संचालन को कोई खतरा नहीं है। कुलकर्णी की गिरफ्तारी और तांबे की मिलीभगत ने फाउंडेशन की परिचालन क्षमता को लगभग खत्म कर दिया है। अब ऐसा कोई व्यक्ति नहीं बचा है जिसके पास समुदाय के उन लोगों को नुकसान पहुंचाने का इरादा और साधन हो, जो अब सार्वजनिक जांच में प्रमुख गवाह हैं।” वे थोड़ी देर रुके और फिर बोले, “और लातूर को अपने कार्यक्रम समन्वयक की जरूरत है। जिला कलेक्टर का वार्षिक कार्यक्रम तीन सप्ताह में है। किसी को कुर्सियों का इंतजाम करना होगा।”
मैं हँस पड़ा। तेईस दिनों में यह पहली बार था जब मैं हँसा था। मैंने कहा, "कुर्सियों का इंतजाम कर दिया जाएगा।"
उन्होंने कहा, "ये काम हमेशा पूरे हो जाते हैं। इवेंट कोऑर्डिनेटर इसी काम के लिए तो होते हैं।"
उसने फोन काट दिया। मैंने काफी देर तक पंखे को देखा।

***

चौथी बात दिन भर की बातों में सबसे छोटी थी, लेकिन जिस तरह से वह सामने आई, वह सबसे बड़ी थी, और यह किसी जांच से नहीं बल्कि सीधे करण से, रात के दस बजकर इकतीस मिनट पर, उसकी मेज से, उस अंदाज में आई जैसे किसी ने शाम का अधिकांश समय बैठकर किसी बात पर सोचते

हुए बिताया हो और अब उसने तय किया हो कि शाम का समय इसे कहने का सही समय है।
उन्होंने कहा, "उस्मानाबाद का दृश्य।" "जोशी।"
मैंने नोटबुक से नज़रें ऊपर उठाईं।
“हमारे पास भवानी पेठ और नागपुर के लिए राव है,” उन्होंने कहा। “शास्त्री पर नासिक का आरोप है। कुलकर्णी हिरासत में है। उस्मानाबाद का मामला – जोशी – कुलकर्णी की मिलीभगत से रचा गया ऑपरेशनल ऑपरेशन है, जिसकी पुष्टि घाव के विवरण से हुई है और ड्राइव पर मौजूद पुलिस की बातचीत से भी, जिसमें प्रिया ने मुझे बताया कि जोशी को एक ऐसे खतरे के रूप में बताया गया था जिससे निपटना ज़रूरी था।” वे थोड़ी देर रुके। “कुलकर्णी ने यह काम खुद नहीं किया। घाव का विवरण कुलकर्णी के कौशल स्तर को दर्शाता है – अपूर्ण चिकित्सा प्रशिक्षण – लेकिन कुलकर्णी उस दिन उस्मानाबाद में नहीं था। उसके फोन की लोकेशन से पता चलता है कि वह पुणे में था।” वे कुछ देर चुप रहे। “उस्मानाबाद का काम किसी ऐसे व्यक्ति ने किया जिसे कुलकर्णी से निर्देश मिले थे और जिसके पास न्यूनतम आवश्यक प्रशिक्षण था। हमें प्रिया से प्रशिक्षण का विवरण मिल गया है। हमारे पास उसका नाम नहीं है।” मैंने बोर्ड पर लगे उस्मानाबाद पिन को देखा।
मैंने कहा, "कॉपर कम्युनिकेशन्स। क्या इस पर उस्मानाबाद का नाम है?"
“प्रिया अभी भी उस फ़ाइल पर काम कर रही है,” करण ने कहा। “संवाद बहुत विस्तृत हैं। उनका अनुमान है कि समीक्षा में और छत्तीस घंटे लगेंगे।” वह थोड़ी देर रुके। “लेकिन उस फ़ाइल में एक संपर्क संग्रह भी है। अलग से एन्क्रिप्टेड, जिसे पहले ही डिक्रिप्ट किया जा चुका है। तैंतालीस नाम। प्रिया ने उनमें से

[illegible] - [illegible] [illegible] [illegible]

[illegible]

अध्याय 16 - साक्षी
प्रिया का संदेश दिन की चौबीस तारीख को सुबह 6:47 बजे पहुंचा। एक नाम। इकत्तीस वर्ष का। पुणे निवासी। हडपसर के एक निजी संस्थान से पैरामेडिकल प्रमाणपत्र – एक तरह का आंशिक नैदानिक प्रशिक्षण जो किसी व्यक्ति को शारीरिक संरचना का इतना ज्ञान तो देता है कि वह खतरनाक हो सकता है, लेकिन पूरी तरह से सक्षम होने के लिए पर्याप्त नहीं, और ठीक यही बात प्रिया के उस्मानाबाद में हुई चोट के विवरण से भी स्पष्ट थी। उसने फाउंडेशन के दो प्रशिक्षण सत्रों में भाग लिया था, जिनमें से एक अठारह महीने पहले उस्मानाबाद में हुआ था। उसका नाम तांबे के संपर्क अभिलेखागार में एक नोटेशन के साथ दर्ज था – तांबे की परिचालन संबंधी संक्षिप्त भाषा में दो शब्द – जिसका प्रिया ने अनुवाद किया: विश्वसनीय, उस्मानाबाद।
उनका नाम संजय हीरे था।
जांच के तेईस दिनों में मैंने यह बात पहले कभी नहीं सुनी थी, जो आश्चर्य की बात नहीं थी - जांच में पुणे स्थित किसी ऐसे पैरामेडिक की तलाश नहीं की गई थी जिसने फाउंडेशन के रिट्रीट में भाग लिया हो, क्योंकि जांच को यह पता ही नहीं था कि वह क्या खोज रही है, जब तक कि तांबे की पहल ने कल इसे सामने नहीं लाया। वह कोई विद्वान नहीं था। वह कोई जिज्ञासु नहीं था। वह फाउंडेशन का निवेशक या समुदाय से जुड़ा व्यक्ति भी नहीं था। वह एक ऐसा व्यक्ति था जिसने रिट्रीट में भाग लिया था, जिसे तांबे ने उपयोगी समझा था, और जिसे न्यूनतम आवश्यक प्रशिक्षण दिया गया था, इससे अधिक नहीं।
कुलकर्णी को उस्मानाबाद ऑपरेशन को अंजाम देने के लिए एक ऐसे व्यक्ति की आवश्यकता थी जो पर्याप्त कुशलता से काम कर सके ताकि

उसे तुरंत अप्रशिक्षित न माना जाए। तांबे के मूल्यांकन नेटवर्क से उन्हें एक ऐसा व्यक्ति मिल गया जिसका आंशिक प्रशिक्षण भी पर्याप्त से अधिक था। तांबे के खरीद विभाग ने उसी तरह सामग्री की आपूर्ति की जैसे उसने शरण स्थलों के लिए की थी, उन्हीं विक्रेताओं की सूचियों के माध्यम से जो जांच में यूएसबी ड्राइव के दौरान मिली थीं। ऑपरेशन का निर्देशन और कार्य-निर्धारण उसी तरह किया गया जैसे कुलकर्णी हर काम का करते थे - भावनात्मकता से परे, परिचालन की दृष्टि से, रसद की आवश्यकताओं के अनुरूप।
मैंने प्रिया के घावों के विवरण के बारे में सोचा - जिसने उस्मानाबाद में हुई हत्या को कुलकर्णी के अपूर्ण चिकित्सा प्रशिक्षण से जोड़ा। यह मिलान एक विवरण से था, किसी व्यक्ति से नहीं। हीरा का पैरामेडिकल प्रमाणपत्र केवल आंशिक प्रशिक्षण था
- चाकू मारने के लिए पर्याप्त, लेकिन बिना झिझक के चाकू मारने के लिए पर्याप्त नहीं। प्रशिक्षण के बारे में हम सही थे। हाथ के बारे में गलत। विवरण ने हीरा को तब खोज निकाला जब हमें पता भी नहीं था कि हीरा का अस्तित्व है।
जब अधिकारी सुबह 7:15 बजे पहुंचे, तो हीरे अपने पंजीकृत पते - हडपसर स्थित एक फ्लैट में मौजूद थे। वह भागे नहीं थे। वह कुलकर्णी की तरह चुपचाप इंतजार भी नहीं कर रहे थे। वह सो रहे थे। अधिकारियों ने दरवाजा खटखटाया और उन्होंने दरवाजा खोला। उनकी हालत ऐसी थी मानो कोई नींद में सो गया हो और अब दो पुलिस अधिकारियों के सामने खड़ा हो और यह तय न कर पा रहा हो कि यह सपना है या नहीं। उन्हें सुबह 8:30 बजे हिरासत में भेज दिया गया।
उस्मानाबाद के दृश्य को यह नाम मिला।

मैंने सुबह 8:34 बजे अपना फोन कॉर्कबोर्ड के पास ले जाकर उसके सामने खड़ा हो गया, प्रिया का संदेश पकड़े हुए, और उस्मानाबाद पिन को देखा - बाईं ओर से तीसरा पिन, जोशी का, जिसे पांच हफ्ते पहले जांच के पहले भौगोलिक क्षेत्र में रखा गया था, जब बोर्ड मानचित्र से अधिक सिद्धांत पर आधारित था।
उसके बगल में रखे एक मुड़े हुए कागज के टुकड़े पर कुलकर्णी (निर्देशक) लिखा हुआ था।
मैंने करण की मेज से एक कलम ली और कागज के एक छोटे से टुकड़े पर लिखा: हीरे, क्रमांक (कार्यान्वयन)। मैंने उसे मोड़कर पहले वाले के नीचे रख दिया।
फिर मैं पीछे हट गया और पहली बार बोर्ड को एक संपूर्ण वस्तु के रूप में देखा।
पांच पिन। पांच नोकें। बीड जिले के मध्य में स्थित पांच बिंदुओं वाली ज्यामिति और प्रश्नचिह्न वाली आकृति अब प्रश्नचिह्न मात्र नहीं रह गई थी। बोर्ड पर बना वह वृत्त, जिसे भवानी पेठ की चक्की, नासिक के फोन कॉल, उस्मानाबाद की यात्रा, नागपुर से उड़ान, लातूर में संवाद, वैशाली में बैठक और गेवराई के उस परिसर में जहां हर दोपहर दीयों में तेल भरा जाता है, इन सभी अनुभवों को मिलाकर चौबीस दिनों में तैयार किया गया था। पूरा।
करण बाथरूम से बाहर आया और उसने मुझे बोर्ड को देखते हुए पाया। उसने उस्मानाबाद पिन पर लिखे नए नोट को देखा। उसने उसे पढ़ा। उसने कुछ पल बोर्ड को उसी तरह देखा जैसे वह चौबीसों घंटे देखता रहता था - किसी जांच अधिकारी की तरह नहीं जो बचे हुए काम का आकलन कर रहा हो, क्योंकि अब कुछ बचा ही नहीं था, बल्कि किसी ऐसे व्यक्ति की तरह जो किसी बनी हुई और पूरी हो चुकी चीज़ को देख रहा

हो, जिसकी पूर्ण अवस्था किसी भी मध्यवर्ती अवस्था से अलग गुणवत्ता रखती हो।
"हो गया," उसने कहा।
"हो गया," मैंने कहा।
यही वह अधिकतम और न्यूनतम बात थी जो हम कह सकते थे। और यही सही मात्रा भी थी।
अभियोजन पक्ष को औपचारिक रूप से दस्तावेज सौंपने की प्रक्रिया सुबह 11 बजे क्राइम ब्रांच भवन में निर्धारित थी। यह टेलीविजन पर दिखाए जाने वाले नाटकीय हस्तांतरण की तरह नहीं था – कोई समारोह नहीं, कोई भाषण नहीं। यह जांच से साक्ष्य संग्रह को उस संस्था को सौंपने की प्रक्रिया थी जो अब इसे भारतीय न्यायिक प्रणाली के अनुसार वर्षों की कानूनी प्रक्रिया से गुज़ारेगी। चौबीस दिन की जांच, पांच हत्या स्थल, छह गिरफ्तारियां, 83 पृष्ठों की पांडुलिपि, गेवराई में एक पत्थर की गुफा में मिली एक सीलबंद पीतल की कैप्सूल, 37 ऑडियो फाइलें, वैशाली में एक कोने की मेज से मिले दो फोल्डर और एक यूएसबी ड्राइव – इन सभी को एक औपचारिक रिकॉर्ड में संकलित किया गया था जो अब अभियोजन पक्ष के पास और अदालत की फाइलों में तब तक रहेगा जब तक आवश्यक हो। इसमें कुछ साल लगेंगे। मुझे पता था। करण को पता था। क्राइम ब्रांच बिल्डिंग में हर किसी को पता था।
राव को सुनवाई की तारीख तक हिरासत में या जमानत पर रहना होगा। जब सुनवाई होगी, तो उसमें सालों लगेंगे। शास्त्री का मामला अपने तय समय में चलेगा। कुलकर्णी का वित्तीय मामला बेहद जटिल था - शेख ने पूर्ण दस्तावेज़ीकरण के लिए दो साल की समय सीमा दी थी, और उनके खिलाफ अभियोजन पक्ष का वित्तीय मामला भी उसी के अनुरूप लंबा और जटिल होगा। हीरा को उस्मानाबाद मामले का सामना

करना पड़ेगा। तांबे के सहयोग को उनकी प्रशासनिक जवाबदेही के मुकाबले तौला जाएगा, जो उनके द्वारा मांगी गई सटीकता से उत्पन्न होने वाले किसी भी औपचारिक समझौते में लागू होगी।
यह सब जल्दी नहीं होगा। यह सब साफ-सुथरा नहीं होगा। जांच ने चौबीस दिनों में अपना काम पूरा कर लिया और जो कुछ भी पाया उसे एक ऐसी प्रक्रिया को सौंप दिया जिसमें कम से कम चौबीस महीने लगेंगे और संभवतः उससे भी चौबीस गुना अधिक समय लगेगा।
इन जांचों से जो सच्चाई सामने आती है, वह यह है: कोई समाधान नहीं, बल्कि एक ऐसे समाधान की कच्ची सामग्री, जिसे कानून वर्षों की सुनवाई, याचिकाओं, अपीलों और स्थगनों के माध्यम से धीरे-धीरे, अपूर्ण रूप से, कभी-कभी गलतियों के साथ संसाधित करेगा। कॉर्कबोर्ड पर बना आरेख पूरा हो चुका है। अब अदालती कार्यवाही शुरू हो रही है।

***

पाटिल ने सुबह 11 बजे औपचारिक रूप से कार्यभार सौंपने की प्रक्रिया उसी तरह पूरी की जैसे कोई वरिष्ठ अधिकारी पहले भी कर चुका हो। लेकिन प्रक्रिया के अंत में—हस्ताक्षरों और फाइल हस्तांतरण की पुष्टि के बाद और अभियोजन पक्ष के मुख्य वकील के साथ संक्षिप्त बातचीत के बाद—उन्होंने कुछ ऐसा किया जो प्रक्रिया का हिस्सा नहीं था। वे कमरे के एक कोने में खड़े करण और मेरे पास आए और कुछ पल के लिए हम दोनों को देखा, फिर उन्होंने कहा:
“पांडुलिपि।” वह रुके। “प्रिया ने मुझे बताया कि अभियोजन पक्ष इसे दोषमुक्त करने वाले साक्ष्य के रूप में पेश करवाना चाहता है। बचाव पक्ष तर्क देगा कि यह पूर्वाग्रही है और इसे बाहर रखा जाना चाहिए या इसका दायरा सीमित किया जाना चाहिए।” वह फिर रुके।

“मुझे नहीं पता कि अदालत पांडुलिपि को साक्ष्य के रूप में लेकर क्या फैसला करेगी—मैं आप दोनों को बताना चाहता हूँ कि मैंने इसे पढ़ा है। पूरा। तीन बार।” वह एक पल के लिए चुप रहे। “यह वह सबसे कठिन दस्तावेज़ है जिसे मैंने अपने इकत्तीस वर्षों के काम में पढ़ा है। कठिन इसलिए नहीं कि इसमें क्या वर्णित है। कठिन इसलिए कि यह अपने वर्णन को कितनी स्पष्टता से देखता है और जो यह रचता है उसे देखने में पूरी तरह विफल रहता है।” उन्होंने करण की ओर देखा। “आपकी जाँच ने वह मामला तैयार किया है जो इसे आगे ले जाएगा। यह एक अच्छा मामला है।” उन्होंने एक बार सिर हिलाया। फिर वह चले गए।
करण ने उसे जाते हुए देखा।
मैंने कहा, "इकत्तीस साल।"
"हां," करण ने कहा।
हम रात 11:43 बजे इमारत से निकले। बाहर निकलते समय, मैं दूसरी मंजिल के गलियारे में पानी के डिस्पेंसर के पास से गुजरा, जिसके बारे में मुझे संदेह था कि यह इस जांच के हिस्से के रूप में आखिरी बार खुला होगा, और मैं रुका और एक कप पानी पिया क्योंकि वह वहां था और क्योंकि शरीर को इसकी जरूरत हर हाल में होती है।
आज सुबह पुणे में इमारत के बाहर फुटपाथ पर खड़े होकर - पिछले एक सप्ताह में मौसम बदल गया था, अक्टूबर की गर्मी पूरी तरह से उत्तरी सर्दियों के शुरुआती दौर के हल्के रूप में बदल गई थी, दक्कन पठार का नवंबर का मौसम सुबह के समय वास्तविक ठंड और दोपहर में सहनीय बूंदाबांदी लेकर आता था - और मैंने डॉक्टर से मुलाकात की।
वे अपने कंधों पर कपड़े का थैला लिए, कपड़े के कुर्ते और धोती में, माथे पर चश्मा लगाए, गेट पर खड़े थे और क्राइम ब्रांच की

इमारत को ऐसे देख रहे थे जैसे वे किसी ऐसी जगह पर पहुँच गए हों जहाँ उन्हें पहुँचने की ज़रूरत नहीं थी, लेकिन फिर भी पहुँच गए क्योंकि दूसरा विकल्प - सदाशिव पेठ के एक फ्लैट में रहना - अब उनके लिए पर्याप्त नहीं था।
उन्होंने कहा, "मैंने गोखले को फोन किया था। उन्होंने मुझे बताया कि आप दोपहर तक यहां पहुंच जाएंगे।"
"हम बस निकल ही रहे थे," करण ने कहा।
“मुझे पता है,” डॉक्टर ने कहा। “मैंने समय इस तरह तय किया था कि मैं आपसे अंदर आते समय नहीं बल्कि बाहर जाते समय मिलूँ।” उन्होंने करण की ओर देखा। “मुझे आप दोनों को कुछ दिखाना है। ज़्यादा समय नहीं लगेगा।”
उसने कपड़े का थैला खोला और उसमें से एक ज़ेरॉक्स कॉपी निकाली – एक ही पृष्ठ, पुराना और किनारों से थोड़ा धब्बा लगा हुआ, मूल प्रति स्पष्ट रूप से कुछ साल पहले प्रकाशित किसी पत्रिका या मोनोग्राफ से ली गई थी। उसने वह प्रति करण को दे दी।
करण ने इसे पढ़ा। मैंने उसके कंधे के ऊपर से इसे पढ़ा।
यह महाराष्ट्र लोक अध्ययन पत्रिका के 1974 के अंक का एक पृष्ठ था - एक क्षेत्रीय प्रकाशन, सीमित प्रसार वाला, जिसमें उन चीजों का दस्तावेजीकरण किया जाता था जिन्हें प्रमुख अकादमिक पत्रिकाएँ अपने पृष्ठों के लिए पर्याप्त महत्वपूर्ण नहीं मानती थीं। लेख बीड जिले में शैव स्थलों के बारे में था। लेखक वैद्य नहीं थे - वैद्य 1974 में स्नातकोत्तर छात्र थे। लेखक एक विद्वान थे जिनका नाम मैं नहीं पहचानता था, और यह वह भाग था जिसकी वैद्य ने ज़ेरॉक्स करवाई थी:
गेवराई स्थित हेक्साग्राम मंदिर साधक परंपरा के उस रूप का प्रतिनिधित्व करता है जिसकी दीक्षा की कोई जीवित परंपरा नहीं

है। अंतिम दीक्षा-रक्षक का निधन 1968 में हुआ था, और उनके शिष्य
- यदि कोई थे भी - तो उपलब्ध अभिलेखों में उनकी पहचान कभी नहीं हो पाई। जो बचा है वह है मंदिर स्थल, केंद्रीय प्रांगण में स्थित पत्थर का यंत्र, और परंपरा से संबंधित मौखिक विवरण। परंपरा इस मायने में मृत नहीं है कि मंदिर स्थल अभी भी मौजूद है और अनुष्ठान का स्वरूप दस्तावेजीकृत है। लेकिन यह इस मायने में जीवित नहीं है कि कोई भी साधक इसके समापन अनुष्ठान का निष्ठापूर्वक पालन कर सके, क्योंकि समापन अनुष्ठान के लिए एक जीवित गुरु से ज्ञान प्राप्त करना आवश्यक है, और कोई जीवित गुरु मौजूद नहीं है। हेक्साग्राम मंदिर, कड़ाई से कहें तो, अनुष्ठानों का संग्रह है, न कि केवल अनुष्ठान।
मैंने इसे दो बार पढ़ा।
डॉक्टर ने मुझे पढ़ते हुए देखा।
मैंने कहा, "उसे पता था।"
“जी हां,” डॉक्टर ने कहा। “उन्होंने अपने 2009 के लेख में इस लेख का ज़िक्र किया था। फुटनोट 37। मैंने कल रात इसे देखा था।” वे रुके। “वे जानते थे कि परंपरा उस अर्थ में जीवित नहीं थी कि वे उसके समापन अनुष्ठानों का निष्ठापूर्वक पालन कर सकें। फिर भी उन्होंने उनका पालन किया। उन्होंने एक ऐसे अनुष्ठान का पालन किया जिसका प्रामाणिक रूप एक ऐसे ज्ञान हस्तांतरण की मांग करता था जो उन्हें प्राप्त नहीं हो सकता था, एक ऐसी जगह पर जिसका अंतिम प्रमाणित अभ्यासी 1968 में मर गया था।” उन्होंने इमारत की ओर देखा। “वे परंपरा को पुनर्जीवित नहीं कर रहे थे। वे परंपरा को पुनर्जीवित नहीं कर सकते थे। वे जानते थे कि वे परंपरा को पुनर्जीवित नहीं कर सकते।” वे रुके। “वे इसके लिए शोक मना रहे थे। एक ऐसे अनुष्ठान के भीतर से जिसमें वे केवल अकादमिक

कार्य के माध्यम से प्रवेश कर सकते थे - मेरे अकादमिक कार्य और इस परंपरा के बारे में लिखने वाले हर व्यक्ति के अकादमिक कार्य के माध्यम से - वे उस चीज़ के लिए एक विद्वान के रूप में शोक मना रहे थे जो पहले ही लुप्त हो चुकी थी।”
"पांच लोग," करण ने कहा।
डॉक्टर ने कहा, "पांच लोग।" वह करण के हाथ में ज़ेरॉक्स कॉपी देख रहे थे। "उसने एक ऐसी परंपरा से मंडल बनाया जिसका कोई जीवित अनुयायी नहीं बचा था जो उसे बता सके कि वह गलत बना रहा है। अकादमिक कार्यों ने उसे आकार दिया। उसके उपयोग के लिए उस आकार को सुधारने वाला कोई नहीं बचा था।" वह रुके। "मैंने उसे आकार दिया। 1987 का मेरा शोधपत्र इस परंपरा का सबसे व्यापक मुद्रित दस्तावेज़ है। मैंने उसे एक मृत भाषा का सबसे सटीक संग्रह दिया, और उसने उसका उपयोग उस भाषा में कुछ ऐसा कहने के लिए किया जो उस भाषा ने - जीवित रहते हुए भी - कभी नहीं कहा था।" उन्होंने हाथ जोड़ लिए। "मैं उसके कार्यों का दोषी नहीं हूँ। मैं यह समझता हूँ। लेकिन मैं उसके सबसे उपयोगी उपकरण का रचयिता हूँ।"
कुछ पल तक कोई नहीं बोला।
मैंने कहा, "तुम इसका क्या करोगे?"
उन्होंने मेरी ओर देखा। “मैं इस बारे में लिखूंगा,” उन्होंने कहा। “एक विद्वान और क्या करता है? मैं अभिलेखीय अकादमिक कार्य और अभिलेखागारों के उपयोग के बीच के संबंध के बारे में लिखूंगा। मैं उस परंपरा की विशेष कमज़ोरी के बारे में लिखूंगा जो केवल दस्तावेज़ीकरण में ही समाहित है, बिना किसी जीवित संरक्षक के, बिना रीति-रिवाजों और समुदाय के सुधारात्मक घर्षण के। मैं राव के बारे में लिखूंगा—एक हत्यारे के रूप में नहीं, बल्कि एक ऐसे विद्वान के रूप में जिसने एक ऐसी सीमा पार कर ली

[illegible]
"[illegible]," [illegible]
[illegible]
"[illegible]," [illegible] "[illegible]" [illegible]
[illegible]:

> [illegible] **1974** [illegible] **37**[illegible]

[illegible]

***

[illegible]

कहा: वह कुछ ऐसा बचाने की कोशिश कर रहा था जो उसने खो दिया था, बिना यह जाने कि उसने उसे खो दिया है। मुझे लगता है कि यह सबसे दुखद प्रकार का बचाव अभियान है।
लेख में बिना नाम लिए वह सवाल पूछा गया, जिसका जवाब दिए बिना ही जांच चौबीस दिनों से उसी सवाल के इर्द-गिर्द घूम रही थी: क्या राव गलत थे? विधि के बारे में नहीं - विधि गलत थी, यह सवाल नहीं था। परंपरा के बारे में गलत। इसके अपमान के बारे में गलत। इस तर्क के बारे में गलत कि अपमान के लिए उतना ही बड़ा प्रतिसाद आवश्यक था जितना कि नुकसान।
उन्होंने दो विद्वानों के हवाले से कहा। एक ने कहा: फाउंडेशन के बारे में उनका मत सही था, लेकिन प्रतिक्रिया के बारे में गलत। प्रतिक्रिया की गलती फाउंडेशन के कार्यों को उनके स्वरूप से अलग नहीं कर सकती। दूसरे ने कहा: जिस परंपरा को वे संरक्षित करने का प्रयास कर रहे थे, वह फाउंडेशन के आने से पहले ही समाप्त हो चुकी थी। फाउंडेशन किसी ऐसी चीज का अपमान नहीं कर सकता था जिसमें अपमान करने की क्षमता ही न हो। उनका दुःख वास्तविक था। लेकिन दुःख का कारण उस रूप में मौजूद नहीं था जैसा उन्होंने माना था।
उन्होंने कोई निष्कर्ष नहीं निकाला। लेख निंबालकर के इस वाक्य के साथ समाप्त हुआ - "सबसे दुखद प्रकार का बचाव अभियान" - और निष्कर्ष पाठक पर छोड़ दिया।
मैंने इसे दोपहर 2:17 बजे कॉफी टेबल पर पढ़ा और काफी देर तक इसके बारे में सोचता रहा।
उस दिन इस लेख को दो लाख से अधिक लोग पढ़ेंगे। मुकदमे की कार्यवाही में इसका हवाला दिया जाएगा, अंततः जब मुकदमा चलेगा।
डॉक्टर के शोध पत्र में भी इसका उल्लेख होगा। फाउंडेशन मामले

पर होने वाली अकादमिक चर्चाओं में भी इसका हवाला दिया जाएगा, जो ऐसे लेख प्रकाशित करने वाली पत्रिकाओं में वर्षों तक चलती रहेंगी। यह पूछे गए प्रश्न का उत्तर नहीं देगा। बल्कि यह प्रश्न को नकारना असंभव बना देगा।
अनन्या पिछले आठ महीनों से इसकी तैयारी कर रही थी। जांच में इसका जवाब नहीं मिला। जांच में जो सवाल उठा, वह अनुत्तरित ही रह गया, उन सभी के लिए छोड़ दिया गया जो इस पर विचार करने को तैयार थे।
शाम 4:15 बजे, मैं कॉफी टेबल पर था जब करण अपनी डेस्क से उठा और कॉर्कबोर्ड के पास खड़ा हो गया।
वह वहाँ काफी देर तक खड़ा रहा—जितना समय वह चौबीस घंटे से भी अधिक समय से इंतज़ार कर रहा था। चौबीस घंटे हमेशा वस्तुनिष्ठ होते हैं, एक ऐसे व्यक्ति की नज़र जो बचे हुए का आकलन कर रहा हो। लेकिन यह अलग था। बोर्ड का काम पूरा हो चुका था। आकलन करने के लिए कुछ भी नहीं बचा था। वह तैयार चीज़ को देख रहा था, पाँचों पिन और उनके सिरे, पाँच बिंदुओं वाली आकृति और उसका नाम दिया हुआ केंद्र, और उसकी नज़र में कोई क्रियात्मक उद्देश्य नहीं था। यह उस व्यक्ति की नज़र थी जिसने कुछ बनाया है और अब उसके सामने उस क्षण में खड़ा है जब उसका निर्माण रुक चुका है और जो बचा है, वही है।
उसने पहली पिन निकाली। भवानी पेठ।
उसने उसे कुछ क्षणों तक पकड़े रखा। फिर उसने उसे डिब्बे में रख दिया।
उसने नासिक की पिन निकाली। उस्मानाबाद की पिन निकाली। नागपुर की पिन निकाली। एक-एक करके, जानबूझकर, बिना जल्दबाजी किए, हर एक

को डिब्बे में इस तरह रखा जैसे उसने तय कर लिया हो कि यही तरीका है और वह इसी तरीके से कर रहा है।
उन्होंने पांचवीं पिन - लातूर, निम्बालकर - को बाकी पिनों से ज़्यादा देर तक अपने पास रखा। फिर उन्होंने उसे बाकी पिनों के साथ डिब्बे में रख दिया।
उसने बोर्ड से आरेख उठाया। उसने उसे सावधानीपूर्वक मोड़ा - पेंसिल की रेखाएं, पांच दिशाएं, बीड जिला केंद्र - और उसे पकड़ लिया।
मैंने कहा, "तुम इसका क्या करोगे?"
उन्होंने अपने हाथ में मुड़े हुए चित्र को कुछ देर तक देखा। "मैं इसे पाटिल को देने जा रहा हूँ," उन्होंने कहा। "यह चित्र जांच रिकॉर्ड का हिस्सा है। यह अभियोजन पक्ष के अभिलेखागार में होना चाहिए।" वे थोड़ी देर रुके। "ये पिन मेरी हैं।"
उसने आरेख को एक तरफ रख दिया और खाली कॉर्कबोर्ड के सामने खड़ा हो गया। उस पर पिनों के निशान थे। पेपर क्लिप्स ने बोर्ड की सतह पर छोटे-छोटे निशान छोड़ दिए थे - नक्शे की धुंधली सी झलक। बोर्ड खुद - सादा कॉर्क, एक साधारण आयत, जिस पर चौबीस दिनों की खोजी समझ बार-बार टिकी थी और अब पूरी हो चुकी थी।
मैंने कहा, "बोर्ड।"
उन्होंने कहा, "बोर्ड बना रहेगा। बोर्ड बना रहेगा।"
वह उससे मुँह मोड़कर मेरे सामने कॉफी टेबल पर बैठ गया। जाँच के दौरान यह तीसरी बार था जब वह अपनी डेस्क के बजाय वहाँ बैठा था, और हर बार ऐसे समय पर जब विचारों को साझा स्थान की आवश्यकता थी। पंखा चल रहा था। नवंबर की दोपहर की हल्की रोशनी खिड़की से अंदर आ रही थी।
वह कुछ देर चुप रहा।

उन्होंने कहा, "मुझे कुछ कहना है।"
मैंने इंतजार किया।
“यह जांच औपचारिक रिकॉर्ड में पाटिल की देखरेख में एक सफल एस.आई.टी. ऑपरेशन के रूप में दर्ज होगी,” उन्होंने कहा। “यह इसका सटीक और निष्पक्ष वर्णन है। चौबीस दिन, छह गिरफ्तारियां, सबूतों का पूरा जखीरा।” उन्होंने खाली बोर्ड की ओर देखा। “जो हमने पाया वह हमारी उम्मीद से कहीं ज्यादा मुश्किल था और यह रिकॉर्ड में हमारी उम्मीद से अलग दिशा में दर्ज नहीं होगा।” वे कुछ देर रुके। “हमें एक हत्यारे की उम्मीद थी। हमें एक ऐसा व्यक्ति मिला जो नुकसान के बारे में सही था, लेकिन प्रतिक्रिया के बारे में गलत था, और एक ऐसे दुख से ग्रस्त था जिसे जांच में दर्ज तो किया गया लेकिन संबोधित नहीं किया गया।”
मैंने उसकी ओर देखा।
“मैं सालों से ये काम कर रहा हूँ,” उन्होंने कहा। “ऐसा पहले कभी नहीं हुआ। एक ऐसा मामला जहाँ अपराधी ने अपने कृत्य से पहले नुकसान का जो विश्लेषण किया था, वो सटीक था। जहाँ नुकसान वास्तविक था, दस्तावेज़ों में दर्ज था, और दलीलें तर्कसंगत थीं, लेकिन निष्कर्ष गलत निकला।” वे थोड़ी देर रुके। “अदालत निष्कर्ष पर विचार करेगी। अदालत का काम निष्कर्ष पर विचार करना है। इसका काम उससे उत्पन्न होने वाले दुख को संभालना नहीं है।” उन्होंने अपने हाथों की ओर देखा। “मुझे नहीं पता कि अदालत किस चीज़ पर विचार करने के लिए बनी है।”
मैंने कहा, "वैद्य का लेख। अनन्या का लेख। निम्बालकर का बयान।" उसने मेरी तरफ देखा। "हाँ," उसने कहा। कुछ क्षण बाद, "हाँ।" मैंने कहा, "नोटबुक।"

उसने हमारे बीच रखी कॉफी टेबल पर रखी नोटबुक पर नज़र डाली - वही नोटबुक जो चौबीस दिन पहले, पहली रात को भवानी पेठ में सात बत्तियों के बीच आधी रात को ज़मीन पर पड़ी थी। उसके पन्ने अब पूरे हो चुके थे: पहली मिल एंट्री से लेकर आज सुबह हीरे के नाम तक की पूरी जाँच, चौबीस दिनों तक जो कुछ हम जानते थे और जो नहीं जानते थे, उसका रिकॉर्ड, उसी रूप में जैसा राव ने मुझे डॉक्टर के माध्यम से दिया था - एक ऐसी घटना का रिकॉर्ड जो घटित हो रही थी और अब समाप्त हो चुकी थी।
“नोटबुक,” करण ने कहा। उसने नोटबुक को देखा। उसने उसे उठाया - ऐसा उसने चौबीस दिनों में कभी नहीं किया था, कभी छुआ भी नहीं था। नोटबुक मेरी थी, जैसे कॉर्कबोर्ड उसका था। उसने उसे एक पल के लिए पकड़े रखा। फिर उसने उसे वापस मेज पर रख दिया। “इसका क्या होगा?”
मैंने कहा, "वह यहीं रहेगी। बोर्ड की तरह ही।"
वह कुछ पल चुप रहा। फिर उसने कहा: "इसे लिख लो।"
"क्या लिखूं मैं?"
उन्होंने मेरी तरफ देखा। "सब कुछ। सिर्फ़ मुक़दमे का रिकॉर्ड नहीं - बस इतना ही। आपने जाँच लिखी है। यह क्या थी। आपको क्या मिला। नोटबुक किस लिए थी।" वे रुके। "इसे जैसा है वैसा ही लिखो। कोई आधिकारिक दस्तावेज़ नहीं। रिकॉर्ड का रिकॉर्ड।" उन्होंने छेदों वाले बोर्ड की तरफ देखा। "किसी को यह लिखना चाहिए कि यह जानना कैसा लगता है कि नुकसान के बारे में पूरी तरह सही होना और प्रतिक्रिया के बारे में पूरी तरह गलत होना संभव है, और ये दोनों बातें एक-दूसरे को रद्द नहीं करतीं, और वह व्यक्ति जिसके पास एक ही समय में दोनों बातें थीं - वह व्यक्ति जिसने स्पष्ट रूप से देखा और भयानक काम किया - वर्षों तक अदालत में एक ऐसी

[illegible]

[illegible]

— [illegible]

[illegible]

- [illegible]:

[illegible]?

[illegible]

[illegible]

[illegible]

***

कुछ बातें औपचारिक अभिलेखों में दर्ज होती हैं और कुछ बातें दर्ज नहीं होतीं।
आधिकारिक रिकॉर्ड में शामिल हैं: छह गिरफ्तारियां, पांच हत्या स्थल, 83 पृष्ठों की पांडुलिपि, 37 ऑडियो फाइलें, दो फोल्डर और एक यूएसबी ड्राइव, एक पीतल का कैप्सूल और उपकरण के साथ एक पत्थर की टाइल। 20 तारीख को दोपहर 1:32 बजे हस्ताक्षरित और शाम 5:47 बजे निष्पादित वारंट। अभियोजन पक्ष द्वारा एकत्र किए गए ये दस्तावेज आने वाले वर्षों में सुनवाई में उद्धृत किए जाएंगे। साक्ष्यों की वह कड़ी जिसे पाटिल ने एक मजबूत मामला बताया था, और यह वास्तव में मजबूत मामला है।
औपचारिक रिकॉर्ड में दर्ज नहीं: करण चौबीस दिनों में तीसरी बार कॉफी टेबल पर बैठा है। क्राइम ब्रांच भवन के बाहर डॉक्टर के हाथ जुड़े हुए हैं। फोन पर निंबालकर की आवाज़ आ रही है कि कुर्सियाँ लगा दी जाएँगी। अनन्या का सवाल अनुत्तरित रह गया, जिससे पाठक को कोई जवाब नहीं मिला। प्रिया का चार पन्नों का विश्लेषण, जिसकी अंतिम पंक्ति में सब कुछ स्पष्ट हो जाता है। अक्टूबर की दोपहर चार बजे कार की खिड़की से मराठवाड़ा पठार कैसा दिखता है, दोपहर की रोशनी में समतल भूमि लाल हो जाती है। गणपत और तेल की गंध। परिसर के पार पूर्व की ओर इशारा करती छह चोटियों की छायाएँ। राव ने पृष्ठ छियासठ पर जो कहा वह आधिकारिक रिकॉर्ड में नहीं है: इससे मेरे साथ ले जाने वाली चीज़ों में बदलाव आता है। गोडबोले का शतरंज सेट किस लिए था? वाघ ने हारमोनियम कैसे बजाया जब उसमें से आवाज़ आई, जिसका पता लगाने के बारे में जांच में किसी ने नहीं सोचा और जो अब उन रहस्यों में से एक है जो कभी पता नहीं चल पाएंगे।

औपचारिक रिकॉर्ड में जो दर्ज नहीं है, वह यह है कि राव ने डॉक्टर के माध्यम से क्या कहा था, जो मुझसे और उन सभी लोगों से कहा गया था जिन्होंने चौबीस दिन तक अपनी खोजों को लिखकर रखा ताकि वे खो न जाएं: नोटबुक कुछ ऐसी घटनाओं का संग्रह है जो घटित हो रही थीं लेकिन अब समाप्त हो चुकी हैं, और यही समाप्ति इसे आकार देती है। जो कुछ भी हो रहा था, अब वह समाप्त हो गया है। यही वास्तविकता है।
मैं चौबीस दिनों से इस जांच में दस्तावेज़ीकरण सहायक के रूप में काम कर रहा हूँ, जो कुछ मैंने पाया है और कुछ ऐसी बातें भी जिन्हें मैं अभी तक नाम नहीं दे पाया हूँ, उन्हें लिख रहा हूँ। चक्की में उस पहली रात से लेकर आज शाम उस अपार्टमेंट में जहाँ पंखा चल रहा है और बोर्ड खाली पड़ा है, लेखन एक प्रकार की गवाही रही है।
साक्षी, उसने वृत्त के बीच में लिखा। साक्षी।
उन्होंने इसे परंपरा के लिए लिखा। परंपरा इसे पढ़ नहीं सकी। इसके बजाय, जांच वहां तक पहुंची, और गेवराई परिसर में दीपक की रोशनी में इसे पढ़ा और फिर इसे लिखा।
अदालती मुकदमा सालों चलेगा। अनन्या द्वारा पूछे गए सवालों का जवाब अदालती भाषा में नहीं दिया जाएगा। वैद्य अपना लेख लिखेंगे, जिसे अठारह लोग पढ़ेंगे, वह सच होगा और 1987 के लेख, 1974 के लेख और परंपरा से जुड़ी हर उस चीज़ के साथ अभिलेखागार में पड़ा रहेगा, जिसे जीवित वक्ताओं के स्थान पर रखा जाता है। निम्बालकर जिला मजिस्ट्रेट के वार्षिक समारोह के लिए कुर्सियाँ लगाएंगे, जो उन्होंने ले जाने का वादा किया था उसे लेकर आगे बढ़ जाएंगे।
करण का बोर्ड खाली है। पिन डिब्बे में हैं।

पुणे के बाहर, चारों ओर घना अंधेरा छाया हुआ है। गेवराई में भी वैसी ही रात है। षट्कोणीय मंदिर परिसर अंधकार में डूबा हुआ है, दीपकदान खाली हैं क्योंकि गणेश जी दोपहर बाद उनमें दीपक जलाते हैं और अगले दिन तक नहीं लौटते। इसमें छह मंदिर हैं। केंद्रीय चौक। पूर्व दिशा में स्थित वह खोखला स्थान, जहाँ कुछ रखा जाता था, और जो अब खाली है।
पुणे के दूसरी ओर स्थित क्राइम ब्रांच की इमारत में, एक ऐसे कमरे में जहाँ से उनके अध्ययन कक्ष का नज़ारा नहीं दिखता, कार्वे रोड पर कोई किताबें नहीं हैं और न ही उन्हें जगाए रखने के लिए कोई दीपक है, राव बैठे हैं। मुझे नहीं पता। लेकिन मैं इस पर विश्वास करता हूँ, ठीक वैसे ही जैसे इस जाँच में मैंने उन बातों पर विश्वास करना सीख लिया है जिनकी पुष्टि अभी तक नोटबुक में नहीं हुई है - संभावनाओं के ढेर में, जिन्हें सबूतों के आधार पर सुलझाया जाना बाकी है।
वह जाग रहा है, सोच रहा है, और वह हत्या के बारे में नहीं सोच रहा है। वह परंपरा के बारे में सोच रहा है। वह जिसे वह प्यार करता था। वह जो उसके पहुँचने से पहले ही लुप्त हो गई थी। वे दृश्य जो उसने रचे - एक विद्वान का विलाप, ऐसी भाषा में जिसे सुनने वाला कोई नहीं बचा था।
अब उसकी बात सुनने वाला कोई नहीं बचा था।
जांच को छोड़कर।
नोटबुक को छोड़कर।
साक्षी, उसने वृत्त के बीच में लिखा था।
मैंने उसे लिख दिया।
*****समाप्त*****

sjeet

लेखक प्रोफ़ाइल

नीरज भोपाले सिर्फ कहानियां नहीं सुनाते, बल्कि उन्हें गढ़ते हैं। वैश्विक प्रौद्योगिकी जगत के उच्चस्तरीय बोर्डरूम से लेकर चित्रकार के कैनवास की सूक्ष्म बारीकियों तक फैली अपनी छाप छोड़ने वाले एक बहुमुखी लेखक, नीरज अपराध कथा साहित्य की दुनिया में एक दुर्लभ और बहुआयामी दृष्टिकोण प्रस्तुत करते हैं।
तकनीकी ग्रंथों और मनोरंजक जासूसी कहानियों के प्रख्यात लेखक नीरज हत्या को एक सर्वोत्कृष्ट "प्रणालीगत विफलता" मानते हैं। अपनी प्रशंसित जासूस करण श्रृंखला में, वे मानवीय दुर्बलता और कठोर तर्क के अंतर्संबंध का अन्वेषण करते हैं। करण के नज़रिए से, पाठक एक ऐसी दुनिया में प्रवेश करते हैं जहाँ हर सुराग एक ब्रश की लकीर है और हर इरादा एक गुप्त कोड है जिसे समझने की प्रतीक्षा है।
जब नीरज किताबों में किसी अपराध की गुत्थी सुलझाने में व्यस्त नहीं होते, तो वे एक समर्पित पुस्तक प्रेमी और दृश्य कलाकार होते हैं। एक सीटीओ की विश्लेषणात्मक क्षमता और एक चित्रकार की भावपूर्ण अंतर्दृष्टि का यह अनूठा मेल ही जासूस करण के

उपन्यासों को गहराई प्रदान करता है: समृद्ध बनावट, प्रक्रियात्मक सटीकता और सिनेमाई दुनिया का अद्भुत संगम। पुणे में रहने वाले नीरज डिजिटल और अंधकार के बीच की खाई को पाट रहे हैं, यह साबित करते हुए कि चाहे आप एक वैश्विक उद्यम बना रहे हों या एक बंद कमरे का रहस्य, सुंदरता हमेशा बारीकियों में निहित होती है।
आप उनसे neerajbhople@gmail.com पर संपर्क कर सकते हैं।

नीरज की अन्य पुस्तकें
थ्रिलर श्रृंखला
1. जासूस करण #1 – बाएँ-दाएँ का रहस्य – अंग्रेज़ी लघु संस्करण
2. जासूस करण #1 - दान्या बान्या रहस्य - हिंदी लघु संस्करण
3. जासूस करण #1 - दावा उज्व रहस्य - मराठी लघु संस्करण
4. जासूस करण #2 – पवित्र परछाइयाँ – एक चर्च की पहेली – अंग्रेजी लघु संस्करण
5. जासूस करण #2 - खेल सवल्यांचा - चर्च मधिल एक पेच - मराठी
लघु संस्करण
6. जासूस करण #3 – पवित्र झूठ – अंग्रेजी संस्करण
दर्शन
1. स्टोइक दर्शन के रहस्यों का खुलासा - मार्कस ऑरेलियस के
साथ जीवन में महारत हासिल करना
व्यवसाय और प्रौद्योगिकी
1. अपने भ्रष्टाचार को कैसे खत्म करें और बिना किसी परिणाम
के बच निकलें – अपने संगठन को डिजिटल रूप से रूपांतरित करने के लिए चरण-दर-चरण मार्गदर्शिका